विषय सुची

1.	भोर का तारा	1
2.	"मैं लड़ूंगा, मित्रो!"	3
3.	नेहरू का युग था	8
4.	एक खलबली थी	12
5.	वड़नगर	15
6.	जसोदा का पहला सवाल	18
7.	मैं खंड–खंड हो गया था	21
8.	अनुशीलन समिति और युगांतर	26
9.	बाल–स्वयंसेवक!!	30
10.	लैट द पीपुल ....नो!!	33
11.	मुझे मेरा इच्छित आसमान नजर नहीं आया था!!	38
12.	इन्किलाब – जिंदाबाद!!	41
13.	क्या आपने भगवान् को देखा है?	45
14.	जिस की लाठी उसी की भैंस!!	49
15.	क्या मैं अकेला ही रहूँगा?	52
16.	मैनका!	55

17. मूर्ख शेर और चालाक लोमड़ी!! 58
18. मैं तो जंग चाहता हूँ!! 62
19. पर नियति मेरे हाथ में न थी!! 66
20. मैं बाल–बाल बच गया था!! 69
21. भोर का तारा – नरेन्द्र मोदी!! 73
22. हमारे तीर्थ – रासबिहारी बोस!! 76
23. ये सब मुझे घेरने के लिए हो रहा था 81
24. सपूत पैदा होते थे तब –भारत में! 86
25. वन्दे मातरम!! 91
26. मैं फांसी पर झूलूँगा!! 94
27. राजा को राम होना चाहिए! 101
28. कोई था – जो मेरे खून का प्यासा था! 106
29. फिर बम मारा ? 112
30. मैं रास्ता बदलना न चाहता था! 117
31. वो हारे नहीं थे! 123
32. तीन स्तम्भ थे –लाल, बाल और पाल 128
33. अछूत कोई नहीं! 134
34. गुहार! 140
35. मैन ऑफ द मैच!! 146
36. स्वराज का स्वप्न! 150
37. मैं इस नरसंहार की निंदा करता हूँ! 156
38. हमें लड़ना तो पड़ेगा ? 161
39. मैं पहले मरूंगा! 166
40. पूर्ण स्वराज ही मांगूंगा, मैं! 170

41. जाको राखे साईंयां!! 174
42. इस बेईमान सत्ता को मैं सजा दूंगा! 180
43. गुनाहगार तो गोरे थे! 185
44. जनता का बैरी कब बचा है ? 192
45. मौत से डर किसे नहीं लगता? 197
46. 'जय हिन्द' के नारे लगाता ही चला गया! 204
47. कोब्रा पोस्ट और गुलेल!! 210
48. हुए महासमर का मैं ही हीरो था! 217
49. सम्पूर्ण मानवता रो पड़ी थी, नरेन्द्र! 223
50. आदमी चाहे तो आसमान छू ले! 230
51. जरूर–जरूर कोई विस्फोट होगा! 234
52. होनहार हो मेरे लाल! 240
53. बोलता–डोलता अमित सच् का प्रतीक है! 246
54. मैं नहीं मरूंगा, पगले!! 252
55. दिल्ली के जूते के नीचे नहीं रहेंगे, भाई जी!! 258
56. मुझे निर्वाण लेने से रोक दिया था! 263
57. राजनीति के क्षितिज पर पहला धमाका!! 269
58. अब मैंने आक्रमण के आदेश देने थे!! 276
59. रौंगटे खड़े हो गए थे –ब्रिटिश साम्राज्य के!! 280
60. बदबू मारती है –इस अपने–तेरे के संसार में! 287
61. बेचारे! फिर लौटे ही नहीं!! 291
62. दिल्ली मेरे साथ ही जाएगी –जसोदा!! 297
63. मैं अपनी उसी जिद पर कायम था! 301
64. मुझे जीत के नगाड़े बजाने हैं!! 307

65. गुजराती ‘गाँधी’ को गुजराती ‘मोदी’ काटेगा! 312
66. काशी का कायाकल्प मैं करूंगा!! 318
67. चोर के पैर नहीं होते तो झूठ का सर नहीं होता? 323
68. मित्रो! मुझे एक और आश्रय मिला? 330
69. दिल्ली–गुजरात की बिल्ली को नहीं पकड़ पाएगी? 335
70. पर मैं मौन ही बना रहा था! 340
71. हम सब आज भी कांग्रेस के गुलाम हैं! 346
72. लौटना तो मुझे अकेले ही था? 352
73. मैं अपने आसमान अलग से ले कर चलता हूँ! 356
74. समूचा मेरा भारत –आहत था!! 362
75. मोदी पी एम् बन कर दिल्ली जा रहा था? 367
76. मुझे तो विदेश भी देश निकाला दे बैठा था? 373
77. अब मैं फिर अकेला छूट गया था ? 378
78. मेरा वशीकरण मंत्र है–ये अमित! 384
79. तू तो फकीर है! कोई क्या उतार लेगा, तेरा?? 388
80. तुम्हारे लिए चुनौती पूर्ण भविष्य आँख लगाए बैठा है! 405
81. पित्र –पुरुष अडवानी जी नहीं चाहते आप का नाम पी एम् के लिए जाए! क्यों?? 410
82. ये देश –प्रेम ही तो मेरा प्राण है ? 416
83. कुर्बानियाँ तो देश–भक्तों का गहना हैं! दो न कुर्बानियाँ? 421
84. और अब वक्त का चेहरा –केसरिया था!! 427
85. कोई चायवाला नहीं–ये चोर है! 432
86. मैं आसमान पर उगे भोर के तारे को देख रहा हूँ! 440

1

भोर का तारा

"प्रधान मंत्री बनने का सपना ..., हाँ, ...हाँ, ...यही सपना तो था .....जो मेरी आँखों में हर रोज लहक जाता था . हर रोज एक झुनझुने की तरह बज–बज कर यह मुझे जगाता था ....सताता था ....सचेत करता था ....प्रोत्साहित करता था ....और फिर थकाता भी तो था ....बहुत–बहुत थकाता था .....!"

"तू ....? अरे ..., तू ...! तेरी क्या औकात ....? तू ......तो ....!!" उल्हाने–ताने चलते ही आते . मुझे काटते–बांटते चले जाते. मेरा खून ही सुखा देते . "पिद्दी न पिद्दी का सोरबा ....!" एक शोर उठता मेरे जहन में. आंधी की तरह सन्नाता –मन्नाता ...! इसे रोकना ...टोकना ...दुश्वार हो जाता. जहाँ मैं खड़ा था वहां से तो आसमान बहुत दूर था.

निराशा आती. मुझे समझाती कि मैं इस तरह के खतरनाक सपनों को तरजीह न दूं. मैं जो हूँ – उसी को स्वीकार लूं. छोटा हूँ तो क्या ....? संतोष पूर्वक गुजर–बसर करने में क्या कोई खोट है ? मेरी सोच सही नहीं है. आसमान को छूना – मात्र एक कल्पना है, सच्चाई नहीं है.

"पर मैं छोटा नहीं हूँ ....!" मुझे अपने सारे दिए उत्तर याद हैं. "छोटा कहाँ से हूँ ....?" मैं पूछ ही लेता. "मेरे पास ...हाँ, हाँ, ...मेरे पास परमात्मा के दिए दो हाथ हैं ....विचारवान मेरा मन–प्राण ...मुझे हर बार बुलाता है . ...बार–बार समझाता है कि ...तुम ....छोटे नहीं हो ....!" मैं हँसता. "...मेरी निराशा, मुझे डराती क्यों हो ...?" मैं पूछता. "मैं डरता नहीं हूँ. मैं .....मैं .... " उत्तर तो थे मेरे पास – लेकिन तब जुबां पर आते–आते सहम जाते.

मैं ऑखें खोल कर देखता. वास्तव में ही बहुत बड़े–बड़े लोग थे. मेरा कद–काठ तो उन के सामने कुछ भी नहीं था. लोग थे – जिन के पास बेशुमार धन था . लोग थे – जिन के पास हुनर था . लोग थे – जिन के पास नाम

था ...शौहरत थी. और लोग थे – जिन के पास पावर थी ....सत्ता थी. उन्हें ही सब झुक–झुक कर नमस्कार करते थे ....उन का ही गुन–गान करते थे.

और न जाने कैसे–कैसे लोग थे ....जिन्हें मैं जानता तक न था .....!!

लेकिन मेरी जिज्ञासा – उन्हें जानने की जिद करती. मेरा मन बागी हो कर उन के विगत में झांकने लगता था. मैं एक खोज में लगता – और देखता कि मैं उन बड़े–बड़े विद्वान, धनवान, मशहूर और शक्तिशाली लोगों के किस पासंग में आता था...?

"हो न, हल्के ....?" मेरी निराशा हंसती. "फूल जैसे हो तुम, नरेन्द्र!" उपहास आता.

"तुम में तो कोई वजन ही नहीं है, मित्र!" हंसी के ठहाके उठते और . ..मुझे अधमरा कर देते.

"नेहरू जी का जन्म ....उन की शिक्षा–दीक्षा ...उन का परिवेश ....और उन का अनुभव .....तुम्हारे हाथ कैसे लग सकता है....? अपने पैरों की जमीन को देखो...! अपने परिवेश को भी परखो! तुम्हारा ...."

"मैं नहीं मानता ..., भाग्य को .....!" मैं रूठ जाता. "मैं नहीं स्वीकारता ... ..अपनी पराजय!" मैं दृढ स्वर में जोर से कहता. "अभी मेरा ....विकास होना है ....अभी तो मेरा .....भाग्य बनना है ...अभी तो मेरे अवसर आने हैं .....और तुम कहते हो कि मैं पहले से ही जंग हार जाऊं ..? अभी मेरी उम्र कुल ६ साल की है, मित्रो! अभी तो मैने ऑखें ही खोली हैं. अभी तो ...."

"देख लो, अपने आस–पास को!" फिर से एक उल्हाना आता . "क्या है .....तुम लोगों के पास .....? गरीबी ....."

"नहीं, नहीं .....! गरीबी का तो नाम ही मत लो!" मैं चीख पड़ता था. "यह मात्र एक मानसिक बीमारी है." मैं स्पष्ट कहता. "मन से तो मैं अमीर हूँ. .....धनवान हूँ .....बलवान हूँ ....उसी परमात्मा का बेटा हूँ .....जिस के नेहरू जी हैं .....गाँधी जी हैं .....और राम–कृष्ण भी थे. मैं कंगाल कहाँ से हूँ ...?" मैं तन कर खड़ा हो जाता.

"बच्चे हो ......!" कोई हँसता . "नादान हो ....!!" वह कहता. "तुमने अभी जंग देखी कहाँ है ....?" वह उल्हाना मारता. "पसीने छूट जाते हैं, बच्चे ... .जब ....तलवारें खनकती हैं ......!!"

2

"मैं लडूंगा, मित्रो!"

"मैं लडूंगा, मित्रो!" मैं दहाड़ता . "मैं जंग के मैदान में कूदूँगा जरूर!! देखलेना ....."

अपने सोच और सपनों से मेरी दोस्ती हो चुकी थी. मैं अकेला नहीं था. मैं महसूसने लगा था कि .....कुछ है ...जो मेरे इर्द–गिर्द मंडराता रहता है . ...मुझे समझाता रहता है ......मुझे अग्रसर करता रहता है! अँधेरा तो था ... .गरीबी का अँधेरा, अशिक्षा का अँधेरा ....परिवेश का अँधेरा ...., पर एक प्रकाश भी था ...एक अनाम सा प्रकाश ...जो निरंतर मेरी आत्मा को सींचता रहता ....मुझे जाग्रत बने रहने को कहता .

"मैं तुम्हें .....बाल स्वयं सेवक के रूप में .....संस्था का सहयोग करने की सलाह दूंगा, नरेन्द्र!" लक्ष्मण राव मुझे समझा रहे थे. "तुम ....विलक्षण हो . ....होनहार हो ....विचारवान हो ..! मेरा अपना मत है कि ...तुम्हें एक विचार धारा से ....जुड़ जाना चाहिए ." उन का आग्रह था – एक अनुरोध था ...एक स्पष्ट और बेबाक राय थी. "कोई जोर–जुलम ...नहीं ..करता, पर ...." वह रुके थे.

"पर ....ये सब है क्या ....?" मैंने यों ही पूछा था. आग्रह मुझे भा गया था. एक ही लम्हे में मुझे अपना लंबा रास्ता दिखाई दे गया था. पल–छिन में मुझे सब सूझ गया था. पर मैं जानना तो चाहता ही था. "ये सब दौड़–भाग किस लिए है ....?" मैं मुस्कराया था. "कोई उल्लू तो नहीं बना रहा ....?" हंस कर पूछा था, मैंने .

"ये लोग उल्लू नहीं .....इंसान बनाते हैं, नरेन्द्र! जागरूक इंसानों की संरचना करते हैं ....जो अपना मरना–जीना जाने . एक ऐसे समुदाय की

संरचना करते हैं – जो एक दूसरे के सुख–दुःख बांटे ....! इंसान अकेला नहीं रह सकता, न ....? इसलिए ......"

"मैं तो अकेला ही हूँ ....अकेला ही मेरा सोच है ....अकेला ही ......मैं ....!"

"नहीं! एक चना कभी भाड़ नहीं फोड़ सकता, नरेन्द्र! मैं तुम्हारे सोच और संघर्ष की थाह ले चुका हूँ . तुम्हें एक संगठन की दरकार होगी, बेटे! और ...अगर ......"

"क्या देंगे ...., ये लोग ...?" मैने फिर पूछा था. "मुझे क्या–क्या लाभ होंगे ....?" मेरे प्रश्न थे. "धन मिलेगा ....?" मैंने एक किलक को लील कर पूछा था.

'धन' और 'धनवान' ये दो ही मुद्दे थे जो अब तक मेरी आँख की किरकिरी बन चुके थे. 'धन' होना ही सब कुछ होना था ..., मैं उन दिनों सोचने लगा था. 'धन' ही तो था ...जो हमारे परिवार के पास नहीं था. 'धन' ही तो था ....जिस के लिए मेरे बाबा ....धक्के खाते रहते थे . 'धन' ही तो था ...जिस की हम सब को परिवार में जरुरत थी. 'धन' था नहीं तो ....न परिवार में चैन था .....न शान्ति! एक उजाड़ वियावान में हम सब बेगानी रूहों से रह रहे थे.

जिन के पास 'धन' था ...उन के मजे थे ....आनंद था ....आमोद–प्रमोद था ...एक शान–शौकत थी – उन की! सब उन की ओर ललचाई आँखों से देखते थे. वह कुछ भी खरीद लाते थे ....तो ...एक चर्चा चल पड़ती थी. उन के कपड़ों की और ....जूतों तक की चर्चा चलती थी. उन के शौक ....भी चर्चा में होते थे. उन के अपराध – जैसे कि ....शराब पीना ...या कि जुआ खेलना ....और ...और हाँ, औरतों के शौक ....क्षम्य थे. पुलिस तक उन पर हाथ न डालती थी.

तब 'धनवान' होना ही मुझे कुछ होना लगता था!

"धन नहीं मिलेगा .....!" दो टूक उत्तर था, लक्ष्मण राव का. उन का स्वर कठोर था. उन के तेवर भी बदल गए थे. 'धन' की मांग कर जैसे मैने कोई गुनाह कर दिया था – ऐसा लगा था! "तुम्हें 'धन' की तलाश है – तो स्वयं–सेवक मत बनो!" उन का सुझाव था. "'धन' कमाने का साधन नहीं है, यह!" वह उदास हो कर बोले थे.

"तो कैसी कमाई होगी ....?" मैंने भोले स्वभाव में पूछा था.

"ऐसी कमाई ....जैसी गाँधी जी ने की है ....नेहरू जी कर रहे हैं ....और जैसे कि संत–फकीर करते हैं ...!" उन का सधा और सीधा उत्तर था.

मैं सोच में पड गया था. लक्ष्मण राव कोई ऊँची बात कर रहे थे ....एक दुधमुंहे बच्चे को ....ऐसी सौगात दिखा रहे थे ....जिस के अर्थ समझना उस की बिसात के बाहर था.

स्वयंसेवक से भी आगे का – बाल स्वयंसेवक, एक नया ही चलन चला था – तब. 'कैच देम यंग" का नारा न जाने कहाँ से आया था ? न जाने इस नारे को किस ने इजाद किया था ? 'बचपन से ही ....बच्चों में संस्कार डालो' एक ऐसा मुद्दा था – जिस पर नया प्रयोग हो रहा था. उन बच्चों को लो . ...जिन को दिशा चाहिए ...जो होनहार हैं ....पर लाचार हैं! उन्हें लो – जो कुछ करना चाहते हैं ....पर ...सहारा चाहते हैं!!'

बाल स्वयंसेवक – फिर न जाने कब और कैसे एक मूर्त रचना बन गया ...और मेरी आँखों के रास्ते मेरे अंतर में उतर गया . हजारों सपने ...हजारों इच्छाएं और ...हजारों–हजार विचार आकर मुझ से लिपट गए थे. 'रास्ता यही है, नरेन्द्र!" मेरी आत्म बोली थी. 'तुम्हारे अभीष्ट तक जाने का रास्ता यही है. '

"मेरा अभीष्ट....?" मैने तुनक कर पूछा था. "कौन से अभीष्ट की बात कर रहे हो ..., मित्र ...?"

"वही, जिस के लिए तुम बावले–उतावले हो. तुम्हारा – अभीष्ट ....'प्रधानमंत्री पद ....' ....?"

अब की बार मैं हंसा था. जोरों से हंसा था. अपने ऊपर हंसा था. अपनी इस उम्मीद पर हंसा था. उस दिन मैं खूब ही हंसा था ...!! कारण– में सूरज को निगल जाना चाहता था!

"अच्छा है . कुछ सीख–समझ लेगा ....!" मेरे बाबू जी की प्रतिक्रिया थी.

"कुछ कमाई भी होगी ....कि यों ही फोकटी में ....बेगार कराएंगे ...?" मेरे छोटे भाई ने पूछा था.

"कुछ तो मिलेगा ही ....!" माँ ने बात साधी थी. "संगत का तो असर ही अलग होता है! अच्छे लोगों के पास उठना–बैठना भी तो ....एक किसिम की

कमाई है...!!" उन का कथन था. "अवाराओं की संगत छूटेगी ...!" उन का अंतिम आशीर्वाद था.

मेरा बाल स्वयंसेवक होना – कुछ खास नहीं था – किसी के लिए!

लेकिन मेरे लिए ....ये होना ही सब कुछ होना था! मैंने संगठन की काया में एक रूह की तरह प्रवेश पा लिया था. मैंने उस के रूप–स्वरुप को समझा था. मैंने उस के नाम, काम और मुद्दे–इरादों का पाठ जैसा किया था. मुझे सब भला लगा था. मुझे सब लोग सुहा गए थे. मैं उन लोगों के प्रेम–सौहार्द का कायल हो गया था. मैं उन लोगों की दिशा, नीति और सहज राजनैतिक चेतना के संचार करने के प्रयासों से प्रसन्न था. उन का बताया इतिहास–भूगोल मेरी समझ में समाता ही चला जाता था. मेरे लिए उन का कहा – परमात्मा का कहा था! एक लौ एक पुकार ...और एक ...अनाम सा उजास मेरे भीतर भरने लगा था.

न जाने क्यों ....अचानक ही मैं ...अब औरों के लिए जीने लगा था .... !!

मुझे अपने सुख–दुःख तो याद ही न रहे थे. अपनी गरीबी को तो मैं भूल ही गया था. मैं अब एक मुहीम में जुट गया था. हाँ, एक मुहीम ... समाज–सेवा की मुहीम ....एक ऐसी मुहीम ....जिस में दीन –दुखियों का सहयोग करना सिखाया जाता था .....!

"यह देश हमारा है ....हमें जान से भी ज्यादा प्यारा है ....! हमें बड़े हो कर – बड़ी–बड़ी जिम्मेदारियां उठानी होंगी ....! हमें उसी की तैयारी आज से करनी है ....!!"चर्चाएँ होती ही रहतीं थीं.

मेरे उड़नशील मन को एक घोंसला मिल गया था.

अपने अकेले पलों में मैं इसी अपने प्रिय घोंसले में आ बैठता! मैंने इसे नाम दिया था – भारत ....अखंड भारत! मैं अपनी रचना में इस नाम – भारत ....या कि अखंड भारत से खूब खेलता! मैं इस नाम को छोटा–बड़ा करता ....मैं इस नाम का अर्थ जानने की कोशिश करता ....! मैं कई बार चाहता कि मैं ...दौड़ूँ और अपने देश के कौने–कौने को झांक कर देख आऊ .. जा–जा कर लोगों से मिलूँ .....उन से बतियाऊं – उन के सुख–दुःख पूछूं ....और उन के पास बैठ कर ....अपने इस सपने को बांटूं ....और बताऊँ .....कि हम सभी गरीब हैं ....! हम गुलाम थे. हमने अभी –अभी आजादी ली

है ...साँस ली है ...स्वतंत्रता की! घबराओ मत ....अब हम बढ़ेंगे ...विकसित होंगे ....और बड़े बनेंगे ...!

"लेकिन, बेटे ....?" प्रश्न आते और आते ही चले जाते.

"घबराओ मत! मैं हूँ ...न ...!!" मैं मुस्कराकर एक मसीही अंदाज में बोल जाता . "अब होगा अंत इस गरीबी का! होगा सवेरा ....सुखों से भरा सवेरा .....जहाँ हम एक सक्षम और ...समर्थ समाज के रूप में उभरेंगे .....!"

पर मात्र .....सपनों से कहाँ मिटती है –समस्याएं ...?

3

नेहरू का युग था

नेहरू का युग था. समाजवाद का सपना आकर देश के जन–मानस की आँखों में ठहर गया था. विनोवा जी का भू–दान यज्ञ आरम्भ हो चुका था. समाज में एक सौहार्द पनप रहा था. सभी नई–नवेली आजादी के गुन–गान में लगे थे. एक नई –नई उमंग थी जो देश में लबालब भरी थी. संपन्न होने के सपने हर देशवासी देखने लगा था.

जो भी चुना गया था – सर्व–सम्मती से चुना गया था. विकास का रास्ता अपनाने का उद्देश्य ही गरीबी और अशिक्षा से लड़ना था. देश के पास था तो कुछ नहीं। एक लुटा –पिटा भारत ही मिला था. समस्याओं के सिवा और था भी क्या – हमारे पास ? 'भूखा मरेगा –भारत' अखबार में लिखा था. खास खबर थी. स्वयंसेवक इस खबर को पढ़ – खबरदार हो गए थे.अगर भारत भूखा मरने लगा – तब हमारी भूमिका क्या होगी – हम सोचे जा रहे थे.

"झूंठ लिखा है ....!" प्रतिवाद सामने था. एक प्रतिक्रिया थी.

"सच है। कारण हैं. पूरी खेती बरसात पर निर्भर है. जन–संख्या है ...कि ...बढ़ती ही चली जा रही है. टिड्डी–दल की तरह असंख्य होते हम सब खा जाएंगे ...चाट जाएंगे ....उजाड़ देंगे ....देश को ....!! देख लेना, नरेंद्र!"

"देख लूँगा ....!" न जाने क्यों मैं बड़े ही आत्मविश्वास के साथ बोला था. "कोई भूखा नहीं मरेगा ...!" मैंने आश्वासन दिया था. "अब ये देश मरेगा नहीं ...बढ़ेगा ...!!" मैंने एक फतवा दे दिया था. "मैं कहता हूँ ......!"

"तू है कौन, ब्बे ....?" प्रतिरोध में प्रश्न पैदा हुआ था.

मैं चुप था. मैं बताना न चाहता था कि मैं कौन था! सच कहूँ तो तब मुझे पता भी कुछ नहीं था. था तो कुछ – पर मात्रा एक बिंदु जैसा ही था. ...परिभाषित नहीं था......प्रभावित नहीं था....फिर क्या बताता ?

लेकिन, हाँ! मैंने खेती की समस्या को एक लम्हे में भांप लिया था. लिखे लेखों में जो तथ्य थे – सही थे ...सटीक थे ...एक चेतावनी थे – हमारे लिए! बढ़ती जन–संख्या के लिए दो वक्त की रोटी जुटाना ....उन हालातों में असम्भव ही था!

हमारी आमदनी ....और हमारे खर्चे ....किसी भी अनुपात में नहीं आते थे. देश कर्जा ले रहा था. नेहरू जी रोज जा कर कुछ ला रहे थे. जहाँ–तहाँ छोटे–मोटे उद्योग लगने लगे थे. लोगों में पैसा कमाने की ललक दिखाई देने लगी थी.

अब हम अखबार पढने लगे थे ...!!

"नेता तो बन गए ...पर कुछ कमाओगे भी ....?" बाबू जी प्रश्न कर रहे थे. "देखो, बेटे ...! जिंदगी बातों से पूरी नहीं होती। तुम बड़े हो रहे हो। और .....!"

"जाम नगर वाले 'सैनिक स्कूल' में ....दाखिला करा दो न, बाबू जी .. .?" मैंने बड़े ही विनम्र भाव से आग्रह किया था.

आग पर पानी पड़ गया था. बाबू जी बुझ गए थे......!!

एक बारगी मुझे भी अच्छा नहीं लगा था. मैंने उन्हें दु :ख पहुंचाया था. मैंने एक अमंगल की तरह अपनी मांग उन के सामने रख दी थी. वह किसी गहरे सोच में डूब गए थे.

"मैं ..मैं ...सैनिक बनना चाहता हूँ, बाबू जी!" मैंने कठिनाई से कहा था. "मैं .....लड़ना चाहता हूँ ...!"

"लड़ाई तो पैसे की ही है, नरेन्द्र!"बाबू जी बोले थे. "तुम अब ...जानते हो कि ....पैसे ...." वो चुप थे.

फुर्र–से मेरे सैनिक बनने का सपना उड़ गया था.

कहीं दूर ....बहुत दूर ...खड़ी मेरी निराशा मुझ पर हंस रही थी. मेरे लड़ने के अरमान ठंडी आग बन कर मुझ में अनाम–से सहम भर गए थे. कुछ था – जो मुझे भीतर से तोड़ने लगा था.

"कहाँ से लाऊं ....पैसे ....?" मैं अपने आप से ही पूछने लगा था. "कैसे आएं पैसे ...ताकि मैं ....?" उत्तर कोई नहीं था. बस, एक चुप्पी थी.

कौनसे सहारे टटोलता, मैं ...तब ...? बच्चा ही तो था! अबोध था. अकेला था. दिशाहीन था. पर था ...जिन्दा! ...कहो कि – साँस लेता एक सपना! मेरी आँखें बुझी नहीं थीं ....जल उठी थीं। ..! मेरी चाह मरी नहीं थी – धधक उठी थी! मैं हारना तो जानता ही नहीं था ...!!

"हम सैनिक नहीं हैं, क्या ?" मेरे साथियों ने प्रश्न किए थे. "हमारे जैसा तो कोई हो ही नहीं सकता ...! सैनिक पगार के बदले लड़ता है! सुविधाओं के बल पर खड़ा संतरी ...और स्वेच्छा से खड़ा एक स्वयंसेवक अलग–अलग संज्ञाएँ हैं! हमारा उद्देश्य मात्र सुविधाएं पाना नहीं है ...सुविधाएं उपलब्ध कराना है! एक माँ की तरह हम गीले में सो कर ..लोगों को सूखे में सोने के सुख बांटते हैं, नरेन्द्र!"

उन की बात कहीं सच थी. सोलहों आने सच थी. लेकिन मैं भूखे पेट लड़ने के पक्ष में भी नहीं था. लाचारी, गरीबी, बे–रोजगारी, अशिक्षा और ऊपर से देश की बढ़ती जन–संख्या ....मुझे बुरी तरह से डराने लगे थे. मेरे सपनों में खोट आ गया था.

"डॉक्टर हेगडेवार कहते हैं ...." कहते होंगे, मैं सुन नहीं रहा था.

"हमारा उद्देश्य है कि ......" होगा ..! पर मेरा ध्यान अब कहीं और था.

अशिक्षित रह कर क्या कर पाऊंगा ...? मेरा सोच इस एक बिंदु पर आ कर ठहर गया था. भारत के विकास के साथ–साथ मेरा भी तो विकास होना है –मैंने स्वयं से कहा था. दो पैसे हाथ में नहीं होंगे ...तो सफर तय कैसे होगा ...?

उन दिनों पैसा –पैसा था. पैसे का महत्त्व था. पैसा बड़ी कठिनाई से बनता था. पैसा खूब–खूब खरीदता था. पैसा जेब में होने पर तो गर्मी चढ़ आती थी. पैसे का तो जबाब ही नहीं था! फिर जिन के पास ढेरों पैसे थे . ..जिन के पास रोजगार थे ...जो संपन्न थे ...और समर्थ थे – उन्हीं का युग था ...!!

इस आजादी का क्या अर्थ है ....?

लागू होती पंच –वर्षीय योजनाएं – क्या मात्र छलावा हैं ...? आम आदमी की आमदनी बढ़ी कहाँ है ...? उन के बच्चे तो स्कूल का मुंह तक नहीं देख सकते ...! फीस भरने तक की सामर्थ नहीं है, उन की ....?

अपने असमर्थ बाबू जी पर मुझे बहुत रोष आया था ...! छः बच्चों के बाप थे ...पर ....

और उसी तरह का था – मेरा भारत ...मेरा सपना ...मेरा घोंसला ...जिसे मैं चाह बैठा था ...!!

सैनिक ....या कि स्वयंसेवक .....क्या फर्क पड़ता है, नरेन्द्र! जंग को जारी रखो ....

मैंने अपने आप को आदेश दे डाले थे ...!!

4

एक खलबली थी

नींद का नाम न था– मेरी आँखों में। लाख कोशिशों के बाद भी न आँखें सोना चाहती थीं ...और न ही दिमाग! एक अजीब–सा कोलाहल भीतर भरा था. एक खलबली थी ....विचारों की खलबली ...भावनाओं का मेला ... इच्छाओं का समुद्र ...और खुशी का जय–घोष जो मुझे उठाए–उठाए डोल रहा था. मैं अब अकेला न था.....पर था निपट अकेला! जो मुझे जानते थे – पहचानते थे ....वो वास्तव में ही किसी और नरेंद्र मोदी को जानते थे.

मैं जानता था ....'नरेंद्र दामोदर मोदी' को. सिर्फ मैं जानता था – उसे!!

इस नरेंद्र मोदी को – जिस की आज १६ मई २०१४ को जंगी जीत हुई थी ....जिसे जनता ने बहुमत दिया था ....दुलार दिया था ...आशीर्वाद दिया था ...! इसे जनता जानती थी, मैं भी नहीं।

आँखें आनेवाले स्वर्णिम विहान को निहारने के लिए खुली खड़ी थीं. इच्छित पल ...मेरा चिर इच्छित पल ...वास्तव में ही घटने को था! पौ फटने को थी ....मैं जानता था कि ...जरूर–जरूर ही पौ फटेगी! पर – एक–एक पल – पानी की एक–एक बूँद की तरह ...वक्त की काया से टपक रहा था – टप –टप–टप ....!

मेरा दिमाग कुछ धुन–बुन रहा था. क्या होगा ... ? कैसा होगा ...? अनेकानेक भाव आ–जा रहे थे. बहुत कुछ था जो अभी तक अनुत्तरित था. जनता से किए वायदे ....मुझे जबानी याद थे. उन का हल भी मुझे आता था. लेकिन उनका फल ....? फल का दिखाई देना अभी दूर था ...बहुत दूर! जबकि मेरी पूरी उम्र की साधना –मीठे फल चखने के लिए ही तो थी.

अचानक ही की साधना का खेल ....स्वयं ही आ कर मुझ से चिपक जाता है तो अचानक ही दिमाग – मेरी कसी मुट्ठी से भाग – वडनगर पहुँच जाता है. एक शिद्दत के साथ यादें चली आती हैं। एक पुरजोर आंधी की तरह ...मेरा विगत मेरे सामने – उठ बैठता है! क्या करू ...? कैसे रोकूं ..?

उम्र ही क्या थी तब ...! यही कोई बारह–तेरह साल ..! लेकिन उस छोटी उम्र में ...उस खेलने–खाने की उम्र में ...उस दुधमुही उम्र के आँचल में – जो घटा –वह तो अविस्मर्णीय था. मैं अब अपनी उड़ान की तैयारियों में जुटा था. वडनगर, गाँधी नगर से करीब १५० किलोमीटर दूर था. वडनगर अपने आप में सम्पूर्ण था. उस नगर को अपना अकेलापन खूब भाता था. दुनियादारी की खबर–सुध उसे नहीं थी. दुनियाँ में कहाँ क्या हो रहा था – वडनगर को न इस की परवाह थी ...न ज्ञान!

ये वडनगर तो अपने अज्ञान के अभिमान में चूर था.

लेकिन मैं बे–खबर न था ..! मैं अपनी उड़ान की तैयारियों में जुटा था. वडनगर के साथ, मैं न था! मैं कभी भी ....किसी भी दिन वडनगर से नाता तोड़ भाग जाने की सोच रहा था.

हाँ, हाँ–हाँ ...! वक्त के बहेलिए को मेरी अपनी गुप्त उड़ानों और एकल इरादों का पता चल गया था. न जाने कैसे ...सब हवा पर व्यक्त हो जाता है ...! मैं भी हैरान था ...और आज भी हैरान हूँ कि ...वक्त को ये भनक लगी तो लगी कैसे ....?

''क्या ....?'' मैं उछल पड़ा था. ''शादी ....?'' मैंने जोर दे कर पूछा था. ''मेरी शादी ...होगी .....?'' मैं डर गया था.

मेरे प्रश्नों और प्रति–प्रश्नों को सुन कर यही वक्त का बहेलिया तब मुझ पर जोरों से हँसा था.

बाबू जी ने स्वयं ही मुझे बताया था कि वो मेरी शादी करने जा रहे थे.

चौक रहे हैं, आप ...? पर ये सच है – जीवन और मृत्यु की तरह! मेरी शादी का आया प्रस्ताव सच था ...सही था ...शास्वत था।

ये तब के जमाने थे – आज के नहीं ...!

बच्चों का भविष्य बनाना तब माँ–बाप की जिम्मेदारी होती थी. बच्चों से उन के निजी मामलों में उन की राय लेना जरूरी नहीं था. बच्चों के लिए

माँ–बाप की हर आज्ञा –शिरोधार्य होती थी. बाप के सामने बेटे का बोलना – अपराध जैसा ही कुछ होता था. आज्ञाकारी बेटों का होना ...बेटों का होना था ...! सर झुका कर ...विनम्र भाव से – बाप का सब कुछ कहा स्वीकारना – एक चलन था.

और माँ–बाप की सेवा करना भी बेटों का परम–धर्म था .....!

और माँ–बाप का फर्ज था – बच्चों की वक्त पर शादी कर देना ...!

इस के अलावा ....या कहूँ कि इस से आगे ...उन्हें कुछ न आता था – और न ही उन का कोई सोच इस से आगे जाता था ...! लेकिन उन का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता था ...!! उन्हें ..सर्वज्ञ ....सक्षम ...और सम्पूर्ण मान कर ही जिया जाता था ....!

समाज के नियम – कानून तब बेहद पेचीदा थे ....जड़ थे ....अकाटय थे ...और उन का उलंघन करना अपराध था – सामाजिक अवहेलना थी ....

5

वMनगर

वडनगर भी अपनी बसावट के आधार पर समाज के इसी सोच के तहत दायरों में बंटा था. मोहल्ले थे. ब्राह्मणों का मुहल्ला ....कायस्थों का मुहल्ला ... धनिक–ढाणियों का मुहल्ला ....धोबी, तेली और नाइयों के मुहल्ले और इस से भी आगे चमार –भंगियों की बस्तियां थीं!

वर्ण–व्यवस्था के आधार पर हम सब को इस बसावट के अनुसार अपने–अपने काम–कर्तव्य भी याद थे. हमें ऊंच–नीच का ज्ञान एक सामान्य–ज्ञान की तरह बचपन से ही सिखा दिया जाता था. हम सब एक दूसरे को उस के नाम के साथ–साथ उस के रुतबे से भी जानते थे. किसका–किस के यहाँ आना–जाना होता ...खान–पान होता ...बेटी–व्योहार होता ...सब हमें ज्ञात था. इस क्रम और क्रिया–कलाप में कोई गलती नहीं होती थी. और अगर कभी–कभार कोई मन चला सीमा उल्लंघन कर ही देता – तो समाज उसे सही रास्ता दिखाने तुरंत सामने आ जाता।

जैसे हम सब को मान–मर्यादाओं के सींखचों में जड़ दिया था ... और हम सब को अपनी–अपनी गुजर–बसर एक निश्चित ढर्रे के अनुसार ही करनी थी.

हमारा तेली –तमोलियों का मुहल्ला था. हमारे अपने सामजिक दायित्व थे. हमारा अपना कर्म–क्षेत्र था. अपने कर्म–क्षेत्र में रह कर ही हमें अपनी जीविका कमानी थी. तेल की पिराई ....तेल की सप्लाई ...तेल का क्रय–विक्रय ....और तेल का व्यापार वह सब हमारे जिम्मे था. हम सब इस कर्म–क्षेत्र के बे–ताज बादशाह थे.

मैं जानता था कि मुझे भी यही काम विरासत में मिलना था. मुझे भी अपने बाबू जी की तरह ...इसी कोल्हू में गोल–गोल घूमना था ....रात–दिन बहना था ...कंगाली काटनी थी ....उम्र पूरी करनी थी ....यों ही ...!! लेकिन मैं था कि ...कोल्हू के बैल की तरह आँखों पर पट्टी बांध कर जीवन–यात्रा पूरी करने से नांट गया था!

मैं – अपने जीवन को आँखें खोल कर जीना चाहता था. मैं चाहता था कि मैं ...अपने विचारों के साथ चलूँ ...अपनी इच्छाओं के साथ उड़ूँ ...अपने अरमानों के साथ जीऊं .....! फिर परिणाम जो हो – सो हो!!

"मैं शादी नहीं करना चाहता ...!" मैंने हिम्मत जुटा कर बाबू जी के प्रस्ताव का मुकाबला किया था. "मैं ...मैं ...इस छोटी–सी उम्र में ...शादी ... .?" मेरी जुबान तालू से जा कर चिपक गई थी. आप बेशक हंसे ....पर यह मुकाबला मेरे लिए ...मेरे जीवन का ...पहला ही धर्म–युद्ध था!

"फिर कौन सी उम्र में शादी करोगे ....?" बाबू जी ने विंहस कर पूछा था. वो जानते थे कि मैं थोड़ा जिद्दी था.

"पढ़–लिख कर ....कुछ बनने के बाद ...." मैं यों ही बोला था. सही उत्तर तो मुझे आता ही न था! अभी तक मेरे सामने मेरा अभीष्ट आया कहाँ था ?

"बूढ़ों की शादी होती है, क्या ?" बाबू जी ने ठहाका लगाया था. "हर काम के लिए एक उम्र होती है, बेटे!" वो स्नेह से बोले थे. "अपने साथियों को देखलो! एक दो के तो बच्चे भी होनेवाले हैं. "

और यह सच भी था.

भारत की भुखमरी का कारण –भक्क–से मेरी समझ में समां गया था.

छोटी उम्र में शादी होने के बाद – बच्चे पैदा होने का क्रम – एक लंबे अरसे तक चलता था. आदमी ...बेध्यानी में ...बिना किसी सोच–विमोच के बच्चे पैदा करता चला जाता था. उसे तनिक भी भान न होता था कि जो बच्चे वो पैदा कर रहा था ...उन के प्रति उस का कोई दायित्व भी था. यह तो एक परिवारों का चलन था. बच्चे भगवान् की दैन थे ....और भगवान् ही उन का रक्षक–शिक्षक था. बच्चे पैदा करनेवाले माँ–बाप तो मात्र एक कारण थे.

लेकिन मैं था कि ...इस चाल–चलन को मानना नहीं चाहता था. मैं नहीं चाहता था कि ....मैं भी ...इस ढर्रे को जीऊं और बाबू जी की तरह ....

"मैं शादी नहीं करूंगा ....!" मैंने पुरजोर प्रतिरोध किया था.

"लेकिन क्यों ...?" बाबू जी ही गरजे थे. "हम भी तो सुने कि ....तुम शादी क्यों नहीं करना चाहते ?"

"मैं ....मैं ...पहले ...अपने पैरों पर खड़ा होना चाहता हूँ ...." मैंने अपनी और से एक सशक्त दलील उन के सामने धरी थी.

"किसी और के पैरों पर खड़े हो – क्या ...?" छज्जू चाचा बीच में कूदे थे. चूंकि मेरी शादी तय हो चुकी थी ...अतः सब लोग इस में कोई व्यवधान न चाहते थे.

उन के पूछे प्रति –प्रश्न ने सारे माहौल को हल्का कर दिया था. हंसी का एक भबूका उठा था ....और मेरी दी दलील को उडा ले गया था. उन के लिए तो मैं अभी बच्चा ही था. मैं अपना भूत–भविष्य समझता कहाँ था ?

6

जसोदा का पहला सवाल

हमारे गृहस्थ को पैसे की दरकार थी . खास कर जसोदा के आने के बाद तो हमारे खूब खर्चे बढ गए थे .

"आप तो शादी ही नहीं करना चाहते थे ?" जसोदा का पहला सवाल था.

हाँ, हाँ! मुझे खूब याद है कि उस ने मुझ से पहला यही सवाल पूछा था!

मैं सहमा–सहमा उसे देखता ही रहा था!

जसोदा सुंदर थी . उस का मुंह–माथा खूब अच्छा था . उस का स्वभाव भी म्रदुल था . परिवार में सभी उसे चाहते थे . वह भी सब की इज्जत करती थी . उस ने सब के मन जीत लिए थे .

लेकिन मेरा मन अभी तक उस की मुठठी में न आया था!

"मैं ...मैं ...बच्चे पैदा करना नहीं चाहता ....!" मैंने अनमने से उत्तर दिया था . "गरीबी एक अभिशाप है!" मैंने नारे की तरह उछाला था, गरीबी को . "मैं नहीं चाहता कि ...."

"कमाएंगे ...तो अमीर बन जायेंगे ...!" जसोदा ने एक चुहल के साथ कहा था . "गरीबी–अमीरी तो करमों का खेल है ..." उस ने मुझे जीवन–दर्शन समझाया था . "कौन अमीरी नहीं चाहता ...? लेकिन मिले ...तब न ...!"

मैं चुप था . अभी तक अमीर बनने का सपना तो मैंने देखा ही नहीं था! जो सपने मैं देखता था – वो तो अजीब ही थे! मैं तो गरीबों का मसीहा

बनने की ही बात सोचता रहता था . में तो सोचता रहता था कि कुछ ऐसा हुनर हाथ में लूं ..जिस से हम सब की गरीबी दूर हो जाए! मैं कुछ ऐसा अनूठा कर दूं ...जिस से .....

क्यों कि मुझे समाज की विषमता बहुत ही सताती थी! मुझे चुभता था कि कुछ लोग ऊपर थे ...बहुत ऊपर ...! और कुछ लोग थे ...जो उन की ओर चाह कर भी ताक नहीं सकते थे . कुछ छोटे थे ...छोटी जात–बिरादरी के थे . कम पैसे वाले थे ...हुनर हीन थे ...तो कुछ हुनर मंद भी थे . ...तो कुछ पैसे वाले भी थे ...पढ़े–लिखे थे ...और कुलीन भी थे!!

लेकिन थे सब के सब इन्सान .....एक जैसे ही इन्सान ....!!

"फिर ये फरक क्यों है ...इतनी विषमता .....कि ...." मैं घंटों इसी विषय पर सोचता रहता!

"समाज की सेवा करना हमारा परमोधर्म है ...!" शाखा में हमें सिखाया जाता . देश हमारे लिए सर्वोपरि है! देश के लिए समर्पण करना ....." मैं सुनाता ही रहता . ...पर ये बातें तब मेरी समझ में कहाँ समाती ....थीं!

एक विभ्रम था . एक अंधकार था . मैं था – मुझे एहसास था! पर जिस उजाले की मुझे दरकार थी – वह तो कहीं था ही नहीं!!

"नौकरी की जुगाड़ ...कहीं ..लगा लो तो ...." बाबू जी ने एक दिन फिर मुझे याद दिलाया था . "अब घर के खर्चे बढ़ गए हैं ...और आगे भी ...." उन का इशारा था कि अब मेरे और जसोदा के बच्चे भी तो आयेंगे! "हाई स्कूल तो हो ही गया है ..." उन्होंने मुझे याद दिलाया था . "अच्छी नौकरियां मिल रही हैं . सरकार आज–कल हम लोगों का ध्यान रख रही है! सरकारी सहायता ....."

लेकिन मैं था कि ...इन छोटी–छोटी सहायता ...और नौकरी–चाकरियों के ....झंझट से दूर ही रहना चाहता था!

"दूर क्यों भागते रहते हैं, आप ...?" जसोदा मुझे पूछ रही थी . "मेरी क्या गलती है ....?" उस ने प्रश्न किया था . "मैं तो अब ...आप की हूँ ...आप के लिए हूँ ...आप के घर–गृहस्थ ...."

घर–गृहस्थ ...? मेरा घर–गृहस्थ ....! बाबू जी की तरह ही मेरे भी छ

: सात बच्चे ...और उन बच्चों के बोझ के नीचे दबा मैं ....? गरीबी में दम तोड़ता ...मैं! मैं ....मजबूरियों के हाथों बिका ...मैं ...मैं अनपढ़ ....मैं – बिना किसी हुनर –हक के जीता ...एक आदमी ....!!

"मुझे बच्चे पैदा नहीं करने, जसोदा!" मैंने दो टूक कहा था .

"फिर शादी क्यों की ....?" जसोदा का प्रश्न था .

हाँ! ये उस का आखिरी प्रश्न था – जिस का उत्तर मैंने आज तक नहीं दिया है!

लेकिन चुनाव के आज के दौरान में मुझ से जसोदा को लेकर जम कर सवाल–जबाब हुए हैं!

कितना –कितना उधेडा है मुझे – लोगों ने ....प्रेस ने ...और प्रतिद्वंदियों ने ....!! उफ ....!!!

7

मैं खंड–खंड हो गया था

जसोदा के साथ हुई टक्कर में, मेरा मन टूट गया था . मैं खंड–खंड हो गया था . मैं परास्त हो गया था .. छोटी–मोटी जो जीने की उमंग थी वह भी मुझे छोड़ कर भाग गई थी . अब मरने को मन कर रहा था! अब –सन्यास–सा कुछ ग्रहण करने की सलाह दे रही थी –मेरी अंतरात्मा!

उस छोटी उम्र में ये वैराग्य क्यों उगा था ? मुझे लगा था – इस धरा पर मेरे लिए कुछ धरा न था! मेरे पैदा होने से पहले ही यहाँ तो लूट हो चुकी थी . लोगों ने अपने–अपने घर–घूरे बना लिए थे . खेत–खलिहान हथिया लिए थे . राजा–रजवाड़ों ने अपनी सल्तनतें खड़ी कर लीं थीं . वंश–बेलें थीं जो ....हर अच्छे–बुरे पहाड़–प्रदेशों पर चढ़ कर ....उन्हें अपना चुकीं थीं . नाम थे – जिन के सामने सब पानी भरते थे! लोग थे – जिन के सामने सब झुक–झुक कर सलाम करते थे!!

संसार था – लोग थे ......उन के अपार वैभव थे!!

मैं क्या था ....? मैं कौन था ....? मैं क्यों था ....? था कोई उत्तर ....?

नेहरू जी का युग चल रहा था . कांग्रेस के परचम हर दिल–दिमाग पर लहरा रहे थे . नेता गण ...श्रेष्ठ थे! जिन्होंने आजादी की जंग लड़ी थी .... समाज में उन का मान था .....सम्मान था ....! उन्हीं के कहानी–किस्से थे . मेरा स्थान तो केवल सुनने वालों की कतारों में था .

"डाक्टर केशव बलिराम हेगडेवार जी .....का नाम तो तुमने सुना ही होगा ....?" शाखा प्रमुख भाई अथावले बता रहे थे .

"नहीं सुना ....!" मैं अकड़ कर बोला था .

एक और कोई नाम था – मैंने सोचा! ये नाम भी कोई महिमा मंडित नाम होगा – जिन्होंने खूब धन कमाया होगा ...? जिस ने खूब ऐश–ऐयाशी की होगी ....और जो जरूर ही .....एक सल्तनत छोड़ कर गया होगा ....जो जरूर ....जरूर ही .....

"हमारे महान पुरुष हैं, ये!" अथावले ने सीधे स्वभाव में कहा था . "इन्हें जरूर ..जानो, नरेन्द्र!" उन का सुझाव था . "ये हमारे प्रेरणा –श्रोत हैं ....हमारी पीढ़ी के लिए ये एक ...दर्शन हैं .....एक उपदेश हैं ....एक ....!"

'ऐसा क्या है ....?" मेरी जिज्ञासा जागी थी .

"सन १६१० में ....कलकत्ता ...डाक्टर बनने की पढ़ाई करने के लिए गए थे ...!"

"तो ....?"

"लेकिन ......जानते हो पढ़ा क्या ....?"अथावले मुस्कराए थे .

"क्या ....?"

"जासूसी ....!!" एक ठहाका मार कर हँसे थे – सभी लोग . "हाँ, सच ....! उन्होंने जासूसी करना कलकत्ता में ही सीखा था!"

"लेकिन क्यों ....?" मेरा मन फिर से बिगड़ गया था . 'जासूसी' जैसे किसब को तो मैं निहायत ही घटिया मानता था . मेरा मन कभी होता ही न था कि मैं ....'जासूसी' के विषय में कुछ पढ़ूं!

लोगों के निजी क्रिया–कलापों में दखल देना ......चुपके से उन के परम–गुप्त राज चुरा लेना .....और उन्हें फिर ब्लैक मेल करना, कहाँ की ....कला थी . .....?

"उन में ये एक अलग से कला थी . और तब इस की जरुरत भी थी!"

"क्यों ....?"

"क्यों कि ....स्वतंत्रता संग्राम तब अपने शैशव पर था! अंग्रेजों का साम्राज्य अपने शिखर पर था! सूरज उन के कहने पर उगता था ......हवा उन के हिसाब से चलती थी .....साँस लेना तक सब उन से पूछ कर ही होता था . ...! वो बहुत खबरदार थे . १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के बाद अब वो ....

लोग दूसरी गलती न करना चाहते थे . वो नहीं चाहते थे कि ....फिर से कोई 'आजादी' जैसा बवाल खड़ा हो जाए ." वो रुके थे . उन्होंने हम सब के जिज्ञासू चहरों को पढ़ा था . वो तनिक खबरदार हुए थे . फिर बोले थे . "लेकिन 'बवाल' तो खड़ा हो चुका था ....!!"

अब आ कर मुझे उन की बातों में आनंद आने लगा था . अब, हाँ ...अब ...मैं चाहता था कि ....उस 'बवाल' के बारे जानूं .....जो तब ....१६१० में कलकत्ता में उठ खड़ा हुआ था ....!!

"राम प्रसाद बिस्मिल से संयोग वश उन की मुलाकात हुई थी ." अथावले ने बात के सन्दर्भ–सूत्र सामने रख दिये थे . "अब पूछोगे – ये महाशय कौन थे ...? फिर पूछोगे कि ....भगत सिंह कौन था ...?"

"नहीं! भगत सिंह को तो हम जानते हैं ...." मैंने उत्सुक हो कर कहा था .

"सिर्फ ..उन का नाम जानते हो .....काम नहीं ...!"

'नहीं, हम जानते है कि ...उन्हें फांसी की सजा हुई थी ...."

"पर क्यों ....?"

"बम फेंका था ...उन्होंने ....."

"क्यों ...?"

"क्यों कि ....क्यों कि .....वो 'आजादी' मांगते थे ....और ...."

"हाँ, ये लोग आजादी मांगते थे ....और अंग्रेज उन्हें मौत बांटते थे . "अथावले भी अब भावुक थे . "संक्रमण काल चल रहा था ....! देश में दो धाराएं बह रही थीं – गरम और नरम! गरम दल के लोग – राम प्रसाद बिस्मिल और ...उन के साथी चाहते थे कि ....छल से ...बल से ....कौशल से ....पराक्रम से ....हम अपने देश को जीतें ....आजादी को हासिल करें ....! लेकिन नरम दल – गाँधी जी ...नेहरु जी .....पटेल और पटवर्धन चाहते थे ....कि ....हम शांति से काम लें! अहिंसा का अस्त्र गाँधी जी ने ईजाद कर दिया था . कहते थे – कोई एक गाल पर तमाचा मारे तो ....उसे दूसरे गाल पर भी ....तमाचा मारने को कहो ....आग्रह करो ...."

"क्यों ....?" मैं कूद पड़ा था . "यह क्यों ....?" मैंने पूछा था . "क्यों न हम उसे छटी का दूध याद दिला दें ...? ऐसा प्रहार करें ....तमाचे के बदले ...मुक्का मारें ...लात ...घूंसे ...सभी का प्रयोग करें ....और ...."

"गाँधी जी की मान्यताएं अलग थीं ." चुप थे, अथावले .

लेकिन मैं था कि ....कूद कर ...गरम दल की धारा से जा जुडा था! मेरे खून में उबाल आ गया था . मेरा मन ...लड़ने–मरने के लिए उतावला हो गया था . किसी भी अन्याय के खिलाफ मैं सीना तान कर ....खड़ा हो जाना चाहता था! मैं तनिक भी बर्दास्त न करना चाहता था ...कि ....कोई किसी का हक छीन कर खा ले! मैं नहीं चाहता था कि कोई दूसरे का परिश्रम चुरा कर अपने नाम लिख ले! मैं तो चाहता था कि ....हक–हकूक ...का न्याय भी उसी प्रकार सही हो – जहाँ सब बाँट कर खाएं .....सब मेहनत कर के खाएं ....और सब एक दूसरे का ध्यान रखें ...!

और अगर कोई इस में गलती करे ....दूसरे का हक छीने ....औरों को गुलाम बनाए ....तो उसे .....दंडित किया जाए! उस का तो बहिष्कार होना चाहिए ....! वह ...प्रार्थना पूर्वक तो मानेगा ही नहीं ...! अगर ऐसा होता तो ....आज ....जो लोग माल–असबाब दबा कर बैठे थे ....

"अंग्रेज तो पूरी दुनियां को ही दबा कर बैठे थे .....!" अथावले कहने लगे थे . "उन का तो सूरज नहीं डूबता था ...."

"सुना तो है ......पर कैसे ....था कि उन का सूरज डूबता ही नहीं था . .....?" मैंने जिज्ञासा वश पूछ ही लिया था .

"विश्व दो गोलार्धों में बटा है .....! सूरज जब एक में गरूव होता है तो ....दूसरे में उदय होता है .....! अंग्रेजों का राज्य तो समूचे विश्व में था .... तो ...सूरज उन के राज में चमकता ही रहता था ....!!"

"आश्चर्य ....!!" मैं भिन्न तरह से ...विभोर हो गया था . "महान लोग थे . विद्वान् लोग थे .....समर्थ थे .....वीर थे .....! जरूर ......उन में से कुछ इतने पराक्रमी होंगे ....कि ...."

"चालाक थे .....!" अथावले हँसे थे . "क्राफ्टी थे ....! वक्त उन के पक्ष में था ."

"हमारे पक्ष में क्यों नहीं था ....?"

"हम गलतियाँ कर चुके थे .....!"

"कैसी गलतियाँ ....?"

"एक दूसरे को परास्त करने की गलतियाँ .....! भाई–भाई की जंग में हम ....देश ही नहीं .....धर्म –ईमान तक हार चुके थे .....!! हमारे पास रहा ही क्या था ....? यहाँ तक कि हमारे ही लोग ....अंग्रेजी शाशन के साथ थे ....उन के पिठ्ठू ...बने हुए थे ....उन का सहयोग कर रहे थे ....! हमारे ही लोग पुलिस की वर्दियाँ पहन–पहन कर ...हमारे ही स्वतंत्रता सैनानियों पर कोड़े बरसा रहे थे ....उन्हें यातनाएं दे रहे थे ...."

"यातनाएं ......?"

"हाँ! भयंकर यातनाएं ......!! सुनोगे ...तो रो पड़ोगे, नरेन्द्र!!"

8

अनुशीलन समिति और युगांतर

वास्तव में ही अब मैं रो पड़ना चाहता था . रो पड़ने की बात भी थी! कमाल ही था ...कि हम अपने प्रतिद्वंदियों के साथ मिल कर अपने आप को गुलाम बनाए हुए थे!! हम उन के साथ थे जो ....हमारे साथ न थे . हम उन को सहारा दे रहे थे – जो हमें बे–सहारा, बे –घर ...और बे–वतन बनाए हुए थे . इतना सा सोच ...तक हम में नहीं था कि .....

"हमारा सोच ....हमारा होश ....हमारा हौसला ....बनाने और जगाने का प्रयत्न कर रहे थे ....'अनुशीलन समिति और युगांतर ....!!" अथावले ने सूचित किया था . "कलकत्ता की नींद खुल चुकी थी . उन्हें ...मतलब कि . ...यहाँ के कुछ प्रबुद्ध लोग – और दार्शनिक ...अंग्रेजी राज की चाल–चलगत को समझ बैठे थे . वो जान गए थे कि अंग्रेज – 'भेड़ की खाल में छुपा –भेड़िया था!' और यही बात देश के कर्मठ और ...जागरूक जवानों को समझाने के लिए उन्होंने, 'अनुशीलन समिति और युगांतर जैसे संगठनों की स्थापना की ." अथावले तनिक गंभीर थे .

"अंग्रेजों ने .....फिर ....?" मैं अब प्रश्न करना चाहता था .

"ये गुप–चुप का सौदा था!" अथावले मेरी मंशा जान कर बोले थे . "सब अंग्रेजों की आँख के उस पार होता था . गुप्त होता था ....छुप कर होता था ....." अथावले की आँखों में एक प्रशंशक भाव उगा था . "कमाल के ही लोग थे – सो – काल्ड, स्वराजी ....!!" वो हँसे थे . "जैसे कि बीमारी के जर्म्स ...बिना जाने ही पैदा हो जाते हैं ....और तभी नजर आते हैं ....जब हम बीमार हो जाते हैं .....उसी तरह – ठीक उसी तरह ....इन लोगों का जन्म होता था . और पता जब चलता था ...."

"काण्ड हो जाते थे ....बम फट जाते थे ....ट्रेन लुट जातीं थीं ....और .....?"

"हाँ! " अथावले ने स्वीकारा था . "सत्ता का पुरजोर विरोध होने लगा था . अंग्रेजों ने भी पुलिस की गस्त बढ़ा दी थी . पहरे भी कड़े कर दिए थे .सजाएं ...और यातनाएं ...चर्म पर थीं . कोई सुराजी सरे आम ...घूम–फिर तक नहीं सकता था . उसे पकड़ने पर पुलिस को इनाम–इकरार भी मिलते थे . उन्हें समाज का दुश्मन बताने की साजिश जारी थी .

हमारे ही समाज के गण–मान्य व्यक्ति – जो अंग्रेजों ने 'राय–साहब', 'सर ' और 'लॉर्ड्स ' बना दिए थे ... इन सुराजियों से परहेज करते थे ... .उन का बहिष्कार करते थे ...!

बहिष्कार शब्द को मैंने जोरों से पकड़ लिया था!

सामाजिक बहिष्कार – समय का सूचक लगा था, मुझे!

मुझे लगा था कि ....मैं भी सुराजी था ....मैंने टोपी पहन रखी थी .... मैं एक खास अंदाज में खड़ा नारे लगा रहा था – 'इंक्लाब –जिंदाबाद ....मैं चिल्ला रहा था – अंग्रेजो –भारत छोडो! मैं बडबडा रहा था – गुलामी की जंजीरें ....

और फिर मुझ पर कोड़े बरस रहे थे .....मेरी काया पर कीड़े रेंग रहे थे ......मैं जेल की अंधी कोठरी में पड़ा–पड़ा कराह रहा था ....और कह रहा था – 'वन्दे–मातरम!'.

'वन्दे–मातरम' मैंने अपने होठों को छूते – इस नारे को दुहराया था – इस का पान किया था .....इसे सहलाया था ....इसे संजोया था .....!!

"क्या मेरी मंजिल भी .....यही नहीं हो सकती ....?" मैंने अपने आप से पूछा था . "क्या मैं .....देश–भक्त नहीं बन सकता ....?" मैं सोचे ही जा रहा था .

"लेकिन ये लोग सच्चे देश–भक्त थे! जान पर खेल कर – सत्ता के विरोध में आ गए थे . रास बिहारी बोस .....और ...."

"रास बिहारी बोस ....?" मैंने पूछा था .

"हाँ! रास बिहारी बोस ....जिस ने स्वतंत्रता का शंख सरे आम फूँका था ....और ...अंग्रेजी हुकूमत को ललकारा था ....! उन का प्रभाव भी पड़ा था .

....हमारे प्रणेता – हेगडेवार पर .....जो उस समय एक युवक थे ....छात्र थे .....! तब उन्होंने युगान्तर और अनुशीलन में काम करना आरम्भ कर दिया था! उन्हें लगा था – मात्र–भूमि के लिए .....मर मिटना ....जीवन को सच्चे अर्थ देना है ....! गुलाम बन कर जीना ......कोई जीना नहीं है! अगर हम न जागे तो ......"

मेरी आँखें भी खुलने लगीं थीं . न जाने कैसा एक नव–जागरण मेरे भीतर भरता चला जा रहा था ....न जाने कौन सी हवा चल पड़ी थी ....न जाने कौन सा युग लौट रहा था ....पर हाँ! था तो सब नया ....नूतन .... चिरंतन ......और .....चिर–स्थाई ...!

"मुझे जेल जाने का तनिक भी भय नहीं है ....!" हेगडेवार ने अपने गुरु स्याम सुंदर चक्रवर्ती से विंहस कर कहा था . "मुझे वहां जो एकांत मिलेगा .....मैं उस एकांत में ....इस जालिम राज का अंत खोज लूँगा! मैं खोज लूँगा ....कि ......आखिर ......"

"जेल किस जुर्म में गए ....?" मैं पूछ रहा था .

"राज–द्रोह का आरोप था – उन पर!"

"राज–द्रोह .....?"

"हाँ! उन दिनों इस राज–द्रोह के जुर्म में ....फांसी तक की सजा थी! पर इन्हें एक साल का कारावास मिला! स्टूडेंट थे .....युवक थे ....! अंग्रेज जानते थे कि ....देश की नब्ज ...युवाओं के हाथ में थी! अतः ...बहुत सोच–समझ कर पेश आने लगा था – राज! यह सन १९२१ की बात है ....जब ....."

"घोर संग्राम छिड़ा था .....!" मैंने स्वयं से कहा था .

और मैं अब उस संग्राम में शामिल था!

न जाने क्यों मुझे भी मात्र–भूमि के लिए लड़ना –मरना अछा लगा था . न जाने क्यों मैं और मेरा मन ....दौड़ कर परम–पूज्य हेगडेवार की उस अंधी जेल की कोठरी में जा बैठा था – जहाँ वो साधना कर रहे थे .... ब्रिटिश राज का अंत खोज रहे थे! वही...उन के चरणों में बैठ कर ....मैं देश–भक्ति की दीक्षा ले रहा था!

"देश सर्वोपरि है – नरेन्द्र!" वह कह रहे थे . "देश को बचाने के लिए ....हमें वो सभी प्रयत्न करने होंगे ....जो दरकार है! हमारी जानें ...जाएं .... हमें यातनाएं मिलें ....हमें ....जो चाहे सो सजा मिले .....पर हमारी मांग – आजादी ही रहेगी!"

"हाँ! रहेगी ....!!" मैंने स्वीकार में सर हिलाया था .

मैं मानता हूँ कि मैं ....एक स्वछन्द मन लेकर पैदा हुआ हूँ ....मुझे किसी प्रकार की बंदिश, दासता ......या गुलामी असह्य है ....! मैं न जाने क्यों ...उड़ कर वहां बैठना चाहता हूँ .....जहाँ पूर्ण स्वराज हो ....!!

9

बाल–स्वयंसेवक!!

"पूर्ण –स्वराज की हमारी मांग अब टलेगी नहीं! हम जेलें भरेंगे .....हम आन्दोलन छेड़ेंगे .....हम ....!" मैं सुनता जा रहा था .

"जेल से छूटने के बाद वो कुछ दिन कलकत्ता रहे थे . फिर नागपुर लौट आये थे . नागपुर वो अकेले नहीं लौटे थे ....!" अथावले मुस्कराए थे .

"कौन–कौन थे ......?" मैंने पूछा था .

"उन के साथ थे – उन का सोच ....उन का दृढ –निश्चय ....उन की प्रतिज्ञा .....और उन का अदम्य साहस! जो कुछ जेल में रह कर उन्होंने तय किया था ....उसे वह साथ ही लेकर लौटे थे ."

"फिर ....?" मेरी जिज्ञासा बढ़ी थी. मैं रोमांचित था!

"नागपुर में आ कर उन्होंने .....लोगों से अपनी मिली यातना का जिकर किया था . उन्होंने जिकर किया था – उस हवा का जो कलकत्ता के हर गली–कूंचे को बुहार–बुहार कर .....पवित्र बना रही थी! उन्होंने युगांतर और अनुशीलन की कार्य–शैली पर बैठ कर ....विचार किया था . वहां बहती गरम धारा – और नरम धारा ....को छुआ था! फिर उन का सोच उन के पास आ बैठा था .

"नागपुर में भी तो दंगे हुए होंगे ....?" मैंने अनुमान लगाया था.

"नहीं! नागपुर में दंगे नहीं .....एक चुप्पी का जन्म हुआ था . एक विचित्र प्रकार की खामोशी थी – जिसे अंग्रेजी शाशन समझने की कोशिश में लगा हुआ था . हेगडेवार उन की आँख के नीचे थे . वह जानते थे कि ...यह युवक ....कोई साधारण युवक नहीं था . वो पहचानते थे –इन्हें!"

"एक अलग ही रास्ता चुनेंगे, हम!" अपने पांच अनुयाइयों से कहा था – हेगडेवार ने .

"कौन सा रास्ता ....?"

"सेवा–भाव! इसे लेकर हम चलेंगे ....अपने ध्येय की ओर...!" उन का कथन था .

"पर .....पहुंचेंगे ....कहाँ ....?" प्रतिप्रश्न हुआ था . "कायरता की बातें हैं, ये! डरने से काम नहीं चलेगा ....! जंग में तो कूदना ही होगा, हमें! ...आग लगा देंगे .....उन के समूचे साम्राज्य को ..." एक बवंडर उठा था .

और मैं भी उस बवंडर में उन के साथ हो लिया था .

बाबला हुआ .....मतवाला हुआ ....मैं ....नरेन्द्र मोदी ...हाथ में आजादी की मशाल लिए .....उन आताताइयों के घर फूँक रहा था ....जिन्होंने हमारे देश–भक्तों को जेलों में ठोक दिया था!

"ईंट का जबाब तो पत्थर से ही होता है ...!" बात पूरी होते न होते फैल गई थी.

"नहीं! ईंट का जबाब पत्थर नहीं .....!!" हेगडेवार बेहद ठंडी आवाज में बोले थे . "जो मैंने उत्तर खोजा है – वह अलग है!" उन्होंने साथियों को सीधा आँखों में घूरा था . "विजय पाने का ...अलग हथियार है .....मेरे पास!"

"क्या ....?"

"सेवा ....!!" उन का स्वर दृढ था. "हम ...सब ....स्वयं सेवक होने का ब्रत लेंगे ....!" उन का सुझाव सामने आया था. "हम सब निश्चय करेंगे कि ...हम देश की निःस्वार्थ भाव से सेवा करेंगे ...और अपने आप को ...स्वयं सेवक की पदवी देंगे! हम अपने आप को ...स्वयं सेवक मान कर ही चलेंगे ...."

"मतलब ....?"

"मतलब साफ है, मित्रो!" उन का स्वर एक गर्व में गर्क था . "हम ... उत्सर्ग का मार्ग चुनेंगे ....हम समाज में जा–जा कर ...लोगों के पास पहुँच कर ....उन के साथ मिल–बैठ कर ....एक मशविरा करेंगे ....."

"कैसा मशविरा .....?"

"समाज–कल्याण का मशविरा ....! समाज–सुधार का आचरण ......समाज में जाग्रति लाने के लिए ....मशालें जलाने का ....प्रयोजन हम पहले करेंगे ...."

"क्यों ...?"

"क्यों कि हमारा समाज ...सोया हुआ है! उसे आजादी का अर्थ ही समझ नहीं आता ....! वह अंग्रेजों के दिए छोटे–छोटे लालचों का गुलाम बन गया है! हमें नौकरी अंग्रेज देता है ....शिक्षा अंग्रेज देता है .....वजीफा उन का है ....व्यवस्था उन के हाथ में है ...! वो जिसे चाहें .....जो दें! हम उन का हाथ नहीं रोक सकते! और जब तक ये लालच की पट्टी ...समाज की आँखों से नहीं उतरेगी ....वो साफ–साफ नहीं देख पाएंगे ...और न ही कुछ समझ पाएंगे .....! और जब तक हमारा समाज जाग्रत नहीं होगा .....आजादी हासिल करने के बाद भी ....हम कुछ भी हासिल नहीं कर पाएंगे! हम सर्व–प्रथम . ..समाज–कल्याण के लिए व्रती बनेंगे ....."

"अंग्रेज ....?"

"हमारा क्या बिगाड़ लेंगे ....? हम देश–द्रोह की धरा के उस पार होंगे ....दोस्तों! हम ....चुपचाप ....अपने कर्तव्य का निर्वाह करेंगे ....! पहले .... सर्व–प्रथम .....हम अपना पाठ 'क ख ग से शुरू करेंगे!" वो हंस गए थे .

"समाज को जगाने की आवश्यकता तो ...आज भी है, सर! काम पूरा कहाँ हुआ है ....?" मैंने तुनक कर पूछा था .

"तो करो, न ....!!" अथावले बोले थे . "और मैं तुम्हें कह क्या रहा हूँ, नरेन्द्र ....!!"

एक चुनौती थी ....जो कूद कर मेरे पास आ गई थी ....!!

10

लैट द पीपुल ....नो!!

"हमें पुर–जोर हमला करना होगा!" मैं अलहसुबह अमित की आती आवाजें सुनने लगता हूँ . "कांग्रेस के बिछाए जाल को ...काटने का एक ही उपाय है ...."

"क्या .....?" मैंने मुड़ कर पूछा था .

"आल ...आउट ...!!" अमित का उत्तर था . "हमें भी अब ...कोई कोर–कसर नहीं रखनी ....!" वह बता रहा था . "पर्दा उठा देते हैं .....पोल खोल देते हैं .....! लैट ...द ...पीपुल ....नो .....कि उन की सो कॉल्ड – रहनुमा कांग्रेस का ...असली रूप क्या है ....रंग क्या है ....ढंग क्या है ....?"

पानी सर से ऊपर चला गया था . मैं गहरे सोच में डूबा था . मैं चाह कर भी ऐसी लड़ाई न लड़ना चाहता था ....जिस में देश का अहित हो .... ! मैं नहीं चाहता था कि .....हमारा प्रचार–प्रसार ....हदें लाँघ जाए! मैं इसे व्यक्तिगत तौर पर लड़ना नहीं चाहता था ....

"चुनाव हार जाएंगे .....!" मेरी चुप्पी को समझते हुए अमित कह उठा था . "फिर मुझे मत कहना ...." अमित का उल्हाना था .

संगीन स्थिति थी . राजनीति का संग्राम अपने चर्म–बिंदु पर पहुँच चुका था . ऐसे संग्राम के हथियार बहुत ही अलग होते हैं! इस संग्राम को अगर ...पूरी प्रज्ञा के साथ न लड़ा जाए तो ....परिणाम भी घातक होते हैं! शेर को पिजड़े में बंद कर के ...बे रहमी से मारा जाता है! जैसे कि प्रथ्वी राज चौहान ...

"वक्त नहीं है – हमारे पास ...! लोग नहीं समझते ...कि ...."

"बताओ लोगों को .....!!" मैं बोल पड़ा था . "सच्चाई सामने रखो ...."

"तुम कहो तो ......?"

"न .....! मैं नहीं चाहता कि ....हम भारत माँ के मुह पर पड़ा घूंघट उठा दें ...." मैं भावुक था . "मैं नहीं चाहता था कि ....इतिहास हम से ....सवाल पूछे कि ....तब तुम कहाँ थे ....?"

"हम थे कहाँ ......तब ....?" अमित ने मुझे कहा था . "सब गोल–मोल परदे के पीछे होता रहा ....! देश के साथ धोखा हुआ .....देश के साथ .... नेहरू सरकार ने ....."

"नहीं, नहीं ....! अमित ....!! नेहरू जी को बीच में मत लाओ ....!" मैं विनती कर रहा था .

घोर निराशा में डूबा नेहरू जी का चेहरा मेरी आँखों के सामने था!

बात सन १९६२ की चीन के साथ हुई जंग को लेकर चल पड़ी थी . इस जंग में ....भारत की शर्म–नांक हार हुई थी – मैं ये जानता था! नंगी और सटीक रिपोर्ट थी ....और आरोप और प्रत्यारोप थे कि ....कि ...सब कुछ नेहरू जी की आँख के नीचे हुआ था ....उन की मंशा से हुआ था ....जब कि चीन .....निर्दोष था ......! चीन ने तो हमले की शुरूआत तक नहीं की थी . ...! सब ...करा ...धरा .....

"इसी हादसे ने तो ....नेहरू जी की जान ले ली ....!" मैं टीस आया था . "भगवान ना करे ....कि कल मैं ....कुर्सी पर बैठूँ और ....."

चीन का नक्शा न जाने क्यों ....मेरी आँखों के सामने तन गया था! चीन ने तिब्बत हड़पने के बाद ....भारत के अरुणाचल प्रदेश और ....अन्य भागों को भी अपने आप में शामिल कर लिया था! उन का कहना था कि ....वो प्रदेश उन के थे! उन का दावा था कि ....

"हिंदी–चीनी भाई–भाई ....!" न जाने कहाँ से मेरे दिमाग में ये नारा उछला था!

हाँ! १९५४ में चीन और भारत के बीच पैक्ट हुआ था . हम भाई–भाई बने थे – तब! हम दो देश थे – जो गुलामी की जंजीरें काट कर ...स्वतंत्र

हुए थे! हम साथ–साथ मिल कर रहना चाहते थे ....! हम चाहते थे कि हम ....अपना–अपना विकास मिल–बाँट कर करें ....! हम एक दूसरे का सहयोग करें ....इज्जत करें .....साथ दें ......और मिल कर आगे बढ़ें ....!!

एक सुंदर सुपन जैसा ही था – ये समझौता ....!!

लेकिन सन १९६२ में दोनों देश लड़ पड़े थे .

अचानक मुझे एक एहसास हुआ था . मैं अचानक ही ....दहला गया था! मुझे गहरा आघात लगा था . एक नंगी सच्चाई ने आ कर मुझे निहथ्था घेर लिया था .

"देश तो आज भी ....असुरक्षित है!" मुझे ये सच्चाई बता रही थी . "अगर आज भी चीन हमला कर दे तो .....? अगर पाकिस्तान मिल कर .....? ओह, मेरे इश्वर ....!!" मैंने खुले आसमान की ओर देखा था . वहां भी कोई उत्तर न था . "अगर वैसा कुछ हो गया तो ....?" मैं सकते में आ गया था .

इतिहास के पन्ने खुले थे . फडफडाए थे . फिर मेरी आँखों के सामने थे!!

"यही तो होता रहा है ...., नरेन्द्र!" मैं अब वक्त की आवाज सुन रहा था . "सच में यही होता रहा है ....!" वक्त हंसने लगा था . "हम हरामखोर हैं . ..., मित्र!" उस की आवाज तल्ख थी . "हम स्वार्थी हैं ....घोर स्वार्थी ....! हम चीटियों की तरह ....माल ढो–ढो कर घर बनाते हैं .....धन–माल को ....गहरे में दबा कर बैठ जाते हैं ....! सोचते हैं – कौन ले–ले गा .....? किसे पता चलेगा .....? कौन आएगा यहाँ .....तक ...?"

"और ...लुटेरे ...लूट ले जाते हैं .....!!" मैंने स्वीकारा था . "बार–बार यही तो होता है ....! हर बार हम अपनी सुरक्षा की बात भूल ही जाते हैं . हम तो भूल ही जाते हैं कि ...हमारी सरहदें सूनी पड़ी हैं ....हमें तो याद ही नहीं रहता कि ...हमारे सिपाहियों को .....पेट भर भोजन भी मिला कि नहीं .....! हम धन के ढेर पर ...नाग की तरह ...कुंडली मार कर बैठ जाते हैं .. ...और जब ...."

हाँ, हाँ! जब पाकिस्तान ने १९६५ में हमला किया था तो ....देश की आँखें खुलीं थीं ...! अहिंसा का सपना तब ...मौत पा गया था!

मेरी द्रष्टि के सामने ....एक द्रश्य आ कर ठहर गया था!

"घमासान लड़ाई में ....सूझ ही नहीं रहा था कि ....मशीन गन की गोलियां आ कहाँ से रही थीं ....?" समर–भूमि से लौटा घायल सैनिक रेल–वे स्टेशन पर जमा लोगों को बता रहा था . मैं उस वक्त उन्हीं सैनिकों की तरह ....उन की सेवा में लगा था! गरमा–गरम ...चाय की कैतिली से ...प्याले में चाय डाल कर मैंने उस वीर सैनिक को दी थी! "धन्यवाद ..., बेटे ....!" उस सैनिक ने मेरे सर पर हाथ रख कर कहा था . "होनहार हो ....!" उस के ये परम–वाक्य मैंने सुने थे . "देश की सेवा करना ...." वह कह रहा था . "मुझे देख लो .....? दोनों पैर गए ...., पर परवाह किसे है ....?"

"कैसे गए आप के पैर ....?" मैं पूछ बैठा था .

"मशीन गन का फायर ...हमारी जाने ले रहा था . कोहरा था ...ठंड थी .....! जानलेवा उस माहौल में न कुछ दीख रहा था – न कुछ सूझ ही रहा था! लेकिन .....उस आते फायर का तो उत्तर हमें खोजना ही था! बस, मैंने रायफल संभाली और हो लिया ....आते फायर की सीध में!"

"लेकिन ....?"

"जान ही तो जाती .....?" वह हंसा था . "वो तो जाती ही है!!" उस ने कहा था . "यही तो मौका था ....वीरता दिखाने का ....! मैं न मुड़ा ....!!"

"फिर ....?"

"बंकर के भीतर बैठा था – वह! मशीन गन पर गोलियों का पटा चढ़ा था . उस के आस–पास भी गोलियों के अम्बार लगे थे . वह अकेला था . मैंने उसे बिल्ली की आँख से देखा . चूहे को भनक पड़ी .....तो उस ने फायर खोल दिया ...! दोनों टाँगे गोलियों से भर गईं ....! पर मैं टीसा तक न था! मैंने बैनट का भरपूर प्रहार किया था ....और उस का कत्ल कर डाला था!"

तालियाँ बजी थीं ....तब रेल–वे स्टेशन पर ....!! फूल मालाओं से उस सैनिक का गला सर तक भर गया था ...!! हम लोगों के लिए वह भगवान का भेजा कोई मसीहा था! हम उस के प्रशंसक थे . उस के भक्त थे ....उस के साथ थे ....उस के गुलाम थे ....!!

तब ....हाँ, तब .....मुझे लालसा हुई थी कि ...मैं एक सैनिक बनूँ ....! मैं भी देश की सेवा में ...जी–जान से जुट जाऊं ....!!

"कैसे काम चलेगा, नरेन्द्र ....?" बाबू जी का कातर चेहरा मेरे सामने आ जाता है . "कुछ नहीं होगा .....चाय–वाय बेचने से .....!" वह निराश थे . "लड़ाई क्या चली ....भूखों मरने ....की बात ...."

हाँ, ये तो सच था कि ....उस १९६५ की लड़ाई के दौरान ....हमारे परिवार की भूखों मरने की नौबत आ गई थी ....!!

11

मुझे मेरा इच्छित आसमान नजर नहीं आया था!!

रेल गाड़ियों का आना–जाना बंद हो गया था . देश में अब भय भरा था . लड़ाई अपने चर्म पर थी . स्टेशन आता पर मिलिट्री स्पैशल दनदनाती निकल जाती . और जो रुक भी जाती – उन पर पहरे लगे होते! उन को हमारी चाय की दरकार नहीं होती थी . यदा–कदा कोई पैसेंजर ही आ निकलता तो कुछ धंधा हो जाता . सब सूना–सूना पड़ा था . सब कुछ बे–मजा हो गया था . मन था कि बागी होने लगा था . क्या करें ? कैसे कमायें ....अपनी रोटी – समझ में ही न आ रहा था!

"नौकरी .....?" बाबू जी एक ही विकल्प पर आ कर ठहर जाते .

"कौन बैठा है हमें नौकरी देने को ....?" बड़े भाई दुखी थे – सो गरजे थे .

"मैंने जुगाड़ लगाया है! कुछ ...ले–दे ...कर ....?"

"न –अ ....!!" मैं साफ नांट गया था .

घर में आमदनी को लेकर कलह उठ बैठा था . शांति न थी . एक चिंता में डूबा हमारा परिवार, बिना पतवार की नाव की तरह हिलोरें खा रहा था! अब डूबा ...कि जब डूबा – वाली स्थिति थी!!

"शाखा में नहीं आये ....?" अठावले मिले थे तो पूछ बैठे थे .

मैं भीतर से भभक उठा था . मैं कहना चाहता था – हमें रोटी नसीब नहीं होती ....और आप को शाखा का शौक चर्राया है ....! क्या धरा है –शाखा–वाखा में ....? कुछ न लेते हो ....और न कुछ देते हो ....! खाली–पीली बातें हैं . ....

"मैं चाहता हूँ, नरेन्द्र कि ....." उन्होंने बात को आगे बढाया था .

"मुझ से न होगा, सर!" मैं दो टूक नांट गया था . "घर में नहीं दाने . ...अम्मा चली भुनाने ...!" मैंने भरपूर क्रोध में आ कर उन्हें उल्हाना दिया था . "हमारी तो जान पर बनी है ....."

"मेरे लायक कोई सेवा .....?" वो पूछ बैठे थे .

मैं चुप था . पर मैं चुप भी नहीं था! मेरा ये मौन एक गजब के मुखर में बदल गया था! मैं उन से कहना चाहता था – आप पहले अपना तो कोई ठिकाना बना लें ....? दर–दर की ठोकरें खाते फिरते हैं ...! ऐसा क्या ज्ञान बताते हैं जो ......?

"बताऊंगा ....!" कह कर मैंने जान छुड़ा ली थी .

वो तो चले गए ...पर मेरा मन तो और भी अशांत हो उठा था!!

न जाने कैसे मुझे अपने परिवार के लोग ही अपने दुश्मन लगाने लगे थे ....?

मैं सोच रहा था कि मेरा एक अभीष्ट है ....मेरा एक निश्चित गंतव्य है .....! पर मेरा परिवार उस के बीचोबीच आ कर खड़ा हो गया है! मेरी दिशा. ..धर्म तय होने में ...ये लोग बाधक बन गए हैं . मेरी शादी कर के ...मेरे पैरों में जंजीरें डाल दी गई हैं .....! यह घर तो मेरा नहीं है ...? यह ठिकाना मेरे लिए नहीं है ....!!

"फिर कहाँ जाओगे, मित्र ....?" मैंने स्वयं से ही प्रश्न किया था .

लड़ाई समाप्त हो गई थी . काम भी चल पड़ा था . लेकिन मैं अब भी उदास ही बना हुआ था! घर में अपने भाई–बहिनों के साथ मेरा अपना संबंध बन न पा रहा था! जसोदा के साथ भी मेरा अबोला चल रहा था!!

पढ़ाई–लिखाई से भी मेरा मन उचट गया था

स्कूल भी मुझे अब एक फिजूल का ढोंग लगने लगा था . पाठशाला मैं बैठ कर ...पाठ याद करना ...उसे रटते रहना ...उस के प्रश्न–उत्तर छांटते रहना ....और फिर एक इम्तहान पास कर लेना .....मुझे कुछ जमता नहीं था! आखिर इस से मुझे फायदा क्या होना था ...? 'नौकरी' बार–बार एक यही उत्तर आता! 'एक अच्छी नौकरी पाने के लिए ...अच्छी डिग्रियां होना तो

अनिवार्य है, नरेन्द्र!' मेरा ही अंतर बोलता . 'मन लगा कर पढो ...डिग्रियां लो ......और फिर देखो .....'

पर मुझे मेरा इच्छित आसमान नजर ही नहीं आया था!!

और न जाने कैसे और कब ...मेरे एकांत को भेद कर ...कुछ ठोस तथ्य मेरे पास आ कर बैठ गए थे!

"रास बिहारी बोस ने आजादी की मशाल जलाई ....और एक ऐसा उजाला हुआ ....जो ....पूरे विश्वा के क्षितिज पर छा गया!! अंग्रेजों का साम्राज्य गया ....गुलाम देश एक के बाद एक आजाद होते ही चले गए ....

"पर अब हम तो गुलाम नहीं हैं ....?" मैंने प्रतरोध किया था .

"हैं ....!! हम अभी भी गुलाम हैं . सच्चे माइनों में ...हम आजाद हैं कहाँ ....?"

"फिर कौन है –हमारा शाशक ....?"

"गरीबी ....बे–रोजगारी ....असमानता ....मुनाफाखोरी ....जात–पाँत ...... उंच–नीच ....! क्या–क्या नहीं है ....? ये हमारी तमाम व्याधाएं अभी मरी कहाँ हैं, नरेन्द्र!"

"तो मैं क्या करू ....? खाली हाथ मैं किस–किस से जा लडूं ....? पेट भूखा है ...और हाथ–पल्ले भी कुछ नहीं ....!! मेरा वजूद ही क्या है जो .. ..मैं .....?"

"खोजो न अपने वजूद को ...."

"पर कहाँ ....?"

और एक मौन था –जो मेरे गिर्द छाने लगा था! आवाजें मरी नहीं थीं . प्रश्नों के उत्तर आना अभी भी शेष था! लेकिन मेरा अबोध मन घायल पंछी की तरह अवश हुआ छटपटा रहा था! क्या करता, मैं ....? कहाँ जाता ....?

12

इन्किलाब – जिंदाबाद!!

कभी–कभी पूर्ण प्रकाश के होते हुए भी घोर अंधकार आप की आँखों की रोशनी छीन लेता है! आप को दिन के उजाले में भी दिखना बंद हो जाता है . आप शक्ति–विहीन हो कर ...दो पग चलने तक के लिए तरस जाते हैं . आप को कुछ सुनाई तक नहीं देता . आप की आवाज भीतर से बाहर नहीं आती . आप को न तो कोई समझता है ....और न ही कोई पूछता है!

सिर्फ लोग आप की ओर देख रहे होते हैं ....मौन ......शांत .....!!

"कलकत्ता में तब जुगांतर ...और अनुशीलन का आन्दोलन चला हुआ था . हैगडेवार को श्यामसुंदर बनर्जी ने ...." मैं अब अठावले की आवाजें सुन रहा था .

"ये कलकत्ता – है क्या बला ....?" मैंने अब स्वयं से पूछा था . "ऐसा क्या है ....जो हर बात की मिसाल में कलकत्ता का ही नाम आता है ....? क्या है –ऐसा जो कलकत्ता को निहाल किए बैठा है .....?"

"जा कर ...स्वयं देखो ...न ....!!" मेरा अंतर अचानक ही प्रसन्न हो कर बोला था . "देश–भक्तों के चरण उस धरती पर पड़े हैं .....और वो धन्य है .....!!"

फिर मैं अनवरत ही एक शोर सुनने लगा था, "इन्कलाब – जिंदाबाद . ....!!" "वन्दे – मातरम ....!!" "सुजलाम ....सुफलाम् .....मलयज –शीतलाम . .....!!"

एक निमंत्रण मुझ तक पहुँच गया था . एक आवाज मेरे भीतर भूत की तरह भर गई थी . मेरा मन भाग कर कलकत्ता पहुँच गया था . मैं भूल गया था ...कि मैं ....यहाँ ....अपने परिवार के साथ में रह रहा था! मुझे याद ही न रहा था कि जसोदा बैन के साथ मेरी शादी तक हो चुकी थी!!

"कैसे पहुंचोगे, कलकत्ता .....?" बस एक ही प्रश्न मेरे सामने था .....!!

ये एक जटिल प्रश्न था . जाने के लिए जो धन दरकार था – मुझे मालूम ही न था! मैं वहां कभी गया कब था ...? वैसे भी मेरे पास था क्या .....? मन ने तो कहा – अठावले से सहायता मांगलो! पर मैं ही नांट गया था . मैं नहीं चाहता था कि ....अपने इस सूझे अभीष्ट –कलकत्ता की मैं किसी से बात तक करू . में तो अकेला ही ...वहां उड़ कर पहुँच जाना चाहता था! मैं चाहता था कि ...कलकत्ता जाते ही मैं ....पहले–पहल रास बिहारी बोस की रूह से मिलूँ .....और उस के साथ बैठ कर एक नई मशाल जलाने का मशविरा करू ....!!

जैसे मैं नींद के नशे में .....अपने इस अभिसार –पथ पर अग्रसर हो रहा था ....हर रोज .!!

"रोज–रोज रेल गाड़ियाँ ...आती हैं!!" मेरा खिलंदड मन ललकार कर बोला था – एक दिन . "पागल! किसी में भी कूद कर सवार हो जाओ ... ..! कहीं –न– कहीं तो ले ही जाएगी .....!!"

"टिकिट ......?"

"छोडो भी ....ये टिकिट का चौंचला, यार!"

"नहीं! मैं टिकिट खरीद कर ही ....."

जो भी था – पर मैं तो कलकत्ता जाने का निर्णय कर ही बैठा .

तब मेरी उम्र कुल सोलह–सत्रह की थी! तब मैं एक दुध –मुहां बच्चा ही तो था ....!! तब मैं अपने खेलने–खाने की उम्र के साथ खड़ा था . लेकिन न जाने क्यूं मेरा मन ही न था कि मैं इस तरह के इन झंझटों को पालूँ .....

मेरा तो कोई पथ –प्रदर्शक भी न था! में निपट अकेला ही अपने भाव और भावनाओं के साथ था! और मुझे कोई डर भी न था . मुझे कोई झिझक भी न थी . मुझे अब केवल जुगांतर ....अनुशीलन .....रास बिहारी बोस ....राम

प्रसाद बिस्मिल .....और उन के दिए नाम और नारे ही याद थे . मुझे अपनी यही यात्रा – मेरी अपनी यात्रा लगी थी . उठाया ये कदम मुझे बहुत अपना–सा लगा था! मेरी आत्मा बेहद प्रसन्न थी . मेरा मन प्रफुल्लित था . न मुझे अब भूख का डर था – न प्यास का! न मुझे अब गरीबी सता रही थी ....और न ही अब मुझे अमीरी से कोई शिकायत थी . में तो किसी और ही संसार में प्रवेश पा गया था .....!!

मेरे कलकत्ता जाने की खबर किसी के पास नहीं थी!

मैं रेल–गाडी में बैठा था . मुझे उस रेल–गाडी का न तो नाम पता था ....और न ही उस का गंतव्य ....! मैं चाह रहा था कि पहले चुप–चाप मैं इस ....मनहूस ....वडनगर को छोड़ कर ....कहीं भी ....किसी भी दिशा में .....पहुँच जाऊं . तब ....कहीं जा कर ....मैं इस कलकत्ता को खोजूंगा –कोलंबस की तरह ....!!

मेरे पास अन्य यात्रियों की तरह कोई लगेज न था!

मैं अपने इस लगेज को घर पर छोड़ कर ही तो भागा था! मैंने सोच–समझ कर ही सब त्याग दिया था! मैं बंधन–मुक्त हो कर ही घर से निकला था . मुझे अब न कोई दरकार थी .....और न कोई सरोकार .....!!

लेकिन जल्दी ही मेरा यात्रा का चाव ठंडा पड़ने लगा था . नींद के साथ भूख भी सताने लगी थी . मेरा साहस भी साथ छोड़ने लगा था . मेरी कच्ची–कच्ची भावनाएं भी मुझे अकेला छोड़ गईं थीं . अब मेरा मन भी मुझे धिक्कारने लगा था! एक अकाट्य चिंता ने मुझे आ कर घेर लिया था!

"यों .....अकेले .....कब तक भटकते रहोगे, नरेन्द्र ....?" मैंने प्रश्न सुना था . "ये तो कोई बात नहीं .....बनी .....!!" अब की बार एक उल्हाना साथ आया था . "पागल बन गए, तुम ......"

"तो ....?"

"कहीं काम ढूंढ लो ....! किसी भी चाय की दूकान पर ....?"

मैं हंस पड़ा था! यह वही गुलामी का मंत्र था! ये वही चक्की थी – जो मुझ से फिर से बैल बनने को कह रही थी .

"नहीं! में अब चाय नहीं बेचूंगा!" मैं नांट गया था .

"तो ......? कौन शहंशाह बनोगे ......?"

"हाँ! में अब शहंशाह ही बनूँगा .....!!"

अब की बार मैंने दीर्घ स्वर में पुकारा था . मैं अभी तक हारा न था!

"फकीर हो .....?" एक वृद्ध आदमी ने मेरे कंधे पर हाथ रख कर पूछा था . "लगते तो कोई दरवेश हो, बेटे .....!" उन का स्वर सौहार्द में डूबा था . "कहो तो मैं तुम्हें आश्रम में छोड़ दूं ...?" उन का सुझाव था .

"कौनसा आश्रम .....?"

"राम–कृष्ण आश्रम ......! तुम्हें वहां ....तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर मिल जाएंगे .....!!"

और में उन के साथ–साथ राम–कृष्ण मिशन आश्रम चला गया था .....!!

13

क्या आपने भगवान् को देखा है?

मेरे लिए ये सब से कठिन संक्रमण काल चल रहा था!

वडनगर से भाग कर मैं कलकत्ता पहुँच गया था!!

आश्रम के मठ, मंदिर, स्कूल ...और अस्पताल की भव्यता को देख कर मैं बेहोश हो गया था! गंगा के निर्मल नीर की तरह ही यहाँ मानव –कल्याण की पवित्र भावनाओं की धाराओं को बहते देख मेरा मन तृप्त हो गया था . अंतर–बाहर से भीगा–पसीजा मैं उस काल–खंड को पकड़ कर खड़ा हो गया था! मैं चाहने लगा था कि ...सब ...और सारा शुभ ...इसी काल–खंड में घट जाए ...मेरी आँखों के सामने से सब गुजरे .....मुझे छू कर निकले . ....और मैं इसी में पूर्ण रूप से समाहित हो जाऊं!!

गुरु थे . उन्होंने भगवा वस्त्र पहने थे . उन के रूप–स्वरुप स्वामी विवेकानंद से मेल खाते थे . वो उन्हीं जैसे आचरण करते थे . उन की जुबांन पर वेदांत धरा था . उन की आत्माएं परमात्मा के रंग में रंगी थीं . वे देव–स्वरुप थे ....प्रेरणा –श्रोत थे! मैं उन के आदर में आँखें बिछाए उन्हें निहारता .... .और निहारता ही चला जाता!

पूरा आश्रम अपनी संरचना में 'क्रास' के आकार पर बना था . इस से प्रतीत होता था कि ....ब्रिटिश साम्राज्य का वरद हस्त अवश्य ही इस आश्रम के सर पर रहा होगा! मठ का मंदिर भी भव्यता के साथ–साथ एक अलग से दिव्यता लिए हुए था! उस मठ की काया में सर्व–धर्म समन्वय –जैसा भाव परलक्षित होता था! हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई ....और यहाँ तक कि ....बुद्ध का शुद्ध दर्शन भी ....इस मठ का एक हिस्सा थे! मैंने डोल–डोल

कर आश्रम को देखा था ....लेकिन किसी जात–पाँत ....या उंच–नीच का लेशमात्र चिन्ह भी मुझे द्रष्टिगोचर नहीं हुआ था!!

इन परमब्राज्य पुरूषों ...और साध्वीयों के लिए 'मानव' ही एक मात्र 'भाव' था! मानव –सेवा ही उन का शुद्ध और सात्विकी धर्म था . यहाँ किसी भी मनुष्य से उस के कुल–गोत्र ...या जाति –बिरादरी के बारे प्रश्न नहीं पूछे जाते थे! यहाँ सब समान थे .....सब परमात्मा के बनाए इन्सान थे ....और सभी बराबर थे!

विचार की श्रेष्ठता पर मेरा मन निछावर हो गया था!!

स्वामी विवेकानंद के मंदिर के सामने खड़ा–खड़ा मैं बहुत देर तक उन के अंदर तक झांकने का प्रयत्न करता रहा था . कारण– मुझे लगा था जैसे .....मैं कहीं ....कच्चे–कच्चे पलों में ...इन स्वामी जी को ही .....अपना इष्ट मान बैठा होऊं ....? मुझे लगा था कि ...ये महान पुरुष ....मेरे भीतर कहीं बैठा था ....और मेरा और इन का जरूर ही कोई अकाटय सम्बन्ध था!!

''क्या आपने भगवान् को देखा है ...?'' ये प्रश्न था – जो अबोध नरेन्द्र दत्त ने अपनी पहली ही मुलाकात में श्रद्धेय श्री रामकृष्ण परमहंस से पूछा था .

तब नरेन्द्र दत्त –बाद में स्वामी विवेकानंद, क्रिश्चियन कालेज के छात्र थे . उन का मन तभी से वेदांत में रमने लगा था! वह हर गुरु से यही प्रश्न करते थे . उन के इंग्लिश टीचर ने तब उन्हें परामर्श दिया था कि वो अगर श्री रामकृष्ण परमहंस से जा कर ये प्रश्न पूछेंगे तो उन्हें इस का उत्तर अवश्य ही मिलेगा!!

''मैं उन का शिष्य हूँ . मेरी उन में अपार श्रद्धा है . अगर तुम चाहो तो ......?'' उन का सुझाव था .

युवा नरेन्द्र दत्त ने देर न की थी . वो सीधे श्री रामकृष्ण परमहंस के आश्रम पहुंचे थे . उन से भेंट होने पर ....उन का पहला प्रश्न वही था . ''क्या आपने भगवान को देखा है ....?'' वो पूछ बैठे थे .

श्री रामकृष्ण परमहंस की स्नेह सिक्त द्रष्टि ने इस अबोध युवक को बड़े ही लाड के साथ देखा था ....परखा था .....और फिर पास बिठा लिया था . लम्बे लम्हों तक वो नरेन्द्र दत्त को निहारते रहे थे . उन्हें लगा था .....कि

उन का उत्तराधिकारी ...उन के पास पहुँच गया था! उन की द्रष्टि में उस दिन अपार सुख के उदगम उगे थे!!

''हाँ! मैंने भगवान् को देखा है!'' श्री रामकृष्ण परमहंस ने उत्तर दिया था .

पहली बार नरेन्द्र दत्त को उन के दिए उत्तर पर अविश्वास नहीं हुआ था!

''कहाँ देखा है ....?'' वह प्रमाण चाहने लगे थे .

''यहीं देखा है ....!'' गुरु हँसे थे . ''अभी ....अभी देखा है!'' वो फिर से विहँसे थे . ''और अब ....मैं उन के साथ बातें कर रहा हूँ ....!''

''मैं नहीं समझा .....''

''तो समझो ...! मैं और तुम ....दोनों ही भगवान् हैं .....और इन्सान भी हैं! हम एक नहीं – दो हैं! आत्मा ...और परमात्मा – हम दोनों हैं! हाँ, हमारी आत्माएं अलग–अलग हैं ...पर परमात्मा एक है! तुम मेरे परमात्मा हो .....और मैं तुम्हारा परमात्मा हूँ!! आत्माओं में हम दो हैं ....अलग–अलग हैं ....''

क्या उत्तर था ....? कैसे गजब की अभिव्यक्ति थी! कैसा तेज था .... लावण्य था ....सौहार्द था ...कुछ था ....और थी प्रार्थना ....! गदगद हुए नरेन्द्र दत्त ने गुरु जी के चरण छू लिए थे ....!!

''मैं आप का शिष्य बनूँगा .....'' उन का आग्रह था .

''मुझे तो तुम्हारा ही इन्तजार था, नरेन्द्र!'' वह बोल रहे थे . ''न जाने कब से ....आँखें पसारे मैं ....तुम्हारे इन्तजार में बैठा हूँ! हाँ! मुझे विस्वास था ....कि तुम एक दिन चल कर स्वयं मुझ तक पहुंचोगे ....

''आप ये सब कैसे ....?''

''सब अज्ञात ....ज्ञात होता है, नरेन्द्र! सब पूर्व निर्धारित है ....!! वेदांत यही तो बताता है कि .....सब कुछ काल– चक्र के साथ–साथ घूमता है .. .और सही अवसर आने पर घटता है ....! और फिर माया सब कुछ समेटती रहती है ....!!''

''कहाँ खोये ....हो, बेटे ....?'' मुझे किसी ने पुकारा था .

मेरा सोच टूटा था . मैं यथार्थ में लौटा था . मैं गदगद था . मैं आत्मविभोर था . मेरी आँखें नम थीं . मेरी आत्मा प्रसन्न थी . मैं अब एक नहीं ...अनेक था ....! मैं क्या था .....शायद मुझे इस का उत्तर भी मिल गया था ....!!

मैं और युवा नरेन्द्र दत्त अब एक ही स्थान पर बराबर खड़े थे ....!!

14

जिस की लाठी उसी की भैंस!!

''मानव कल्याण के लिए काम करोगे ...?'' मुझे पूछा गया था .

बहुत गहरा प्रश्न था – यह!!

मानव कल्याण के लिए काम करना – एक श्रेष्ठ कर्म था– मैं जानता था! लेकिन 'कर्म' की परिभाषा क्या होगी, मैं नहीं जानता था . उस कर्म के तहत मुझे और कितने कर्म करने होंगे, विदित नहीं था . मानव कल्याण का मंत्र भी अभी तक मेरी समझ में न समाया था . अभी तक तो मैं उस आश्रम की भव्यता और दिव्यता के दर्शन कर आत्म–विभोर ही बना हुआ था!

''स्वामी विवेकानंद एक परब्राज्य थे . उन्होंने सर्व प्रथम भारत भ्रमण किया था . वो निकले थे और जन–मानस के बीच जा कर खो गए थे . उन्होंने जन–मानस के दुखों को छुआ था ....उन्हें समझा था ....पहचाना था . उन्हें ज्ञात हुआ था कि ...जन–मानस एक गहरे अंध–कूप में जाकर औंधा आ पड़ा था! न उसे खाने की सुध थी ...न पीने की . न उसे कोई समझ थी ....न उस का कोई सोच था! उस का अपना तो कुछ था ही नहीं!''

''अब भी कौन सा सुधार हो गया है ....?'' मैंने भभक कर प्रश्न किया था . आज भी बदला क्या है ...? मैं वडनगर से भागा क्यों हूँ ...?''

''भारत भ्रमण पर हो! देखो ....समझो ....सोचो ...! पूछो प्रश्न . नरेन्द्र दत्त की तरह तुम भी पूछो कि ...भगवान रहता कहाँ है ....?''

''किसी झोंपड़ी में पड़ा होगा ...!'' मैंने उत्तर दिया था . ''महलों में तो महान लोग रहते हैं! सत्ता में बने लोग स्वयं से आगे कुछ सोचते कहाँ हैं ...? भगवान् उन के लिए तो कूड़ा है...कचरा है! कौनसा वेदान्त जानते हैं

...वो ...? कौनसा जन–कल्याण याद आता है, उन्हें ? अरे, जिस की लाठी – उसी की भैंस!''

न जाने कहाँ से एक चूक खट्टा स्वाद मेरी जुबान पर आ बैठा था ...?

''वो लोग कहाँ हैं ...जिन की तलाश में ...मैं आया था ...?'' मैं अब स्वयं से प्रश्न पूछ रहा था . ''कहाँ रहते होंगे ...रास बिहारी बोस ...सुभाश चन्द्र बोस ....खुदी राम ...और कहाँ है अनुशीलन ...और जुगांतर का ऑफिस ... .?'' मेरी जिज्ञासा अब नए सबूत मांगने लगी थी . ''उन को में कहाँ ढूँढूं ....कैसे ढूँढूं ...?'' मैं सोच में पड गया था .

''हम यहाँ वेदांत की शिक्षा –दीक्षा देते हैं .'' मुनि ज्ञानेश्वर मुझे बता रहे थे . ''एक बार तुम्हारी समझ में जिन्दगी जीने का समीकरण आ जाए . ..तब और सब समझना आसान होगा!'' उन का सुझाव था . ''आदमी को अपने लिए नहीं ....औरों के लिए जीना चाहिए!'' वो हँसे थे . ''इस जीने का आनंद ही अलग है, बेटे! निरानंद इस जीवन को जीने का जो आनंद ... आता है ...वह किसी भी अन्य ऐश्वर्य से आगे है! इसे खरीदा नहीं जा सकता है ...इसे तो प्राप्त करना होता है!'' उन्होंने मेरी आँखों में देखा था . ''अगर तुम चाहो तो ....तुम भी विवेकानंद की तरह ही .....?''

मैं चुप था . अभी तक मैंने स्वामी जी का चोंगा ओढ कर अलख जगाने के बारे सोचा ही न था! अभी तक तो मैं स्वामी जी से पूर्ण साक्षात्कार भी न कर पाया था . अभी तक मेरे जहन में तो गहरे शक कुंडली मारे बैठे थे!

''स्वामी जी ...क्या कर पाए ....?'' मैंने मुड कर प्रहार किया था .

''उन्हें जीवन ही कितना मिला ...? जब वो सक्षम हुए तो ....''

''लेकिन ....''

'लेकिन क्या, वत्स! कुल ...६ वर्ष की आयु में ही उन का देहांत हो गया था! वह स्वयं स्वीकार कर गए हैं ....कि मैं ...अभागा रहा! मैं तो चाहता था कि ...अपने जैसे ही १००० परब्राज्य पैदा करू ...और तब जंग का ऐलान करू ....!''

''कौनसी ...जंग ...?'' मैंने पूछा था .

लेकिन मेरे प्रश्न का उत्तर ज्ञानेश्वर महाराज की आँखों में उग आए आंसूओं ने दिया था . स्वामी विवेकानंद की अकाल म्रत्यु का सदमा उन्हें

सताने लगा था! मैं भी अब गमगीन था . मैं भी अब रोना चाहता था . मैं भी चाहता था ...कि ...

''अधूरा रह गया, उन का मिशन, नरेन्द्र!'' संत ज्ञानेश्वर टीस आये थे . ''तुम ...उन के सामान ...उन के बराबर ...उन्ही का नाम लेकर ...इस आश्रम में ...उन्हीं की तरह ...अचानक आए हो! न जाने क्यों मेरा मन तुम से आग्रह करना चाहता है ...कि ...तुम ....''

''मैं भी चाहता तो हूँ ....पर ...'' मेरे होंठ बंद थे ....मैं चुप था!

स्वामी विवेकानंद एक संभ्रांत परिवार में पैदा हुए थे . उन के पिता कलकत्ता के जाने–माने अटोर्नी थे . उन की माँ – भुवनेश्वरी विदुषी थीं . उन्होंने शिक्षा क्रिश्चियन कालेज में प्राप्त की थी . वो ग्रेजूएट थे . वो .....

''कौनसी गिनती गिन रहे हो, नरेन्द्र ....?''

''यही कि ...मैं ...उन के समकक्ष नहीं हूँ ....!''

''क्यों ...?''

''क्यों कि .....मैं किन्हीं और ही आदमियों की तलाश में कलकत्ता आया था ...! मैं इस लिए आया था कि ....''

''व्यापारी हो ....?''

''नहीं! हूँ तो मैं सदाचारी ...पर ....''

''चलो, सोच लो ....'' वह चले गए थे .

मेरी तब जान में जान लौटी थी . मैंने एक लंबी उसांस को अपने भीतर भरा था . लगा था – मैं एक खतरे से टकरा कर बाल–बाल बचा हूँ . लगा था – मेरी टक्कर अभी–अभी जो वेदांत के साथ हुई थी ....उस में ...मैं परस्त नहीं हुआ हूँ!

मैं बिन भीगा ...गंगा के किनारे खड़ा ...खड़ा उस के पवित्र नीर को निगाहें भर–भर कर देखता रहा था अनंतर ...!!

15

क्या मैं अकेला ही रहूँगा?

मुझे एक और तथ्य मिला था . लिखा था – मार्टन बर्न, एंड कंपनी ने इस पीठ की संरचना की थी . इस पीठ को बनाने में इस कंपनी का बड़ा हाथ रहा था . इस के चीफ इंजिनियर भी स्वामी विवेकानंद की तरह के परव्राज्य थे . आश्रम और मिशन एक नहीं – दो थे! हालांकि उन दोनों का उद्देश्य एक था! पर संचालन तो दो तरह से होता था . मिशन के स्कूल में अस्पताल थे, यूनिवर्सिटी थीं ....और भी बहुत सारी संस्थाएं थीं . विदेश में भी मिशन की शाखाएं थीं . स्वामी जी को भारत ही नहीं पूरा विश्व ही जान गया था!!

1893 में स्वामी जी के विश्व पार्लियामेंट ऑफ रिलीजन्स में दिये वकतव्य के अंश ... मैं एक शिला–लेख के सामने खड़ा पढ़ रहा था . "मानव धर्म एक है ....इश्वर अंश एक है!" उन्होंने कहा था . लोगों ने तब स्वामी जी को एक आश्चर्य की तरह देखा था . भारत से आया एक सन्यासी शुद्ध अंग्रेजी भाषा में अपने जटिल विचारों को कितनी सुगमता से कहे जा रहा था! "प्रभु में हम सब का बराबर –बराबर का साझा है . अल्ला हो ...राम हो ....ईशा हो या मूसा ...., वह एक है –अनेक नहीं! मेरे गुरू कहते थे – मैं और तुम दोनों ही परमात्मा हैं! हमारे आत्मा अलग है ...पर परमात्मा तो एक है!!"

कितना सच था! कितना सटीक था – उन का दर्शन! कितना अटल सत्य था! पर वेदांत का ज्ञान कुल मिला कर मुझे अव्यावहारिक लगा था! हम वेदांत को अमल में लाते कहाँ थे ? सांसारिक समस्याएँ सुलझाने के लिए तो हम कुल्हाड़ी, गंडासे ...तलवारें ....तोपों और टेंकों का सहारा लेते थे! हम अपने स्वार्थ के लिए पंजे फैला–फैला कर लड़ते थे ...एक दूसरे की

जान तक ले लेते थे! कहाँ थी वेदांत की बताई 'दया' ...कहाँ था वेदांत का बताया 'परोपकार' ....और कहाँ था वेदांत का प्रचारित –दर्शन जो प्रभु को एक मात्र पाने की बात करता था ?

अपनी –अपनी ढपली ...और अपना–अपना राग! यही तो चल रहा था ....यही तो घट रहा था! 'स्वयं' को पोषने का क्रम जोरों पर था . समाज मुझे तो उलटी दिशा में जाता लग रहा था! 'धर्म' को मात्र एक बहाने के रूप में इस्तेमाल करना लोगों ने सीख लिया था! एक खुराक की तरह लोग 'धर्म' को खा कर पचा जाते थे और सारे कुकर्म कर फिर उसी की शरण में लौट आते थे!

कुकर्मियों को ...विधर्मियों को ...अनाचारियों को ....और अत्याचारिओं को प्रचारित करने के लिए कहाँ बैठा था – इश्वर... ? इश्वर तो उन्हें अपनी शरण में ले कर अभय दान दे रहा था! न्याय–अन्याय को तौलने के लिए समाज में कोई कानून ही नहीं बना था!

मैं वेदान्त को गलत नहीं मान रहा था! मैं तो केवल उस की व्यावहारिकता पर प्रश्न चिन्ह लगा रहा था!! मैं चाह रहा था कि मुझे कोई ऐसा विकल्प मिले ...जो मेरे भीतर छुपी अभिलाषाओं के अनुरूप हो!

"तीन साल तक स्वामी विवेकानंद यूरोप ...अमेरिका ....और आस–पास के देशों में भ्रमण करते रहे थे! उन का वेदांत इतना प्रसिद्ध हुआ था कि लोग उन के शिष्य बन गए थे . बहुत सारे धनी –मानी लोगों ने उन्हें अनुदान दिए थे . और उन की एक अनुयाई ...सिस्टर निवेदिता ...तो ..."

"उन के लिए भारत चली आई थी ...?"

"हाँ! और फिर लौटी ही नहीं ....!! उन्होंने स्वामी जी की बहुत सेवा की ....और ...."

अचानक ही मुझे जसोदा बैन का ध्यान आया था! अचानक ही मैं हिल गया था . न जाने क्यों एक अपराध बोध मुझे परेशान करने लगा था!

"कोई सम्बन्ध था ....उन का ....?" मैंने पूछ लिया था .

"ऐसे सम्बन्ध तमाम सांसारिक संबंधों के परे होते हैं, नरेन्द्र! इन संबंधों को परिभाषित नहीं किया जा सकता! इन की तो व्याख्या ही अलग होती है! ये स्वेच्छा के ऊपर बने सम्बन्ध होते हैं ....जिन में उत्सर्ग की भावना ही

श्रेष्ठ होती है! घाटा–मुनाफा देखने वाला कोई व्यक्ति इन जैसे संबंधों का पालन नहीं कर सकता!"

"स्त्री ....और ...पुरुष के सम्बन्ध .....?" मैंने फिर से प्रश्न चिन्ह लगाया था . "मेरे ....और यशोदा बैन के सम्बन्ध .....?" मैंने अब स्वयं से पूछा था . "क्या मैं अकेला ही रहूँगा ....?" मैं अब व्यथित था . "क्या आदमी की उम्र . ..बिना किसी नारी के दखल के ....पूरी नहीं हो सकती ...?"

नारी–गत वेदान्त ...शायद एक अलग ही वेदान्त था! इस वेदान्त को समझने के लिए ...किसी नारी–मन से पूछना आवश्यक था!!

लेकिन मैं तो जशोदा बैन से अलग था .....दूर था ....बहुत दूर ....!!

16

मैनका!

अपने जटिल प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए मैं अब शारदा मंदिर की सीढ़ियों पर बैठा था!

मैं अब माँ शारदा से विनम्र प्रार्थना कर रहा था कि वो अब मुझे ऐसा वरदान दें ....कि मैं स्त्री–मन के अथाह समुद्र से कुछ मोती चुन लूं ....जो दुर्लभ हों ....कारगर हों ...मेरे काम आने वाले हों ....और मेरे पथ–प्रदर्शक बनने वाले हों!

"मेरी शादी ...कुल पांच साल की उम्र में इन के साथ संपन्न हुई थी, नरेन्द्र!" माँ कहने लगीं थीं . और मुझे लगा था जैसे मेरे ऊपर उन की असीम अनुकम्पा थी . मुझे लगा था – वो मेरी शुभचिंतक थीं . "मुझे तो स्वयं याद नहीं ....और न मैं तब 'शादी' शब्द का अर्थ ही समझती थी! मेरे पिता एक गरीब ब्राह्मण थे . उन्होंने इन्हें एक योग्य वर मान कर मेरी शादी कर दी थी ....ताकि वो अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त हो जाएं! बहुत बीमार रहते थे, न ...!"

"आपने ....मेरा मतलब .....आपने ....?" मैं कांपते कंठ से उन के किसी किए विरोध के बारे पूछ लेना चाहता था . "इस तरह के ....बाल–विवाह .. ..के ...."

"मुझे क्या समझ थी ....?" अब की बार वो विहंस कर बोलीं थीं . "तब चलन यही था . माँ –बाप कोई अच्छा घर–घराना ढूंढ कर बच्चों के रिश्ते तय कर देते थे . बड़े हो कर बच्चे उन्हें स्वीकार लेते थे .....और अपना जीवन निर्वाह बिना किसी चूं –चपट के करते थे . माता–पिता की आज्ञा . ..उन दिनों ...भगवान के आदेश जैसी थी, नरेन्द्र!"

"होगी .....जरूर होगी ....!" मैं मान लेता हूँ . मैं मुड कर देखता हूँ ... .कि किस तरह मेरे घोर विरोध के बावजूद भी ....बाबू जी मेरी शादी कर बैठे थे ....और मैं मुंह तक न खोल पाया था!

"और जब मुझे समझ आई तो ....द्रश्य ही बदल चुका था!" वह फिर से बताने लगती हैं .

"कैसे ....?" मैं जिज्ञासा वश पूछ लेता हूँ .

"ये तो ....सन्यासी बन गए थे! इन के किस्से–कहानी तो ....पूरे देश–विदेश में ...डोल–डोल कर ...इन की ख्याति –विख्याति बता रहे थे . काली माँ के परम भक्त ....श्री रामकृष्ण परमहंस ....दुनियां के दुःख–दर्द बाँट रहे थे .... समाज की सेवा कर रहे थे ....और अपनी भक्ति में पूर्णतः लींन थे! इन्हें दींन दुनियां तक की सुध नहीं थी . ये तो अपना आगत–विगत ....सब भूले बैठे थे! ये तो वहां थे .....जहाँ ....मैं द्रष्टि भर कर इन्हें देख तक नहीं सकती थी!"

"क्यों .....?"

"क्यों कि ....मैं थी ....क्या ....? एक सोलह साल की युवती को क्या समझ होती है, नरेन्द्र!" वो फिर से मुस्कराइं थीं . " वो उम्र ही कुछ और होती है!" वो पूरे मनोयोग से बता रहीं थीं . "स्त्री के लिए ...सोलह साल की उम्र के ....अलग ही अर्थ होते हैं! अब तो तुम भी जानते हो, नरेन्द्र कि .... एक सोलह साल की युवती के सपने ....कितने रंगीन ....कितने चपल .... कितने रस–सिक्त .....और कितने मोहक होते हैं ....? उस का तन–मन तो पपीहे की तरह ....'पिया–पिया' पुकारने लगता है . और उस का अंग–अंग भी तो ....पिया का ही संग माँगने लगता है......!"

"आपने ....? मेरा मतलब कि .....आपने ....."

"मैंने तब .....उस सोलह साल की उम्र में .....साध्वी बनने का ब्रत लिया था! मैंने तब ठानली थी ....कि मैं इन से मिलूंगी .....और मैं इन से प्रार्थना करूंगी .....कि ....."

"विचित्र ही था .....आप का संकल्प ....और ....."

"बहुत विचित्र .....!!" वो उत्साहित हो बता रहीं थीं . "सब ने रोका ... ...सब ने टोका ....! और सब ने ही मुझे बताया कि ....मैं अब अपने पति के

योग्य नहीं रह गई थी ....! लोगों ने मुझे पागल तक कहा ....! और यह भी कहा कि ....जो मैं चाह रही थी – वो तो सर्वथा असंभव ....ही था!"

"फिर ......?" डरते–डरते मैंने पूछा था .

"फिर क्या .....?" उन्होंने मुझे स्नेह पूर्वक देखा था . "मैंने अपने आप को ही संभाला ....समझाया ......और फिर अपने अंग–वस्त्र उठा कर ....इन के आगार में चली आई ...!"

"आप ......?" मैं अपना बचा–खुचा होश संभाल कर पूछता हूँ . " रामकृ ष्ण ....परमहंस ....के ....?"

"हाँ! अपने परमहंस पति के सामने मैं .....लाखों तरह से रोकने के बाद भी ......आ खड़ी हुई थी!! तमाम होते विरोध को बाजू धकेल कर मैं ....अब इन के सामने खड़ी थी!!! इन्होने ....मेरी और ....देखा भर था . 'मैं आप की पत्नी ....शारदा हूँ!' मैंने इन से कहा था ."

इन की आँखें फटी–की–फटी रह गईं थीं!

"मेरा तप भंग करने आई हो, मैनका .....?" जैसे ये मुझ से पूछ रहे थे .

"नहीं ...! अपना हक लेने आई हूँ!" मैंने स्पष्ट शब्दों में कहा था . "एक पत्नी का हक मुझे आप से चाहिए, महात्मा .....!" मैंने विनय पूर्वक कहा था .

और सच में ही नरेन्द्र, ! मुझे मेरा हक मिल गया था!! सच्ची मुरादें हमेशा ही मिल जाती हैं, बेटे!!!

17

मूर्ख शेर और चालाक लोमड़ी!!

"चोर से पहले चोर की माँ को मारो – का फतवा जारी हो चुका है!" अमित मुझे बता रहा था . "सब हमारे खिलाफ हैं ." वह हंसा था .

"मसलन कि .....?" मैंने पूछ लिया था . जानता तो मैं सब था . पर मैं चाहता था कि ...हर बात एक दस्तावेज बन जाय ...दर्ज हो जाय ....ताकि हमें चेतावनी मिलती रहे! समय बहुत ही तेज रफ्तार से बदल रहा था!!

"मसलन कि ...प्रेस....मीडिया ...तमाम एन जी ओज ....देश....विदेश ... नेता, अभिनेत ...और यहाँ तक कि समूचा सरकारी तंत्र ...हमारी खिलाफत में आ खड़ा हुआ है!" अमित का चेहरा लाल हो आया था . "आई ....डोंट . ...नो ...." वह अब अपनी उंगलियां मसल रहा था .....घोर निराशा से लड़ रहा था!

"तो हम ये जाने कि हमारे पक्ष में है –क्या ....? कौन हैं – जिन के लिए हम ये जंग लड़ें ....?"

"जनता ....!" अमित का उत्तर था . सटीक उत्तर था . सही उत्तर था . एक ठोस सच था! "जनता ...तुम्हें ...चाहती है! जनता के तुम कर्णधार बन चुके हो, नरेन्द्र!! और जो हमें जनता से मिल रहा है ...."

"पर जनता के हाथ में है, क्या ....?"

"सब कुछ जनता के हाथ में ही तो है ....?"अमित हंसा था . "हमारे पूर्वज यही खेल खेल कर तो गए हैं ...! अगर हम ध्यान पूर्वक देखें ....सोचें ...समझें ....तो ..जनता से ज्यादा ताकतवर और है कौन ...? इमरजेंसी ... लगाने पर क्या हुआ था ..., याद है, न ?"

लेकिन मैं सोच में पड गया था . यों तो मैं प्रसन्न था कि ...जनता ने ही मुझे चुना था ...देश के लोग मुझे चाहने लगे थे ...मेरा नाम उन की जुबां पर चढ़ गया था ...और मैं अब उन का मसीहा बन चुका था! लेकिन ...बीच में जो व्यवधान था ...जो शक्तिशाली लोग थे ...जिन को हर कीमत पर सत्ता चाहिए थी ...जो सौदाई थे ...और हर कीमत देने को तैयार थे ....उन का मुकाबला ...कर पाना ...?

कितने ही पीछे ...नहीं खप गए हैं ...इस सत्ता के मोल–तोल में ....? मुझे अचानक ही श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह याद हो आए थे . कितना भारी बहुमत मिला था – उन्हें ...? किस कदर देश ने उन्हें कन्धों पर उठा लिया था! वो कुर्सी पर जा ही बैठे थे!! लेकिन ....

"कांग्रेस ....?" मेरे जहन में ये शब्द घोड़े की तरह उग आया था! "कांग्रेस ....सत्ता नहीं छोड़ेगी ...किसी भी हाल में ...." मुझे मेरा मन बता रहा था . "आज विश्वनाथ प्रताप सिंह का कोई नाम तक नहीं लेता, नरेन्द्र! तुम हो क्या ....? तुम किस खेत की मूली हो ....?"

"शेर ....और लोमड़ी का शो – शुरू हो चुका है!" अमित तनिक हंसा था . "सत्ता –महत्ता ...पाने–खोने के द्वन्द में ....हमेशा शेर और लोमड़ी ही लड़ा करते हैं! मूर्ख शेर ....और चालाक लोमड़ी ....."

"तुम मुझे मूर्ख कह रहे हो .....?" मैं बिगड़ा था .

"तो क्या तुम ....शेर हो ....?"अमित ने चुहल की थी . "शीशे में मुंह तो ...देखलो, मेरे भाई!" और वह हंस पड़ा था .

मैं अमित का कायल था . मैं अमित का प्रशंसक था ....मैं अमित का अगुआ था ...अनुकरणीय था ...पर अमित मेरा इस से भी कहीं ज्यादा ...अजीज था! उस की स्पष्टवादिता का में कायल था! उस की अचूक द्रष्टि का मैं लोहा मानता था! मैं मानने लगा था कि ....शायद ..चाणक्य ...से भी ज्यादा बड़ा अमित था! उस के आंकड़े अमिट थे ...और उस का अनुमान हमेशा ही सही होता था!

अभी तक के हमारे राजनैतिक सफर में मुझे अमित कहीं भी छोटा हुआ नहीं लगा था! हमारी जीत–हार ...हमारे कर्तब और करतूतें ...सब अब शामिल थे! हम दो नहीं ....अब एक थे ...! एक जान थे ...एक मन थे ...और एक तन थे!!

"ये चोर की माँ ...कौन है ...?" मैंने फिर चुहल की थी .

"मैं हूँ ....!" अमित तपाक से बोला था . "अब मुझे मारा जाएगा ...अब मेरी कब्र खोदी जा रही है! फिर ....."

"अकेले और ....निहत्थे ...शेर को मारा जाएगा ....?" मैंने पूछा था .

"हाँ ....!" अमित ने स्वीकारा था . "लेकिन लोमड़ी ...यहीं मूं की खाएगी ...!" उस ने मुझे आँखों में घूरा था . "भयंकर ....गलती करेगी ....!!"

"कैसे ....? क्यूं ...?" मैं भी अब जानने को उत्सुक था .

"बदनाम होगी ....! रास्ता भूलेगी ....!! और मैं ....मरूंगा भी नहीं ...." '

"बात तो इस तरह कर रहे हो ..मानो ...कि ....."

"यही सच है, नरेन्द्र! जीत हमारी होगी ....."

"क्यों ....?"

"वह शेर से डर गई है! तभी तो मेरी और मुड़ी है ....!!" उस ने मुझे निरखा था . "और जो डर गया .....सो मर गया ...!!" वह खिलखिला कर हंसा था .

लोमड़ी का शेर से डरना तो स्वाभाविक ही था ....पर ...मैं अमित के तर्क को ठीक से समझ न पाया था . पर, हाँ! इतना तो मैं समझ गया था ...कि ...अब किसी भी हाल में मुझे मिटा दिया जाएगा! चूंकि मैं अब एक संभावना के स्वरुप में था ...सत्ता का दावेदार था ...योग्य ....और अनुभवी था ....इस लिए ही मुझे मिटा देना – लोमड़ी का राज–धर्म था!!

शायद अब तक का तो मेरा राजनैतिक सफर ...एक गुमनामी के गर्भ में हुआ था ...पर अब तो सब कुछ उजागर था!!

मैं कुछ नहीं था . मैं तो एक लावारिस लड़का था . फिर मैं एक प्रचारक था . फिर मैं एक सहयोगी था ...कार्यकर्ता था ...! मेरे न कोई आगे था ... .न कोई पीछे! अब तक तो मैं काम और नाम के पीछे रात–दिन डंडा ले कर दौड़ता रहा था . लोग मुझे इस्तेमाल कर लेते थे ...और मैं स्वेच्छा से उन का सहयोग करता था . जान तक लड़ा देता था – मैं ...अतः लोग मुझे बेहद पसंद करते थे! और धीरे–धीरे मेरा नाम बडा होने लगा था!

तब लोमड़ी को क्या पता था कि ...यहाँ ...किसी शेर का भी जन्म हो चूका था ...? उसे तो पता था ....नहीं, नहीं ...उसे विश्वास था ...कि जो उस के आस–पास था ...सब गीदड़ों की भोंग थी! गीदड़ चिल्लाते तो जरूर थे ....शोर भी मचाते थे ....और बचा–खुचा खा –खा कर मोद भी मनाते थे . ..लेकिन लोमड़ी की एक ही चली चाल पर न जाने कितने जानें दे बैठते थे!

कांग्रेस के लिए भारतीय जनता पार्टी एक बे–मामूल बात थी!

कहते थे – ये तो सिर्फ शहरियों की ही पार्टी है! व्यापारियों का शगुल है – ये पार्टी! अपनी मांगे मनवाने का एक प्लेट फॉर्म है – ये भारतीय जनता पार्टी! पहले इसे ही तो जन–संघ कहते थे ? इस के पढ़े–लिखे लोग ....हिंदी में कुछ बोलते रहते हैं ...! पर जनता इन्हें जानती कहाँ है . ...? कांग्रेस तो जन–जन की पार्टी है ...धरा–बेस की पार्टी है ...कांग्रेस! देश को आजादी दिलाने वाली पार्टी – कांग्रेस ही तो है! और फिर ये सब की पार्टी है . हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई ....सब की साझि पार्टी है – कांग्रेस!

कांग्रेस एक विचारधारा का नाम है! कांग्रेस गंगा की तरह ...पाप–मुक्त करने वाली पार्टी है!! कांग्रेस के नेताओं के नाम आसमान पर सितारों से जडे हैं – जन–मन को प्रफुल्लित करते रहते हैं! कांग्रेस ....

बाते तो सभी सही थीं ......

लेकिन अब बेटे का जूता ...बाप के पैर में आने लगा था!

"कांग्रेस बूढी हो गई है!" मैंने स्वयं से कहा था . "नेता तो गए ....अब नाम भी चला जाएगा! मैंने ये एक निष्कर्ष निकाला था . 'लड़ाई चाहे लोमड़ी जीते ...या कि शेर ...पर उस का परिणाम होगा वही ....जो वक्त चाहता है!!

"वक्त के मुताबिक ही मैंने पत्ते फैक दीए हैं ...!" अमित ने सूचना दी थी . "अगर तीर ठिकाने पर लगा तो ....देखना ...." वह हंसा था .

"हम भी तो जाने, मित्र ...कि ....?"

"मैं जनता में घुस रहा हूँ . मैं जनता से विनम्रता पूर्वक ...अपना हक मांगूंगा ....और मैं ले लूँगा!! अमित का सीधा–साधा उत्तर था .

18

मैं तो जंग चाहता हूँ!!

माँ शारदा ने भी तो विनय पूर्वक रामकृष्ण परमहंस– अपने पति से अपने पत्नी होने का हक माँगा था – मुझे अचानक आभास होता है ....कि अमित भी उन्ही की तरह ...शायद अपना हक पा लेगा!!

अब मैं चाह कर ...स्वेच्छा से अपने विगत में डोलने लगता हूँ . मैं चाहने लगता हूँ कि अपने विगत की भीनी–भीनी आंच में अपने बदन को सेकूं . एक ऊर्जा का पान करूं . एक सामर्थ का आव्हान करूं!

"आप को तो सब कुछ मिला, माँ!" मैं प्रसन्नता पूर्वक कहता हूँ . माँ सायास हंसती हैं . "मान–सनमान .... महत्ता ....और ....आज तो आप की पूजा होती है ....?"

"सब सहज नहीं मिला, नरेन्द्र!" माँ बताने लगती हैं . "सब मिला .... पर एक कठिन तपस्या के तहत ...."

"तपस्या ....?" मैं पूछता हूँ .

"हाँ! तपस्या ....! और तपस्या भी ....वो ...जो ..." माँ तनिक गंभीर थीं . "ये तो मुझे देखते ही सकते में आ गए थे! इन के पास तो मुझे संबोधन करने तक के लिए शब्द न थे! ये तो मुझे शाकिया निगाहों से घूरते ही जा रहे थे . इन्हें तो मैं ......"

"क्यों ....?"

"हमारा परिचय ही कहाँ था ....?" वह विंहस कर बता रही थीं . "हम मिले ही कहाँ थे ....? हम एक दूसरे को जानते कहाँ थे ...? इन्हें तो मैं तप भंग करने आई मैनका ही लगी थी! ये तो मुझे और दर्शन करने आई शिष्यों

की भीड़ को ...एक साथ ....और अपलक देखते ही रहे थे . पर जब मैं न टली थी ....और जब मैंने रोना–धोना आरम्भ कर दिया था ....तब जा कर पिघले थे – ये!"

"बैठो!" इन का आदेश था .

मैं इन के सामने बैठ गई थी . मुझे लगा था कि मैं एक समाधि के रूप में ...इन के सामने बैठी एक चुनौती थी! मैं इन के परमहंस स्वरुप को ... आँखें भर–भर कर निहार रही थी! मुझे इन की मंत्र पूत करती वाणी .... विधाता की भाषा जैसी लगी थी . मैं गदगद हो उठी थी!"

"देखो!" ये रुके थे . मुझे संबोधन करने के लिए इन्हें कुछ चाहिए था .

"शारदा ...!" मैंने अपना नाम इन्हें बताया था . "आप भूल गए होंगे .. ..मेरा नाम ....?" मैंने उलाहना भी दिया था .

"हाँ! शारदा ..." ये संभल गए थे . "देखो! मैं साधू हूँ ....मेरा एक स्थान है ...मैं गृहस्थ से मीलों दूर हूँ ...! और अगर तुम चाहो कि मैं ......"

"नहीं! मैं आप से कुछ लेने नहीं आई हूँ, ...स्वा ....मी!" मेरी जुबान फिर फिसल गई थी . "मैं तो आपके सामने समर्पण करने आई हूँ! अब आप जो ....आज्ञा दें ...."

"प्रथम ...तो ब्रह्मचर्य ...ही रहेगा ...हमारे बीच ....?" इन का आदेश आया था .

"मुझे स्वीकार है ...! मैं सहर्ष बोली थी .

"फिर सेवा ब्रत लेना होगा ....तुम्हें! सेवा ....समाज की सेवा ...दीन–दुखी की सेवा ...आश्रम की सेवा .....और ....और ...इस के सिवा मेरे पास तुम्हें देने के लिए ....कुछ भी नहीं है, शारदा! तुम चाहो तो .....?" इन्होने पहली बार मेरी आँखों में घूरा था . "तुम चाहो तो ....वापस चली जाओ ....?" अब ये संभल कर बोले थे . "मैं तुम्हें संन्यास लेने के लिए बाध्य नहीं कर रहा हूँ!"

"ये तो मन का सौदा है, स्वामी!" मेरी जुबान फिर फिसल गई थी . "मुझे संन्यास लेने में तनिक भी संकोच नहीं है! जब आपने वैराग्य को चुना है ....तो मेरा भी वही धर्म है! मैं भी वैराग्य ....."

"वैराग्य ....विपुल है, शारदा! वैराग्य ...सब से बड़ा ..ऐश्वर्य ...है!! पर इसे जानना ....और मानना दोनों ही बहुत कठिन हैं! तुम्हारी उम्र ....तुम्हारा

रूप–लावण्य ....तुम्हारा अल्हड मन ....और फिर बहती अपेक्षाओं की ....और आकांक्षाओं की बयार ....? "

"मैं सब सह लूंगी, स्वामी!" मैंने अपने होंठ काट लिए थे .

"तुम मुझे 'स्वामी' के शब्द से पुकार सकती हो, शारदा!" ये बोले थे . ..तो मैं धन्य हो गई थी! और मेरी इस स्वगति का रास्ता खुल गया था, नरेन्द्र!" कह कर माँ अंतर्ध्यान हो गईं थीं!

मैं अब भी उन के भव्य मंदिर को ही निहारे जा रहा था! उन्हें तो रास्ता मिला ...सदगति मिली ....ख्याति मिली ....पर मुझे तो ...अभी तक अपनी मंजिल का अता–पता तक न था! उन का रास्ता ...शायद मेरा मार्ग नहीं था ....? जिस दिशा और देश की तलाश में मैं निकला था – वह तो मुझे कहीं भी द्रष्टिगोचर ही न हो रहा था ....?

"विवेकानंद को ...अपना गुरु मान कर तुम ...समाज सेवा का ब्रत ले सकते हो, नरेन्द्र!" आश्रम के महंत मुझे समझा रहे थे . "मैं देख पाया हूँ कि ....तुम्हारे भीतर ....एक अतृप्त आत्मा छटपटाती नजर आती है! मैं यह मानने को विवश हूँ ....कि ...तुम एक होनहार युवक हो – एक दम स्वामी विवेकानंद के सामान! तुम चाहो तो ...मानवता का शंख बजा कर ...पूरे विश्व का संताप हर लोगे! और अगर ...."

"मेरा मानना ...कुछ और ही है, ऋषिवर!" मैंने विनम्रता पूर्वक कहा था .

"क्या ...?' उन्होंने पूछा था .

"मैं स्वयं ही नहीं जानता ....!" मैंने दो टूक उत्तर दिया था . "स्वामी विवेकानंद जी को तो अपना ध्येय दिखाई दे गया था ....! लेकिन मैं तो अभी तक अँधा हूँ!!"

"तो ...दृष्टि ....आने तक का इंतजार करो, वत्स!" उन्होंने मधुर स्वर में कहा था . "प्रभु तुम्हें सामर्थ देंगे ....! एक दिन दिव्यता तुम्हें स्वयं ग्रहण कर लेगी ....! यह मेरा मानना है ...."

मैंने भी इस आदेश को मुक्त भाव से मान लिया था! मैंने भी अपने मन को भटकने के लिए खुला छोड़ दिया था! मैं भी चाहता था कि मैं ....खूब–खूब

डोलूँ .....घूमूं –फिरूं ...और आँखें खोल कर ...आनेवाली सीख और समझ का इंतजार करूं!

मेरी अभी उम्र ही क्या थी ...? मेरी समझ भी कित्ती बड़ी थी ...? कुछ बातें तो मेरी समझ के ऊपर थीं . पर मैं उन तक पहुँचना चाहता था! पर मेरी इन तक न पहुँच पाने की ...एक विडम्बना ही थी!!

आश्रम का जीवन तो शांत था! आश्रम में पूजा–पाठ ...प्रवचन ....और हवन ...सब नियमित रूप से होते थे! वहां सर्व–धर्म के विचार का स्वागत था! यहाँ कोई उंच–नीच ....या जाति –बिरादरी का लफडा न था! यहाँ शिक्षा –दीक्षा को ही ...मानव की दरिद्रता से मुक्ति दिलाने का हथियार मान लिया गया था! यहाँ स्वामी विवेकानंद के सुझाए मार्ग पर ....चलने के लिए ....वह सब सामिग्री उपलब्ध थी ...जो हर किसी को उस का गंतव्य बता सकती थी!

लेकिन ये मेरा दुर्भाग्य था ....या कहें कि ...मेरे संस्कार न जाने क्यों . ...उस पवित्र विचार धारा से मेल न खा रहे थे! एक टकराहट थी ....एक द्वंद था ....एक वितृष्णा थी ...जो मेरे भीतर ...मात्र इस मार्ग के अनुसरण करने पर ...भरने लगाती थी!

"मैं तो ...जंग चाहता हूँ ....!!" मेरा मन मुझ से कहता . "मैं तो भिड़ना चाहता हूँ ...!!" वह मुझे ही ललकारता .

"किस से ....?" मैं पूछता . "कौनसी जंग लड़ोगे ....? तुम्हें तो लड़ना . ..आता तक नहीं, मित्र ...?"

"मुझे सब आता है!" अनायास ही एक उत्तर भी आ ही जाता!

19

पर नियति मेरे हाथ में न थी!!

मैंने मन को शांत किया . मैंने अपने धीरज को खोजा . मैंने सोचा ... .कुछ दिन और इस आश्रम में गुजारूं! मुझे उम्मीद थी कि मुझे कोई न कोई विकल्प तो मिलेगा जरूर! क्यों कि मैं अभी तक घर लौटने के बारे में नहीं सोच रहा था! घर का मोह तो मुझ से कोसों दूर था! मैं ....अकेला ...मस्त ....निफराम .....बिलकुल स्वस्थ ...और एक दम ठीक–ठाक था!!

"यों तो गुजरेगी नहीं, नरेन्द्र ....?" मेरा विवेक बताने लगा था . "निरुद्देश्य ...तो जीना ही ..व्यर्थ है, मेरे भाई!"

"चलो! कुछ खोजता हूँ ...." मैंने स्वयं से कहा था .....और आश्रम की लाइब्रेरी में चला गया था .

मैं चाहता था कि और भी खोज करूं, मैं चाहता था कि ..कुछ इस तरह के रत्न मुझे मिलजाय ...जिन के पीछे–पीछे मैं चलपडूं ...और एक जीवन का आयाम ....पा जाऊं ...!!

लाइब्रेरी में घुसते ही मेरी निगाह एक बहुत सुंदर स्त्री के चित्र पर जा टिकी थी! पहली नजर में ही मैं ताड़ गया था कि ....ये स्त्री भारतीय न थी . उस का मुझे रूप– स्वरुप बता रहा था कि ...वह कोई विदेशी महिला थी! उस की गहरी नीली आँखों में मुझे ...अनाम–से समुंदर तैरते लगे थे! उस के प्रियदर्शी स्वरुप में ...मुझे अनेकानेक आदर्श लहराते दिखाई दिए थे . वह हर–हर माइनों में बेजोड़ थी! वह अवश्य ही कोई देवी थी ....कोई दिव्यता थी ...जिसे जानने को मेरी जिज्ञासा ...कूदने–फांदने लगी थी!

इस छोटे परिचय से मेरा पेट नहीं भरा था! ये स्त्री ...या कि ...ये समाज सेविका ...मुझे माँ शारदा से ...बिलकुल भिन्न लगी थी! मुझे लगा था – इस स्त्री के अन्तर में ...एक आग है ....जलाने वाली आग! और ये आग आज तक भी धधक रही है! न जाने क्यों ...ये आग बुझ नहीं पाई है ...? और शायद ....आज भी ये किसी के आने के इंतजार में है!!

"स्वामी विवेकानंद ....शिकागो से ....लंदन आए थे! तभी सन –१८६७ में ...उन की मुलाकात ...एलिजाबेथ से हुई थी! स्वामी जी का वेदान्त इतना विख्यात हो चुका था कि ...यूरोप के लोग पागलों की तरह ...उन के अनुयाई बनने लगे थे . अब तक एलिजाबेथ भी उन की दीवानी हो चुकी थी! उस का एक पूर्व प्रेमी मर चूका था! उस का मन अशांत था . ये एक टीचर थीं . लेकिन दो साल बाद एलिजाबेथ अपना घर–बार छोड़ कर ...स्वामी जी की शरण में ....सन १८८६ में चली आई थीं .

"ब्रह्मचर्य ....हमारे बीच की ....पहली शर्त होगी ...., निवेदिता! " स्वामी विवेकानंद के कंठ–स्वर मुझे सुनाई देने लगे थे .

"मुझे स्वीकार है, स्वामी जी!" निवेदिता का मधुर स्वर भी मैंने सुना था .

"निवेदिता ....मीन्स ....द ....गोडस ...सरवेंट ....!" स्वामी जी ने उन्हें समझाया था . "मैंने तुम्हें 'निवेदिता' नाम सोच–समझ कर दिया है! अब से तुम भगवान् की सेविका हो ....."

"और .....आप ...की ....?"

"हम तो दोनों सेवक हैं! हमारा धर्म मानव सेवा है! समाज के सुख–दुःख हमारे ...सुख–दुःख हैं, निवेदिता!" उन्होंने बताया था .

स्वामी विवेकानंद को लम्बी उम्र नहीं मिली . उन का तो मिशन तक पूरा नहीं हुआ ....! निवेदिता ने उन के अंत समय में खूब सेवा की . लेकिन कुल ...६ साल की उम्र में ...उन्हें अपने प्रिय भारत को छोड़ कर जाना ही पड़ा ....!!

"जाना तो ...मुझे भी ...पड़ेगा ...ही ....?" मैं स्वयं से कह रहा था . "लेकिन ...अपने मिशन को ......"

"बड़े बोल ....मत बोलो, नरेन्द्र!" ये आवाज निवेदिता जी की थी . "मैंने भी तो स्वामी जी के जाने के बाद एक जंग छेडी थी ...!"

"कौन सी जंग .....?"

"आजादी की जंग ....!" अब निवेदिता जी बता रही थीं . "मैं लार्ड कर्जन से सीधा–सीधा भिड़ गई थी! मैंने ब्रिटिश साम्राज्य का खुल कर विरोध किया था! मैंने प्रचार किया था ....मैंने बंगाल में पड़े दुर्भिक्ष के समय .... लोगों की खूब सेवा की थी! मैंने माना था कि ....मैं ...देश को आजाद करा कर ही दम लूंगी! मेरे साथी – विपिन चन्द्र पाल ..टिगौर ....." वह अनेकानेक नाम गिनाती चली जा रहीं थीं .

एक नया माहौल मेरी निगाहों के सामने आ कर ठहर गया था!

लगा था – मैं कुछ खोजने में सफल रहा था!!

उस रात ....हाँ, हाँ ....उसी रात ...मैं अकेला ही गंगा तट पर बैठा–बैठा विरह के आंसूओं से रोता रहा था! न जाने क्यों ...उस रात मुझे जसोदा की याद आई थी ....? न जाने कैसे ....और क्यों ...मैं जसोदा को इन दो हस्तीयों के सामने ....बार–बार पेश करता रहा था ....? और मैं मानता रहा था कि ....जसोदा ...कहीं भी त्याग–तपस्या में ...इन से छोटी न थी!!

पर नियति तो मेरे हाथ में न थी .....!!!

20

मैं बाल–बाल बच गया था!!

"विनय करने का वक्त चुक गया है, अमित!" मैंने अपनी द्रष्टि को ऊपर उठा कर कहा था . मैं जो देख रहा था –शायद अमित को उस का आभास न था! "अब हमें संघर्ष करना ही होगा!" मेरी आवाज मैं एक तल्खी थी . "विरोधी दरवाजे खटखटा रहे हैं!" मैंने अमित को वही बताया था जो मैं सुन रहा था . "कहो तो ....खोल दूं ...किवाड़ ....?" मैंने सीधे–सीधे प्रश्न किया था .

अमित अनजान न था! उस की निगाह में भी पूरा ही खेल था . उसे मेरे कहे का अर्थ समझने में देर न लगी थी . वह इस तरह के मामलों में बहुत तेज है . मैं जानता था ...और मानता भी था कि अमित न तो डरने वालों में से था ...और न ही पीछे हटने वालों का हामी था! वह तो अब घुट कर चन्दन बन चुका था!!

"खोल दो ....!!" अमित का निर्भय उत्तर आया था . "मैं चौड़े में आ जाता हूँ! कल ही गृह मंत्री के पद से स्तीफा दे देता हूँ! अपने आप को सी बी आई के हवाले कर देता हूँ! भेजने दो मुझे जेल ....?" उस ने अब मेरी आँखों में देखा था . "खूब रंग आएगा, भाई जी!" वह मुस्कराया था .

जुलाई २०१० का समय था – ये!!

पूरी राजनैतिक जमात अब हम दोनों के खिलाफ थी! हम दोनों हर आँख की किरकिरी बन चुके थे . मीडिया हाउस, बुद्धिजीवी, मानवाधिकारवादी, एन जी ओज .....और यहाँ तक कि तमाम विदेशी संगठन ....हमारे खिलाफ रची जानेवाली साजिशों में शामिल थे! हम सब के लिए अछूत थे ....कम्युनल थे ....राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ के पैदा किए खतरनाक जरासीम थे ....जो

सेक्युलर भारत के लिए असह्य थे! हम से खतरा था कि ...हम अगर जिन्दा रहे तो ....जरूर ही एक हिन्दू राष्ट्र की संरचना कर बैठेंगे! और अगर भारत में हिन्दू राष्ट्र जैसा कुछ खड़ा हो गया तो ....जो लोग यहाँ अपनी अल्पसंख्यकों की आड़ में राजनैतिक दुकानें खोल बैठे थे ....उन का तो खेल ही खत्म हो जाएगा ....?

चालाकी से ....बहुत चालाकी से ये लोग देश को अपने अपने हितों के हिस्सों में बाँट बैठे थे! सब ने अपने–अपने वोट बैंक बना लिए थे . सब के पास खाने–कमाने लायक सीटें थीं . सब के पास गुंडे मवालियों से ले कर ...देशी दलालों की मजबूत टीमें थीं . ये इन के गुण–गान में लगातार लगीं थीं! राजनीति के नाम पर एक अच्छा–खासा व्यापार इन लोगों ने खड़ा कर लिया था! खूब धन कमा लिया था . जायदादें खड़ी कर लीं थीं . विदेशों में जा–जा कर पैसे जमा कर लिए थे!!

ये रहते तो विदेश में थे ....पर राजनीति देश में करते थे!!

उन का मानना था कि ....यहाँ की जनता को अनपढ़ और गंवार रखना बेहद जरूरी था! छोटे–मोटे लालच दे कर इन्हें भ्रमित करना – इन के लिए श्रेष्ठ राजनीति थी! आरक्षण का भूत और ...दलित से ले कर महा दलित तक ... का जाल बिछा कर ...इन भोले–भाले लोगों को ....मवेशी मान कर सदियों तक शाशन किया जा सकता था!

समाज अब देवी–देवताओं की नहीं ....नेता और अभिनेताओं की आरती उतार रहा था!!

और हम दो थे – मैं और अमित, जो अपनी राह पर चल चुके थे! हमने गुजरात राज्य में जो बेजोड़ सफलता हासिल की थी ...वह इन राजनेताओं ....मीडिया गुटों ....बुद्धिजीवियों ....एन जी ओज ....और यहाँ तक कि ...विदेशी लोगों के हित में भी न थी! इन का तो बना –बनाया खेल हमने चौपट कर दिया था!

और कांग्रेस पार्टी तो अब मुंह दिखाने लायक भी न रही थी!!

हवा की दिशा मुड़ते देख सब के सब बौखला गए थे! सब समझ गए थे कि ...उन्हें स्वयं मिटने से पहले ...हमें .....हम दोनों को मिटा देना था!!

"बहुत ही संभल कर चलने का वक्त है, अमित!" मैंने खबरदार किया था, उसे . "सी बी आई के ....सवाल–जबाब ....?"

"मुझे सारे के सारे उत्तर याद हैं, भाई जी!" अमित सहज था . "जेल जाने पर ....?'

"आई बिल ....कीप इन ....टच ....!" मैंने आश्वाशन दिया था, उसे!

राजस्थान राज्य के गृह मंत्री गुलाब सिंह कटारिया से भी सी बी आई पूछ –ताछ कर रही थी . बड़ा ही संगीन मामला बन गया था!

पूरे देश में एक शोर लबालव भरा था – हत्यारा है, अमित शाह! हत्यारा है – गुलाब सिंह कटारिया! बे–गुनाहों का खून ....पुलिस की गोलियां ... हिरासत में ले कर हुई हत्याएं ....और मुसलामानों ....माने कि माइन्योरिटी कम्युनिटी पर हुए जुर्म ....पूरे दिगंत पर छा गए थे! पूरा आकाश रागारुण था ....मानो बे–गुनाहों के खून से लाल–लाल रंग गया था!!

और इस तमाम खून–खराबे के कारण हम दो थे – मैं और अमित शाह!!

"भूलना मत, भाई जी कि ...." जेल जाते–जाते अमित कहने लगा था . "लोमड़ी हमेशा ही पूंछ से जमीन झाड कर बैठती है!" वह हंस रहा था . मुझे अचानक ही उस पर प्यार हो आया था . 'कितना बहादुर है ये मेरा, अमित ...?' मैंने मन ही मन दुहराया था . "जब कि ...दुर्दांत शेर ...अपने आने–जाने तक के निशाँ छोड़ता है! सबूत बना कर चलता है ....और दहाड़–दहाड़ कर ....दहशत पैदा नहीं करता ....अपनी ही मौत को आमंत्रित करता है!"

अब वह मुझ से उत्तर मांग रहा था! अब वह चुप था . अब वह गंभीर था!!

"ठीक है, भाई!" मैंने धीमे से कहा था . "नहीं दहाड़ेंगे ...!!" मैं मान गया था . "जब तक तुम नहीं कहोगे ....शेर दहाड़ेगा नहीं!" मैंने वायदा किया था .

राजनीति के खेल हैं ही विचित्र! अनाप–सनाप बोलने से कभी –कभी बहुत नुक्सान हो जाता है! अमित यह जानता था . अमित ताड़ गया था कि ...उस के जाने के बाद ...विरोधियों की निगाह ...मुझी पर थी! और मैं ...अब उन के लिए ज्यादा दूर न था ....!!

अब तो मुझे पानी को भी फूँक–फूंक कर पीना

था!क्यों कि मुझे बताया गया था य–

यू पी ए की सरकार ....कांग्रेस पार्टी ....पेड मीडिया ....सरकारी ...व् ... अमेरिकी और अरब फंड ....पर पलने वाले – पालतू एन जी ओज ....और अपने दिमाग को बेच कर ...जमीर को गिरवी रख कर ....पैसे कमाने वाले बुद्धिजीवियों के लिए ....कल की फिदायीन ....यानी कि कथित आत्मघाती मानव बम्ब ....'इशरत जहां ' आज के समाज की संत मानली गई है!! उस के नाम पर अब नरेन्द्र मोदी को फांसी तक दी जा सकती है!!

मेरे तो रोंगटे खड़े हो गए थे! कैसा विचित्र षड़यंत्र रचा जा रहा था . ...? किस कदर मुझे जाल में फांसने के लिए ...आंकड़ों का जाल बिछाया जा रहा था ....?

गुजरात पुलिस की क्राईम ब्रांच ने १५ जून २००४ को एक मुठभेड़ में चार लोगों को मार गिराया था! इन के नाम थे – जीशान जौहर, अहमद अली, जावेद गुलाम शेख और इशरत जहाँ! ये लोग मेरे विरोधियों के द्वारा खरीदे हुए आतंकी थे! ये मुझे मारने आये थे! यह खबर सी बी आई ने गुजरात पुलिस को स्वयं ही दी थी! लश्कर–ए– तैयबा के ये ...चार आतंकी ...मुझे मारने के बाद ....गुजरात राज्य में ...दंगे करा कर ...पूरे तंत्र को तहस–नहस कर देना चाहते थे!!

इन में से दो – जीशान जौहर और अहमद अली पाकिस्तानी नागरिक निकले थे! तीसरा व्यक्ति – पिल्लई दुबई गया था ...जहाँ उस ने धर्म परिवर्तन किया था ...और मुसलमान बन गया था!

लश्कर के इशारे पर जावेद व् इशरत पति–पत्नी बन कर ...इत्र कारोबारी के रूप में भारत के भीतर भ्रमण करते थे ...ताकि उन पर किसी को शक न हो! दोनों ने मिल कर मेरे आस–पास को सूंघा–समझा था!!

लेकिन सी बी आई ने इन से पहले ही इन्हें सूंघ–समझ लिया था! उन्होंने गुजरात पुलिस को सारी जानकारी दे दी थी! और पुलिस ने इन्हें मारगिराया था!!

मैं बाल–बाल बच गया था ....!!!

तब केंद्र सरकार ने गुजरात हाई कोर्ट में हलफनामा दाखिल कर कहा था – 'जावेद ....व् इशरत आतंकवादी संगठन –लश्कर–ए –तैयबा के सदस्य हैं!!'

लेकिन आज तो सब का सब उलट–पुलट हो चुका है ....!!!

21

भोर का तारा – नरेन्द्र मोदी!!

और एक मैं था कि वस्तुस्थिति से कट कर अपने विगत की वीथियों में डोलने लगा था! मैं भागा था और कलकत्ता पहुँच गया था! न जाने क्यों अपने जीवन की हर घटना मुझे एक सबक–सी लगाती है . चाहे जब अपने विगत से मैं बतिया लेता हूँ ....प्रेरणा पा लेता हूँ!

"मरना –जीना अपने हाथ में होता कब है, नरेन्द्र ?"सिस्टर निवेदिता मुझे बता रहीं थीं . "अगर होता तो मैं ...स्वामी जी के बाद एक पल भी न जीती!" उन की आँखें नम थीं . स्वामी जी के निधन का शोक आज भी उन में ताजा था . "घटना ही कुछ अजीब थी! स्वामी जी एक दिव्य पुरुष थे . ....एक विचारक थे ....विद्वान् थे ...ऋषि थे! लेकिन जब मौत ने उन्हें अचानक आ घेरा ...था ...तो वो मौन थे!

"स्वस्थ तो हो जाओगे ....न ...?" मैंने पूछा था .

"नहीं! यह मेरे महाप्रयाण का समय है, निवेदिता! मुझे जाना ही होगा! इश्वर का आदेश है!!" चुप थे, वो . कुछ देर के बाद फिर बोले थे . "मैं तो चाहता था कि ...अपने देश के दुःख दूर करने के बाद ही मरता! गरीबों को .... अशिक्षितों को ...सहारा देता ...शिक्षा देता ....लेकिन ..."

"हार गए ....?" मैं बोली थी .

"नहीं ....तो ...." वो लहके थे . "हार–जीत अपने हाथ में होती कहाँ है, निवेदिता! होता तो सब है ...होता ही चला जाता है ...! लेकिन ईद होने के पीछे ...जो हाथ होता है ....वो दिखाई नहीं देता! पर होता है ....जरूर होता है!!" मौन हो गए थे, वो .

और मैं सोचती रही थी ....कि किस कदर एक समर्थ व्यक्तित्व ...आज एक समर्पण में समां गया था ...निःशेष बन गया था ....और निर्विकार बन कर रह गया था ...? कुल 39 वर्ष की आयु में उन्हें मौत ने आ घेरा था!

"मैं मरना तो नहीं चाहता था, निवेदिता! लेकिन ...."छटपटाए थे, वो . "मेरा ....मिशन ......?"

"मैं पूरा करूंगी! वचन देती हूँ, स्वामी जी कि मैं ....तन, मन, धन लगा कर ...आप के इस अधूरे मिशन को पूरा करूंगी ....!" मैंने एक सांस में कहा था . "मरूं ....या बचूं ...मुझे इस की परवाह नहीं! पर ...."

"मरना तो सब को होता ही है, निवेदिता!" अब की बार वो हँसे थे . "पर कुछ कर के ही मरना उचित है ....श्रेष्ठ है! और परोपकार तो जीने की एक श्रेष्ठ कला है! वेदान्त का मूल मंत्र है ...." उन की स्वांस उखड गई थी . कुछ खांसे थे . और फिर ....."

वो चले गए! पर उन की मौत का शोक मुझे था!! बाकी तो उन की मौत एक फर्ज की तरह थी . समाज का एक वेदांती ....पथ–प्रदर्शक .... प्रेरणा –श्रोत ....बहुत कुछ दे कर ही गया था ....? देश को ही नहीं ...वो तो विदेश को भी उपकृत कर के गया था! वो, पूरे विश्व की एक गूँज थी ...सब के लिए एक सन्देश था ...एक आद्रता थी ....और था एक आभार! वो तो सब के थे ....किसी एक के न थे ...एक समुदाय के न थे ...एक धर्म के न थे . ...और न ही एक देश के थे!"

"और ....आप ...?" मैंने पूछा था .

"अकेली रह गई ....निपट अकेली ....! सच कहती हूँ, नरेन्द्र! इतना खालीपन मैंने कभी ....पहले नहीं महसूस था ...! जीने का तमाम मजा ही मिट्टी हो गया था ....!! जो जीने का आनंद मैंने उन के सहवास में लिया ....भोगा था ... महसूसा था ...अब सब धुल गया था! मैं एक विरस–सी ....बे–जान वस्तु–सी ... भूली एक बात जैसी ...अकेली खड़ी रह गई थी! मेरा कोई न था! बिना पतवार की नाव–सी मैं ...डावांडोल थी! अब डूबी ....कि जब डूबी .....?"

"फिर ....?" मैं अब गमगीन था . स्वामी जी जैसे अभी–अभी ...मेरी आँखों के सामने ही ...महाप्रयाण पर सिधारे थे ...मुझे ऐसा ही कुछ लग रहा था! "फिर ....आप ....?" मैं पूछ रहा था .

"काया नहीं, पगली! आत्मा अमर है!!" स्वामी जी की आवाज आई थी . "फल नहीं, निवेदिता! कर्म प्रधान है!! कित्ती बार नहीं बताया, तुम्हें ....? व्यर्थ के शोक में क्या धरा है, पगली! उठो! धीरज के साथ कर्म करो!!" उन का आदेश था .

यह १६०२ का समय था! ब्रिटिश साम्राज्य अपने उत्कर्ष पर था! दिल्ली जाने की तैयारियां हो रहीं थीं . पावर सेंटर अब उठ कर दिल्ली जाना था . राजधानी बनाने के लिए दिल्ली को चुन लिया गया था!

"क्यों ....?" मेरी जिज्ञासा जागी थी . "कलकत्ता कौन बुरा था ....?" मैंने पूछा था .

22

हमारे तीर्थ – रासबिहारी बोस!!

"दिल्ली ....? तुमने देखी है, नरेन्द्र ....?" वह अचानक ही मुझे पूछ बैठी थीं .

"नहीं ...!!" मैंने एक दुधमुहे बच्चे की तरह सच बोला था . "मैंने अभी कुछ नहीं देखा है!" मैंने फिर कहा था .

"विश्व भ्रमण करना, स्वामी जी की तरह!" वो मुझे आदेश दे रहीं थीं .

"म ...म ..मैं विश्व ....भ्रमण करूं ....?"

"क्यों ...? हर्ज ही क्या है ....? आदमी की समझ बढती है, नरेन्द्र! एक ही देश में रह कर ....एक ही परिवार में जी कर ...एक ही प्रदेश में पढ़ कर ...आदमी की समझ छोटी रह जाती है ...जंग खा जाती है! उसे सच–झूठ का छलावा ठग लेता है!" वह ठहर गई थीं . फिर कुछ सोच कर कहा था . "मुझे ही देख लो! अगर स्वामी जी के पीछे मैं भारत न आती तो ....अधूरी ही रह जाती! अगर मैं स्वामी जी की अधूरी इच्छा को ले कर .....संघर्ष न करती तो ....मैं ...मुक्त ही न होती ....उन से मिलती तक नहीं ...."

"कौन सा संघर्ष ....?" मैंने पूछा था .

"बताती हूँ!" वो हंस गईं थीं .

अचानक ही उन की आँखें आद्र हो आई थीं . किसी अनाम दुःख ने आ कर उन का अंतर भर दिया था! न जाने कैसी वेदना थी – वह जो मुझे भी द्रवित कर रही थी . मैं अब अपने आप को एक हादसे से गुजरने के लिए तैयार करने लगा था!

"खोट....! खोट आ गया था – अंग्रेजों की नीयत में!" सिस्टर निवेदिता अब मुझे समझाने लगीं थीं . "भारत जैसा देश देख कर उन का ईमान डिग गया था! उन की समझ में आ गया था कि ...अगर सूझ–बूझ ...चंट–चालाकी ....और साम–दाम–दंड–भेद से वो भारत को पूर्णतया हथियाने में ...सफल हो जाते हैं ...तो उन की तो सातों पुश्तों का निस्तार हो जाएगा! इंग्लेंड फिर ...हमेशा–हमेशा के लिए ...विश्व की राजधानी होगा ...और कोई भी उन का शत्रु ...उन का बाल भी बांका न कर पाएगा ....?" वह रुकीं थीं . उन्होंने अपने आस–पास को परखा था . शायद किसी अंग्रेजी जासूस को वह ढूंढ लेना चाहतीं थीं!

"फिर ....?" मैंने नई उत्सुकता से उन्हें पूछा था .

"फिर उन्होंने भारत को हथियाने की स्कीमें बनाना आरंभ कर दिया था!"

"स्कीमें ....?"

"हाँ! स्कीमें ....!! जैसे कि शिक्षा–दीक्षा देने की स्कीमें ....! एक विलक्षण स्कीम का जन्म हुआ था! अंग्रेजी पढ़ने के लालच में ...भारतीय अपने बच्चों को आँख मूंद कर ...कान्वेंट स्कूलों में भेजने लगे थे! यहाँ शिक्षा के साथ–साथ ...उन्हें धर्म–परिवर्तन का पाठ भी पढ़ाया जाने लगा था! चतुराई से ....होश्यारी से ....देश को भाषा और धर्म – दोनों से काट कर ...एक इस तरह की मानसिकता देना था ....जहाँ वो गुलामी को गुलामी न मान ....इनाम–इकरार मान लें ....एहसान मान लें ...और स्वेच्छा से ग्रहण करने लगें ...!"

"वो तो हम आज भी ग्रहण कर रहे हैं, सिस्टर ....?" ये मेरे चौंकने की बारी थी . "हम तो आज भी ....अब भी ...वही सब कर रहे हैं ....जो ...."

"अधूरा रह गया उन का प्रयास, नरेन्द्र! अगर कहीं वो सफल हो जाते ......तो ....?"

"तो .....?"

"तो ...आज का भारत भी ....उन का ही गुलाम भारत होता! तुम्हारे ये वेद –वेदान्त ....सब कहीं किसी गहरे कुँए में पड़े होते! तुम्हारे हक–हकूक भी नहीं होते ....! तुम्हारी तो जमीन–जायदाद सब उन्ही के नाम होता! तुम तो अपनी पहचान तक भूल गए होते, नरेन्द्र!"

"छल .....?"

"छल–बल और सूझ–बूझ ....! सभी कुछ शामिल था – उन की स्कीम में! भारत के ही लोगों को सत्ता की दलाली में शामिल कर लिया था – उन लोगों ने!!"

"कैसे ...?"

"सारे राजे–महाराजे उन के साथ आ मिले थे! सारे बुद्धिजीवी उन्ही का गुणगान करने लगे थे! उच्च –वर्ग के बच्चे इंग्लेंड में पढ़ने लगे थे . इन सब ने अंग्रेजों की सभ्यता को ही श्रेष्ठ मान लिया था! मानसिक तौर पर तो भारत गुलाम हो ही चुका था ....?"

"फिर ....?"

"फिर क्या ....? चोर की चोरी पकड़ी गई!" वह हंस रहीं थीं .

उस हंसी ने मेरे मन में एक उजास–सा भर दिया था! मैं मरने–मरने से बच गया था!!

" पर कैसे ...?" मैं विकट जिज्ञासा से उछल पड़ा था .

"बंगाल के ही कुछ विचारकों ने इन सेंध लगाने वालों को सूंघ लिया था! उन्हें पता चल गया था कि ...मित्रता का स्वांग भरते ...ये संत नहीं, भूखे भेडिए थे ....लुटेरे थे! ये श्रेष्ठ नहीं, भ्रष्ट थे ...! फिर विरोध आरंभ हुआ . फिर अनुशीलन ...और जुगांतर का युग आरंभ हुआ!!" अब उनकी उंगली एक दिशा में उठी थी . "बंगाल भड़क उठा था! बंगाल जल उठा था ....! बंगाल बौखला गया था ...और बंगाल ....."

"और आप ....?"

"बावली हो गई थी! मतवाली हो गई थी, मैं! कूद पड़ी थी, संग्राम में . मैंने सीधे लार्ड कर्जन से टक्कर ली थी! मैं अरविंदो से मिली थी . वो भी गाईकवाड़ों की नौकरी छोड़ कलकत्ता आ गए थे . महान विद्वान थे ...विचारक थे ...छः सात भाषाओं को जानते थे ...इंग्लेंड में ही पढ़े–पले थे .... और अब .....? टैगौर से लेकर ....रासबिहारी बोस ...तक सब अब ...अंग्रेजों के विरोध में खड़े थे!"

"और अंग्रेज ....?"

"चुप न थे! बंग–भंग का ऐलान हो चुका था! 'बाँट दो बंगालिओं को' उन की चाल थी . 'डाल दो इन्हें जेलों में ...दो इन्हें यातनाएं ....' पुलिस के कुत्तों का गिरोह जनता पर छोड़ कर ...उन्हें जलील कर रहे थे ....और .... पुलिस ...."

"पुलिस तो अपनी थी ....?"

"फौज भी तो अपने ही लोगों की थी ...? हिन्दुस्तान की ही बहादुर कौमों को ...फौज में भरती कर ...इन लोगों ने उन्हें ग्रुप्स एंड ट्रूप्स में कुछ इस तरह से बाँट दिया था ....कि ...वो हिल भी न सकते थे! एक हो ही न सकते थे ...? हिन्दुस्तानी ही हिन्दुस्तानियों को पीट–पीट कर बेदम किए थे! जुल्म हो रहा था – चारों ओर ...."

"फिर ....?"

"बंगाल छोड़ कर ....दिल्ली जाने का विचार तभी तो बना था ...? दिल्ली से पूरे भारत को आसानी से काबू किया जा सकता था! यहाँ के लोग भी बंगालियों के जैसे न थे! यहाँ लोग अंग्रेज–भक्त बन चुके थे! और बंगाल अब अंग्रेजों के लिए कोई बड़ी उपलब्धि न रहा था! इसे तो अब भारत के एक कौने में बिठा कर भूला भी जा सकता था ...?""हाँ, वो तो संभव था . ..!" अब मैं भी पूरी स्थिति को समझ गया था . "पर ...ये सब ....जुगांतर . ..अनुशीलन ....रासबिहारी बोस ....और टैगौर ....और ....और हाँ, अरविंदो . ...?"

"सब के सब तीर्थ हैं! तुम्हारे स्वतंत्र भारत के ....यही तो तीर्थ हैं, नरेन्द्र! कलकत्ता आए हो तो तीर्थ–बरत भी करो! इन्हें देखो ...समझो ...सुनो ...! तुम्हारी उम्र कुछ करने की है! लड़ने की है ....और ..." कहते–कहते वो अंतर्ध्यान हो गईं थीं .

अब सन १६०५ के भारत का इतिहास मेरी आँखों के सामने आ खड़ा हुआ था .

"बाल–बाल बचे!!" मैंने गहरी उच्छवास छोड़ कर एक सोच को मुक्त किया था . "अगर ...वक्त से बंगाल न जाग गया होता तो ....? आज तो पूरा देश गुलामी के गर्त में डूबा होता ...? हमारी तो अस्मिता तक लुट जाती . ...?" मैं सोचे जा रहा था . "जरूर ही देखूँगा ...इन तीर्थों को ....! अब न रहूँगा इस आश्रम में ...!! अब मैं खोज लूँगा ...जुगांतर को ...अनुशीलन को

...! और हाँ, जहाँ अपने परम गुरु केशव बलिराम हैगडेवार रहे थे ...जहाँ उन्होंने दीक्षा पाई थी ....जहाँ उन्होंने जासूसियाँ की थीं ....विद्रोही बनने का ब्रत लिया था ....उन सारे स्थानों को मैं देखूँगा ....अवश्य देखूँगा ...!!" मैंने ठान ली थी .

अब भी मुझे पूरा बंगाल ही एक तीर्थ जैसा ही लगा था!

मैंने अपनी खोज को एक नई दिशा दी थी . मेरा मन अब संन्यास में नहीं था . मेरा मन अब किन्हीं अनाम संग्रामों में उलझ गया था! मैं भी अब सिस्टर निवेदिता की तरह ...किसी लार्ड कर्जन जैसे ...राक्षस से भिड जाना चाहता था! मैं भी अब अरविंदो घोष की तरह ...आसमान में आग लगा देना चाहता था! मैं भी अब ....हाँ, मैं ....भी अब ....न जाने क्या–क्या नहीं कर डालना चाहता था ....?

पर मेरी उम्र मुझ से बहुत छोटी थी!! लेकिन मेंरे विचार मुझ से बहुत बड़े थे!!!

23

ये सब मुझे घेरने के लिए हो रहा था

गड़े मुर्दे उखाड़ना अब मेरे लिए जरूरी हो गया था!

कारण स्पष्ट था . अगर शैतानों को मुर्दा मान कर दफना दिया जाए . ..और फिर उन्हें शहीद का नाम सौंप दिया जाए....तो उस में सुगंध पैदा हो जाती है! जनता को सच–झूठ का क्या पता लगता है ? मुर्दे भी बोलने लगते है . जो लाशों पर लिख दिया जाता है – वही तो पढ़ा जाता है ...?

लेकिन मुझे इन गड़े मुर्दों से बदबू आने लगी थी! मैं चाहने लगा था कि अब इन्हें ....उखाड़ कर सच को हवा में सुखा दूं ....ताकि ये शुद्ध हो जाए ... और अपने असली आयाम पर आ जाए! मैं अब दूध का दूध और पानी का पानी कर देना चाहता था ताकि आने वाला 'कल' हमें दोषी करार न देदे ...?

मैंने कहा था ये–

"ये देखिए! गाजवा टाईम्स! ये पाकिस्तानी अखबार लहौर से प्रकाशित होता है . ये लिखता है – हमारे इन नगर निवासियों को भारतीय पुलिस ने मार गिराया है! इन की कुर्बानियां काबिले तारीफ हैं! इस अखबार मैं इन आदमियों का पूरा पता है ...नाम है ...और पूरा व्योरा है! और ये अखबार भी लश्करे–ए –तयबा का मुख –पत्र है!"

लेकिन मेरी इस गुहार को मीडिया ने सुना तक नहीं! किसी ने भी मेरी बात पर गौर नहीं किया . तब मुझे भी लगा था कि बिना किसी संचार माध्यम की सहायता के मैं भी अधूरा ही था ...गूंगा–बहरा था! मैं चाह कर भी अपनी बे–गुनाही सिद्ध नहीं कर सकता था ?

देश और जनता के कान मेरी बात सुनने को राजी न थे!

"केंद्र सरकार –जो इशरत जहां को ले कर झूठी कहानी गढ़ रही है, उस के खिलाफ एक वी आई पी को जो सूचना मिली है – उसे पढ़ें, 'इशरत जहां इस आत्मघाती दस्ते का सदस्य थी! उसे लश्कर ने भरती किया था . इस दस्ते की योजना गुजरात के सोमनाथ व् अक्षरधाम मंदिर ....व् महाराष्ट्र के सिद्धविनायक मंदिर पर हमला करना था!"

लेकिन इस तथ्य को भी किसी ने पैरों न चलने दिया! यह तो 'हिन्दू–मुसलमान' हेट –गेम का हिस्सा बना कर भुला दिया गया! कहा गया – ये तो बेकार की दलीलें हैं! बाबरी मस्जिद को ढा देने के बाद ये तो हिन्दूओं के झूठे आरोप हैं!

फिर मेरे सामने कुछ सरकारी फाईलों में दर्ज खुलासा आया तो ...मैंने उसे झट से पकड़ लिया! एक राहत मिलती लगी थी, मुझे!!

खुफिया विभाग के संयुक्त निदेशक राजेन्द्र कुमार को सी बी आई गिरफतार करने में जुटी थी! उन का आरोप था कि राजेन्द्र कुमार ने गलत सूचना दे कर ...इशरत जहां को मरवाया था! यह भी खबर थी कि ..वो गुजरात पुलिस की कस्टडी में इशरत जहां से मिलने भी गए थे . मुठभेड़ की सारी साजिश को अंजाम भी इन्ही ने दिया था!"

लेकिन मैं कह रहा था कि खुफिया पुलिस का काम केवल सूचनाएं जुटाना था ...अंतिम अंजाम देना न था!

केंद्र सरकार ने अपना अलग से मन बना लिया था! जैसे भी हो ..... जिस प्रकार से भी हो ....मछली जाल में आनी ही चाहिए! चाहे अपनी ही सरकारी संस्थाएं बदनाम क्यों न हो जाएं ....कोई भी कीमत अदा क्यों न करनी पड़े ....पर नरेन्द्र मोदी ....

एक और जोर बंधा था – जिस में मेरे खिलाफ झंडा बुलंद करने वाली कांग्रेस व् अमेरिका –अरब से फंड लेने वाले एन जी ओज ...सब ने मिल कर ....इशरत की माँ ...शमीमा केसर को केंद्र से यह मांग मनवाने को कहा था – कि इस मामले की जांच ...सी बी आई के अधिकारी श्री सतीश वर्मा से कराई जाए!

एक और बात भी आप को बता ही दूं!

आई बी ने सी बी आई निदेशक को बताया – सतीश वर्मा और राजेन्द्र कुमार एक दूसरे को फूटी आँख नहीं देखते! दोनों की अन–बन है . बात मीडिया तक आ पहुंची तो गजब हो जाएगा ...? लेकिन सरकार ने कहा ."ये मांग शमीमा कैसर की है! इस का सम्मान किया जाए!! वह इशरत जहां की माँ है!!!"

और केंद्र सरकार ने अपने ही लोगों का तमाशा बना दिया ....?

और तो और ....केन्द्रीय गृह मंत्री सुशील कुमार सिंदे जी ने सोनिया जी के कारण ....एक खूंख्वार मुसलमान को ...आई बी का निदेशक बना दिया!!

ये सब मुझे घेरने के लिए हो रहा था ....!!

२६ नवम्बर २००५ गुजरात पुलिस ने मुठभेड़ में एक और कुख्यात पुलिस के भगोड़े – शाहबुद्दीन को मार गिराया था! महाराष्ट्र पुलिस ने इसे भगोड़ा घोषित किया हुआ था . इस की पत्नी कौसर बी को भी गुजरात पुलिस ने मुठभेड़ में मारदिया था . और तुलसी राम प्रजापति को भी गुजरात पुलिस ने ही एक मुठभेड़ में मारा था . तुलसी राम प्रजापति शाहबुद्दीन शेख की हत्या का चश्मदीद गवाह था!

लेकिन कमाल ये था कि ...आतंकी शाहबुद्दीन को ....विपक्षियों ने मिडिया के साथ मिलकर 'मौलाना' बना दिया था! ये भी अब मेरे ही गले की हड्डी बन गया था!!

शाहबुद्दीन मध्य प्रदेश के उज्जैन जिले के गिरिया गाँव का रहने वाला था . यह एक हिस्ट्री शीटर था . इस पर ६० के दशक में हथियारों की तस्करी का मामला ...दर्ज था! इस के गिरिया गाँव स्थिति घर से १९९५ में ४० ए के ४७ राइफल बरामद हुई थीं . गुजरात और राजस्थान के मार्वल व्यापारिओं से यह वसूली करने के लिए अंडर वर्ल्ड दाऊद इब्राहीम के गुर्गे छोटा दाऊद उर्फ – शरीफ खान पठान से जुडा था! इस के साथ अबुल लतीफ, रसूल परती और ब्रिजेश सिंह भी थे! यह सब लश्कर–ए– तयबा के सदस्य थे .

संजय दत्त का मामला जब सुर्खियों में था ....तब ...शाहबुद्दीन भी अखबारों के अग्रिम पन्नों पर छपता था! महाराष्ट्र पुलिस ने तब शाहबुद्दीन सहित १०० लोगों को आरोपी बनाया था . और यह वहां से किसी तरह निकल भागा था ....और ....

लेकिन हमारी केंद्र सरकार के लिए यही आतंकी शाहबुद्दीन अब ....एक बे–गुनाह था! उस की पत्नी कौसर बी ....और ...तुलसी राम प्रजापति ...कुछ ऐसे महिमा मंडित लोग थे जिन्हें ....पुलिस के दरिंदों के ना–पाक हाथों ने मार गिराया था ....और पूरी मानवता पर ...एक न्रशंस प्रहार किया था!

नरेन्द्र मोदी और अमित शाह के सिवा ....इन मुठभेड़ों का अन्य कोई कारण था ही नहीं ....? सब जैसे हम दोनों के ही इशारों पर हुआ था ....? और अब जो भी होना था ....उसे अगर समय होते न रोका गया ...तो .... शायद .....

२००७ में इसी प्रकार की संभावनाओं को रोकने के लिए पूर्व डी आई जी, डी सी बंजारा सहित अनेकों वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को गिरफतार किया गया था! मुझे – माने कि नरेन्द्र मोदी ....और अमित शाह को ...केंद्र ने एक संकट मान लिया था!! भविष्य का एक ऐसा संकट जिस से ....अब और अभी निपट लेना जरूरी हो गया था ....!!

इसी योजना के तहत केंद्र सरकार ने सारे आतंकी मुसलामानों को ... शहीद....बे–गुनाह ....और मसीहा ....मौलाना के नामों से पुकारना आरंभ कर दिया था! और जो पत्रकार इस तरह के लेख लिख रहे थे उन के भी इनाम–इकरार तय थे!

लोमड़ी के इशारे पर सारे के सारे गीदड़ अब शेर को देख–देख कर ...हाऊ–हाऊ करने लगे थे! उन का देश–विदेश सब एक था . सब एक गुट में थे . नए–नए आरोप और प्रत्यारोपों को तीरों की तरह ईजाद किया जा रहा था! नरेन्द्र मोदी और अमित शाह दो ही तो नाम थे ...जिन के साथ देश–विदेश और पार्टी–पॉलिटिक्स के सारे सरोकार संबंध जोड़ दिए गए थे!

"देखिए! देश की छवि विदेश में किस तरह गिरी है ....?" अब चर्चा होने लगी थी . "अमेरिका तो यहाँ तक कह रहा है ....कि अगर मोदी न .. ..रुका ....तो ...."

"पूरे विश्व में भारत की नाक नीची है ....! मुसलामानों के साथ जो बर्ताव हो रहा है ....वह तो .....?"

बाबरी मस्जिद से ले कर गोधरा काण्ड तक ....और उस के बाद इशरत जहांन तक साहाबुद्दीन ...कौसर बी ...और प्रजापति सभी के सभी आसमान

के सितारे थे ....चमचमाते सितारे ....थे ...जिन से उम्मीद थी कि एक न एक दिन ...मिल कर ...नरेन्द्र मोदी और अमित शाह को ....ले कर ये गहरे में डूब जाएंगे ....?

एक तरह से हिन्दू और मुसलमानों को फिर ...बड़ी ही चतुराई के साथ ...आमने–सामने ला खड़ा किया था ....? कांग्रेस तो अपने इस खेल की पुरानी खिलाड़ी थी! अब कांग्रेस को पक्का पता चल गया था कि मोदी इस शय पर मात जरूर ही खा जाएगा! और अगर वह लड़ा ...उस ने मुसलामानों पर हमला किया ....या और भी कोई चाल खेली .....तो खेल और भी रंग पर आ जाएगा!

कांग्रेस मुसलमानों की भी सगी नहीं है – यह तो मैं भी जानता हूँ!

लेकिन कांग्रेस के लिए उस का हित साधन ही श्रेष्ठ होता है! उसे देश हित ...समाज हित ....या किसी और के हित की चिंता नहीं होती ....?

अब जाट मरे ....या सांप ....कांग्रेस को तो फायदा ही फायदा था ....!!

24

सपूत पैदा होते थे तब –भारत में!

और वो लोग ....? वो लोग जिन्होंने जानें कुर्बान की ...देश के लिए आजीवन लडे ...किसी ने भी कानी कौड़ी नहीं कमाई ...जीवन न्योछावर किये .... निःस्वार्थ लडे ...और ....? और इस देश को आजादी दी .....अनमोल आजादी ...!!

बिदका हुआ मेरा मन ...मेरी पकड़ से भाग कर फिर कलकत्ता चला आता है! न जाने मैं कलकत्ता का कब और कैसे हुआ ....मैं नहीं जानता ? पर चलते हैं उन पुरानी डगरों पर ...और करते हैं सैर ...जहाँ कभी मैं एक तलाश में डोला था!

"कौन ...हो ....?" मैं अचानक ही एक कांपते स्वर को सुनता हूँ . "हो . ..तो ...बालक ..! पर ....?" एक बूढा ....बहुत बूढा व्यक्ति मुझे पूछ रहा था . उस का सर गंजा था . उस ने पुरानी छाप की अंगरखी पहनी थी . धोती घुटनों तक सिमिट कर नंगी टांगों के कम्पन को छुपा नहीं पा रही थी . वह खडा था ...पर मुझे लगा था कि वह गिरने–गिरने को था! शायद बहुत .. ..बहुत बूढा था ....?

उस का पूछा प्रश्न अब भी मेरे सामने खड़ा था . 'मैं कौन था ...? मैं था – कौन ....?' ये मैं बार–बार सुन रहा था . हाँ! मैं कौन था – पहली बार मुझे ये प्रश्न बहुत ही गूढ़ ...और गहरा लगा था! उस आदमी ने मुझ में कुछ जगा–सा दिया था! कुछ याद–सी मुझे होने लगी थी . एक भ्रम हुआ था . ..कि ..मैं जो था ...वह था नहीं ...? मैं कोई और ही था . लेकिन ....

"लो! पानी पी लो ....!" उस बूढ़े व्यक्ति ने लोटे में ला कर शीतल जल मुझे प्रदान किया था . लगा था – उस ने मुझे आज मरने–मरने से बचा

लिया था! "थके –मांदे लगते हो ....?" उस व्यक्ति ने मुझे अपांग देखते हुए कहा था . "रूँठ कर भागे हो, घर से ....?" वह तनिक हंसे थे . "हाँ! बेटा! ये उम्र ही हरामखोर होती है! मैं भी तो तुम्हारी तरह की इस उम्र में ...घर से भागा था . और फिर मैं लौट ही न पाया!" उन की आँखें सजल थीं . "सब छूट गया था . जाता भी तो कहाँ जाता ....?" वह सुबकियां लेने लगे थे .

"रोते ...क्यों हैं, ...आप ...?" मैं भी कठिनाई से बोल पाया था . मैंने उन बुजुर्ग को सहारा देना चाहा था . "बैठ जाईये!" मैंने उन्हें बरांडे में पड़ी एक झिलंगी चारपाई पर बिठा दिया था . अब वो भी शांत होने की चेष्टा कर रहे थे .

और मैं अब बड़े ही ध्यान पूर्वक उस बरांडे की दीवार पर टंगे एक बेहद पुराने बोर्ड को पढ़ रहा था . लिखा था ."ऑफिस – अनुशीलन समिति, स्थापित – २४ मार्च १६०२् संस्थापक – सतीश चन्द्र बासु! पता था – ४८, विधान सारणी, कलकत्ता!

मैं एक बारगी रोमांचित हो उठा था! लगा था – मैंने अपनी मंजिल पा ली थी! लगा था – जिस तीर्थ को खोजने मैं निकला था ....वह मुझे मिल गया था . और मुझे लगा था कि वहां वो सब मौजूद थे जिन की तलाश में मैं डोल रहा था! उन सब की रूहें वहीं रह रही थीं ...उसी खंडहर में निवास करती थीं .....और वहां आने वाले अपने साथी ...सहोदरों को ...पहचान लेती थीं!

तो क्या मैं भी ....उन्हीं में से कोई ...एक था ....?

"ये ....मेरा मतलब कि यही ...अनुशीलन समिति का ऑफिस था ...?" मैंने अब होश में आये उन बुजुर्ग् बार से पूछा था .

"हाँ, हाँ! यही तो है अनुशीलन समिति का ऑफिस ....!" वह चहक कर बोले थे . "पर ....क्यों ...? तुम्हें क्या काम है ....?" वह तनिक तडके थे . "अब यहाँ कौन आता है ....? अब इसे कौन पूछता है ....? अब इस की क्या जरुरत रह गई है ....जो ....?"

"आप कौन हैं ....?" मैंने हिम्मत जुटा कर उन बुजुर्ग बार से पूछ ही लिया था .

अब वह भी मेरी ही तरह मेरे किये प्रश्न पर चौंके थे . शायद वो भी अब तक अपना नाम–गाँव सब भूल चुके थे ? शायद वो भी वक्त की मार के साथ–साथ सब कुछ खो चुके थे ...? वह मुझे ही फटी –फटी आँखों से देखते रहे थे!

"हमें 'पाल पुरोहित ' के नाम से सब जानते हैं!" उन्होंने बताया था . सब जानते हैं ....कि हम ...अरविंदो घोष के ...पायक थे! पर तुम क्यों पूछ रहे हो ....?" वो भड़के थे .

"इस लिए ....ताकि मैं ...आप को प्रणाम कर लूं ....!" और मैंने पुरोहित जी के पैर छू लिए थे . न जाने क्यों उन के प्रति मेरे मन में ...असीम श्रद्धा का श्रोत फूट पड़ा था ....?

"जीते रहो, मेरे लाल ....!!" पुरोहित जी अब मुझे आशीर्वाद दे–दे कर निहाल कर रहे थे . "जीते रहो, बेटे! होनहार हो ....किसी पवित्र कोख से जन्मे ....सपूत हो ....! हो ....तो ...कोई ..." वह रुक गए थे .

"भटका हुआ ....एक बालक हूँ ....!" मैंने स्वीकारा था . "आप की ही तरह घर से भागा हूँ! कहाँ जाऊं ....क्या करूं ...मैं नहीं जानता!" मैंने सच–सच कहा था .

"मेरे साथ ...रहो ..., कुछ दिन ...!" एक अनूठे हर्षातिरेक में डूबे पुरोहित जी मुझ से कह रहे थे . "मेरा भी मन बहल जाएगा ...!!" अब उन्होंने मुझे दुलार किया था . " क्या नाम है, तुम्हारा ....?" ये उन का सहज प्रश्न था!

"नरेन्द्र!" मैंने भी सहज उत्तर दिया था . "नरेन्द्र ......मोदी! गुजरात से आया हूँ ." मैंने अपना पूर्ण परिचय दिया था .

"बहुत खूब!" वो फिर से प्रफुल्लित हुए थे . "मैं उत्तर प्रदेश का हूँ!" उन्होंने बताया था . "कुर्बानी के उन दिनों में भाग कर आया था .....जब . ..लोग जानें देने के लिए उतावले ....और मतवाले हो उठे थे!" अब उन्होंने मेरी आँखों में झाँका था . "बहुत सारे आजादी के दीवाने तब ...कलकत्ता भाग–भाग कर आये थे! जमाना ही वो ....था ...!!" वो सहसा रुक गए थे . "मेरे साथ रहोगे न, नरेन्द्र ....?" उन्होंने मुड कर मुझे पूछा था .

"एक शर्त पर ....!" मैं शरारती स्वर में बोला था .

"कौनसी शर्त, भाई ....?

"अगर आप मुझे ...वो कहानियां सुनाएंगे .....वो कहानियां ...जो ....?"

"अरे, रे ....! विचित्र हो, बेटे ....! आज–कल कौन सुनता है ....उन कहानियों को, नरेन्द्र ....? सब भूल गए! किस ने कुर्बानी दी ....कौन उजड़ा ...और किस का क्या हुआ ....? क्या सरोकार रह गया है, लोगों को ....? किसी को बताओ भी तो ...लोग मुंह बिचका कर चले जाते हैं! अब तो फिल्मों की कहानियां चल पडी हैं!" वह रुके थे . "फिलम तो देखते होगे ....?" वह हंस पड़े थे . "अजीब शौक हैं ....आज के नौजानों के ....?" वह कहीं से टीस आये थे . "सड़कों पर ....लौंडियों की तरह ....ला ला – गाते फिरते हैं .... ! बे–शर्म ....!!"

लगा – पुरोहित जी ने पूरे के पूरे युवा वर्ग को लताड़ा था! जो चलन चल पड़ा था ....वह उन के विचार से गलत था! जिस समाज को उभर कर ऊपर आने की उन्हें उम्मीद थी ...वह उन्हें कहीं भी दृष्टि गोचर न हो रहा था! निरी निराशा ही थी – उन की आँखों में!!

"नहीं! मैं सिनेमा नहीं देखता ....!" मैंने बताया था, उन्हें .

"मैंने भी कभी सिनेमा नहीं देखा!" पुरोहित जी कह रहे थे . "ये सब . ...झूठी ....और मन गढ़ंत कहानियां होती हैं, नरेन्द्र!" वो मुझे समझा रहे थे . "लेकिन जो कहानियां मैं तुम्हें सुनाऊंगा ....बताऊंगा ....वो कहानियां तो जमीन पर घटी हैं ....उन कहानियों की कथा तो ....शहीदों के खून से लिखी गई हैं ....वो कहानियां तो रहस्य और रोमांच की ....अकथनीय मिसालें हैं!" वो तनिक भावुक हो आये थे . "पर ....वक्त की करवट ...कि आज इन अनमोल कहानियों का कोई खरीद दार नहीं है ....?" एक अनाम –सा दुःख था उन की आवाज में . "अकेला बैठा रहता हूँ मैं, नरेन्द्र! लोग मुझे देखते हैं ...हँसते हैं ....और चले जाते हैं ...!!"

'चिंता का विषय है!' मैंने अपने मन में कहा था . हमीं अगर ....अपने इतिहास को सम्मानित ...न करेंगे ....तो ...?

"कित्ता पागल हूँ, मैं ....?" पुरोहित जी उठे थे . "जल तो पिला दिया . ...पर खिलाया तो कुछ नहीं ....?" वह गड़बड़ा रहे थे . "भूखा होगा, मेरा बेटा ....?" वह स्वयं से पूछ रहे थे . "न जाने कौन से मेरे पुण्य उदय हुए हैं ....जो ये चला आया है ....?"

मुझे भी भूख लगी थी ....यह मैंने भी अब आ कर महसूस किया था!

विचित्र ही संयोग था! एक निराश ...और बूढा था ...और दूसरा था ...बालक ...? पर दोनों के मन एक थे ....और शायद ...आत्माएं परिचित थीं ...और हाँ, हमारे अधूरे कुछ संस्कार भी थे ...जिन्हें अब पूरा होना था ....!!

इतना स्वादिष्ट खाना मैंने अब तक की अपनी उम्र में न खाया था! जिस प्यार से और दुलार से उन्होंने मुझे खाना परोसा था ....मुझे याद नहीं कि ...अभी तक मैंने वैसा कभी महसूसा था!

"गुजर कैसे होती है ....?" मैंने पूछा था .

"पेंशन मिलती है!" उन्होंने बताया था . "स्वतंत्रता सैनानियों को बंगाल सरकार पेंशन देती है! चूंकि मैं अरोविंद घोष का चहेता था .....और लोग मुझे पाल पुरोहित के नाम से जानते थे ....अतः मुझे यह सहारा मिल गया!"

"और .....?"

"और मुझे चाहिए भी क्या, नरेन्द्र ....?" वो बिफर कर हँसे थे . "चलते ....चलते तुम मिल गए हो .....!" उन्होंने आनंद लेते हुए कहा था . "अब सारी की सारी अपनी कहानियां तुम्हें सुना कर ...चला जाऊंगा ....!" वह कहते रहे थे . "सच, बेटे! अब जीने को मन नहीं करता ....! वो दिन ही लौट –लौट कर आते हैं ....सताते हैं ....! सच्चा युग था वो, नरेन्द्र! सपूत पैदा होते थे तब ....भारत में! पर आज तो ......?"

उन्हें झूठा कहने के लिए मेरे पास कोई दलील भी न थी!

"थके हो! सो लो ....!!" उन का सुझाव था . "रहोगे तो ....सब बातें होंगीं .....!" उन का मानना था .

और मैं अचेत सो गया था! इतनी गहरी नीद मुझे पहली ही बार आई थी! लगा था – मैं आज अपनी ही भूली–बिसरी आत्मा से आ मिला था ...!!

25

वन्दे मातरम!!

मैंने पाल पुरोहित को एक नए संबोधन से पुकारा था . मैंने उन्हें अपना दादा मान कर 'दादा जी' की उपाधि दे दी थी . बहुत प्रसन्न हुए थे, वे! अब तक का पूरा का पूरा संचित दुलार, प्रेम और सौहार्द –सेवा उन्होंने अपने पोते – माने कि मैं, पर निछावर कर दी थी!

विचित्र मिलन था – हम दोनों का .....?

"बिलकुल तुम्हारी ही उम्र थी मेरी ....जब मैं गाँव से भाग कर ...कलकत्ता चला आया था! स्कूल छोड़ कर .....घर–बार छोड़ कर ....गाँव –प्रान्त छोड़ कर मैं ....आजादी के एक दीवाने की तरह ...कलकत्ता भाग आया था!!"

"पर ...दादा जी ....." मैं प्रश्न करना चाहता था .

"पर – नहीं, प्रिय बेटे ....! वो वक्त बड़ा बलवान था! फिजा पर कुर्बानियों का अमंगल झूम–झूम आया था! दीवानगी के गीत ...मात्रभूमि की स्तुति .. .और देश भक्ति के गीत ...विरोध और प्रतिरोध के वक्तव्य ....सब हवा पर लहराता रहता था! हम सब के दिमाग में एक ही बात घर कर गई थी – अंग्रेजों को देश से बाहर निकाल कर ही दम लेना ....!!"

"क्यों ....?"

"क्यों कि ....अंग्रेजों ने जो बंगालियों के साथ विश्वासघात किया था . ..जो बंगाल का विभाजन कर ...हिन्दू–मुसलमान में आपसी फूट डाल कर . ...'डिवाईड एंड ....रूल ' का फार्मूला अपनाया था ...वो अब जनता की समझ में समा गया था! लोग समझ गए थे कि अंग्रेज किसी के भी सगे न थे! न किसी के मित्र थे ....और न ही किसी के शुभ चिन्तक थे! शाशक थे ....और

उन का उद्देश्य भारत पर शाशन करना ही था! उन्हें धन कमाना था ...और देश को पूर्णतया गुलाम बनाना था!! हथकंडे – जो अंग्रेज अपना रहे थे . ...वो अब लोगों की निगाह के नीचे आ गए थे . कुछ भी छुपा न रहा था! जिस तरह से अंग्रेजों ने दमन नीति का निर्माण किया था ...उस से तो साफ जाहिर था कि हम ...उन के गुलाम थे ...उन के कोड़े खाने के लिए थे ... .बेगार भुगतने के लिए थे ...जुहार –सलाम बजाना ही हमारी नियति थी . ...और साहिब के सामने पड़ना तक ...हमारे लिए जुर्म था! और पुलिस के किए अत्याचारों ने तो नाक में दम कर दिया था ....!!"

"फिर .....?" अब मैं ध्यान मग्न हो कर अपने दादा जी को सुन रहा था .

"बम ....बना ....!!" उन्होंने कान खड़े करने वाली सूचना दी थी . "देश बन्धु कानूनगो ने ....बम बना दिया था! पहला टारगेट ...बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के ...मजिस्ट्रेट......किंग्स फोर्ट को बनाया गया था!"

"क्यों ....?"

"इसलिए कि वो ...हरामजादा था! उस ने लोगों का जीना हराम कर दिया था!! रात–रात वो पुलिस की गस्त लगा कर ...निरपराध लोगों को उठवा लेता था . नाम होता था 'स्वराजी' ....और जो भी धरपकड़ में फंस गया – सो तो गया ....!! और फिर उस के जुल्म ढाने के तरीके भी तो विचित्र ही थे! रूहें कांपती थीं ....उस के नाम से ....!!!"

"मरा ....वो ....?"

"नहीं ....! बच गया था ....!! खुदी राम बोस और ...प्रफुल्ल मणि ने .. .यूरोपियन क्लब से जाती ...उस की बग्घी पर ...बम मारा था! बग्घी तो उड़ गई थी! सब जल–भुन कर राख हो गया था . लोगों के हर्ष का ठिकाना न था! प्रसन्नता के पारावार हवा पर लहरा उठे थे!! पर ...."

"पर .....?"

"पर ....बाद में पता चला था कि ....मरने वाली दो औरतें थीं . बैरिस्टर कैनेडी की पत्नी ....और उस की बेटी की मौत हो गई थी!! "

"फिर ....?"

"फिर क्या ....? फिर तो कहर ही बरपा था!! अंग्रेजों ने पूरी जान झोंक कर गिरफ्तारियां कराईं थीं! अरविंदो घोष ....और उन के बड़े भाई ...वरिन्द्र

कुमार घोष समेत ....सैंतीस लोग पकडे थे! अलीपुर सैशन कोर्ट में केस चला था! जैसे कुंभ का मेला था – इतनी भीड़ थी! अंग्रेजों ने भी ऐतिहात तो बरता था ...! उन का पूरा –का–पूरा तंत्र एक जान था! टेलीग्राम का अनुसंधान तब हो चुका था! वह सब एक जुट थे ....एक जान थे .....और हम .....?"

"अलग–अलग थे .....बंटे हुए थे .....?" मेरा प्रश्न था .

"हाँ! मान लो!! फिर भी ....जनता अब हमारे साथ थी ....! शहादत देनेवालों के कत्ल तक हुए थे ....पर केस थमा नहीं था! प्रफुल्ल मणि ने आत्महत्या कर ली थी . खुदी राम बोस पकडे गए थे . अरविंदो जेल में थे . खुदी राम ने सजाए मौत स्वीकार ली थी ....और ...."

"और क्या–क्या हुआ था, दादा जी ....?"

"वन्दे मातरम ......! हाँ, हाँ! खुदी राम बोस ने ही तो वन्दे मातरम का नारा दिया था .....और फांसी झूल गया था .....!!" दादा जी रोने लगे थे .

"वन्दे मातरम् .....!!" मैंने पुकारा था ....और अपने दादा जी के आंसू पौंछ दिए थे!!

26

मैं फांसी पर झूलूँगा!!

मुझे चिंता है! बेहद चिंता है!! मैं परेशान हूँ!!!

काश! अमित अभी तक जेल में बैठा है . आज एक सप्ताह हो गया . मैं चाह कर भी उसे जेल से छुड़ा नहीं पाया हूँ . क्या सोचता होगा, अमित ....?

कल जब उस से बात हुई थी तो वह मुझे उद्विग्न नहीं लगा था . न डरा हुआ था, वह! हँसता –खेलता सा वह ..तो वही अमित था ...जो बड़ी से बड़ी समस्या को ..जोड़–तोड़ के गणित में डाल, हल कर देता है ....और ....

जरूर ही वह आज बगुले की तरह अपनी जेल की कोठरी में बैठा देश के ही हित–चिंतन में लगा होगा ...? उस का और कोई शौक ही नहीं है, न ....!

पर मैं बौखलाया हुआ हूँ . उसे जेल से छुडाना अब मेरा ही जिम्मा तो है ....?

मुख्य मुद्दा है ....कि हम दोनों ने ....मिल कर ...या कि साजिश रच कर ...देश–भक्त उन मुसलमानों को मरवाया ...जो बिलकुल बे–गुनाह थे ...'मौलाना' थे ...'संत' थे ....! हम दोनों कट्टर सांप्रदायिक हैं! हम दोनों किसी कल्पित हिन्दू ग्रुप के नुमाईंदे हैं ....और बहुत–बहुत खतरनाक हैं! कांग्रेस को डर है कि हम दोनों ...देश का मिजाज ही बिगाड़ देंगे ....जलजला सा कुछ ला देंगे ....नफरत के ऐसे बीज बो देंगे ...जिस के बाद देश संभाले से न संभलेगा ....! अतः हम दोनों का एक बीमारी की तरह इलाज अभी हो जाना चाहिए!

ठीक अगले चुनावों से पहले–पहले .....!!

आप नहीं समझे ....? कांग्रेस को और उस की नीतियों को समझना इतना आसान नहीं है .., श्रीमान! "डिवाईड एंड रुल ' कांग्रेस ने अंग्रेजों से जाते–जाते उधार ले लिया था और जाते–जाते अंग्रेज भी हिन्दू–मुसलमान को बाँट कर ...नफरत के बीज बो कर गए थे! उन के जाने के बाद कांग्रेस ने इस 'हिन्दू–मुसलमान' के फॉर्मूले को इस कदर पेटेंट कर लिया है कि . ..भीर–गाढ़ में इसे दवा–दारू की तरह इस्तेमाल कर लेते हैं!

सूचना के तौर पर ही मैं आप को अवगत करा दूं कि गुजरात एक हिन्दू बहुल राज्य है! लेकिन यहाँ के हिन्दू और मुसलमान बड़े ही प्रेम पूर्वक साथ–साथ रहते हैं! बड़े ही शान्ति–प्रिय लोग हैं . सब खाते –कमाते लोग हैं . संभ्रांत है ....!!

अब आप पूछेंगे कि ...फिर ये दंगे क्यों होते हैं .....?

तो इस का उत्तर मैं आप को विस्तार से देता हूँ! हाँ, हाँ! अब एक बार मैं भी चाहता हूँ कि ...इस बीमारी का फिर से जायजा लूं ...और इस का इलाज भी खोजूं!

सन १९६९ के हुए गुजरात के हिन्दू–मुसलमान के दंगों को कौन भुला सकता है ...?

हजारों–हजार लोगों का कत्ले–आम हुआ था! खूब जम कर मार–काट हुई थी . एक दूसरे के खून के प्यासे बने – हिन्दू–मुसलमान ....खुल कर सडकों पर आ गए थे! सरकारी तंत्र पूरी तरह से हरकत में था ...पर कुछ कर न पा रहा था! लेकिन क्यों ...? ये तो आप ही सोचें ....

कुल मिला कर घटना भी ये थी –

कालूपुर इलाके में मुसलमानों की बस्ती है . वहां सामने सड़क पर ही पुलिस स्टेशन स्थित है! और उस के ठीक सामने ही एक मस्जिद भी स्थित है!! उस मस्जिद के आस–पास ही मुसलमानों की दो दुकाने भी स्थित हैं . जब १९६९ में दंगे भड़के थे ....तो इन दुकानों और इस मस्जिद को जला दिया था! इस के अलावा भी जान–माल की खूब क्षति हुई थी!

अब आप जानना चाहेंगे कि उस वक्त गुजरात का मुख्य मंत्री कौन था ? तो मैं कहूँगा कि श्री हितेंद्र देसाई मुख्य मंत्री थे और कांग्रेस पार्टी के थे! और फिर मैं ये सूचना भी दूंगा कि ...केंद्र में कांग्रेस की ही सरकार थी....

.और श्रीमती इंदिरा गाँधी प्रधान मंत्री थीं . और उन की ही नाक के नीचे यह सब हुआ था ....!!

वह स्वयं गुजरात राज्य के दौरे पर अहमदाबाद आई थीं . उन्हें सीधा ही कालूपुर ले जाया गया था . उन्हें दिखाया गया था कि किस तरह से बे–रहम हिन्दूओं ने ...न केवल मुसलमानों की दुकाने ही जलाई थीं .... बल्कि वहां स्थिति मस्जिद को भी जला कर खाक कर दिया था! अब एक वीभत्स द्रश्य इंदिरा जी के सामने खड़ा हो हंसने लगा था! वो तिलमिला उठीं थीं ....!!

"नापो ....! नापो ....!! इस जगा को नापो ....." अचानक ही इंदिरा गांधी आदेश दे रहीं थीं . "पुलिस स्टेशन से ...मस्जिद तक के फासले को नापो .....!" उन का आदेश था .

"चालीस......... गज ....!!" उन्हीं के नुमाईन्दों ने उन्हें सूचना दी थी .

"पुलिस स्टेशन से कुल चालीस गज पर ....मस्जिद .....और वो जल गई ....?" उन्हें भी आश्चर्य हुआ था . "कैसे ....? मैं नहीं मानती .....!" वो बिगड़ी थीं . "साजिश है .....चाल है .....कोई जाल है .....जरूर कोई ...." वह कहती रहीं थीं . "जांच होगी ....मुकम्मल जांच होगी ......" वह लौट गईं थीं – निराश ....आहत ....और उत्तेजित ....!!

हुई जांच के परिणाम भी मैं आप को बताता हूँ!

लगभग ५००० लोग इन १९६९ के दंगों में मारे गए थे . जगमोहन कमीशन ने जांच के नाम पर लीपा–पोती की थी . गुजरात के इतिहास से इन दंगा मृतकों का नाम ही हटा दिया गया था . इतने बड़े काण्ड के बाद भी ...कोई चार्ज शीट दाखिल नहीं हुई थी . किसी को भी दोषी नहीं माना गया था . 'सांप्रदायिक' नाम दे कर इन दंगों को दफन कर दिया गया था .

मोटे तौर पर मैं आप को सूचित कर दूं कि ...सन १९४७ से ले कर सन २००२ तक गुजरात राज्य में करीब ११००० सांप्रदायिक दंगे हो चुके हैं . अगर मैं इस राज्य का मुख्य मंत्री न होता तो ...शायद ये जानकारी मेरे पास न होती! पर मैं दावे के साथ यह सब आप को बता रहा हूँ ...क्यों कि यह सब फाईलों पर दर्ज है!

और हाँ, एक और भी जरूरी जानकारी दे दूं! एक दो को छोड़ कर . ..गुजरात प्रदेश में दंगों के समय कांग्रेसी सरकारें ही थीं!

सन १६८५ की ही बात करते हैं! एक माह तक पूरा गुजरात प्रदेश सांप्रदायिक दंगों की आग में झुलसता रहा था! जम कर युद्ध हुआ था! भारी संख्या में हिन्दू–मुसलमान मरे थे! आरोपों और प्रत्यारोपों से अखबार भरे पड़े थे . प्रदेश की जमीन तक लाल हो गई थी! लेकिन ....

प्रदेश के मुख्य मंत्री भी तब सोलंकी जी थे और कांग्रेस के ही थे! और हाँ, केंद्र में तब श्री राजीव गाँधी प्रधान मंत्री थे ....और सरकार भी कांग्रेस की ही थी!!

इसी तरह १६८७ में भी हिन्दू–मुसलमान के बीच भयंकर दंगे हुए थे . ...और तब भी प्रदेश में मुख्य मंत्री श्री अमर सिंह चौधरी ....और ये भी कांग्रेस के ही थे! और फिर मुख्य मंत्री चिम्मन भाई पटेल ...जो कांग्रेस के ही थे . ..सप्ताहों तक प्रदेश को सांप्रदायिक दंगों में जलते देखते रहे थे ....और फिर १६६२ में ...इन्हीं के शाशन काल में ...गुजरात १५ दिनों तक ..जलाता रहा था!!

गुजरात राज्य में सांप्रदायिक दंगे ...कर्फ़्यू ....आगजनी ....ये सब कोई नई बात नहीं है!

चलो! अब मैं अपनी ढपली बजाना बंद करता हूँ! अब मैं आप को एक सटीक और निष्पक्ष दस्तावेज की जानकारी देता हूँ!

सुन्नी वोहरा समुदाय के गुजराती मुसलमान – जफर सरेशवाला अपने लेख 'व्हाई द ...मुस्लिम्स ...लाईक मोदी ...?' में लिखते हैं –

"कांग्रेस राज में गुजरात में हुए दंगों के वक्त ...मुसलमानों को सब से अधिक जान–माल ...और कारोबार ...का नुक्सान उठाना पड़ा ...और उन की एफ आई आर तक नहीं लिखी जाती थी! ये दंगे हमारी राजनीति की देन हैं –गुजराती हिन्दू–मुसलमान की नहीं हैं! और अगर मोदी सांप्रदायिक होता तो मुसलमान गुजरात में रह ही नहीं सकते थे ...? आज अगर गुजरात में मुसलमान सुरक्षित हैं तो ...केवल इस लिए कि यहाँ का हिन्दू सांप्रदायिक नहीं है! देश के राजनीतिज्ञ सांप्रदायिक हैं!!"

अब शायद आप की समझ में आ जाए कि यहाँ का हिन्दू–मुसलमान न तो लड़ना चाहता है ...और न ही एक दूसरे के खून का प्यासा है .

जफर और आगे लिखते हैं –

"गुजरात प्रान्त में तकरीबन ११००० सांप्रदायिक दंगे हुए ...लेकिन इस देश की जनता में से ...कोई क्या बता सकता है कि ..नरेन्द्र मोदी को छोड़ कर, किसी एक भी मुख्य मंत्री ने जनता के बीच जा कर सद्‌भावना यात्रा की हो ...? और मैं दावे के साथ लिखता हूँ कि ...२००२ के दंगों के बाद . ..गुजराती मुसलमानों के लिए यह एक पहला दशक होता है ...जब उन्हें एक भी सांप्रदायिक दंगे का सामना नहीं करना पडा है!"

अब मैं भी आप को अपनी राय दे दूं!

गुजरात हिन्दू बहुल प्रदेश है! लेकिन किसी हिन्दू के दिमाग में ये कभी नहीं आया कि ...वहां रह रहा मुसलमान कोई गैर है ....बाहर का है ...या वह इस प्रदेश का दुश्मन है! मैंने तो देखा है कि घोर दंगों के दौरान भी ...लाठी ताने खड़ा बेचारा हिन्दू ....दस बार सोचता है कि ...सामने खड़े दंगाई मुसलमान का सर फोड़े ...या कि उसे जाने दे ....?

अब देखिए कि मेरे गले में भी तो 'एंटी मुसलमान ' का पट्टा कांग्रेसियों ने बड़ी ही सफाई से बाँध दिया है! अमित शाह के खिलाफ तो एफ आई आर भी दर्ज हो चुकी है ....और वह भी जेल में जा बैठा है! कांग्रेस अपनी एडी–चोटी तक का जोर लगा रही है . उन्हें पक्का विश्वास है कि ...हम दोनों को इस हिन्दू–मुसलमान के दलदल में ...धंसा कर कांग्रेस साफ जाएगी! सत्ता ले लेगी . जहाँ उन की पहुँच है ....वहां हमारी नहीं है! केंद्र में वो हैं ...अतः पूरा तंत्र उन के साथ है!!

सूत्रधार कौन है ....? कौन जानता है ....??

हाँ, कांग्रेस को डर है ....उन्हें डर है ....कि कहीं मैं ....'मोदी' ...या कहूं कि 'नरेन्द्र मोदी' उन का बना–बनाया खेल न बिगाड़ दूं ....?

अगर किसी भी तरह ...मैं ...केंद्र में आ गया ....तो .....???

"कांग्रेस एक 'शब्द' नहीं ....एक संस्था है...एक पार्टी है! और इस पार्टी का एक इतिहास है ...ऐसा इतिहास जिसे अगर स्वर्ण अक्षरों में भी लिखा जाए तो भी हम इस का ऋण नहीं उतार सकते!" मेरे दादा जी पाल पुरोहित मुझे बता रहे थे .

मैं भी अब कांग्रेस संस्था के शारीर को अपनी जिज्ञासू उंगलिओं से सहला रहा था! मैं बरांडे में पड़ी उसी झिलंगी चारपाई पर चित पड़ा था .

दादा जी आधी टूटी टांगो वाली कुर्सी में धंसे बैठे थे . उन का चेहरा एक पुनीत–से लावण्य में डूबा था! उन की आँखों में कोई चिंता नहीं एक अजब–सी चमक थी!

"यों तो कांग्रेस ...एक विचार के आने से ...१८८५ में पैदा हुई! डाक्टर ह्यूम ने दादा भाई नौरोजी के साथ मिल कर ...अंग्रेजी पढ़े–लिखे नौजवानों के लिए ...चंद सुविधाएं सरकार से मांगने के लिए ...इस का निर्माण किया था! लेकिन उन्हें ....कांग्रेस के जनक तक को क्या पता था कि ....यही कांग्रेस एक दिन ...अंग्रेजी राज के लिए बवाल बन जाएगी ....?" वह हंस रहे थे .

मैं अब उन का मंतव्य समझ गया था . कल ही तो मैं अलीपुर जा कर ...पूरी ताक–झांक कर के ...सारे सबूत समेट लाया था! मैंने अरविंदो की जेल कोठरी भी देखी थी . मैंने देखा था ...जहाँ उन सारे कैदियों को रखा गया था ...मैंने देखा था – अलीपुर का वो सेशन कोर्ट ....जहाँ इन देश–भक्तों पर मुकद्दमा चला था! और मैंने देखा था ....सुना था ......

"अरविंदो के भीतर ....स्वामी विवेकानंद की आत्मा प्रवेश पा गई थी! दोनों चौदह दिनों तक साथ–साथ रहे थे ....न ...?"

'क्या सच में दादा जी .....?"

" सब सच है, नरेन्द्र! कारण कि स्वामी जी अकाल म्रत्यु मरे थे! उन की आत्मा अपनी उम्मीद से मिल कब पाई थी ? वह भी तो भारत को गुलाम नहीं देखना चाहते थे!" दादा जी ने मुझे सब सच–सच बता दिया था .

"कहते हैं कि ...मुकद्दमों के दौरान ...बहुर सारे कत्ल हुए थे ....?"

"हुए थे ...! जो लोग ..अंग्रेजों के इशारों पर झूठी गवाहियाँ दे रहे थे ....और वो वकील जो झूठे मुकद्दमे लड़ रहे थे ...और जो सरकारी अधिकारी अंग्रेजों के साथ थे ....और जो झूठे सबूत जुटा रहे थे ...उन की सरे–शाम हत्याएं हो रही थीं!"

मेरी आँखों के सामने फिर से अलीपुर जेल ....और सेशन कोर्ट उठ खड़े हुए थे! मैं फिर से मानिकतल्ला स्थित अरविंदो के घर को देख रहा था! मैं फिर से कोर्ट रूम से आती वकीलों की जिरह करती धारदार आवाजें सुन रहा था!

"ये हत्यारा है, माई लार्ड!" वकील नौर्टन जोश के साथ कह रहा था . "इस ने बम मार कर ...दो बेगुनाह महिलाओं की जान ली! इसे सजाए मौत दें ....इसे ....."

"सजाए मौत ही दें ....!!" खुदी राम बोस की आवाज आई थी . "मुझे सजाए मौत ही दें ....मैं सजाए मौत ही मांगता हूँ!!" एक अलौकिक आवाज मैं बोल रहा था, वह ." मैं फांसी पर झूलूँगा ....! वन्दे मातरम ....!!"

फिर न जाने वो कैसा 'वन्दे मातरम!' का शोर था जो अतलांत को डुबोने लगा था!!

27

राजा को राम होना चाहिए!

"बंगाल विभाजन ...के पेट से ही तो .....असली कांग्रेस का जन्म हुआ!" मैं फिर से सुन रहा था . "अंग्रेजों ने बंगाल को बाँट कर ...आफत बुला ली थी! सुरेन्द्र नाथ बेनर्जी ने स्वदेशी का नारा दे कर ...अंग्रेजी राज्य की जड़ों में मट्ठा भर दिया था! और ....." दादा जी ने मुझे पढ़ा था . "ये सब सच है, नरेन्द्र!"दादा जी मुझे समझाना चाहते थे . "कांग्रेस का रूप–स्वरुप तब बिलकुल अलग–थलग हो गया था! सरे शाम विद्रोह होने लगे थे . लूट–पाट .... डाके ....राहजनी ..... और अनाचार ...अत्याचार ...सब आरंभ हो गया था! अंग्रेजों को ही नहीं स्वयं कांग्रेसियों को भी चिंता होने लगी थी!"

"क्यों ....?" मैं चहका था . "ठीक तो हो रहा था ....?" मैंने तर्क किया था .

"नहीं, बेटे! कुछ गलत–सलत भी होने लगा था! और अंग्रेज इस होते गलत–सलत की आड़ ले कर स्वराजियों के ऊपर कहर ढाने लगे थे! कांग्रेस की चिंता फिजूल न थी!"

दादा जी जैसे एक मुकाम पर आ कर ठहर गए थे . वह किसी गहरे सोच में जा डूबे थे . वह सच और झूठ के बीच खड़े हो कर ...कोई निर्णय लेने को थे! वो स्वयं भी पक्ष और विपक्ष में बंटे लगे थे, मुझे!

"मैं भी चाहता था ....दिल से चाहता था ....कि अंग्रेजों पर वार किया जाए ....जंग लड़ी जाए! बाल गंगाधर तिलक भी जम कर लड़ना चाहते थे . लेकिन गोखले इस मार–काट से सहमत न थे . वह नहीं चाहते थे ...कि यह सब हो!"

"हर्ज क्या है ....?" तिलक अपने पक्ष में बोले थे . "टिट ...फॉर ...टेट – इन्हीं का दिया नारा तो है ...? हम कौनसी गलती कर रहे हैं ...?" वो गोखले से सवाल कर रहे थे .

"कल ...अगर राज आया ...तो गुंडा राज आएगा ...!" गोखले का तर्क था . "लोगे ...गुंडा ...राज ...?" उन का स्वर सख्त था . "मैं चाहता हूँ ...कि हम सत्ता का सौदा तो करें ....पर अपनी गरिमा के उस पार तक न जाएं!"

"भय बिन ....होई न प्रीत ....?" तिलक का तर्क था . "मान लो मेरी बात, गोखले! ये लातों के भूत ....बातों से मानने वाले नहीं! जो चल पड़ा है ... उसे रोको मत ...!" उन का आग्रह था .

"फिर ....?" मैंने पूछा था . मैं अब आंदोलित था . मैं तिलक और गोखले दोनों को अनुशीलन समित के आँगन में खड़े देख रहा था . "दोनों .....?"

"नहीं माने!" दादा जी ने बताया था . "कांग्रेस की दो फाड़ें हो गईं! एक गरम दल ...तो दूसरा नरम दल ....!!"

अब मैं रो पड़ना चाहता था . अब मैं चिल्लाना चाहता था . अब मैं उदास था! 'आपसी फूट ....हमारी ये आपसी फूट ही हमें ले डूबती है!' मैं कह देना चाहता था . पर तब ...मैं बहुत छोटा था!

"अब अंग्रेजों ने तीसरी चाल चली! तुरप का पत्ता फेंका और हिन्दू–मुसलमानों को भी बांटना शुरू कर दिया! लालच के बकरे मुसलमानों के सामने बाँध दिए . उन के कान में कहा – हमने सत्ता मुगलों से ली थी ....हिन्दूओं से नहीं! हिन्दू तो गुलाम थे . शासक थे – मुसलमान! हम सत्ता मुसलमानों को देंगे ....हिन्दूओं को नहीं!"

मेरे तो मुंह का ही जायका बिगड़ गया था! जहर था ....निरा जहर .. ..जो अभी–अभी मेरी नसों में ऊपर चढ़ गया था! कितनी घटिया चाल थी – अंग्रेजों की ....? हिन्दू–मुसलमान तो कंधे से कन्धा मिला कर अंग्रेजी हुकूमत के साथ जंग लड़ रहे थे ....? लेकिन अब दोनों एक बारगी ठहर कर सोचने पर मजबूर हो गए थे कि ....

"हिन्दूओं के साथ न रह पाओगे ....!" अंग्रेज हवा के कान भर रहे थे . "हिन्दू राष्ट्र की बात करता है, तिलक! कट्टर हिन्दू है! तुम्हें तो ....?"

हवा में एक डर पैदा हो गया था ... न सिर्फ मुसलमानों के लिए ... बल्कि हिन्दुओं के लिए भी!

"देश तो सब का है, अकेले तिलक का तो नहीं ...?" उदारवादी बोले थे . "जो फैसला होगा, सर्व सम्मति से होगा!" बात तय हो गई थी .

"लगा था –सब फिसल गया था ." दादा जी का स्वर कमजोर था . "एक बार तो नरेन्द्र ...बहुत बुरा लगा था! बना–बनाया काम बिगाड़ दिया था – गोपाल कृष्ण गोखले ने . कायर था ...अंग्रेजों का दलाल था – मुझे ऐसा लगा था! और लगा था कि अंग्रेज अब किसी तरह भी काबू न आएँगे! सत्ता उन की थी . ....राज उन का था ...उन के पास क्या नहीं था ....?"

"कहते हैं ....तब अंग्रेजों ने ...टेलीग्राम के जरिए देश को ....इतने विशाल देश को ....अपनी मुट्ठी में ले लिया था ....?"

"हाँ! ले लिया था! कमाल ही तो था ....? सन्देश लेजाने के लिए अब कोई कबूतर ...तो नहीं उड़ाना था ...! न हीं हलकारे जाते थे! न हीं महीनों का समय लगता था ...! मात्र पल –छिन में ईधर का सन्देश उधर पहुँच जाता था! सूचनाएं स्वयं कबूतर बन कर उड़ने लगीं थीं, नरेन्द्र!" दादा जी का चेहरा उदभासित हो उठा था . "लगा था – अब तो हार गए! न तिलक गोखले की बात सुनते थे ....और न ही गोखले तिलक की बात को महत्व देते थे! पार्टी की भी दो फांक होने के बाद ...दोनों बेकार हो गईं थीं . देश भक्त निरुत्साहित हो कर घर लौटने लगे थे!"

"अंग्रेजों के तो घी के दीपक जलते होंगे .....?" मैंने पूछा था .

"जुल्म ढा रहे थे! जिन लोगों ने उन का चाहे –अनचाहे विरोध किया था ....उन्हें मिटाने में अंग्रेजों ने कसर न रखी थी!" दादा जी कुछ सोचने लगे थे . "बस, यही बड़ी भूल थी, अंग्रेजों की! वो हमारे साथ मिल कर बैठना ही न चाहते थे ...? वो तो केवल माल चाहते थे ....सत्ता चाहते थे . ...और चाहते थे – गुलाम!" अब की बार दादा जी हँसे थे . "यह संभव नहीं होता, नरेन्द्र!" कह कर चुप हो गए थे, दादा जी .

"अरविंदो यही तो लोगों को बताते थे!" दादा जी ने बात को पलट दिया था. "कहते थे – गुलामी एक मानसिक रोग है! इसे गरीबी से मत जोड़ो! ग्यानी–ध्यानी .....राजे–महाराजे ...और पंडित–प्रधान सभी तो गुलाम बने बैठे हैं ...? अंग्रेजों के साथ मिल कर कमाने का लालच ...इन्हें अंधा

किए है! जनता के लिए इन का सोच और सरोकार मर चुका है . स्वार्थ है ....स्वार्थ! केवल स्वार्थ ...निजी स्वार्थ ....जिसे ये पोष रहे हैं .... . " दादा जी बताते रहे थे . "और नरेन्द्र! अंग्रेजों पर भी तब सत्ता का भूत सवार था! अँधा युग था . गोरे –काले का अंतर अंग्रेजों को उभार लाता था! गोरा उन के लिए श्रेष्ठ था ...सर्व गुण संपन्न था ...जब कि काला तो पैदाईशी ही गुलाम था!"

"अरविंदो को सजा हुई थी, दादा जी ....?" मैं पूछ बैठा था . मेरे दिमाग से वह अलीपुर के सेशन कोर्ट का द्रश्य मिट नहीं पा रहा था .

"नहीं!" दादा जी हँसे थे . "छूट गए थे, अरविंदो!" उन्होंने बताया था . "उन की वकालत के लिए स्वयं चित्तरंजन दास खड़े हुए थे . बड़े ही विद्वान् अधिवक्ता थे, वो! उन्होंने मजिस्ट्रेट किंग्स फोर्ड को अपनी धारदार आवाज मैं कहा था – मी ..लार्ड! अरविंदो एक असाधारण पुरुष है! जहाँ वह एक जन–प्रिय कवि है ....वही वह वेदान्त की वाणी भी है!! बड़े विद्वान् हैं, अरविंदो! इंग्लेंड में पले –पढ़े ...अरविंदो ठेठ भारतीय हैं! इन की आत्मा देश भक्ति के रंग में रंगी है! ये वेदों की वाणी हैं ....ये गंगा की पवित्र धारा हैं ...और ये हमारे तमाम तीर्थों का संगम है!!" अब उन्होंने मजिस्ट्रेट किंग्स फोर्ड की आँखों में देखा था . "आप तो क्या ....इन्हें तो स्वयं परमात्मा भी म्रत्यु दंड नहीं दे सकता ....?" ये उन का दावा था . "हाँ! ये स्वयं ही ....स्वेच्छा से ...इस भारत भूमि को छोड़ कर जाएंगे .....!!" ये उन का एलान था .

कोर्ट रूम में तालियाँ बजीं थीं . कटघरे में खड़े अरविंदो मुस्कराए थे . एक नाटकीय द्रश्य घटा था . कोर्ट रूम की तमाम औपचारिकताओं को ताक पर रख कर ...वहां एक सहजता लौट आई थी . मानो अरविंदो ने सभी को भय–मुक्त कर दिया था ....लोग बेहद मुखर हो उठे थे! अचानक ही अरविंदो की जय–जयकार होने लगी थी! तभी मजिस्ट्रेट कींग्स फोर्ड की आवाज आई थी –....

"मैं इन्हें मुक्त करता हूँ! इन के खिलाफ सबूत न होने के कारण ...."

हर्षातिरेक से आसमान गूँज उठा था ....!!!

"वरिन्द्र कुमार घोष को फांसी की सजा दी जाती है ....!!" मजिस्ट्रेट किंग्स फोर्ड फिर से एलान कर रहे थे . "देश द्रोही होने के साथ–साथ ये षडयन्त्रकारी भी हैं! इन की ही सहमती से ....दो लाशें ....."

"कौन थे, वरिन्द्र कुमार घोष ...?" मैंने पूछ ही लिया था .

"अरविंदो के बड़े भाई थे! इन्हीं के घर पर बैठ कर बम फैंकने की योजना –मानिकतला में संपन्न हुई थी ." दादा जी बताने लगे थे . "इन की सजा के बाद तो ....सजा ....फांसी ....और न जाने क्या–क्या नहीं हुआ .... नरेन्द्र ?" दादा जी अब चुप थे .

"आप ....तब .....?" मैं यों ही पूछ बैठा था .

"तुम्हारी तरह ...छोटा था ....पर था समझदार!" वो अब भी गंभीर थे . "कितनी भूलें करते हैं, लोग ....?" वो टीस आये थे . "इंसान ही इंसान को पास नहीं बिठाता ....? एक संपन्न भाई ...अपने ही विपन्न भाई को ...गले नहीं लगाता! सत्ता का ही साथ देते हैं, लोग! सच का नहीं!!" वह मुझे घूर रहे थे . "सच को तो सूली चढ़ना ही होता है, नरेन्द्र!" उन की आवाज बुझ–सी गई थी .

दूसरे ही दिन मैं मानिकतला गया था . मैंने वरिन्द्र कुमार घोष का घर खोज लिया था . मैंने वहां बैठ कर महसूसा था कि ...वो सब लोग मरे नहीं थे ....यहीं मौजूद थे! मुझ से बतियाते ...चुहल करते ...हँसते–गाते ...ये लोग कह रहे थे – डूब गया ...न सत्ता का जहाज ...जहाँ सूरज कभी गरूव ही न होता था ....? वहां अब हमेशा हमेशा के लिए अन्धकार आ बैठा है!" वो बता रहे थे . "कभी सोचा भी न होगा ....इन लोगों ने ....? जुर्म करने के अलावा तो ....इन्हें और कुछ याद ही न रहा था ....?" उन्होंने मुझे स्नेह से देखा था .

"सत्ता का दर्प भी सांप की तरह ही डसता है, नरेन्द्र!" न जाने क्यों वो सब मुझे खबरदार कर रहे थे . "राजा को राम होना चाहिए! रावण नहीं!!" उन्होंने अपना मत कहा था .

और ये राम राज्य का स्वप्न मुझे भारत में बैठा ही मिला था – एक विरासत की तरह ....!!!!

28

कोई था – जो मेरे खून का प्यासा था!

गुजरात राज्य का मुख्य मंत्री बनते ही ...न जाने कैसे मेरी आँखों के सामने मेरे दादा जी पाल पुरोहित का चेहरा भक्क से उजागर हो गया था! वो मुझे आशीर्वाद देने चले आये थे . अब मेरे पास बैठे–बैठे कह रहे थे .. .'सत्ता का दर्प ...सांप की तरह डसता है, नरेन्द्र!'! और उन का कहा सब मुझे अचानक ही याद हो आया था . 'राजा को राम होना चाहिए!'

राम राज्य के स्वप्न का शरीर सहलाते हुए मैं भिन्न प्रकार के एक आन्दोलन से जा भिड़ा था!

सत्ता के दर्प से भी ज्यादा विध्वंसकारी ....सत्ता का स्वांग था .....!!

मक्खियों की तरह ...सत्ता के शहद पर अनगिनत ...नेता, अधिकारी, चर–चपरासी ....और चेले –चपाटे आ–आ कर चिपट गए थे! अपने–पराए का भ्रम भूल मैं ...अपनी चकित द्रष्टि से उन सब के ...चालाक चेहरों को देख रहा था! सब ने नकाब पहने थे . सब नकली थे . सब के इरादे थे . ...पर गुप्त! सब के उद्देश्य थे ...पर उजागर कुछ नहीं था! सब की लालसाएं ....कामनाएं ....आशाएं ...प्रत्याशाएं ....आ–आ कर मुझ से टकरा रहीं थीं! सब की आँखों में आग्रह थे!!

"लो, लो! ये तो ले ही लो .....नरेन्द्र ?" मैं अनजान–सी आवाजें सुन रहा था . "अरे, भाई! ये तो तुम्हारा हक है! चीफ मिनिस्टर हो ....! इतना तो .....चलता है ....!!"

तब रास्ते के उस छोर पर मुझे दादा जी खड़े मिले थे!

"भाई! अब सरकारी चाल–चलन तो चलेगा ही .....?" मेरे सामने सुझाव थे . "पार्टियाँ ...या कि ..गेट–टू –गेदर ....तो एक आवश्यकता है ....? ओहदों ....और औकातों के अनुसार ...हर कोई खर्च तो करेगा ही ....! फोरिन ट्रिप्स ...कोई आइयाशी नहीं है! ये तो चलन है! सांस्कृतिक आदान–प्रदान है! हम जाएंगे ....तो वो भी आएँगे ....! तभी तो प्रगति होगी ....?"

मैंने 'प्रगति' शब्द को कई पलों तक कस कर पकडे रखा था!

"सरकारी माल–खजाना ...खर्चने के लिए ही बना है!" मेरे सामने सुझाव था . "बहती गंगा है, ये! जल प्रवाहित होता रहे तो ....ही निर्मल बना रहता है! धन आए ....धन जाए ....तो ही रास्ता तय करता है! जनता में जान आ जाती है! उन की मुट्ठियों में पैसा पहुंचता है तो ....खुशहाली स्वयं ही लहलहाने लगती है!!"

बात तो ठीक थी . मैंने इस पर गौर किया था . जनता के बीच मैंने ...तब कुछ ऐसे उपवन उगाने के सोच को जन्म दिया था ...जो सर्वहिताय था!

सत्ता की इस झलक और झांकियों में ....तब मुझे धुआं भी उठता दिखाई दिया था! कुछ लोग थे – जो बहुत अपने थे ...पर थे बहुत बेगाने ....! उन के हुनर को देख कर मैं दंग रह गया था! सरकारी माल–खजाने को खाने–पचाने में ये दक्ष थे, वो! पर अपने चालाक चहरों पर मक्खी तक को न बैठने देते थे! काम तो सब मेरी कलम से होना था ....पर उस पर नाम उन का लिख जाना था!

शेर और लोमड़ी का खेल आरंभ हो चुका था! शेर तो जब शिकार करता था तो ....समूचा जंगल दहला जाता था! लेकिन लोमड़ी सारा का सारा माल डकार कर निशान तक न छोडती थी ...! और थे इस गेम के गीदड़ ...जो शेर के किए शिकार का ...मांस नोंच–नोंच कर खा जाते थे . ....और फिर शोर मचाते थे ....चिल्लाते थे ....और कहते थे – इस ने ...इस शेर ने मारा है, ये शिकार! बिखरी पड़ी हैं –ये हड्डियाँ! देख लो!! हमने नहीं, गुनाह तो इस ने किया है!! इसे मारो ....इसे जेल में डालो ....गुनाह इस ने किया है ....हमने नहीं!!!"

फिर मैं और किसिम की आवाजें आती सुनता – इसे पिंजड़े में बंद करो! इसे रोको! सब मिल कर दम लगाओ!! वरना ....ये अकेला शेर ही इस सारे जंगल को उजाड़ देगा ......?

और मेरी विडम्बना क्या थी ....? माने कि मेरी ....एक मुख्य मंत्री की विवशताएँ थीं ....! चपरासी से ले कर चीफ मिनिस्टर तक एक लम्बी चेन थी – प्रशाशन की चेन ....जिस में नेता थे ...अधिकारी थे ....प्यादे और मुहरे! ये मेरे काफिले के अभिन्न अंग थे! इन के बिना तो मैं अधूरा ही था!और इन के बिना तो शाशन प्रणाली को चला पाना असंभव ही था!

हाँ, मेरे कान तो मेरे ही थे! अकेले तो थे ...पर उन में आती आवाजें . ..अनेक थीं ....अलग–अलग थीं ....मारक और संहारक – दोनों ही थीं! कर्ण प्रिय संवाद से ले कर ...कर्कश और जानलेवा उल्हानों तक मुझे तो सब सुनना ही था! 'मुझे दो, मुझे दो ...?' का शोर ....अब मेरे कान फोड़ने लगा था!

अब आ कर राम–राज्य की परिभाषा मेरी समझ में आयी थी!

"जिसे न दोगे ....वही तुम्हारा जानी दुश्मन होगा ...नरेन्द्र!" अब मेरा ही विवेक मुझे बता रहा था . "जैसे कि आई पी एस अधिकारी संजीव भट्ट .... !" उदाहरण भी मेरे सामने थे . "संजीव भट्ट एक बईमान और भ्रष्ट आई पी एस ऑफिसर था . यह बात मेरे सामने उजागर हो चुकी थी . और भी कितने सच –झूठ थे जो अब पहेलियों की तरह मुझ से उत्तर मांग रहे थे! भ्रष्ट और बईमान नेता, अधिकारी और समाजसेवी – सभी मुझ से खतरा खाने लगे थे . उन सब का कयास था कि मैं शायद उन्हें बहुत दिनों तक बर्दाश्त न कर पाऊंगा ? संजीव भट्ट पर वनस कोटा के एस पी रहने के दौरान नौकरी बहाल के नाम पर घपला और घोटाले के आरोप थे! उस पर और भी कई भ्रष्टाचार और अपराध के मामले चल रहे थे! उसे मुझ से डर था कि कहीं .....?

"ये धर्मराज ....किसी को नहीं छोड़ेंगे ....!" राजनैतिक और आधिकारिक दायरों में एक धारण फैल चुकी थी .

सच में मैं भी चाहता था कि ...अपने चारों और अच्छी छवि के लोगों को ही बिठाऊँ!

लेकिन हुआ उल्टा! मैं हैरान था कि ...मिडिया ने अचानक ही संजीव भट्ट को एक निहायत ही होनहार ...कर्मठ और योग्य आई पी एस ऑफिसर बता कर ...मेरी चली गहरी चाल का शिकार हुआ ....बे–गुनाह व्यक्ति बताया! बताया कि ...'गोधरा काण्ड ' संजीव भट्ट के अनुसार नरेन्द्र मोदी की एक

साजिश थी ....जिस में हिन्दूओं को छूट दी गई थी कि ...वो उन के साथ हुए अन्याय का बदला चुकाएं!

अब क्या था ....? मेरे ऊपर दनादन अखबार, टी वी, रेडियो और पत्र–पत्रिकाओं का कहर गिरने लगा! मैं बेदम हो गया . मैं घबरा गया . संजीव भट्ट की सोची इस मुहिम को मैं कैसे काटता, मुझे पता ही न था!

मैं पढ़ा रहा था – बेचारे संजीव भट्ट वफादारी के बदले ...गद्दारी के शिकार हुए! संजीव भट्ट सच कहते हैं कि 'गोधरा काण्ड' एक नाटक है .. ..है कुछ नहीं! संजीव भट्ट का बयान है कि वो ....स्वयं इस पूरी घटना के चश्मदीद गवाह हैं और दावे के साथ कह सकते हैं कि ...इस तमाम हुए नर–संहार का एक ही आदमी जिम्मेदार है – और वो है नरेन्द्र मोदी – गुजरात प्रांत का मुख्य मंत्री – स्वयं ....!!

चूंकि मैं मुख्य मंत्री था अतः मेरे हाथ में कुछ ऐसे तंत्र–मंत्र थे ....कारगर काम करते थे! मैंने कहा – पता लगाओ, असलियत क्या है ....?

"पूरे प्रकरण का एक ही सूत्रधार है – कांग्रेस!" मुझे बताया गया था . "संजीव भट्ट को बहुत बड़ा लालच दिया गया था . उस की पत्नी स्वेता को अगले चुनावों में सीट मिल रही थी! संजीव भट्ट अब एक पूरे फ्रंट के चहेते थे – जिस में पूरा सेक्युलर फ्रंट, एन जी ओज, मीडिया –गठ –जोड़ –सभी शामिल थे . बहुत सारा धन भी लगाया जा रहा था! इनाम –इकरार भी तय हो चुके थे . मुद्दा सिर्फ एक है – मोदी! और आदेश हैं – गेट हिम ....एट एनी कॉस्ट!!

मेरी तो जान ही सूख गई थी!

"किस झंझट में आन फंसा ......?" मैंने झुंझला कर स्वयं से पूछा था . "सोचा था –राम राज्य .....और आ धमका कसाई राज्य ....? अब तुम्हें ये कसाई टुकड़ों में काट–काट कर खाएंगे, नरेन्द्र भाई!" एक चेतावनी मेरी आँखों के सामने खड़ी थी .

"नरेन्द्र मोदी पर संजीव भट्ट के तीन मुख्य आरोप हैं!" अखबार और टी वी बता रहे थे . "संजीव भट्ट कहते हैं कि २७ फरवरी की उस रात को जब मुख्य मंत्री निवास पर पुलिस अधिकारिओं की बैठक हुई थी ...तो वो उस में मौजूद थे! उस बैठक में स्वयं नरेन्द्र मोदी ने ...अधिकारियों को निर्देश दिया था कि ...हिन्दूओं को छूट दी जाए ..ताकि वो ......"

संजीव भट्ट का ये इल्जाम सरासर गलत था ....झूठ था! लेकिन मेरी आवाज तो मेरे ही गले में अटकी थी ....! मैं क्या करता ....?

सच ये था कि मैं जब १०....० बजे गोधरा से वापस लौटा था तो ....मेरी आत्मा आहात थी ....मैं तो मर ही चुका था ....! जो हुआ था ....वो ...वो ... बहुत बुरा हुआ था! बहुर बुरा और न्रशंस द्रश्य था! मैं इस आई बला के परिणामों को समझने लगा था . मैं महसूस रहा था कि ...इस घटना की जो प्रतिक्रिया होगी ....वो भयंकर ही होगी!!

और जो मैंने देखा था – वह भी तो भयंकर ही था ....वीभत्स था .... अमानुषिक था ....और था बेहद विरस ....खट्टा .....चूक खट्टा ...!!

हिन्दू–मुस्लमान के नाम पर फिर से किसी ने साजिश रच कर ....विष–बीज बो दिए थे! लाशों पर लाशें पट गईं थीं! जले ...अधजले .....मृतक ....बिलबिलाते बच्चे ....और निर्वसन महिलाओं की लाशें .....? उफ ......!!

मैं बेहद डरा हुआ था! मुझे अनुमान था कि ...अब कुछ और भी अघटनीय घटेगा ....! जरूर ही गाज गिरेगी ....आसमान फटेगा .....और शायद किसी ...क्रूर किस्म के नर–संहार का सूत्रपात हो जाए ....!!

उसी रात मैंने डर की वजह से मुख्य मंत्री निवास पर पुलिस अधिकारियों की मीटिंग बुलाई थी!

लेकिन ये भी सच था कि श्री संजीव भट्ट आई पी एस उस बैठक में मौजूद ही न थे! वो तो अपने रचे जाने वाले प्रपंच के तंत्र को आखिरी अंजाम दे रहे थे! नोट बटोर रहे थे ....और अगले इनाम–इकरार तय कर रहे थे! कारण –उन के द्वारा ....उन की शहादत के जरिये ....नरेन्द्र मोदी को घेरना आसान था! अतः वह अब मुंह माँगा पा रहे थे!!

संजीव भट्ट की उस रात की अनुपस्थिति के सबूत बाद में मिले थे!

तत्कालीन पुलिस महानिदेशक के . चतुर्वेदी ने साफ कहा था कि संजीव भट्ट उस बैठक में मौजूद नहीं थे! उन्हें तो उस बैठक में शामिल होने के लिए बुलाया ही नहीं गया था ...?

लेकिन संजीव भट्ट ने इसी घटना को आगे बढ़ा कर कहा था –

२८ फरवरी २००२ की सुबह १० बजे की हुई बैठक में भी वह मुख्य मंत्री निवास पर था और ११ बजे वह मुख्यालय गया था! मुख्य मंत्री ने दंगों पर

काबू पाने के लिए सेना बुलाने के सुझाव को ठुकरा दिया था! और जब गुलबर्गा सोसाईटी में दंगाईयों ने कांग्रेस के पूर्व सांसद एहसान जाफरी पर हमला किया था – तो मैंने सीधे इस की सूचना मुख्य मंत्री नरेन्द्र मोदी को दी थी! और मुख्य मंत्री ने मुझ से कहा था – तथ्यों की रिपोर्ट बना कर भेजें!

लेकिन यह भी बाद में साबित हो गया था कि संजीव भट्ट मुख्य मंत्री निवास पर नहीं ....अहमदाबाद में अपने गठबंधन के साथ थे!!

और फिर संजीव भट्ट थे भी इतने छोटे कि उन का सीधा मुख्य मंत्री से संपर्क होना एक अनोखी घटना ही थी ....?

लेकिन संगठन का उद्देश्य तो मुझे घेरना था ? अतः संजीव भट्ट से कहलवाया गया – गोधरा में साबरमती एक्सप्रेस में मारे गए ...कार सेवकों के पार्थिव शरीरों को अहमदाबाद लाने ....और उन की शव–यात्रा निकालने के आदेश स्वयं मुख्य मंत्री ने ही दिए थे! सारे अधिकारिओं के मना करने के बावजूद भी ...मुख्य मंत्री ने एक न मानी ....और परिणाम स्वरुप ..... हिन्दू–मुसलामानों के बीच ......"

श्री संजीव भट्ट का वरिष्टता क्रम और उन की जॉब प्रोफाइल ...उन के मुख्य मंत्री की बैठक में शामिल होने को .... सर से ही झूठ साबित करता है!

मैं स्वयं चकित था ....भ्रमित था ....और बेदम था! जो द्रश्य गोधरा में घटा था .....वह कोई साधारण हिन्दू–मुसलमान का दंगा न था! यह तो एक अंतर्राष्ट्रीय साजिश का सूत्रपात जैसा था! कोई था – जो मेरी जान का ग्राहक था ......मेरे खून का प्यासा था!!

वह मेरे जीवन का अंत ला देने के लिए अब आमादा था!!!

29

फिर बम मारा ?

सच कहूं, मैंने जाने–अनजाने कभी भी किसी भी मुसलमान का बुरा नहीं किया! क्यों करता मैं – किसी मुसलमान का बुरा ....? मेरे लिए तो मेरे पूरे प्रान्त गुजरात की प्रजा एक सामान थी ....एक जात थी ....एक समूह थी – गुजराती! और मैं हर गुजराती के भले–बुरे में शामिल था! मैं तो उन सब का था ....सब में शामिल था ....और उन सब के साथ था!

फिर मुझे बांटा क्यों जा रहा था ....?

मुझे लगा था – जैसे मेरी दो टांगों में से एक टांग हिन्दूओं ने पकड़ ली थी ....और दूसरी टांग को मुसलमानों ने जकड लिया था! अब हिन्दू–मुसलमान की होती इस रस्सा–कसी में ...मुझे दो दिशाओं में खींचा जा रहा था! मुझे लग रहा था कि अब मेरे शरीर की दो फाड़ें हो जाएंगी ....और मैं मिट कर रहूँगा – इस दंगे में ?

सोला हॉस्पिटल के सिविल सर्जन की रिपोर्ट मेरे सामने थी –

५४ लोगों के शव २८ फरवरी की सुबह ....10 बजे तक अस्पताल में पहुँच चुके थे! उन का पोस्ट मार्टम हो चुका था . सोला हॉस्पिटल में शवों को बहुत समय तक नहीं रखा गया था . लेकिन खबरें तो पंख लगा कर उड़ रही थीं ....?

एस आई टी की जांच का ब्यौरा भी मैं आप को दे दूं!

संजीव भट्ट की ई –मेल, मोबाईल व् कंप्यूटर की जांच से पता चलता है कि संजीव भट्ट किसी गिरोह के साथ संपर्क साधे हैं!

और यही श्री संजीव भट्ट अब मेरी जान के प्यासे थे!!

सांप पालने का शौक मुझे कभी से न था! लेकिन ये जहरीले नाग जो अब मेरे जानी दुश्मन बन मेरे शरीर से लिपटे जा रहे थे – मेरे न थे! यह सब तो मुझे विरासत में मिला था! सब का सब एक चलता चरखा था .... और इसी को अब एक मुख्य मंत्री के बतौर मुझे चलाना था! मुझे उस सांचे में फिट होना था ...जो किसी एक के लिए नहीं ....अनेकों के लिए बना था!

एक बारगी इस मुख्य मंत्री की कुर्सी पर बैठा – मैं एक अलग ही जीवन की झांकियां करने लगा था!

"ऐसा बांटा बेईमानो ने कि ....आज तक जुड़ने की जुगत नहीं लग पा रही है!" मेरे दादा जी धूप में बैठ मुझे बता रहे थे . हम दोनों फुर्सत में थे . न मुझे कोई प्रयोजन था और न ही उन्हें! अच्छी गुजर रही थी – हम दोनों की! आस–पास बिखरा इतिहास भी हमारे ही पास आ बैठता था! और फिर दादा जी कोई एक कहानी आरंभ कर देते थे! "कितने चतुर थे ये अंग्रेज, नरेन्द्र! मैं तुम्हें बता नहीं सकता, बेटे ....!!" वह अपने हाथ हवा में फैंक रहे थे . "सब से पहले तो इन्होने बहादुर कौमों को पकड़ा! फौज में और पुलिस में भर्ती किया . और फिर पे, पेंशन ...पर्क्स और प्रमोशन के . ..इतने प्रलोभन दिए ....कि लोग बाबले हो गए थे! अंग्रेजी राज ....और अंग्रेजी हुकूमत ...अफीम की तरह असर करने लगी! कैरियर नाम की एक अलग से गोली तैयार की! बस, आदमी अपना कैरियर बनाने के लिए औरों को भूल ही गया! पूरी उम्र गुलामी में काट कर ....स्वामी–भक्ति के तगमे पहन .... पब्लिक में सीना तान कर घूमता ....कहता – साब बहादुर ने मुझे ये दिया .....और मैंने साब बहादुर से हाथ मिलाया ....तो साब बहादुर ने ....." रुके थे, दादा जी .

"आप भी तो मिले होंगे ...इन साब बहादुरों से, दादा जी ....?" मैंने चुहल की थी .

"हाँ! मिला था!!" वो तनिक विहंसे थे . "लेकिन उन को मेरी जड़ों तक का हाल पता था....और मेरी तो जान भी उन की मुट्ठी में थी! पर मुझे जिन्दा रखना था – अंग्रेजों ने ....एक ठिकाने की तरह! अनुशीलन समिति और जुगांतर का वो मुझे चलता–फिरता एनसाईक्लोपीडिया मानते थे! मेरी पैनी नजर देखती रही थी कि ....किस तरह अंग्रेजों ने राजे–रजवाड़ों को गुलाम बनाया ....और फिर जनता पर राज करने के लिए तीन पत्ते तैयार किए!"

"कौन से पत्ते, दादा जी ....?"

"आई पी एस, आई ए एस .....और आई एफ एस .....!" उन्होंने बताया था .

"मतलब .....?"

"मतलब कि ....सिविल नौकरियों में श्रेष्ठ! इन्डियन पुलिस, एडमिनिस्ट्रेशन और विदेश सेवा के लिए ...चुने गए भारतीय ...वो ईजाद किए नुस्खे थे जो अंग्रेजी शाशन का पूरा कार्यभार संभालते थे ..उसे चलाते थे ....और अपने ही देश और देश वासियों के साथ गद्दारी करते थे!" दादा जी गरजे थे .

मैं भी अपनी छोटी बुद्धि को बड़ा कर कुछ सोचने लगा था ....कि आखिर अंग्रेज इतना बड़ा तंत्र जुटा कैसे पाए होंगे ....? कैसे एक सामंजस्य बिठाया होगा ....कि देश का हर नागरिक ...उन का भक्त था ....?

"एक हाथ को दूसरे हाथ का पता ही न होता था ...., नरेन्द्र!" दादा जी ने खुलासा किया था . "जो भी होता था – उस की एक ही दिशा और परिणाम होता था! और उस पर उन की गिद्ध द्रष्टि टिकी होती थी . धूल में से मुनाफे की कौड़ी ढूंढ निकालना ....अंग्रेजी दिमाग का ही कमाल था!"

"जैसे ....?" मैं जिज्ञासू था .

"अरे, भाई! जब ये लोग आए थे ....तो ....छोटा–मोटा व्यापार ही तो करते थे ....? लेकिन जब ये देश में घुसे तो इन की तो आँखें फटी की फटी रह गईं!"

"क्यों ....?"

"क्यों कि ...ये लोग तो छोटे से देश से चल कर आए थे! और यहाँ आ कर इन्होने देखा ....हिमालय ...गंगा –जमुना का डेल्टा ....पंजाब का वैभव ....राजिस्थान का विस्तार ....दखन का पठार ...और मीलों लम्बा समुद्र तट ....! एक सम्रद्ध भारत इन के सामने नंगा खड़ा था! दीन–ईमान के लोग थे –भारतीय! धर्म परायण समाज था! संतोष के साथ हिल–मिल कर रहता जन–मानस था! और थी –विपुल सम्पदा ...प्राकृतिक और संस्कृतिक वैभव! और थे वेद ....और था आयुर्वेद ...संस्कृत जैसी परिष्कृत भाषा ...और खनिज पदार्थों के अपार भण्डार ....जंगल ...पहाड़ ...और खाली पड़ा खुला आसमान!" दादा जी की आँखें अब समग्र भारत को देख रहीं थीं .

"तो .....?"

"तो, क्या ....? इन की नीयत में खोट आ गया! ये बंगाल को बाँट कर ...दिल्ली चले गए ...और पूरे देश के मालिक बन बैठे! सब हथिया लिया, बेईमानों ने!" दादा जी अब मुझे बड़े ही ध्यान से देख रहे थे . "नई दिल्ली की बसावट देखोगे तो जानोगे कि कितने चतुर थे, अंग्रेज ....? सारे राजे–रजवाड़ों को बुला कर धन लिया ....उन से भी महल–तिबारे बनाने को कहा ...और स्वयं भी स्थापित हो गए! अब क्या था ....? मजाल थी ....कि बिना उन की नजर के पत्ता तक हिल जाता ....?"

"लेकिन ....पत्ते तो क्या ....पेड़ तक हिले थे ...., दादा जी .....?"मैंने जो सुना था पूछ लिया था .

"हाँ, हिले थे! मैं मानता हूँ, नरेन्द्र कि तुम जानते हो कि .....पेड़ तक हिले थे! लेकिन कैसे ....?"

"ये मैं नहीं जानता!"

"मैं जानता हूँ!" हंस पड़े थे, वो! "अरे, पागल! बंगाली भी इन के पीछे–पीछे दिल्ली पहुँच गए! बंगालिओं को बताया था कि पूरे भारत में चिनगारी लगा दो ....तो ....काम बनेगा . और जब तक उत्तर भारत में आग नहीं जलेगी तब तक ....आजादी की आस पूर्ण नहीं होगी!"

"कैसे लगाई आग, दादा जी ....?"

"कुछ होनहार भी बलवान होती है, नरेन्द्र! तभी कुछ गदर पार्टी के लोग भारत लौटे थे . उस समय प्रथम विश्व युद्ध आरंभ हो चुका था! अंग्रेजों को फिकर पड़ी थी – बाहर युद्ध जीतने की . भारतीय सैनिकों की टुकड़ियाँ इन के लिए बाहर विदेश में जा–जा कर युद्ध लड़ रहीं थीं . छावनियां खाली पड़ीं थीं . जो सैनिक पीछे छूट गए थे ...वो नफरी में बहुत कम थे . छावनियों में आना–जाना आसान हो गया था!"

"इस से क्या लाभ था, दादा जी ....?"

"लाभ ये था ..., बेटे कि ..अगर ये सैनिक ....किसी तरह सन १८५७ की तरह ....विद्रोह कर देते तो ....अब काम आसान था! जब तक अंग्रेज लौटते ...तब तक देश आजाद हो जाता!!" दादा जी चुप थे, दम ले रहे थे . "पर

ये संभव न हो सका था . ये लोग भी बहुत चौकन्ना थे . इन्हें भी तो १८५७ के सबक याद थे ...?"

"फिर ....?"

"फिर तो ...वही – धूम–धडाका!"

"फिर से बम मारा ....?" मैं उछल पड़ा था . "किस पर मारा ...?" मैं पूछ रहा था .

"बताता हूँ, रे!" दादा जी भी प्रसन्न थे . हम दोनों ही अब बहुत प्रसन्न थे . न जाने क्यों हम बार–बार इस आजादी के युद्ध को जीत लेना चाहते थे और हर बार अंग्रेजों को नीचा दिखा कर, 'मेरा भारत महान!' का नारा स्वयं ही लगाते थे!

"लार्ड हारडिंगस ....दिल्ली में वायसराय बना बैठा था!" दादा जी बता रहे थे . "बड़ा ही शातिर आदमी था, ये!" दादा जी की आँखों से आश्चर्य उमड़ पड़ा था . "युद्ध जीतने के लिए ये आदमी भारत के जन–धन से खेल रहा था! मुफ्त के लोग मरने के लिए मिल रहे थे .... और बिना ब्याज का पैसा बटोर–बटोर कर इंग्लेंड भेज रहा था! पुलिस का आतंक इतना बढा दिया था कि लोग चूहों की तरह पुलिस को देखते ही बिलों में घुस जाते थे! गाँव में पुलिस पहुंचते ही दरवाजे बंद हो जाते थे!"

"क्यों ....?"

"क्यों कि ये पुलिस नहीं ...राज के डाकू थे! जन–धन जो भी मिले .. ..हथिया कर अंग्रेज आकाओं के चरणों में अर्पित कर देते थे!"

"क्यों ....?" मैं अब अधीर था .

"अरे, पागल! इन्हें मोटी पगार मिलती थी ....उन के कैरियर बनते थे . ....उन के साहिब प्रसन्न होते थे ...! सत्ता में इन्होने भी साझा कर लिया था, नरेन्द्र!" दादा जी अब चुप थे .....दुखी थे .....गमगीन थे .....!

कहानी एक दुखांत मोड़ पर आ कर खड़ी हो गई थी!!

30

मैं रास्ता बदलना न चाहता था!

"न्याय मित्र नियुक्त हुए तो ....शत्रु का पर्दाफाश कर दो!" राजू रामचंद्रन एक आती आवाज को ध्यान से सुन रहे थे . "मौका है, सर! चूक मत जाना ....?"साथ एक चेतावनी भी उन्हें मिली थी . "और हाँ! मैंने नासिर चिप्पा को बता दिया है कि ....आप का ख्याल रखेगा ....!!" आवाज कट गई थी .

"कौन नासिर चिप्पा ....?" राजू रामचंद्रन ने स्वयं से प्रश्न पूछा था . "अरे, रे ...! यह कहीं ....अमेरिका में रहता ....वही चिप्पा है, क्या ....?" उन का दिमाग जागा था . "ये चिप्पा ....तो ....?" वह प्रसन्न हुए थे . पर साथ ही डर भी गए थे!

राजू रामचंद्रन को सुप्रीम कोर्ट ने न्याय मित्र नियुक्त किया था! उन का दायित्व था कि वो 'नरेन्द्र मोदी' –चीफ मिनिस्टर गुजरात पर लगे उन तमाम आरोपों की जांच करें – जिन में मुझे सांप्रदायिक नफरत फैलाने का दोषी बताया गया था! और कहा गया था कि मैंने ही ...हिन्दू–मुसलामानों के प्रेमिल मनों में ....नफरत की फाड़ पैदा की ....और मैंने ही पुलिस को कह कर – दंगे ....हत्याएं ....और न जाने क्या–क्या कराया .....?

न्याय मित्र राजू रामचंद्रन पर मुझे भरोसा था! मैं जानता था कि वो कभी भी गलत रिपोर्ट नहीं लगाएंगे . मैं तो सच का दामन थामे ....समाज के सामने निहत्था खड़ा था!

न्याय मित्र की पड़ताल में शामिल होने वाले ...एन जी ओज ....पत्रकार .....राज नेता ...और समाज सेवकों की कतार खड़ी हो गई थी . सब के पास सबूत थे ...कहानियां थीं ...और उन के फैसले थे . लेकिन थे सब के सब मेरे बरखिलाफ!!

क्यों था – ये मेरा घोर विरोध – मैं समझ ही न पा रहा था ...?

मैंने तो किसी का कुछ भी नहीं बिगाड़ा था ...? जो भी किया था ...सब के भले के लिए ही तो किया था ....? और ये सब जन मत के सामने था! मेरा कोई भी मंसूबा बुरा न था ....और ...न मैं किसी एक समुदाय के लिए ही लड़ता था ...?

"नफरत के बीज ही नहीं बोये, सर! हत्याएं भी कराई हैं!" तीस्ता सीतलबाड कह रहीं थीं . "जो नरसंहार हुआ है ....बेजोड़ है! जो नर–बलि हुई है .... ह्रदय विदारक है ....! मैं क्या–क्या बताऊँ आप को सर ...? कि मिमियाती ...गर्भवती औरतों के साथ ......?" सीतलबाड रो रहीं थीं . उन की आँखें आंसूओं से लबालब भरीं थीं . उन में मानवीय पीड़ा का पुट था . उन के स्वर काँप–काँप उठे थे! "इस ....हत्यारे मोदी को तो ......" वो हिचकियाँ ले ले कर कह रही थीं . "आप ..इस की किसी चाल का शिकार मत हो जाना, सर ? बड़ा चालाक है! चीते–सा चालाक!! वार करता है ....तो किसी ....."

"चश्मदीद ...गवाह ....?" न्याय मित्र की मांग थी .

"है ....! संजीव भट्ट स्वयं गवाह हैं! उन्हीं के अफसर हैं! वहां मौजूद थे . उन्होंने सब होते देखा है! और क्या चाहिए ....?" सीतलबाड ने अंतिम वाक्य कहा था!

राजू रामचंद्रन को कहीं दाल में काला नजर आया था!

"कैसे मानूं, भाई कि ....?" राजू रामचंद्रन हिमांशु ठाकुर और लिओ सल्दाना से खोज–बीन कर रहे थे . ये दोनों पत्रकार थे . लोकल पत्रकार अलग से एक दखल रखते हैं . इन्हें सब सही–सही जानकारी होती है . "ये देखिए सर, छपी खबर! ये कहानियां ....और ये हैं – लोगों के बयान!" वो दोनों अब अपनी दी दलीलों को सही साबित करने में जुटे थे! "हम झूठ क्यों बोलने लगे ....? हम तो आप की ही तरह न्याय मित्र हैं!"

नरेन्द्र मोदी अचानक ही एक प्रश्न चिन्ह बन कर ....उन के सामने आ खड़ा हुआ था! फिर भी वह यह सब मानने को तैयार न हुए थे!

"मानेंगे ....क्यों नहीं, सर .....?" अब हसन जौहर ने जौहर दिखाए थे . "अमेरिका तक की रिपोर्ट मैं आप के सामने रखता हूँ! जितने लोग हैं ...सब से पूछ लो! मिलो – कांग्रेस के नेताओं से! पूछो उन से कि सच क्या है .

....? शक क्यों है ....?" उस ने राजू रामचंद्रन को आँखों में घूरा था . "इतने लोग झूठ बोलेंगे, क्या ....?" उस का प्रश्न था .

"हाँ! इतने लोग झूठ क्यों बोलेंगे ....?" राजू रामचंद्रन ने भी स्वयं से पूछा था .

लेकिन झूठ तो बोला ही जा रहा था! सरासर झूठ बोलना ....और उसे सच का जामा पहनाना – यही हो रहा था! तीन बार बोलने के बाद ही झूठ सच बन जाता है – पर यहाँ तो झूठ को तीसों बार बोला जा चुका था .....?

न्याय मित्र – राजू रामचंद्रन फिर स्वयं संजीव भट्ट से मिले थे . वो जानना चाहते थे कि आखिर सच क्या था ....?

"ये मेरी ईमानदारी ....और वफादारी का इनाम मिला है, मुझे! सर, मैं . ..अपने बच्चों की कसम खा कर कहता हूँ .....कि ...मैं ....मैं ....." संजीव भट्ट रो पड़ना चाहता था . "आप न्याय करें! नरेन्द्र मोदी गुनाहगार है!! सब इन के कहने पर हुआ ." वह रुका था . "वरना आप ही सोचें कि ....बिना चीफ मिनिस्टर के इशारे के ....स्टेट में पत्ता भी हिलेगा ...?"

"नहीं हिलेगा .....!"

"फिर यहाँ तो धरा हिल गई ....! भूचाल आया!! नर संहार हुआ .....!!!" उस ने आँखें फाड़ –फाड़ कर बयान किया था . "मैंने इतना ...वीभत्स द्रश्य ...अपनी जिन्दगी में पहले कभी नहीं देखा ? सर, हत्याएं ....खून–खराबा . ...जघन्य अपराध ....."

"लेकिन भट्ट साब! आप की नौ साल की चुप्पी ....?" सहसा प्रश्न दागा था, राजू रामचंद्रन ने .

"मरजाता, मैं!" वह तड़के थे . "आप को जिन्दा इस लिए मिल गया हूँ .....कि ...." उन्होंने रुक कर प्रश्न करते राजू को परखा था . "आप घबराइये मत! आप के साथ ....पूरा का पूरा तंत्र है! आप सिर्फ ....अपनी रिपोर्ट में . ..'मोदी' को कानून के कठघरे में खड़ा कर दीजिए! फिर तो ...."

राजू रामचंद्रन होती साजिश को ताड़ गए थे! वो अबोध न थे . वो भी तो खिलाड़ी ही थे! सब समझ चुके थे . वो जान चुके थे कि ....संजीव भट्ट के साथ ....मिल कर कोई एक गम खेला जा रहा था ....जिस का उद्देश्य . ..'मोदी' को ही मिटाना था!!

"चूकना मत, सर!" आवाज चिप्पा की थी . राजू रामाचंद्रन गहरे सोच में पड गए थे . उन्हें आभास हुआ था कि वो ....गहरी मुसीबत में फंसे थे! "मैंने आप के लिए ....." वह कहता ही रहा था!

रिपोर्ट लिखी थी – न्याय मित्र राजू रामचंद्रन ने –

"एक ईमानदार पुलिस अधिकारी से बढ़ कर ....कोई और चश्मदीद गवाह क्या होगा ....? संजीव भट्ट के कथन पर विश्वास होता है ....क्यों कि ...वो वहां हाजिर थे ? घटनाओं में स्वयं शामिल थे! वो अधिकारी हैं, अतः .... विश्वसनीय हैं! उन का कहना है ...कि ....जो भी कुछ हुआ ....वह स्वयं चीफ मिनिस्टर नरेन्द्र मोदी के इशारे पर हुआ! वरना उन की बिना मर्जी के .... उन की स्टेट में ....पत्ता भी हिल सकता है, भला ....?

अलग–अलग समूहों के बीच ...शत्रुता फैलाने के मामले में ....नरेन्द्र मोदी पर मुकद्दमा चलाया जा सकता है!"

"आ गया चारों खाने चित ....!" संजीव भट्ट जश्न मना रहे थे . उन के साथ उन की पूरी टीम थी . "अब नहीं बचेगा, बेटा!" उन्होंने आश्वस्त हो कर घोषणा की थी . "चला था, मुझे मात देने .....?" वह विंहसे थे . "ब्राह्मण पुत्र को ....एक तेली ....तेल बेचने चला था ....?" वह हंस रहे थे . "वाह, बेटे, ...वाह ...!" उन्होंने अपने आस–पास को देखा था . पूरा का पूरा गिरोह उन की कामयाबी पर मुग्ध था! "बड़ा बनता है – समाजसेवी ......और वो क्या . ...आर एस एस का .....?"

"निकर धारी है, सर!"

"हाँ, रे! वही ....सू....सू........न ....न ....." ताली पीट–पीट कर हंस रहे थे, सब! "हम सिखाएंगे बेटे को .....राजनीति!"संजीव भट्ट कह रहे थे .

मेरी भी हवाईयां उड़ गईं थीं! क्या सच हारेगा – में स्वयं से पूछ रहा था! क्या में इस होती साजिश का शिकार बनूँगा ....? क्या लोमड़ी शेर को शिकश्त दे कर ही दम लेगी ....? क्या मेरा विश्वास मानवीय मूल्यों से उठ जाएगा ....? क्या मुझे अब भिन्न तरह से लड़ना चाहिए ....?

साम....दाम ....दंड ...और भेद ...राजनीति के चार खम्बे माने जाते हैं! लेकिन मैंने न जाने क्यों ....एक दूसरा ही रास्ता चुना था! में शायद उसी रास्ते पर चल पड़ा था ....जिस पर विवेकानंद चले थे .....जिस पर निवेदिता चली थी .....और जिस पर अरविंदो अग्रसर हुए थे!!

और में अब भी अपना रास्ता बदलना न चाहता था .....!

कमाल ही तो था .....!!

"कमाल ही तो था कि ...अपने ही लोग – जो अंग्रेजों के साथ सत्ता मैं शामिल थे, अपने ही लोगों की जानें ले रहे थे ......जुल्म ढा रहे थे ...और आजादी की जलती शमा को बुझाए दे रहे थे! लालच ...स्वार्थ ...और ...." दादा जी गंभीर थे .

"और ....?" मैंने पूछा था .

"गद्दारी .....!!" वो कठिनाई से बोल पाए थे . "एक जन्मजात रोग ...जो हमारे खून में है ....! न जाने क्यों है ....नरेन्द्र ये गद्दारी हमारे खून मैं .... ?"टीस आए थे दादा जी!

"बम नहीं फटा था, क्या .....?" मैं अपनी जिज्ञासा को रोक न पा रहा था . "क्या ...किसी मुखबिर ....ने ....?" मैं भी सोच में पड़ गया था .

"फटा था, रे! बम तो फटा था!!" दादा जी तनिक हुलस कर बोले थे .

"कहाँ ....?" मैंने भी तुरंत ही पूछ लिया था .

"दिल्ली में! चांदनी चौक में ....!!" दादा जी ने अब हंस कर अपने पीले दांत मुझे दिखा दिए थे . वह बहुत प्रसन्न थे .

"अरे, वाह!!" में भी कूदा था . "दिल्ली आ कर बम मारा ....?" में फिर से पूछ रहा था .

"हाँ! दिल्ली जा कर ही बम मारा था! अंग्रेजों को तो उम्मीद ही न थी .....कि ये आजादी की सुलगती ज्वाला ....उत्तर भारत तक भी पहुँच जाएगी ....? वो तो आश्वस्त हो कर बैठे थे ....कि अब तो भारत उन का था ....उन के लिए ही था!!"

"पर कैसे ......?" में अब सतर्क था . में न चाहता था कि दादा जी का कहा कुछ भी हाथ से जाने दूं .

"प्रथम विश्व युद्ध आरंभ हो चुका था . भारत से सैनिक लड़ाई मैं भेजे जा रहे थे! धन–माल भी हमारा ही ....स्वाहा हो रहा था! हम तो भूखों मर रहे थे ....पर अंग्रेज अपना साम्राज्य सुधारने मैं लगे थे! जनता मैं रोष था . लोग इन का साथ न देना चाहते थे! लेकिन जो उन के दलाल थे ....पिट्ठू

थे ....वो तो उन के ही साथ थे ....? खुली लूट हो रही थी – भारत की . ....."

"फिर ....?"

"फिर क्या .....? लार्ड हार्डइंग्स पर हमला करने की ठान ठानली .... देश–भक्तों ने! भारत का वायसराय बना ये लार्ड हार्डइंग्स ....बहुत बड़ा जालिम था! इसे दया तो आती ही न थी ....? देश को निचोड़े दे रहा था!"

"फिर ....?" अब मेरा धैर्य डूबने लगा था . में बम मारने की कहानी पहले सुन लेना चाहता था .

पर दादा जी थे कि पहेलियाँ बुझा रहे थे!!

31

वो हारे नहीं थे!

"फिर जुगांतर के लोगों ने ही सूझ फेंकी थी! अलीपुर बम काण्ड के बाद वहां का माहौल ठंडा पड़ गया था . अंग्रेज भी दिल्ली आ गए थे . तब हमला दिल्ली में ही हो – की बात तय हुई थी . और हमला वायसराय पर ही हो – यह भी तय हो गया था . लेकिन काम कठिन था ....."

"बहुत कठिन!" मैंने भी स्वीकारा था . "पर हुआ कैसे, दादा जी .....?"

"हुआ था, नरेन्द्र!" अब दादा जी प्रसन्न हो कर बता रहे थे . "जुगांतर के सदस्य अमरेन्द्र चटर्जी और जतिन मुखर्जी ने एक खजाना खोज लिया था! उत्तरी भारत मैं उन्होंने एक ऐसा आदमी तलाश लिया था – जो बेजोड़ था!"

"कौन था, दादा जी ....?"

"रासबिहारी बोस ....!!"

"ये कौन थे ....?"

ये एक बहुत बड़े ....स्वतंत्रता सेनानी ....और युग द्रष्टा थे, नरेन्द्र!" दादा जी तनिक उलम कर बैठ गए थे . "क्या आदमी था ......क्या दिमाग था ... ...इस का ....और ...क्या सोच था ...? इतनी छोटी उम्र में ....उस तरह के कारनामे कर दिखाना ....कोई मजाक बात नहीं है, बेटे ...?" दादा जी एक गर्व मैं गर्क थे! "रासबिहारी बोस को जिम्मा मिला था कि ... वो उत्तरी भारत में आजादी की मशाल जलाएं ....और लार्ड हार्डइंग्स जैसे आताताइयों को ....बम मार कर धराशाई कर दें!" दादा जी की आवाज अब ऊंची थी .

"ये ....संभव कैसे हुआ, दादा जी ....?"

"लार्ड हार्डइंग्स की सवारी निकलती थी – हाथी पर बैठ कर! वो और उस की पत्नी ...दिल्ली मैं चांदनी चौक से गुजर कर ....एक पूरी परिक्रमा पर जाते थे! सवारी के निकालने का मतलब ....मातहत हिन्दुस्तानियों को . ..मानसिक रूप से परास्त करना था! उन्हें ये बताना था कि ....अब उन के 'आका' अंग्रेज शाशक थे! देश के मालिक वो थे ....और कोई नहीं!! उन्हीं के दबदबे के बयान और फरमान जारी होते रहते थे! और चांदनी चौक से वायसराय की सवारी निकलने के कई अर्थ थे ...."

"जैसे कि .....?" मैंने पूछा था .

"पब्लिक को ये बताना कि ...भारत में हुकूमत अंग्रेजों की है .....भारत का भविष्य अब उन के हाथ मैं है ....! उन की खिलाफत करने से कोई फायदा नहीं! उन का साथ देने में ही लाभ है!! ताकि देश हमेशा–हमेशा के लिए उन की गुलामी स्वीकार लेता ....और ...."

"हूँ ....! अब समझा .....!!" में भी अब उचक कर बैठ गया था . "फिर . ..बम .....?" में फिर से अधीर हो उठा था .

"रासबिहारी बोस देहरादून स्थित फौरेस्ट इंस्टिट्यूट मैं हैड क्लर्क थे! बचपन से ही उग्र स्वभाव के थे! अंग्रेजों के बढ़ते आतंक से बेखबर न थे! और जब जतिन ने उन्हें बम मारने की बात बताई तो .....उछल पड़े! बोले, 'में मारूंगा, बम! दादा!! बोलो कब ....? बोलो कैसे ....? ये वायसराय तो मरना ही चाहिए ....!! अंग्रेजों का अंत तो आना ही चाहिए .....! में तो कब से सोच रहा था कि ...."

फिर दादा जी ने बताया था कि वह वायसराय पर बम मारने की योजना ....बड़े ही जतन के साथ तैयार हुई थी . तब गदर पार्टी के सदस्य भी उत्तरी भारत मैं ...अंग्रेजों के खिलाफ बगावत करने मैं लगे थे! पर उन के पास कोई अच्छा लीडर न था! रासबिहारी बोस ने इन्हें भी साथ लेने की सोच ली थी!

२... दिसंबर १६१२ को वायसराय की सवारी निकल रही थी . चांदनी चौक ही एक उपयुक्त स्थान था ....जहाँ उस हाथी पर सवार ...दम्पति पर बम फैका जा सकता था! रासबिहारी बोस ने इस काम के लिए दो व्यक्ति चुने थे – अवधबिहारी बोस और दूसरे थे – बसंत विश्वास! इन दोनों को

खूब मेहनत के साथ बम फैकने की कला मैं दक्ष बनाया गया था! सब सदस्य चाहते थे कि ....वायसराय बचे नहीं! उस की मौत तो सभी को चाहिए थी!!

उस दिन चाँदनी चौक मैं जमकर भीड़ थी . पूरा भारत ही जैसे अपने आका के दर्शन करने के लिए उमड़ पड़ा था! अंग्रेज तब जनता के लिए एक अजूबा ही था! उन का रंग–रूप ....कद–काठी .....सब कुछ अलग जो था! उन का खान–पान और रहन–सहन भी ...हिन्दुस्तानियों से अलग था! अंग्रेज अब 'शक्ति के प्रतीक–से' बन चुके थे!

उसी भ्रम को तोड़ने के लिए ....वायसराय पर बम मारना ....जरूरी हो गया था!!

जनता में सन्देश जाना जरूरी था ....कि ये अंग्रेज लुटेरे थे ....महान न थे!!

"मारा बम .....?"

"मारा ....!!" अब दादा जी भी चुहल मैं शामिल थे . "दुर्भाग्य से ....बसंत विस्वास की तय शुदा योजना में ....चूक हो गई!" दादा जी ने आँखें तरेरीं थीं . "बम कैसे मारते ....?"

"क्यों .....?"

"हाथी पर सवार था – वायसराय ..और उस की पत्नी ....."

"तो ....क्या .....?"

"मूरख ....! हाथी कोई छोटी वस्तु है, क्या .....?" दादा जी हँसे थे . यही तो चूक हुई थी! ऊपर तक ...उछाल कर बम फैंकना ....कोई आसान काम न था ....?"

"फिर क्या हुआ ......?"

"अवधबिहारी बोस अपने बम के साथ ...ऊपर तैनात थे! ये योजना का दूसरा चरण था! बस! उन्होंने हमला कर दिया! बम को निशाने पर दे मारा!!"

"और ....वायसराय ..मर गया ....?"

"नहीं! मरा नहीं था ..... बुरी तरह से घायल हुआ था! पर जो होना था ....वह तो हो ही गया था .....!!"

" मतलब .....?"

"मतलब कि ...राष्ट्र को सन्देश पहुँच गया था! जमा भीड़ का भ्रम टूट गया था!! देश का उत्तरी कौना भी जाग उठा था!!! और ये कि अंग्रेज लुटेरे थे – यह सन्देश भी लोगों के कानों तक जा पहुंचा था ....."

"जम कर घमासान हुआ होगा .....?" मैंने पूछ लिया था .

"होना ही था! जमकर घमासान ही तो होना था ....? और इसी के लिए १५ फरवरी १६१५ को एक तारीख मान लिया गया था ....जब अंग्रेजों को भारत से उखाड़ फैंकना था ...."

"कैसे .....?"

"रासबिहारी बोस बड़े ही दूरदर्शी थे! दूसरे ही दिन उन्होंने देहरादून जा कर बम–घटना की भत्सर्ना की थी ...सभा बुलाई थी ....और अंग्रेजों को खूब सराहा था!"

"क्यों ....?"

"क्यों कि अवधबिहारी बोस पकडे गए थे! उन्हें फांसी की सजा मिलनी ही थी – यह तो तय था! वसंत विस्वास ने आत्महत्या करली थी . वो डर गए थे! सब जानते थे कि इस बम–काण्ड के बाद तो ....वायसराय ने कहर ही ढाना था!"

"कहर ही ढाया होगा ....?"

"हाँ! कहर ही ढाया था! रासबिहारी बोस की योजना थी कि ...जो सैनिक छावनियों मैं थे ...उन्हें साथ ले कर १५ फरवरी को देश को आजाद करा लिया जाए ....और दिल्ली पर कब्जा कर लिया जाए!! तैयारियां थीं! मुकम्मल तैयारियां थीं ....!! गदर पार्टी के सदस्यों के पास धन....जन ...असला और हमले की काबलियत – सब था! मौका भी माकूल ही था! अंग्रेज युद्ध में तल्लीन थे . बाहर लड़ रहे थे ....और देश खाली पड़ा था . लेकिन ......"

"लेकिन .....?"

"गद्दार ......? इन गद्दारों ने ...बात को बहा दिया .....! मुहीम अंग्रेजों के कानों तक जा पहुंची! और संग्राम होने से पहले ही हमारी हार हो चुकी थी. .....!" कराह रहे थे, दादा जी . "वही गद्दारी की बीमारी ......? वही ....रोग . ...जिस ने हमें बार–बार हराया, नरेन्द्र! में .....में ..... चाहता हूँ कि .... कुछ ऐसा हो ....जो हमें इस बीमारी से मुक्त कर दे .....?"

"रासबिहारी बोस ने कुछ नहीं किया .....?"

"क्या करते .....? अंग्रेजों ने सब को पकड़—पकड़ कर जेलों मैं डाल दिया था . वो भागे थे . वाराणसी पहुँच कर उन्होंने स्थिति का जायजा लिया था! बात तो कब की बह गई थी . इस घटना को 'लाहौर कान्स्परेसी' केस का नाम दे कर अंग्रेजों ने फिर अलीपुर की ही तरह ....मुकद्दमे चलाए थे! और ...."

"और .....?"

"और ...अठाईस स्वतंत्रता सेनानियों को ....सजाए—मौत सुनाई गई थी! फिर से हमारे देश—भक्त फांसी झूले थे! हम फिर से ....एक बार और अपनी आजादी की उम्मीद को ...गवां बैठे थे!!"

"और रासबिहारी .....?"

"१२ मई १६१५ को ...जापान चले गए थे!!"

"क्यों .....?"

"अपना सपना पूरा करने! वो हारे नहीं थे! अंत तक ....ये आदमी हारा नहीं था, नरेन्द्र!"

"देखा था ....आजादी का सूरज ....रासबिहारी बोस ....ने ....?"

"दुर्भाग्य ही रहा, इन का! जापान मैं आई एन ए की स्थापना कर .... सुभाष चन्द्र बोस को सब कुछ सौप कर ....बस .....१६४५ मैं स्वर्ग सिंधार गए ....." दादा जी गमगीन थे . "पर ....पर ....नरेन्द्र! जापानी राष्ट्र ने जो सम्मान ....जो स्वागत रासबिहारी बोस को दिया ....और हम पर जो उपकार किया ....उस का तो भारत आज तक ऋणी है! रासबिहारी बोस उन के लिए ... उस राष्ट्र के लिए ...एक धरोहर थे, नरेन्द्र!" दादा जी की आँखें नम थीं!

32

तीन स्तम्भ थे –लाल, बाल और पाल

तहलका मचा था कि मुख्य मंत्री नरेन्द्र मोदी जेल मैं अमित शाह से मिलाने गए थे!

मेरे मन मैं एक टीस उठी थी . अमित को जेल से छुडाने के मेरे प्रयत्न बार–बार विफल हो रहे थे ....फिसल रहे थे!

"जांच न हो पाएगी, श्रीमान!" जज के सामने पुलिस अधिकारी एक ही रट लगाते . बेल न देने का इस से अच्छा बहाना और क्या होता ? "अमित शाह इतने जुझारू हैं ....इतने तिकड़म बाज हैं ....इतने सुलझे हुए हैं ...कि ...सारे का सारा खेल बिगाड़ देंगे! अगर ये जेल से बाहर हो गए ....तो ... ." पुलिस अधिकारी खुले आम कहते .

"मेरी चिंता मत करो, भाई जी!" अमित ने एक बारीक मुस्कान के साथ मुझ से कहा था . उसे मेरी सुरक्षा का भान था ....एहसास था ...! वह जानता था कि में किस कदर हैरान और परेशान था ...? में पहली बार ही जुडीसिअरी के नियम–कानूनों के कसे शिकंजे को तोड़ नहीं पा रहा था! और में चाह कर भी अमित को जेल से बाहर निकालने का रास्ता खोज न पा रहा था . "आप ...अब अपने आप को बचाओ!" अमित ने मुझे चेतावनी दी थी .

"२१ पुलिस अधिकारी ...२७ एन जी ओज ....और ...६ नेताओं का दल ...मुझे घेरने के लिए नियुक्त हुआ है!" मैंने धीमे स्वर मैं अमित को सूचना दी थी . "जो चाहो ....सो करो! जैसे चाहो ....वैसे करो ....! पर इसे जेल मैं करो ....भरो इसे जेल मैं ....!!" इन के लिए आदेश हैं . इन्हें पूर्ण समर्थन प्राप्त है –देश और विदेश का . "एक बार चार्ज शीट मैं ..इस का नाम दर्ज हो जाए ...'मोदी' ...नरेन्द्र मोदी के नाम की चार्ज शीट बन जाए ..., बस!!"

उन के लिए आदेश हैं . "खूंटे से बाँध दो इसे, भाई!" सलाह है, विरोधियों की . "तुम्हें मुह माँगा मिलेगा ....! जो चाहे ...सो लो ...! प्रमोशन से ले कर पोस्टिंग तक ....और धन से ले कर धाम तक! सब कुछ मिलेगा! फंड्स की चिंता मत करो ....! पैसों के तो अम्बार लगे हैं ....."

"और ...अगर ...ये 'मोदी' कहीं कामयाब हो गया ...... तो .....?" अमित ने बात पूरी की थी . "और अगर 'मोदी' आ गया ....तो ....?" वह हंसा था . "सब के पैजामे खुल जाएंगे .....!" उस ने मजाक किया था . "और होगा भी ....यही, भाई जी!" अमित ने घडी देखी थी . हमारी मुलाकात का समय पूरा हो गया था . "होगा ...यही ....!!" अमित ने अपना वाक्य फिर से दुहराया था .

हम दोनों आमने–सामने खड़े थे . हम दोनों अब फिर से जुदा होने को थे . हम दोनों ...अब फिर से ...अकेले–अकेले ...सोचने–समझने के लिए .. ..स्वतंत्र हो रहे थे! दो प्रतिमाओं की तरह ...हम दोनों के होंठ बंद थे . पर आँखें खुलीं थीं ...विचार भी बह रहे थे ...! लेकिन बाहर से सब मौन था! शांत था!! कैसी विचित्र विडंबना थी ....कि मैं – एक मुख्य मंत्री ....अपने दूसरे मंत्री को ....जेल से बाहर निकालने मैं असमर्थ था ....?

"लॉ ...टेक्स ....इट्स ...ओन ...कोर्स ...!" कहा वाक्य मेरे कानों मैं गूँज रहा था . "कानून से बड़ा ....कोई नहीं!" एक तथ्य बार–बार उजागर हो रहा था .

मैं मुड़ा था . अमित खड़ा था . वह मुझे जाते देख रहा था . मैं बाहर जाने के रास्ते को देख रहा था . और मैं जा रहा था . वह पीछे छूट रहा था!

"नहीं, नहीं! वह पीछे छूटने वाला ....आईटम ही नहीं है ...!" मैंने स्वयं से कहा था . "अमित तो बहुत दूर जाने वाला इंजिन है! वक्त है कि ....उसे रोके खड़ा है ....? पर वह अपनी मंजिल पा कर ही रहेगा ....!!" मेरा दृढ़ विश्वास था . "अमित के विचार ....अमित का सोच ...और अमित के आचरण छोटे नहीं थे! वह नीचे गिर कर तो कभी सोचता ही नहीं था! स्वार्थ ....या कि ...स्वयं को पोषने जैसी कोई भावना अमित को छूती तक नहीं थी! वह तो बना ही परमार्थ के लिए था! वह तो था ही दूसरों के लिए ....."

"वह मुझे आगे मिलेगा .....अपनी मंजिल पर खड़ा मिलेगा .....मुस्कराता मिलेगा ....और फिर हम दोनों ......" विचार आया था ....और चला गया था!!

क्या कुछ तय हुआ था – हमारी मुलाकात में – यह किसी को भी पता न था!

अटकलें लगाई जा रही थीं . कयास थे जो लिखे जा रहे थे! हाँ! हलचलें गुप्त थीं . मीडिया तो पूरी हरकत में था!!!

"चरित्रहीन है, मोदी!" प्रदीप शर्मा सुप्रीम कोर्ट में कह रहे थे . "मुझ पर भ्रष्टाचार का आरोप इस लिए लगाया गया है ....क्यों कि मैं नरेन्द्र मोदी और उस की माशूका के भेद जानता हूँ! क्यों कि मैं जानता हूँ कि ....किस तरह ... नरेन्द्र मोदी उस हसीन लड़की के पीछे ६२ दिन तक ...जासूसी कराते रहे थे ...और उस का पीछा करते रहे थे!"

"क्यों ....?" जज साहब ने प्रश्न पूछा था .

"इस लिए ....योर ओनर ...कि वह लड़की ....लड़की नहीं, परी है!! सब्ज परी!!! वह असाधारण है .....बहुत ....बहुत ....सुंदर है ..." प्रदीप शर्मा बताते ही जा रहे थे . "में उसे बहुत ही करीब से जानता हूँ!"

"कैसे .....?"

"मैंने ही तो उस की मुलाकात कराई थी ....!" प्रदीप शर्मा मुसकुराए थे .

कोर्ट का बोझिल वातावरण एक सहजता से भर गया था! एक लड़की ....बहुत सुंदर लड़की की तस्वीर हर आँख के आगे आ कर टंग गई थी . हर मन अब उस लड़की के बारे ही सोच रहा था ....जिसे नरेन्द्र मोदी ....६२ दिनों तक खोजते ही रहे थे......और उसे अपने जाल मैं फंसाने के लिए भागते ही रहे थे ....?

"क्यों ....?" जज साहब का दूसरा प्रश्न था .

"इस लिए ....योर लार्ड शिप .....कि हमारे मुख्य मंत्री ....श्री नरेन्द्र मोदी ....छड़े–छांट हैं ....और इन्हें शौक है ....कि ...." एक आरोप भरे कोर्ट मैं .. .प्रदीप शर्मा लगा रहा था . उस के चहरे पर शरारत खेल रही थी . लड़की का प्रसंग ....कोर्ट ...के भीतर आ कर भी गुम न हुआ था! वरन वह कथित लड़की जिन्दा हो कर कोर्ट रूम मैं आ खड़ी हुई थी!! "यह लड़की इन्हें . ..पसंद है ...! यह लड़की एक आर्किटैक्त है . यह लड़की .....एक ....."

"ये सब ....आप कैसे कह सकते हैं ....?" जज साहब ने अब की बार आपत्ति जताई थी .

"सबूत के आधार पर कहा रहा हूँ, योर लार्ड शिप! और ये लीजिए – सबूत!!" उस ने एक सी डी जज साहब को थमा दी थी . "जांच करने पर सारे सबूत सामने होंगे ....." वह मुसकरा रहा था .

हर आँख अब प्रदीप शर्मा को ही घूर रही थी . प्रदीप शर्मा लोगों को कोई जादूगर जैसे लगे थे – जिन के झोले मैं मुरादों की तरह सब कुछ था!

"जांच कराने पर ...जासूसी करने का अपराध भी हमारे मुख्य मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के खिलाफ बनेगा!" प्रदीप शर्मा समझा रहे थे . "शर्म की बात है ....कि एक कुंआरी कन्या .....के चरित्र हनन की ....इतनी घिनौनी .. ..और शर्म–नाक कोशिश ...?" प्रदीप शर्मा अब भावुक थे . "ये हमारे मुख्य मंत्री हैं .....? ये हमारे नेता हैं .....? लेकिन ....इन के कारनामे तो देखिए . ...?"

"क्या कोई सबूत है .....आप के पास ....?" अंतिम प्रश्न था, जज साहब का .

"सबूतों की तो ....संख्या ही नहीं, जनाब!" अब की बार प्रदीप शर्मा गरजे थे . "लेकिन ....सुनवाई ...हो ....तब ....न ....?" उन की आवाज कांपने लगी थी . "इन के नाम से ही लोग घबराते हैं ...!" वह बात का खुलासा कर रहे थे . "पूरी पुलिस फोर्स परेशान है ....पूरा का पूरा तंत्र तबाह हुआ खड़ा है .....!! ही ...इज ...ए टेरर, मी लार्ड ......" वह कहते ही गए थे .

उस दिन कोर्ट में मिली सफलता ....और हुए स्वांग – दोनों का सेलिब्रेशन तीस्ता सीतल्बाड के घर पर हुआ था!

"आज आया मजा ....!" तीस्ता प्रसन्न थी . "अब हारेगा ...!!" उन का कथन था . "पर ...इस लड़की पर निगाह रखना, शर्मा जी ...?" उन्होंने चेतावनी दी थी . "बड़े ..उस्ताद हैं, ये मोदी .....? तोता उड़ गया ....तो ....."

"ये पिंजड़ा टूटने वाला नहीं है, मैडम!" प्रदीप शर्मा ने प्रसन्न हो कर बताया था .

'गुलेल' और 'कोब्रा पोस्ट' भी इसी प्रसंग को ले कर ...अखाड़े मैं उतर आए थे . आम आदमी पार्टी के नेता प्रशांत भूषण ने भी सुप्रीम कोर्ट मैं याचिका दाखिल कर ...इस लड़की के प्रसंग की पुष्टि की थी ....और जासूसी प्रकरण की जांच कराने की गुजारिश भी की थी!

'लड़की' और 'जासूसी' .....के दो शब्द ....दो नए आयामों की तरह ... .मेरे जिस्म से आ जुड़े थे! एक नई आभा की तरह का कुछ था ....जो मुझ तक चल कर आया था ....और फिर गुम हो गया था!

जासूसी का युग आरंभ हुआ था . मैं अचानक ही दादा जी की आवाजें सुनने लगा था . "ये कोढ़ जर्मनी से आया था!"

"कैसे ....?"

"प्रथम विश्व युद्ध आरंभ हो चुका था . यूरोप के देश आपस में लड़ रहे थे ."

क्यों....?"

"अब सब को गुलाम देशों की दरकार थी . अंग्रेजों जैसा 'भारत' सब को चाहिए था! सब चाहते थे कि ...वो भी अपने झंडे ...फहराएं ....विश्व विजय पर निकलें ....और ...."

"और हमारी जंग का क्या रहा ....?" मैंने पूछा था . "क्या हम ....."

"हारे तो नहीं थे .....! पर, हाँ! निराश अवश्य हुए थे ....."

"क्यों ....?"

"इसलिए, नरेन्द्र कि ....अंग्रेजों ने बड़ी ही बारीक समझ के साथ हमें फिर से बाँट दिया था! जो शक्ति संगठित हो कर उन के सामने आई थी . ..उसे उन्होंने तीन टुकड़ों में बाँट कर ....दो दिशाओं मैं फेंक दिया था!" दादा जी गंभीर थे . "उन के जासूसों को पल–पल का पता होता था ...कि कहाँ ...क्या चल रहा था ....क्या पक रहा था ...और वो कौन थे जो उन के खिलाफ थे ....?"

"अब कौन थे, उन के खिलाफ ....?"

"तीन स्तंभ थे – लाल .....पाल .....और बाल!" वो तनिक मुसकराए थे .

"मतलब .....?"

"मतलब कि ....जहाँ बंगाल में ...अब बागडोर विपिनचंद्र पाल के हाथों मैं थी ....तो लाहौर में पंजाब केसरी लाला लाजपत राय संघर्षरत थे! उधर दक्खिन में थे ....बाल गंगाधर तिलक ....या कहें ....लोकमान्य तिलक ....जो

आजादी की मशाल को ...थामे खड़े थे ....! और दो दिशाएं ....." रुके थे, दादा जी .

"दो दिशाएं ....?" मैंने पूछ ही लिया था .

"हिन्दू और मुसलमान! अब दोनों दो अलग–अलग दिशाओं में देख रहे थे! दोनों अलग–अलग मंसूबों के साथ लड़ रहे थे! और अंग्रेज थे कि ... .हंस रहे थे!"

दादा जी की आँखों में घोर निराशा भरी थी!!

33

अछूत कोई नहीं!

"बहुत गहरी चाल खेली थी, अंग्रेजों ने, दादा जी ....?" में भी हैरान था . "सब कुछ ....माने कि ....मचा वाय–बेला शांत हो गया होगा ....?"

"हाँ! सब शांत था . अपनी –अपनी लड़ाईयां सब लड़ रहे थे . और अंग्रेज सब के साथ गोटें खेल रहे थे!"

"कैसे ....?"

"उन्हें तो धन चाहिए था! उन्हें सिपाहियों की दरकार थी . उन्हें सहयोग चाहिए था . समर्थन दरकार था . और सब मिल रहा था!"

"कौन दे रहा था ....?"

"धन तो हमारे राजे–महाराजे ...दोनों हाथों से ...लुटा रहे थे! जो अंग्रेजों के वफादार कुत्ते थे ...वो सिपाहियों की भरती करा कर ....उन्हें मोर्चों पर भेज रहे थे ....और सहयोग के लिए सरकारी नौकर थे! पियादे ...और ...." दादा जी उदास थे . "विडम्बना ही है ...नरेन्द्र कि ...हम ..कभी भी एक नहीं हो पाते ....?"वो टीसे थे . "सारा –का–सारा खेल बिगड़ गया था! यहाँ तक कि हमारे युग–पुरुष – गाँधी जी भी ....?"

"क्यों ...? उन्होंने ही तो हमें आजादी दिलाई है, दादा जी ....? वो तो अंग्रेजों से नहीं मिले होंगे ....?"

"मिले थे, नरेन्द्र! प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जब गांधी जी १९१४ मैं अफ्रीका से लौटे थे ...तो उन का रुख और मुख कुछ और ही था! वो अंग्रेजों की सहायता करने में जुटे थे . वो धन–जन दे कर उन की सहायता कर

रहे थे! उन का अनुमान था कि अंग्रेज ...युद्ध जीतने के बाद ..तुरंत ही हमें हमारा देश सौंप देंगे .....और ..."

"और ....?"

"और हम आपस में मिल–जुल कर रहेंगे ....! एक दूसरे के मित्र बन कर चलेंगे ...!" कुछ सोच कर फिर बोले थे, दादा जी "अंग्रेजों की चाल थी, ये! वो जानते थे कि बिना भारत की मदद के ...वो युद्ध जीत ही नहीं सकते थे ....?"

"और अगर युद्ध हार जाते ....तो भारत छोड़ जाते ...और भारत छोड़ जाते ....तो हम आजाद हो जाते ....! हमने ये मौका क्यों छोड़ दिया, दादा जी ....?"

"इस लिए, नरेन्द्र कि ...बाल गंगाधर तिलक १६१४ में मांडले जेल से . ...जब लौटे थे ....तो उन का विचार था कि ...वह इस सुनहरी अवसर को छोड़ेंगे नहीं! पर भारत में तब हवा उलटी दिशा में चल पड़ी थी! हम न जाने किस व्यामोह वश ...अंग्रेज भक्त बन कर ....संग्राम में उतारे थे ...और उन के लिए ...एक के बाद दूसरे मोर्चे फतह करते चले जा रहे थे! युद्ध के मैदान में डटे भारतीय सैनिकों का लोहा पूरे संसार ने मान लिया था! अंग्रेजों ने बदले में विक्टोरिया क्रास दिए थे ....छोटे–मोटे ओहदे–तोहफे दिए थे . ...पेंशन ...और पर्क्स बांटे थे! और ....."

"मरे भी तो होंगे, लोग .....?" मैंने पूछा था .

"कोई गिनती नहीं थी मरने वालों की! घायलों के काफिले देश लौटे थे! जान–माल की भारी क्षति हुई थी . पर अंग्रेज तो मस्त थे! उन को तो सब मुफ्त में मिला था! एक बेगार के बतौर ही हमने उन के लिए ये युद्ध लड़ा था! और फिर ....."

"गाँधी जी ने क्या किया ....?" में फिर से लौटा था – अपने मुद्दे पर .

"तिलक के साथ हुई मीटिंग में भी ...गाँधी जी ने न लड़ने की बात पर ही जोर दिया था!"

"क्यों ....?"

"कहा था – हमारे पास जंग करने के लिए है क्या ....? जब कि अंग्रेजों के पास एक पूर्ण शिक्षित सेना है ....एक अंतर्राष्ट्रीय तंत्र है ....धन–माल है ....और अकल–अनुभव भी है! हम इन्हें किसी भी तरह हरा नहीं सकते ....!!"

"फिर .....?" लोकमान्य भी प्रश्न पूछ बैठे थे .

"सहज–सम्मति से ही कोई बात बने .....तभी ..." गाँधी जी का सुझाव था .

"वह तो नहीं बनेगा!" लोकमान्य का मत था . " तुम अफ्रीका से एक जंग जीत कर लौटे हो .....? तुम्हें तो अनुभव है! क्या सोचते हो .....कि ...."

"वहां स्थिति अलग थी!"

"अब यहाँ की स्थिति को देख लो .....समझ लो .....? मेरी राय में तुम देश का भ्रमण करो! मैं चाहता हूँ कि ...तुम एक बार लोगों को समझ लो! बीस साल अफ्रीका में लगा कर लौटे हो! यहाँ बहुत कुछ बदला है! मैं इतना अवश्य कहूँगा कि ...मैंने 'स्वराज' की मांग को ...हर कान तक पहुंचा दिया है! अगर तुमने 'स्वराज' का स्वर भी साध लिया ....तो ...कोई वजह नहीं .....जो .....?"

"मैं स्वराज का स्वर ही साधूंगा! होगा –जो –भी हो .....पर मैं आप के 'स्वराज' के सोच से प्रभावित हूँ! मैं इस के बरखिलाफ कभी कोई समझौता न करूंगा!"

"चालाक हैं, अंग्रेज ?" लोकमान्य मुसकराए थे . "बहुत चालाक कौम है, अंग्रेजों की! इन्हें चकमा देना आता है ...धोखा देना ये जानते हैं ....और झूठ बोलने में तो माहिर हैं! वायदा खिलाफी भी करते हैं . सब अपने लिए .... अपने मतलब के लिए ....और अपने देश के लिए करते हैं! इन्हें हमारे प्रति कोई लगाव नहीं है!!"

"यह तो मैं जानता हूँ! मैंने ये सब तो भुगता है! लेकिन अफ्रीका और भारत ....दो अलग –अलग समस्याएँ हैं ?"

"सोच लो .....!" लोकमान्य ने चेतावनी दी थी . "युद्ध समाप्त होते ही . ...हम पर कहर टूटेगा ....! युद्ध जीतने में तो कोई शक ही नहीं है! हमारे सैनिकों के कर्तव् तो बेजोड़ हैं! और ये लोग – नाम और नामा खूब कमा रहे हैं!!"

"कैसे ....?'

"अब पूरे अरब को हड़प लेंगे .....! मिश्र को पहले ही झोले में डाल लिया है! पूरे विश्व पर छा जाएंगे ....अब ....? उस के बाद ....तो ....?" लोकमान्य

गंभीर थे . "बहुत बड़ा मुकाबला है, मोहन!" आंदोलित हो आए थे, तिलक! "बहुत बड़ी जंग है .....जिसे किसी न किसी तरह हमें जीतना ही होगा ......?"

दादा जी चुप थे . मैं भी चुप था . बात कांटे की थी . युद्ध जीतने के लिए ....अंग्रेजों से लड़ना ....कोई खालाजी का खेल न था ....?

"फिर क्या हुआ ....?" मैं तो दादा जी के पीछे पड़ा हुआ था . मैं चाहता था कि इस कहानी को खूब मन लगा कर सुनूं . निराली कहानी थी – ये! इस तरह की कहानी मुझे पहले कभी सुनने को मिली ही न थी ..! जो कहानियां मैं सुन चूका था ....वो तो भूत–प्रेत ...या अकबर–बीरबल की कहानियां थीं!

लेकिन ये कहानी तो बिलकुल ही नायाब थी!!

"जिस का डर था ....वही हुआ था! लाख बद्दुआए माँगने के बाद भी . ..अंग्रेज लड़ाई जीत गए थे . पूरे विश्व ने अंग्रेजों का लोहा माना था! पूरे विश्व ने माना था कि ...अंग्रेजों की सब से बड़ी उपलब्धि थी – भारत!"

"कैसे ....?" मैं पूछ रहा था .

"ऐसे नरेन्द्र कि .....वास्तव में ही अंग्रेजों के हाथ बटेर लग चुकी थी! ईस्ट इण्डिया कंपनी तो यहाँ व्यापार करने आई थी ? सौभाग्य से उसे एक महान राष्ट्र ....बिना किसी नायक के मिल गया! उन्होंने हथिया लिया .... और फिर कंपनी से माल किंग के हाथ लगा! लूट का माल ....मुफ्त का माल ....उन के हिस्से आ गया ....! क्या कहें .....इसे ....?"

"किस्मत ...!!" मैंने उत्तर दिया था .

"हाँ! किस्मत ....!! उन के सितारे बुलंद थे . उन का ये भाग्योदय था! उन के दिन थे ...जो उन्हें आसमान की ऊंचाईयों तक लेजा चुके थे! और हम ....हमारा भारत .....अपनी ही दी गुलामी के दिन गिन रहे थे! हम सोच रहे थे कि ....अब हो तो क्या हो .....?"

"गाँधी जी ....?" मैं फिर लौट कर वहीँ पहुंचा था . "गाँधी जी ने उन का सहयोग क्यों किया ....दादा जी ?" मेरा प्रश्न था . "ये तो बुरी बात थी . दुश्मन ....का ..सहयोग ....?"

"बड़ा अंतर होता है ....किसी बात को गहराई तक सोचने में, नरेन्द्र!" दादा जी हँसे थे . "मैं तो गाँधी जी का कट्टर दुश्मन बन गया था! सच कहूं,

नरेन्द्र! मैं इस आदमी को ....गालियाँ तक निकालने लगा था! मुझे लगा था – ये आदमी ...अंग्रेजों का दलाल था! मैं तो मान बैठा था कि ये ....दो टेक का आदमी –सो कॉल्ड 'गांधी' खाक कर के न देगा! ये तो हमें फिर से . ..गुलामी के नरक में ही ...झोंक देगा ...और अंग्रेजों के साथ सत्ता में बैठेगा!! लेलेगा कुछ दलाली के बतौर ....और फिर ...." दादा जी रुके थे .

मैं भी यही सोच रहा था कि ....जरूर ही गाँधी जी का कोई 'लोभ' रहा होगा ....जो उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजों का साथ दिया होगा ....?

"गहरा सोच था ...इस आदमी का .जो इसे अन्य और सामान्य आदमियों से अलग करता है, नरेन्द्र!" दादा जी बता रहे थे . "यह आदमी ....आदमियों के बीच ...जा घुसा था! लोकमान्य के कहे को गांठ बाँध ...ये जा कर भीड़ में मिल गया था! देश में ...कहीं खो गया था ....और उस की आत्मा के साथ रम गया था! देश के आर–पार का द्रश्य देख कर ...जब लौटा था ....तो . .समझ आया था कि ...समस्या थी क्या ....थी कहाँ ....?"

"कहाँ थी ....?" मैंने पूछ ही लिया था .

"हम बंटे हुए थे, नरेन्द्र!" दादा जी ने आँखें उठा कर मुझे देखा था . "हम बुरी तरह से बंटे हुए थे!"

"कैसे, दादा जी ....?"

"हम एक न हो कर ....अनेक थे! हम थे – पर हिन्दुस्तानी न हो कर . ...हम ...गुजराती .....बंगाली ....मराठे .....राजपूत ....गुज्जर ...और जाट–अहीर थे! अंग्रेजों ने भी हमें इन्ही लाईनों पर खड़ा कर दिया था! हम कौम के लिए थे ....प्रान्त–प्रदेश के लिए थे .....पर देश के लिए न थे! हमारे जहन में देश का नक्शा ही न था ? हम अपने–अपने जाल में खुद फंसे खड़े थे! हम उंच–नीच के रोग से ग्रसित थे . हम हिन्दू–मुसलमान के कोढ़ से परेशान थे . हम एक दूसरे को अछूत मानते थे ....नीच कहते थे! उन के हाथ का छुआ तक नहीं खाते थे! उन को अपने पास बराबरी पर नहीं बिठाते थे! और अंग्रेजों ने हमारी इसी कमजोरी का फायदा उठाया था! जो लोग अछूत ...या नीच थे ....वो लोग अब क्रिश्चियन बनने लगे थे! यहाँ उन्हें एक बराबरी मिल गई थी ....शिक्षा मिल गई थी .....और पैसा भी मिल गया था!"

"गाँधी जी ने क्या किया ....?"

"अछूत कोई नहीं – का नारा बुलंद किया! हरिजन नाम दिया – इन लोगों को! उन के साथ ही रहने लगे, गाँधी जी! उन की प्रार्थना सभाओं में ये लोग आने लगे! और मुसलमानों से भी एका साधा! एक बराबरी उन के साथ बनाई और उन्हें भी अपने साथ लिया!"

"फिर ....?" मैं अब सतर्क था .

"फिर क्या .....? हवा का मुख मुड़ा देख .....अंग्रेज भी अपनी जिद पर अड़ गए!" दादा जी ने बात का तोड़ किया था! "अब वो विश्व विजेता थे, नरेन्द्र!!"

34

गुहार!

कांग्रेस के हाथ मैं अब सम्पूर्ण भारत की बागडोर थी! हर आदमी की नब्ज पर अब कांग्रेस की उंगली धरी थी . ऐसा कुछ भी न था जो कांग्रेस के वश में न था!

"अब इस नरेन्द्र मोदी को और वश में करना है ?" कांग्रेस के नेताओं की संगठित मांग थी . "और इस अमित शाह को मिटाना है .....समूल नष्ट करना है, इसे ?" उन का एक मात्र नारा था .

मैं महसूस रहा था कि कांग्रेस को रोकना ...टोकना ...या कि परास्त करना – बेहद ही संगीन काम था! मैं तो खाली हाथ खड़ा था! जब कि कांग्रेस के साथ ...देश ....और विदेश ..सब था!!

कांग्रेस ने बड़ी ही बारीकी से देश को बाँट दिया था . वोट और नोट की राजनीति में कांग्रेस दक्ष थी . देश के हर कौने पर कांग्रेस का दखल था! और हर आदमी के दिमाग पर इन्ही का झंडा लहरा रहा था! जन–मानस को कांग्रेस के सिवा और कोई पुरुष या पार्टी नजर ही न आते थे! हिन्दू–मुसलमान ...दलित और महा दलित ...हरिजन और गरीब–अमीर में बाँट कर ...और कुछ लोगों को आरक्षण का कवच पहना कर ...एक निश्चित लाईन पर खड़ा कर दिया था! अब न तो उन का कोई सोच था ....और न कोई सच!

"द ...डर्टी ...ट्रिक्स ...ऑफ द ...कांग्रेस ....." अमित का चेहरा तमतमा रहा था . "वर्क लाईक ....बोम्ब्स ....!" वह कहा रहा था . "हमें कुछ ऐसा करना होगा .....जो ....लोगों तक सच्चाई को ले कर पहुंचे ?"

"हम ....और हमारे कार्यकर्ता ही ये सब कर पाएंगे!" मैं उदास था . "काम बहुत कठिन है! लोग कांग्रेस के खिलाफ कुछ भी सुनने को तैयार नहीं हैं!"

"जब कि ....देश नाक तक भ्रष्टाचार में डूबा हुआ है ....? सरकारी तौर पर छूट ...और लूट जारी है! सब मिल–बाँट कर ...देश की संपत्ति को खा–उड़ा रहे हैं!" अमित टीस आया था .

"देयर ...इज ए ...नेक्स्सस ....! पूँजी पतियों की साठ–गांठ ... एन जी ओज की सहमति .....और ...सरकारी तंत्र का सहयोग ....कुल मिला कर एक चक्रव्यूह बन गया है ...जिसे भेद पाना कठिन है!" मैं विवश–सा बोल रहा था . "तीस्ता सीतलबाड़ को ही ...लो ?" मैंने अमित को घूरा था . "इस का एन जी ओ – सेंटर ...फॉर जस्टिस एंड पीस .....आज देश की सरकार से भी बड़ा हो गया है! सैक्युलरिजम ...को ले कर इस ने ....इस तरह से समाज में झंडा गाढ़ा है कि ...कोई भी माई का लाल ...इसे हाथ नहीं लगा सकता ?"

"ठीक कहते हो! इस सैक्यूलरिज्म की आड़ में....ये औरत टट्टी की ओट में शिकार खेल रही है! इस के और इस के पति – जावेद के बचत खाते में ...जानते हो कितना पैसा जमा हुआ है ....? हमें परास्त करने के काम के लिए ....इस ने बेशुमार दौलत कमाई है!"

"सुना है ....विदेशों तक से ...फन्डिंग ....हो रही है ....?"

"हाँ! और इस का तो ...अमरीका सरकार के साथ ...लगातार संपर्क बना हुआ है! हर किस्म की सहायता इसे मिल जाती है!"

"और मीडिया भी बिका हुआ है ....?"

"राजदीप सरदेसाई ...और उस की पत्नी – सगरिका घोष ....ने तो मिल कर ...'नरेन्द्र मोदी विरोधी' मंच तक बना दिया है! ये कांग्रेस के खरीदे हुए मुहरे हैं! इन पर विजय पाना तो दूर ....हम तो इन्हें टच...तक नहीं कर सकते ....? इन की जनता पर धाक है ....जनता को इन के कहे–सुने पर विश्वास है!"

"और इन्होने झूठ बोलने की कसम उठा ली है ....?"

हम दोनों हँसे थे! खूब हँसे थे!! लाचारियाँ ही इतनी थीं ....कि कोई भी आशा–किरण ढूंढ लाना कठिन था! और जब कठिनाईयां ला–इलाज हो

जाएं ....तो मैं हंस पड़ता हूँ! सच कहता हूँ ....ये मेरी हंसी ही मुझे ....इन मुसीबतों ..से उबार लाती है! एक दवा की तरह काम करती है, ये! और हमेशा ही एक नया विकल्प ले कर लौटती है ....! मुझे अनुप्राणित कर देती है ....और फिर से लड़ने का हौसला देदेती है!!

"वो काम हो गया ....?" मैंने अमित से पूछा था.

"हो गया!" उस ने उत्तर दिया था .

मैं अपलक अब अमित को देखे जा रहा था! मुझे कतई विश्वास न हो रहा था कि ...अमित जो कह रहा था ...वह सच था ? ये तो हो ही नहीं सकता था ....! मैं जानता था कि जो काम ...मैंने सौंपा था ...वह काम .....

मैं बताता हूँ ...अपने शकों ...और शंकाओं का कारण –

मुझे मुसलमानों का हत्यारा साबित करने के लिए तीस्ता सीतलबाड़ ने एक गहरी चाल चली थी . खबर फैलाई थी कि ...अनगिनत बे–गुनाह मुसलमानों के शव ... लूनावाडा मैं ...पानंम नदी के किनारे...दफनाए गए थे! इन शवों की जांच कराने ...गिनती कराने ...और अपराध साबित कराने ...के लिए तीस्ता सीतलबाड़ ने उन की खुदाई कराने की ...मांग की थी! खबर इतनी संगीन थी कि ....देश–विदेश तक का मीडिया खोज–खबर लेने के लिए . ..जुट आया था! पुलिस और सरकारी तंत्र पूरी हतकत में था! तीस्ता ने बड़ी ही सावधानी से ...इस घटना को रचा था! मरने वाले लोगों के परिजनों तक को ...कोई सूचना न थी! वहां उन्ही लोगों को बुलाया था ...जिन से कोई सरोकार सिद्ध होता था!

तीस्ता सीतलबाड़ ने अपने बेहद विश्वासपात्र ...और उसी के एन जी ओ में काम करने वाले ....अपने सहयोगी ...रईस खान को इस काम को अंजाम देने की जिम्मेदारी सौंपी थी! रईस खान को भी इस काम के बदले ...बहुत बड़ा नफा होना था ....!

शवों को खोद कर रईस खान ने बाहर निकलवाया था!

जांच के बाद मालूम हुआ था कि ...उन शवों में आधा दर्जन लोग स्थानीय नागरिक थे! बाद में शवों का डी एन ए तक लिया गया था!

खबर उछलते–उछलते आसमान छू गई थी! 'नरेन्द्र मोदी अब जेल जाएंगे .....' की खबर एक सर्प की तरह संनाने –मन्नाने लगी थी!

"हाँ! मैंने ही अपने शपथ –पत्र में कहा है कि ...कब्रों की खुदाई मेरे सामने हुई थी! उस वक्त मैं वहां था . लेकिन मुझे यह भान तक न था कि ...इन कब्रों की खुदाई ...अबैध तरीके से की जा रही है ...!" हैड लाईन्स टुडे के वरिष्ठ पत्रकार राहुल सिंह ने स्पष्ट बयान दिया था! उन्होंने एक और भी खुलासा किया था . "जिस वक्त कब्रों की खुदाई चल रही थी ...उस वक्त तीस्ता ...सी एन एन – आई वी एन के मुख्य सम्पादक राजदीप सरदेसाई से ..लगातार फोन पर जुडी हुईं थीं! ये दोनों सूचनाओं का आदान–प्रदान कर रहे थे!"

यह तीस्ता का सब से बड़ा दुर्भाग्य रहा ....!!

केस का खुलासा हुआ था और ....

"रईस खान अरेस्ट हो गया है!" अमित ने फिर से बात की पुष्टि की थी .

पहली बार ....हाँ, सच कहता हूँ कि पहली बार ....मेरी बांछें खिल उठी थीं! पहली बार मुझे आभास हुआ था कि ...देव मेरी और था! परमात्मा मुझे किसी भी कीमत पर हारने न देना चाहता था!!

"अब तीस्ता की बारी है!" अमित भी खुश–खुश बता रहा था . "परमात्मा ने चाहा तो .....अंदर जाएगी ....!"

"सच ....?" मैं उछल पड़ा था .

"हाँ, हाँ! रईस खान ने बयान दिया है कि ...उस ने तो सब कुछ तीस्ता के कहने पर ही किया था!"

"फिर ....?" मैं आगे का पूछ रहा था .

"नर–कंकाल– मामले में गोधरा की फास्ट ट्रैक कोर्ट में तीस्ता ने अग्रिम जमानत की अर्जी लगाई है!"

"अपोज करेंगे ...? हमें तो विरोध करना ही चाहिए ....? ये जेल जाएगी तो हमें ...कुछ राहत मिलेगी!"

"नहीं! मामले को सुलगने देते हैं! आंच को जलने देते हैं . लोगों को खूब भड़कने देते हैं! तीस्ता के पर काटने से काम नहीं चलेगा, भाई जी ...!"

"तो .....?"

"उड़ने देते हैं! भरे उड़ान! छुए आसमान! हमने देखना ही तो है कि . ...इस झूठ में दम कितना है ...?"

अमित की बात में दम था!!

अचानक ही मेरा दिमाग दादा जी के संवाद पकड़ लाया था!

"अब अंग्रेजों की चालों में दम न था! उन की चाल और चालाकियां अब लोगों की समझ आने लगीं थीं . लेकिन प्रथम विश्व युद्ध जीतने के बाद ....उन की बातों में दंभ था ....गुरूर था ...दर्प था ...और अभिमान था! उन्होंने हम भारतीयों को ...गंवार और अनपढ़ मान लिया था! उन के लिए अब हम भेड़ –बकरियों के सामान थे ...जिन्हें डंडे के जोर से हांका जा सकता था .... रेवड की तरह पाला–पोषा जा सकता था ....और फिर किसी भी मुबारक मौके पर हमें काट–काट कर खाया जा सकता था!"

"कैसे दादा जी ....?" मैंने हुलम कर पूछा था .

"ऐसे, नरेन्द्र कि ....प्रथम विश्व युद्ध जीतने के लिए ...४000 भार्तीय सैनिक मरे थे ....और ....६५000 घायल हो कर देश लौटे थे! ये गरीब तो अंग्रेजों के लिए लड़े थे ? इन्हें तो चंद तगमों के अलावा और कुछ न मिला था . जो मिला था – वह तो अंग्रेजों का ही था ? यहाँ तक कि ...जो देश को 'स्वराज' देने की बात थी ....अब नदारद थी! अब तो उन के हौसले बुलंद थे ...और अब तो वो भारत को फिर से ....नए सिरे से संगठित करने में जुट गए थे! फिर से नए–नए एक्ट आने लगे थे ...कानून बनने लगे थे ....और पहरे बिठा दिए थे ...ताकि लोग आपस में मिलें–जुलें तक नहीं ....और ....."

"बड़े चालाक थे ....अंग्रेज ..., दादा जी ....?" मैंने हैरानी से पूछा था .

"बेहद चालाक ...और बे–रहम भी .....! लोगों पर जुल्म ढाते वक्त इन्हें तनिक भी शर्म न आती थी ...? इन्हें सन १९१५ की क्रान्ति से भय हो गया था कि ...सन १८५७ जैसी कोई नई स्थिति खड़ी न हो जाए ...? अतः अंग्रेज अब 'दमन' की नई नीति ले कर भारत में चल पड़े थे! अब उन का हाथ खुला था ....रास्ता भी साफ था ....."

"और हमारे लोग ....?" मुझसे रहा न गया था तो पूछा था .

"हमारे लोग ...निर्णय ही न कर पा रहे थे ....कि करें ...तो ...क्या करें . ..? गाँधी जी ने ...लखनऊ समझौते के तहत मुसलमानों को मना तो लिया था ...पर कोई संगठित कदम न उठ पा रहा था! 'स्वदेश' का छोटा–मोटा आन्दोलन ही चल पा रहा था! पंजाब में कुछ तोड़–फोड़ हो रही थी . रेल की पटरियां उखाड़ना ....या ..टेलीफोन के तार काट देना ....जैसी छोटी

हरकतें हो रहीं थीं! इस से अंग्रेज भयभीत न था! और जो पकडे जाते ... उन के साथ बहुत ...बहुत ...बुरा सुलूक होता ...ताकि औरों को सनद रहे . ...और ...."

"लोग डर गए थे, दादा जी ....?" मैंने घबराते हुए पूछा था .

"हाँ....और ना ...! डरे नहीं थे ....बल्कि दिशाहीन हो गए थे! फिर से एक मार–धाड़ का युग आरंभ हो गया था! जो सैनिक घायल हो कर लौटे थे ....उन में रोष था . वो कुछ हथियार चुरा कर लाए थे .....और अब 'स्वराज' संग्राम में कूद पड़ना चाहते थे . देश की जनता को भी अब अंग्रेज ठग नजर आने लगा था! लोग मान गए थे कि ....'इण्डिया वाज ...द ...ज्वेल ऑफ ..द ब्रिटिश क्राउन '! अंधे के हाथ बटेर लग चुकी थी .....अब अँधा उसे छोड़ता क्यों ....?"

सच ही तो कह रहे थे, दादा जी! इतना बड़ा देश उन के कब्जे में था – तो अब उन्हें रोक कौन सकता था ? 'धन–जन' दोनों ही उन के पास थे .....और वो भी 'फ्री ऑफ कॉस्ट"! उन के लिए लड़ने वाले सैनिकों ने तो मुफ्त ही जान गवाई थी ? और जो घायल हुए थे ....वो एक दीन–हीन जिन्दगी जीने के लिए मजबूर थे!

और तो और लड़ाई में हुए खर्चे की भरपाई के लिए ....नए टैक्स ....नए एक्ट ...और नए–नए हथकंडे ...अंग्रेज अपनाने लगे थे! देश फिर से लुटने लगा था!

"एक अजीब घटना अमृतसर में घटी थी!" दादा जी फिर से बताने लगे थे .

"क्या ....?" मैं उत्सुक था कहानी की अगली कड़ी सुनने के लिए .

"एक कोई ...नर्स थी! भला सा नाम था – उस का ..? इसाबेल ...या कुछ ...."

"क्या हुआ था ...उस को ....?"

"पंजाब में तो आतंक छाने लगा था! वह पढ़ाती थी . स्कूल बंद कर ... जब वह लौट रही थी ...तो कुछ लोगों ने उसे छेड़ दिया ...! वह डर गई . और उस ने जा कर सीधे जनरल डायर के यहाँ गुहार लगाई थी!"

35

मैन ऑफ द मैच!!

"फिर...?"

"कहर बरपा था – लोगों पर!" दादा जी सतर्क हो कर बता रहे थे . "जनरल डायर तो पहले से ही जला–भुना बैठा था! गिद्ध की तरह टूट पड़ा था! उस ने जहाँ ये काण्ड हुआ था – उस गली से गुजरने वाले भारतीयों को ....रेंग –रेंग कर चलाया था .....नाक रगड़ वाई थी .... और उस महिला –अंग्रेज से मांफी मंगवाई थी! लोगों के दिलों में इतनी दहशत बिठाई कि वो आईंदा किसी अंग्रेज पुरुष या महिला के सामने तक न पड़ें ..रास्ता छोड़ कर अलग हो जाएं ..और उन्हें पहले जाने दें!"

"अंग्रेज भगवान् से भी बड़ा है! तुम्हारा भगवान् तो ईंट–पत्थर का बना है ...और ये – अंग्रेज भगवान् तो जीता–जागता तुम्हारा देवता है! ये तुम्हें रोटी देता है ...शिक्षा देता है ...और यहाँ तक कि तुम्हें तमीज–तहजीब तक सिखाता है! इस का अनादर नहीं होगा! किसी भी कीमत पर अंग्रेजों का अनादर बर्दाश्त न होगा!!" ये जनरल डायर का एलान था .

गुलाम बनाने के बाद तो हक मालिक के ही हाथ में आ जाता है – मैं सोचने लगा था . अंग्रेजों को विश्वास हो गया था कि ...भारतीय अब उन के गुलाम थे ...गुलाम ही रहेंगे ....और उन के क्राउन के ज्वेल ही बने रहेंगे!!

"पाल और किचलू को पकड़ कर ....जनरल डायर ने एलान किया था – कि अब वह पंजाब से आतंक को हमेशा–हमेशा के लिए मिटा देगा!" दादा जी बताने लगे थे .

"कौन थे ...ये पाल और किचलू .....?"

"एक हिन्दू था ....और दूसरा – मुसलमान! दोनों ने मिल कर ...तीन अंग्रेजों को मार डाला था! जनरल डायर को एक बड़ा झटका लगा था! पूरी तरह डराने–धमकाने के बावजूद भी ....अंग्रेजों के गुलाम ...बगावत करने से बाज न आ रहे थे ...? उस ने इन दोनों को पकडवा कर ...इतनी कठोर यातनाएं दिलवाईं ....कि लोगों के दिल दहला गए! और ....."

"और .....?" मैं बहुत उद्विग्न था . उझे तो क्रोध ही आने लगा था .

"और उन्हें जेल भेज दिया! न जाने ...कौन सी जेल में भेजा ... कहाँ भेजा ....किसी को अता–पता न था!"

"लोग भड़के तो होंगे ....?"

"हाँ! लोगों में रोष था! हिन्दू–मुसलमान फिर से पास आए थे . फिर से एक आग सुलगने लगी थी . फिर से लोग लड़ने–मरने के लिए तैयार होने लगे थे! लेकिन ....."

"लेकिन .....?"

"गाँधी जी अभी तक अपनी अहिंसा पर ही अडिग थे! वो खून–खराबा नहीं चाहते थे . वो तो चाहते थे कि ...किसी तरह ...मिल–बैठ कर ...अंग्रेजों को राजी कर लिया जाए ...और 'स्वराज' की बात आगे चले ...? लेकिन अंग्रेज तो बेईमानी पर उतारू थे! किस का 'स्वराज' ....कैसा 'स्वराज' ....अब उन के प्रश्न थे! तुम्हें आता क्या है ....? तुम आजाद होने के काबिल हो कब ....?– उन का कहना था!"

"फिर ....?"

"फिर क्या ....? हमारे 'पिट्ठू' लोग उन की हाँ–में–हाँ भरते ....और उन के ही साथ बैठ कर मजे ले रहे थे! जन–मानस के साथ चंद नेताओं को छोड़ कर ...कोई नहीं था! हमारे राजे–रजवाड़े तो ...अपने अंग्रेज भगवान् को ही प्रसन्न करने में लगे थे! अपने–अपने 'ओहदे' और 'अलंकार' ...पाने के लिए ...ब्रिटिश शाशकों के चरणों में पड़े थे! और जो गणमान्य व्यक्ति थे अंग्रेजों ने उन्हें भी ...'राय–बहादुर' ...'राय–साहब' ...'लार्ड' ....और 'नाईट' ....जैसे ही कुछ बेहूदे कलाम–करार दे कर ...खुश कर दिया था! अब वो भी अंग्रेजों के ही साथ थे! 'स्वराज' का सपना एक दम धूमिल हो गया था!" दादा जी की आवाज भी बैठने लगी थी .

निराशा का युग था – ये शायद – मैं सोच रहा था! विश्व विजय करने के बाद अंग्रेज स्वभावतह बर्बर हो गए थे! उन्हें अब किसी का डर नहीं था!वो जानते थे कि भारत अब उन का था! उन के लिए था ....और उन से था!!

"१... अप्रेल सन १६१६ के दिन एक नई चिंगारी सुलगी थी ...आग बनी थी ...फिर बवंडर बन कर फिजा पर फैल गई थी ." दादा जी किसी अद्रश्य से एक और घटना को पकड़ लाए थे . "हाँ! यही एक घटना है ...जिसे मैं मानता हूँ कि देश का इतिहास बदलने में घटी – पहली कड़ी है! यही एक लड़ी है – जो हमें जोडती है ....हमें तोडती है ...हमें मजबूर करती है कि . ..हम लडें ... हम मर मिटें ....हम शहीद हो जाएं ...हम जान पर खेल जाएं!" दादा जी का चेहरा तमतमा रहा था . "यही एक घटना है, नरेन्द्र! जो ...." वो चुप थे .

"कौन सी घटना, दादा जी ....?" मैं चुप न रह सका था .

"जलियाँ वाला बाग की घटना, नरेन्द्र!" दादा जी संभाल कर बोले थे . "कहें कि ...जलियाँ वाला बाग का हत्या काण्ड ....या कहें कि एक जघन्य नर–संहार ....जो इस जालिम जनरल डायर के हाथों हुआ था ...और जिस ने पूरे देश को दहला कर रख दिया था!"

"जनरल डायर ने ऐसा क्यों किया था, दादा जी ....?"

"इस लिए, नरेन्द्र कि ... वो डरा हुआ था ....कि कहीं लोग ...किसी साजिश के तहत ...कोई क्रान्ति न कर बैठें ....जिस की वजह से उन्हें 'भारत' से हाथ धोने पड़ जाएँ ? वह अब तक की हुई तमाम क्रांतियों को ...सुन और पढ़ चुका था! वह जान गया था कि ये अनपढ़ और गंवार लोग ...कुछ भी करने में सक्षम थे! वह मानता था कि ...बिना 'दमन चक्र' चलाए ...और कोई रास्ता उन के पास न था ...जो लोग उन के काबू आ जाते ...?"

"फिर ...."

"बैसाखी का अवसर था! लोग शांति–सभा के लिए जलियाँ वाला बाग में जमा हो रहे थे . शान्ति–सभा में लोकल लीडर पाल और किचलू के बारे में एक प्रदर्शन करने पर राय कायम करना चाहते थे ."

"तो इस में अंग्रेजों को क्या आपत्ति थी ....?"

"थी! वह नहीं चाहते थे कि 'मार्शल लॉ' लगाने के बाद भी लोग इकट्ठे

हों! पंजाब को किसी भी कीमत पर वो ...डंडे के नीचे रखना चाहते थे! और जब जनरल डायर को यह सूचना मिली ... तो वह भड़क उठा! उस ने हुकुम दिए ...! सभा का समय शाम के साढ़े चार बजे का था . वह अपने गोरखा और बलूच सैनिक ले कर ...वहां पूरी तैयारी के साथ पहुंचा! दो आर्मड कारें थीं ...मशीन गनें थीं ....राइफलें थीं ...और पूरी तैयारी थी .... ताकि ....” दादा जी अब चुप थे .

”फिर ....?” मैं तो अब पूरी तरह से आंदोलित था .

”पूरी मोर्चा बंदी कर के ....जनरल डायर ने ...उन बे–गुनाह और निहत्थे लोगों पर ...गोलियां चलवाई ...उन्हें मारा ...उन का खून बहाया ...और उन्हें भागने तक न दिया! वहां बने कुँए में लोगों ने छलांगें लगाईं ....भागने–दौड़ने की कोशिशें कीं ...पर फिर वो जाते कहाँ ....? कोई रास्ता ही न था – भागने को! असंख्य लोग मरे ...घायल हुए ...और जमीन उन के खून से लाल हो गई! दर्दनाक द्रश्य था, नरेन्द्र! लोगों की चीख–पुकार ...डकराहटें ....चिल्लाहटें ...और दर्दनाक मौतें ...एक बहुत बड़े वीभत्स द्रश्य का सृजन कर बैठे थे ....जो न आज भूला है ....और न ही भूलेगा कभी ....?”

मैं भी सन्न था! मैं हैरान था! मैं परेशान था! मुझे रोष था!मैं क्रोध से काँप रहा था ....! कैसा रहा होगा ....वो वक्त ...? कैसी होगी वो लाचारी . ..जहाँ मौत के उन बे–रहम दरिंदों ने ..उन्हें रौंदा होगा ...? बे–गुनाह .... बेबस मरते ...स्त्री–पुरुष ...बच्चे ...और उन के खून में लथ –पथ पड़े शव ...? ये सब क्या थे ....?

कौन था ...जो उन की पुकार सुनता ....? कौन था ...जो उन का दर्द बांटता ....? और वो कौन था ...जो अंग्रेजों को गले से पकड़ कर ...उन से उत्तर मांगता ...?

गुलाम भारत अंग्रेजों के सामने नत मस्तक हुआ खड़ा था!

और उन का जनरल डायर ....था ...उन का ‘मैन ऑफ मैच’ ...उन का परम वीर ... जिस का स्वागत भारत से ले कर इंग्लेंड तक हुआ था! अंग्रेज औरतों ने जनरल डायर को ...अपने गहने उतार–उतार कर सौगात में दिए थे ...और उन के पूरे समाज ने उसे सम्मानित किया था!!

जब कि ...जलियाँ वाले बाग में ...पड़ी लोगों की लाशें ...सुबकती रहीं थीं ...सिसकती रहीं थीं ....!!!

36

स्वराज का स्वप्न!

"मुद्दई लाख बुरा चाहे – क्या होता है ....?" रईस खान –तीस्ता सीतलबाड़ का दांया हाथ मेरे सामने खडा –खडा कह रहा था . "मुहिम मुश्किल है!" उस ने मेरी आँखों में झाँका था . "लेकिन आप के साथ अल्ला है! आप का अपना करम है!! आप अजेय हैं, मोदी जी ..." उस ने जब मेरे चरण छूने चाहे थे ....तो ...मैंने उसे अपनी बांहों में भर लिया था .

तीस्ता सीतलबाड़ की शायद यह पहली शिकस्त थी – रईस खान के हाथों हुई थी . रईस खान एक सच्चा मुसलमान था! जब उसे सच्चाई का पता चला था ...तो उस का जमीर जाग उठा था! उस ने पूरी सच्चाई उगल कर तीस्ता सीतलबाड़ को नंगा छोड़ दिया था!

लेकिन मैं प्रसन्न न था! मैं अब तक तीस्ता सीतलबाड़ की पहुँच को परख चुका था . वह अकेली न थी! उस के साथ जो लाव–लश्कर था .... वह कोई सामान्य न था . उस की टीम में एक से बढ़ कर एक तीरंदाज था ....अपने फन का माहिर था ...और ...था – पक्का खिलाडी!

सच कहता हूँ कि ...अब मुझे मुसलमानों से कोई डर न था! रईस खान – एक अकेला मुसलमान, अनेकानेक मुसलमानों का प्रतिरूप था – जो सच्चा था ...ईमानदार था ....अल्ला का था ....और उन के करम का था! मैं अब मुसलमानों को कम ...हिन्दूओं को ज्यादा दोषी मान रहा था! उन हिन्दूओं को जो ...निजी स्वार्थ में अंधे हो कर ...मुझ पर हमला कर रहे थे ....हल्ला बोल रहे थे ....और किसी न किसी तरह मुझे परास्त कर देना चाहते थे!

वो कुछ अलग लोग थे –हिन्दू और मुसलमान थे ...जो मिल कर मुझे मिटा देना चाहते थे!

सच में तो ये लोग न हिन्दू थे ...न मुसलमान! ये थे – स्नात घ्रणा से ओत–प्रोत ...नर–कंकाल ...स्वार्थ में नाक तक डूबे पौलिटिकल पिट्ठू ....बेईमान ... लालची गीदड़ ...जो मरों का मांस खाने के आदि हो चुके थे! अब इन्हें मेरी लाश चाहिए थी – ताकि ये नोच–नोच कर मुझे खाते ....जश्न मनाते ....और खूब इनाम पाते! इन सब की आँख मेरे ही अंत पर लगी थी!!

मैंने कई बार इन्हें विश्लेषित करना चाहा था! मैंने चाहा था कि किसी तरह ...से मैं इन्हें मना लूं ....सच्चाई बता कर इन्हें अपने पक्ष में ले लूं .... .मानवता का वास्ता दे कर उन्हें अपने पवित्र इरादों से अवगत करा दूं ...! लेकिन मैं हर बार ही हारा था!!

कारण – न तो ये दानव थे ..और न ही मानव! न ये समाज के थे .. .न थे देश के! न ये नर थे ...न नारी! ये तो अव्वल दर्जे के अधम थे ....नीच थे ...बेशर्म थे ....और गिरे लोग थे! न इन का कोई धर्म था ...और न ही कोई कर्म! न इन्हें शर्म थी ...न गैरत! ये एक गिरोह था – जिस में भारत के ही नहीं विदेश के लोग भी शामिल थे . ये लोग 'पावर गेम ' के खिलाड़ी थे . ये लोग सत्ता पलटना ...और सत्ता कायम करना जानते थे! इन की जड़ें बहुत गहरे में थीं!

मैंने पाया था कि इन्हें सत्ता और समाज के संचालन की पूरी समझ थी . इन्हें नेताओं को खरीदना और उन्हें बेचना आता था . इन्हें लोगों को गुमराह करने में महारत हासिल थी . सच को झूठ और झूठ को सच बना कर ....बेचना इन्हें आता था . इन्हें गधे को गाय बनाना ...और हाथी को ऊँट साबित कर देना आता था . किसी भी व्यक्ति को ऊपर उठाना ...या की उसे नीचे गिराना ...इन के बांये हाथ का खेल था . काले से सफेद लिख देना ... इन्ही के बूते की बात थी!

लेकिन हाँ! कीमत इन की अपनी थी! और ये वसूल भी करते थे ...फिर चाहे कोई हारे या जीते ? संहार से ले कर शान्ति बहाल करने तक ....के खेल के ये अचूक खलाड़ी थे!

सत्ता की छांह तले तीस्ता सीतलबाड़ के हर कर्म और कुकर्म के लिए स्थान था ...आदर था ....नाम था ...और इनाम भी था! सेक्युलर होने के झंडे के नीचे बैठ मानवीयता का पाठ पढ़ती तीस्ता ...अजर–अमर थी . उस की कहानी मैंने जितनी समझी थी ....वह इस तरह थी ..

सेक्युलरिज्म की सब से बड़ी पैरोकार तीस्ता सीतलबाड़ 'सेंटर फॉर जस्टिस एंड पीस ' एन जी ओ चलाने की आड़ में विदेशों के इशारों पर देश के खिलाफ काम कर रही थी! तीस्ता सीतलबाड़ का एक ही मुद्दा था – मोदी को फंसाना! इस के लिए वह सारे असली सबूत मिटा कर नकली सबूत पेश कर रही थी . और इस के बदले उसे मुंह मांगी रकम मिल रही थी!

गुजरात दंगों से पहले –जनवरी २००१ से दिसम्बर २००२ के बीच, तीस्ता सीतलबाड़ और उस के पति जावेद आनंद के यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया में खुले खाते में ...एक भी रूपया नहीं था! लेकिन इस के बाद इन्होने खाते के बाद खाता खोला ...धन–वर्षा हुई ...और फिर तो करोड़ों के व्वारे–न्यारे हुए! गुल वर्गा सोसाईटी के केस में तीस्ता ने सोसाईटी के पीड़ितों के लिए देश–विदेश से फण्ड लिया लेकिन उन्हें एक फूटी कौड़ी तक न दी! निजी खातों को पैसों से नाक तक भरने के बाद ...तीस्ता ने ट्रस्ट खोले ...बेटी के नाम खाते खोले ....प्रॉपर्टी खरीदी ....और सब रंग कम्युनिकेशन फर्म तक बना डाली!

मेरे सामने डिटेल्स और डाटा रखा है! तीस्ता सीतलबाड़ ने जो लूट–पाट मचाई है ...धन–वैभव संजोया है ....फरमें और संस्थाएं बनाई हैं ...बेजोड़ हैं! यहाँ तक कि गुल वर्गा सोसाईटी के मृतकों की याद में मैमोरियल बनाने के लिए इकठ्ठा किया धन भी तीस्ता सीतलबाड़ डकार गई है! और अब मैमोरियल बनाने की टाल कर दी है!

और तो और तीस्ता सीतलबाड़ को देश–विदेश से मिले पुरुस्कारों की सूची भी बहुत लम्बी है! इतनी लम्बी कि ...मोदी तो क्या ...कई मोदी भी सामने आएं तो भी परास्त हो जाएं! और जो मोटी वह रकम उन्हें मिल रही है ...वह तो ....?

अंत में बताता हूँ कि –

अमरीका के मानवाधिकार उल्लंघन की पोल और दुनियां के राजनीतिज्ञों व् दौलतमंद व्यक्तियों की पोल खोलने वाला बैब साईट –विकिलिंक्स लिखता है कि – तीस्ता सीतलबाड़ और अमरीकन सरकार लगातार एक दूसरे के संपर्क में है! और इस का सबूत है – अमरीका की फोर्ड फाउंडेशन द्वारा २ लाख २० हजार अमरीकी डालर का तीस्ता को दिया पुजापा ? इस के आगे की फहरिस्त और भी लम्बी है ....

कहाँ तक नापेंगे ...तीस्ता सीतलबाड़ को ....?

हाँ! उन के नाम मैं नहीं बताऊंगा ..जिन से मेरी जान को असली जोखिम है! ये लोग बहुत–बहुत अपने हैं ....जनता के भी प्रिय हैं ....देश के चहेते हैं ...और वो हैं जिन का मैं भी कभी विश्वास पात्र रहा हूँ! कुछ वो भी हैं जो मुझ से डर गए हैं! और कुछ वो हैं ....जो ...नहीं चाहते कि .....

आखिर ये लोग चाहते क्या हैं ? अब यही प्रश्न पैदा होता है!!

"मोदी को मौत ....और अमित का अंत ...!" इस प्रश्न का बेबाक उत्तर है!

और तभी मुझे रईस खान जैसे सच्चे देश वासियों की दुआओं का ध्यान हो आता है! शायद मैं नहीं मरूंगा! और न ही अमित का अंत आएगा! और अगर हारने वाला कुछ है – तो वह है – अन्याय, गरीबी, भ्रष्टाचार और कुशाशन! मैं और अमित मिल कर इस काम को अंजाम देने की शपथ ले चुके हैं! चूंकि हम अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से कहीं नहीं जुड़े हैं ...अतः हम हारेंगे नहीं!!

मेरा मन कहता है – लोग हमारे साथ हैं! देश हमें देख रहा है! जनता को हम से उम्मीदें बंधी हैं! आकाश खाली है! वहां कोई ऐसा सितारा नहीं है ..जो उन के मन–प्राण को उजासों से भर दे ....आशा–दीप जला दे!!

उन की आँखें अब हमीं पर टिकी हैं!!

और हमें भी अब उन की आशाओं के अंत तक जाना होगा ...उन की उम्मीदों तक पहुँचना होगा ....! परिणाम चाहे जो हो ....!!!

"इस हत्यारे डायर की जान मैं लूँगा!" घायल हुआ युवक ऊधम सिंह कह रहा था . वह देख रहा था ...लाशों का जंगल ...सिसकते – रोते बच्चे ... औरतें और दम तोड़ते पुरुष! "सरेआम मारूंगा, इसे!" उस ने दांती भिंची थी . "इन बे–गुनाहों के खून का बदला ...मैं लूँगा ...! भारत अब बदला उतारेगा, डायर! तुम कायर हो ....कमीने हो ...! मैं तुम्हें माफ नहीं करूंगा!परिणाम चाहे जो हो .....पर मैं ...." दादा जी ने मुझे अपांग देखा था . उन्हें लगा था शायद कि मैं ऊधम सिंह ही था ...और अपना बदला उतार कर उन के पास आ बैठा था . "और बेटे! ऊधम सिंह ने बदला उतार दिया था!"

"सच ....?" मैंने कूद कर पूछा था .

"हाँ, सच!" दादा जी हँसे थे . "भारत का सच्चा सपूत था, ऊधम सिंह . सन १६४० में उस ने इंग्लेंड पहुँच कर ...डायर को गोली मारी थी! और . ....." हंस रहे थे, दादा जी .

"और ....?" मैंने पूछा था . मैं नहीं चाहता था कि दादा जी अब चुप रहें .

"और, बेटे! उसे फांसी की सजा मिली थी . फांसी चढते वक्त ऊधम सिंह ने कहा था – मेरा भारत मुझे देख रहा है! लोग मुझे आशीर्वाद दे रहे हैं! मुझे फांसी से डर नहीं लगता . मुझे तो मौत भी मना रही है! मैं आज प्रसन्न हूँ कि मैं आज ....फांसी चढ़ रहा हूँ!"

"किसी ने ....क्या किसी ने भी अंग्रेजों का विरोध नहीं किया, दादा जी ...?" मैं स्वाभाविक प्रश्न पूछ बैठा था .

"विरोध हुआ था, बेटे! जम कर विरोध हुआ था!! समूचे भारत की आत्मा दरक गई थी . जलियाँ वाला बाग की इन न्रशंश हत्याओं ने पूरे जन–मानस को घायल कर दिया था! पूरा –का–पूरा भारत टीस आया था!!"

"और अंग्रेज ....?"

"हंटर कमीशन बिठा कर ...प्रशाशन ने लीपा–पोती की थी! कुछ सच . ..कुछ झूठ मिला कर कमीशन ने रिपोर्ट दी थी ...जिस में दोनों पक्षों को दोषी ठहराया था! और डायर को इस बात पर मुक्त कर दिया था कि ...उस ने अंग्रेजी साम्राज्य की सुरक्षा के लिए कड़े कदम उठाए थे ...ताकि हम भारतीय कभी जुर्रत ही न करें ...मुंह ही न खोलें ....गुलाम ही बने रहें ....उन के मातहत बन कर उन्हें युद्ध जिताते रहें ...और उन के साम्राज्य को खुशहाल बनाते रहें ...."

"वो चाहते थे कि ...हम गुलाम ही बने रहें ....?"

"हाँ! उन का इरादा नेक न था! उन के किए वायदे झूठे थे . द्वितीय विश्व युद्ध जीतने के बाद उन के तेवर ही बदल गए थे!"

"पर क्यों ....?"

"इस लिए, बेटे कि ....तीतर के हाथ बटेर जो लग गई थी ? वो क्यों चाहते कि ...इतना बड़ा देश उन के हाथ से निकल जाए ....? वो नहीं चाहते थे कि ...सन सत्तावन जैसी गलती फिर हो ...और वो यह भी नहीं चाहते थे कि ...बंगाल जैसा विद्रोह फिर से हो ....! पंजाबियों और पठानों को तो वो

नष्ट–नाबूद कर देना चाहते थे! यही एक आखिरी रोड़ा रह गया था ...उन के रास्ते का! सो डायर ने सोचा कि ...उस तरह के नर–संहार से उन की रूह काँप जाएगी! फिर कोई जुर्रत ही न करेगा ...कि मुंह खोले ....?"

मेरी आँखों के सामने तब अंग्रेजी राज्य का यूनियन जैक फहर–फहर फहराने लगा था! मैं देख रहा था – उन का साम्राज्य ....उन का वैभव ... .और उन का हुनर और हुलिया! कसाई जैसे गाय को काट रहा था ...बाज ने कबूतर को फाड़ डाला था ...गिद्ध ने मरे पशु की लाश में पंजे गाढ़ दिए थे ....और गीदड़ मरे नर–कंकालों को चबा रहे थे! मेरी आँखों में विवशता के आंसू भर आए थे!!

"हे, भारत! मैं अगर रहा ...तो तेरे दुःख अवश्य बांटूंगा ....!" मेरे भीतर एक आवाज उगी थी .

"जलियाँ वाला बाग की ये घटना ...एक सार्वजनिक दुःख बन कर ... लोगों के बीच व्याप्त हो गई थी! एक तथ्य था ये – जो तय हो चुका था! एक निर्णय था – जो लिया जा चुका था!" दादा जी बताते रहे थे .

"कौनसा ...निर्णय ...?" मैंने पूछ ही लिया था .

"आजादी का निर्णय! स्वतंत्रता का निश्चय!! स्वराज का स्वप्न ...!!! सब तय हो गया था – अब ..."''

"पर कैसे ....??" मैं भी जानने को उत्सुक था .

37

मैं इस नरसंहार की निंदा करता हूँ!

"लोगों के मनों ने मान लिया था, नरेन्द्र कि अंग्रेज झूठे हैं ...फरेबी हैं ...मक्कार हैं! जो लोग अपने निजी स्वार्थ वश अभी तक उन के साथ थे . ..अब वो भी छिटकने लगे थे!"

"कैसे ...?"

"महान विचारक रविन्द्र नाथ टैगोर ने 'नाईट' की पदवी अस्वीकार करते हुए अंग्रेजों का साथ छोड़ा था! 'मैं इस नर संहार की निंदा करता हूँ ' उन की ये घोषणा पूरे देश में गूंजी थी! "ये देश के प्रति दुर्व्यवहार है! जनता का इतना बड़ा अपमान ....?" वो स्वयं भी हैरान थे .

"और ....और ...वो लोग ...जो उन के साथ थे ...?"

"सभी नाराज थे! यहाँ तक कि सैनिक भी ....जिन्होंने अंग्रेजों को विश्व विजेता बनाया था ....जिन्होंने खून बहाया था ....जानें दीं थीं ..अंग्रेजों से नाखुश थे!"

"कारण ....?"

"कारण कि अंग्रेजों ने सिपाहियों के साथ भी ठगी की थी! उन्हें चंद मैडिल पकड़ा कर ...उपाधियाँ दे कर ...खुश कर दिया था! पूरे देश को समझ आई थी कि ...अंग्रेज जो मैडिल बाँट रहे हैं ...वो गुलामी के प्रतीक के आगे और कुछ नहीं हैं! अंग्रेज उन्हें बेबकूफ बना रहे थे – लोग समझ गए थे!"

"देर ...आए ...दुरुस्त आए ...!" मैंने नारा जैसा लगाया था . मैं प्रसन्न था कि देश जाग्रत हो रहा था! "लेकिन अंग्रेजों ने .....?"

"खूब जुल्म ढाए थे! जलियाँ वाला बाग के बाद ...गुजरा वाला में हुए प्रदर्शनों पर तो ....तोप, टेंक ...और हवाई हमले हुए थे! उन्हें डर था कि कहीं ....सत्तावन वाला गदर फिर से चालू न हो जाए ...? लोग मरे थे .... घायल हुए थे ....पर ...हिले न थे! पूरा देश अब मुड कर अंग्रेजों की आँखों में देख रहा था!"

मैं अब बहुत प्रसन्न था . मेरा रोम–रोम खिल उठा था . न जाने क्यों इस तरह के प्रसंग मुझे बहुत भले लगते हैं ...? न जाने क्यों मैं ...मरने–मिटने के लिए हमेशा ....ही तैयार रहता हूँ ...? न जाने क्या है कि ...जब भी ...देश, धर्म की बात आती है ...तो मैं एक विशेष तरह से जाग्रत हो जाता हूँ!

"आसमान के बेटे हो ....!!" किसी ने मेरे कान में कहा था .

"डायर शैतान का बेटा था!" दादा जी संयत स्वर में बोल रहे थे . "इस शैतान के बेटे ने ही अंग्रेजी साम्राज्य के चलते जहाज में कील ठोकी थी! ये पहला कदम था ...जो अंग्रेजों के पराभव का मार्ग प्रशस्त कर गया था!" कह कर दादा जी गहरे सोच में डूब गए थे .

तब मेरी समझ में ये बात न बैठी थी . मैं तो डायर को अंग्रेजी सरकार का एक ...परं बहादुर और वफादार सेवक ...मान कर चल रहा था . तब मैं नहीं समझा था कि आखिर डायर से ऐसी कौनसी गलती हुई ...जिस ने अंग्रेजी राज का जहाज डुबो दिया ?

"अंग्रेजों ने हमारे साथ भाईचारा नहीं बनाया!" दादा जी टीस आये थे . "जब कि हमने उन्हें बराबरी पर स्वीकार लिया! वो तो व्यापारी बन कर आए थे ? फिर वो सत्ता में साझा कर बैठे ...और फिर वो ....देश के मालिक बन गए ...? हमने उफ तक न की . सोचा– ये भी तो अपने जैसे ही हैं! अपने लोग हैं! सब मिल–जुल कर ...रह लेंगे ...! लेकिन ....."

"वो ठग थे!" मैंने अपना मत दे दिया था .

"हाँ, नरेन्द्र! तुमने ठीक कहा! वो ठग थे . ठगी का माल भारत से ढो –ढो कर ले जा रहे थे! भारत को कंगाल बना रहे थे ...और इंग्लेंड को आबाद कर रहे थे! यहाँ लोग भूख से मर रहे थे ....बीमारियों से तंग थे . ...बे–रोजगार थे ...अशिक्षित थे ....और ...वहां एक अलग ही दुनियां बस गई थी ...?"

"कौनसी दुनियां, दादा जी ....?"

"एशो–आराम की दुनियां ...! एक ऐसी दुनियां जहाँ केवल स्वयं को ही पोषा जाता है! एक ऐसी दुनियां जहाँ अयाशियों की आराधना की जाती है! एक इस तरह का समाज ...जहाँ हर आदमी एक हैसियत ले कर चलता है! जहाँ हर किसी के पास जायदाद होती है ...ओहदा होता है ....और गुरूर होता है! एक ऐसा देश जो ...अन्य सब देशों का सिरमौर होता है ....उन पर शासन करता है ....और हुक्म चलाता है!!"

"ऐसा क्यों होता है, दादा जी ....?" मैंने पूछा था .

"ऐश्वर्य आदमी को अंधा बना देता है, नरेन्द्र!" दादा जी बता रहे थे .

"कैसे ....?" मैं पूछता ही जा रहा था .

"अंग्रेजों के पास धन के ढेर लगे थे! उन का झंडा कहीं झुकता ही न था! पूरे विश्व में उन की धाक जम गई थी . इन का गौर–वर्ण इन के लिए एक अलंकार सिद्ध हुआ था! अनपढ़ अंग्रेज भी हमारे लिए किसी चक्रवर्ती सम्राट से कम न था!"

"कमाल ....ही था ...कि ....?"

"हाँ! कमाल ही कमाल था, नरेन्द्र! अंग्रेजों के पास अब वो था ... जो और किसी के पास न था!"

"मसलन ....कि ....?"

"एक धर्म था ....एक भाषा थी ....और एक संस्कृति थी! ये उन के तीन पैर थे जिन पर पूरा–का–पूरा अंग्रेजी साम्राज्य खड़ा था! इन्होने अपने ही धर्म को श्रेष्ठता प्रदान की ...और इसे इतना ऊंचा उठा दिया कि ...अन्य सभी धर्म इस से निम्न दिखाई देने लगे! यहाँ तक, नरेन्द्र कि हमारा भी सनातन धर्म ...हमारे वेद ... हमारी गीता और महाभारत ...सब के सब इन के नकली धर्म के सामने नकली लगने लगे! इन्होने कहा – तुम्हारा धर्म ढोंग है ....बकवास है! और हमने मान भी लिया ....?"

"और ....?"

"और ...इन की भाषा ...! इतना उछाला इन्होने अपनी भाषा को ...कि आज तक ये भाषा ...जाने का नाम तक नहीं लेती ...? आज भी पूरे विश्व के

लिए एक लिंक बनी है! जबकि इस में वैसी कोई महानता नहीं ...जो संस्कृत में है ...?"

"और ....?'

"और ...इन की संस्कृति ....? इतनी सम्मोहक संस्कृति है – इन की ...कि ...आदमी को पागल बनाने में कुछ नहीं लगता! हम अपना पूरे–का–पूरा आध्यात्म भूल कर ...इन की इस फिजूल की संस्कृति से ... प्रभावित होने लगे ...जहाँ स्त्री–पुरुष के सम्बन्ध शैतानो के जैसे सम्बन्ध हैं! और एक तरह से तो ...." दादा जी चुप थे . अब ज्यादा कुछ वो कहना नहीं चाहते थे .

धर्म, भाषा और संस्कृति के तीन पैरों पर खड़ी ...अंग्रेजी सभ्यता मुझे भिन्न तरह से प्रभावित करने लगी थी! लगा था – इन की ये भाषा ...धर्म और संस्कृति ही ...इन के ऐश्वर्यवान होने के तीन कारण थे! यही तीन आकर्षण थे ...जिन के जरिए अंग्रेजों ने धन कमाया था ...नाम कमाया था . ..और एक ऐसा साम्राज्य स्थापित किया था ...जहाँ सूरज गरूव ही नहीं होता था ...!!

"अपने पर अभिमान करना बुरा कब है ....?" मेरा अंतर बोला था . "गलती आप की है ....अगर आप अपने आप को ...निम्न मान बैठते हैं ...?"

"गलतियाँ तो सब हमारी ही थीं, नरेन्द्र!" दादा जी कराहने लगे थे . "इस गुलामी के कवच को हमने ही सहर्ष पहना था! हमारे स्वार्थ ...हमारे लालच ....हमारी आपसी फूट ....और वैमनष्य ...और हमारे ही आपसी मन–मुटाव ...टकराहटें ...और दुश्मनियाँ हमें डुबो बैठीं! और अब भी भारत एक कहाँ था ....? अब भी हम बिखरे हुए हैं! बंटे हुए हैं ...अलग–अलग हैं ...! और तब भी हम बंटे हुए थे! एक होने की कोई सूरत न थी ...? जलियाँ वाला बाग की घटना के बाद एक सन्नाटा था जो पूरे देश में छाया हुआ था!"

"अंग्रेजों को तो कोई डर था ही नहीं ....?"

"नहीं! वो तो अब भारत के एक छत्र अधिपति थे! जो चाहें – वो कर सकते थे! जो मांगें ...उन्हें मिलता था!"

"और हमारे नेता ....? हमारे नेता ...दादा जी ...वो जो आजादी के लिए लड़ रहे थे ....वो ....?"

"जेलों में बंद थे! लड़ाई के दौरान सब को अंदर कर दिया था! सब को देश–द्रोह की धाराएं बता कर ...सजाए –मौत का डर दिखाया गया था!"

"कोई तो बाहर रहा होगा ....?"

"हाँ! एक था ...! गांधी ....!! गाँधी जी जेल में नहीं थे ....!"

"क्यों ....?"

"वो अंग्रेजों के साथ थे! विश्व–युद्ध में गाँधी जी अंग्रेजों के साथ थे!"

मैं सनाका खा गया था ....मूर्छित हो गया था ....!!

38

हमें लड़ना तो पड़ेगा ?

"अब परिथिति क्या थी ?" मैं यही सोच रहा था .

घटनाओं का गठजोड़ एक चेतावनी की तरह मेरे सामने आ खड़ा हुआ था! मैं समझ रहा था – एक खेल रचलिया गया था लेकिन उस खेल की दिशा क्या थी, मैं नहीं जानता था . लेकिन इतना तो जरूर जानता था कि. .ये खेल था तो खतरनाक ....जानलेवा ...और सत्ता हथियाने के सिवा और कुछ न था!

और हाँ, इस खेल के खिलाड़ी कौन–कौन थे – मैं न जानता था!

लेकिन इस खेल का फायदा किसे होना था – मैं ये सोचने बैठ गया था!!

नब्बे के दशक में कांग्रेस पार्टी की दशा क्या थी ? पार्टी टूटने–टूटने को थी – ये तो मैं जानता हूँ . पार्टी किसी भी 'पाजिटिव' सोच से दूर थी . वैचारिक तौर पर तो कांग्रेस पार्टी दिवालिया हो चुकी थी . पार्टी का न कोई मुद्दा था ...और न ही कोई उद्देश्य था! पार्टी पर न तो कुछ कहने को था ...और न ही कुछ करने को था! लेकिन हाँ, कुछ था तो ...बस सत्ता का स्वार्थ ही था ? ये अभी तक मरा नहीं था ...और एक बे–शर्मी की हद तक जिन्दा था! जो लोग पार्टी में पोस्ट ले कर बैठे थे उन्हें व्यक्तिगत स्वार्थ के सिवा और कुछ सुहाता भी न था!

फिर भी वहां एक अनुत्तरित प्रश्न बैठा था – पार्टी को जीवन दान मिले तो कैसे ....?

"कुछ सोचा है, शाह जी ...?" पार्टी में आम चर्चा होती . "मर जाएंगे . ...अगर कोई तिकड़म न बैठी तो ....? लोग वोट नहीं ....जूते देंगे .....?" चर्चा चलते–चलते भंग हो जाती . "रोष है ...पब्लिक में ....."

"है हमारे पास एक अमोघ अस्त्र ....!" पार्टी के कर्णधार बोले थे . भूल जाते हैं, आप लोग कि ...हम कित्ते पुराने हैं ....? भूल जाते हैं, आप लोग कि हम ही देश के मालिक हैं! "जा कर कहो जनता से कि ....हम सेक्युलर हैं ...."

"सेक्युलर .....?"

"क्यों ...? संविधान में नहीं लिखा ....?

बस, फिर क्या था कि लोग चिल्ला पड़े – सेक्युलर .....! सेक्युलर ......!! सेक्युलर .....!!!

और फिर करिश्मा होते भी देर न लगी! कमाल ये कि पूरा मीडिया 'सेक्युलर' के मंत्र को ले कर इस तरह उड़ा कि ...लोगों को पल–छिन में पागल बना दिया! लोगों को उन की पहचान भुला दी . लोगों को इस तरह रिन्झाया कि वो ...अपने–पराए का ध्यान ही भूल गए!

मैंने भी पूछा लोगों से – अरे, भाई! ये 'सेक्युलर' किस बला का नाम है . ..?"

"सेक्युलर के माने सीधे–सादे होते हैं – धर्मनिरपेक्ष! एक समाज जिस का कोई धर्म ही न हो!"

"फिर वह समाज ही क्या हुआ जिस का कोई धर्म ही न हो ....?"

"धर्म विष है ....पईजन है .....! जाति ...बीमारी है! संस्कार ...गुलामी की बेड़ियाँ हैं! आदमी तो नंगा पैदा होता है, भाई जान ...? उसे ये नाम, गाँव, गली –गोत्र ...और अपना–तेरा तो हम सिखा देते हैं! और यही उसे हिंसक पशु बना देते हैं ....और वह आदमी की पहचान ही भूल जाता है ?"

"और 'सेक्युलरिज्म' क्या बनती है ....?"

"उच्च मानवता का प्रतीक ....एक मनुष्य ....! ऐसा मनुष्य जो सब का है ...हर धर्म का है ....हर जाति का है ....हर प्रदेश का है ....हर प्रांत का है .. ..भारत का है ...विश्व का है ...और ...."

"कहीं का भी नहीं है ...?" मैं टोक देता हूँ . "निहत्था है ...धुरीहीन है .

....निरीह है ....अकेला है ....”

”और .....?”

”और एक ऐसा आदमी है ...जिस का न घर है ...न द्वार है! न उस का गाँव है ...न घोष है! वह एक आदमी है और उस के हाथ में उस का ही झंडा है ...डंडा है! उस की एक खिचड़ी जुबान है ...और उस का ये अर्धनारीश्वर रूप उसे पुरुष और नारी के बीचोंबीच ला खड़ा करता है! वह नपुंसक है ...और डूबती नाव में बैठा–बैठा ‘बचाओ–बचाओ’ का शोर मचा रहा है ....” तो बचाओ, उसे ....?”

”कैसे ....?”

”कोई दूसरा विकल्प दो ....?”

”इस तरह के सपने तो विदेश ही बेचता है ....? इस लिए कि हम अपना सब भूल जाएं ....और इस सेक्युलरिज्म के चक्कर में फंस कर ...डूब जाएं! लेकिन उन के पास उन की भाषा है, उन का धर्म है और उन की संस्कृति है! सेक्युलरिज्म का फार्मूला तो हमारे लिए ईजाद किया है ...ताकि वो हमें फिर से गुलाम बना लें ....?”

”तो अब आप क्या करेंगे ....?”

”वही जो मैं सोच रहा हूँ ....!!”

”पर देश बचाने के लिए ...तुम स्वयं कहाँ बचोगे ..., नरेन्द्र मोदी ...? तुम्हीं तो निशाने पर हो! एक से ले कर ...अंतिम गिनती तक तुम्हारा ही नाम आता है!”

”क्यों ....?”

”क्यों की तुम्हारा ‘नाम’ और तुम्हारा ‘काम’ दोनों ही आसमान पर चढ़ गए हैं! तुम अब एक खतरे के रूप में जाने जाते हो! तुम्हें अब हर आँख देख रही है . देश, विदेश, मीडिया, बुद्धिजीवी, राजनेता, एन जी ओज, अभिनेताओं से लेकर ...आम आदमी तक – तुम्हीं सब के स्टार हो! और अब .....”

”मेरा अंत आएगा ...?”

”हाँ! तुम्हारा अंत लाने की शुरूआत भी हो चुकी है!”

”कैसे ....?”

"गोधरा काण्ड! इसे लाक्षाग्रह समझो!! इस की आग अभी ठंडी नहीं हुई है ...?"

"हे, भगवान्!!" मैं टीस गया हूँ . "ये क्या बबाल है ...? हिन्दू–मुसलमान का ये दंगल ...ये अमानवीयता का अभिशाप ...अभी तक नहीं टला ....? मेरे अथक प्रयास ...और प्रयत्नों के बाद भी ....वही विवाद ...? वहीं का वहीं खड़ा है –सब कुछ ...? कौन है जो इसे हवा दे रहा है ...इस आग को सुलगा रहा है ...और कौन है वो जो 'हिन्दू–मुसलमान ' के इस महाजाल को फैला कर छुप गया है ...?

"एक बार कोई 'नाम' या 'नुक्ता' मिल जाए ...कि नरेन्द्र मोदी ने हिन्दू–मुसलमानों के दंगों को शय दी ...हिन्दूओं का पक्ष लिया ....और मुसलमानों को मरवाया . ...फिर देखना कि किस तरह से ...गाड़ी उलटती है ...? और ....."

मेरी रूह काँप जाती है – मात्र 'गोधरा' काण्ड को याद कर के!!

"लाक्षाग्रह की युक्त समिधाएँ ...पहले से ही चुन लीं गईं थीं, नरेन्द्र!" मुझे वक्त बता रहा है . "तुम नहीं जानते कि तुम्हारे लिए लाक्षाग्रह का निर्माण करते वक्त यही बात कारगर मानी गई थी कि ...तुम्हें ...तुम्हारी पार्टी को . ..राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को ....और तुम्हारी पूरी इस राष्ट्रवादी विचारधारा को ...इस बनाए लाक्षाग्रह में जला कर ...हमेशा–हमेशा के लिए समाप्त कर दिया जाए! न रहेगा बांस ....न बजेगी बांसुरी ....? हा हा हा! अंत तो सब का आता ही है, मेरे भाई ?"

"तो क्या तुम इन सब में शामिल नहीं हो ....?" मैं पूछ लेता हूँ .

"हूँ ...तो ...! पर मैं सेक्युलर हूँ, मेरे भाई ...! हा हा हा ...!" वक्त हंसने लगता है . "अभी क्या ...अभी तो सेक्युलरिज्म का दौर यहाँ आएगा ...! इस्तांच सेक्युलरिज्म –माने कि हम अपने नाम के सामने तुम्हारी तरह 'मोदी' लिखना तक बंद कर देंगे! हम सिर्फ हम होंगे ...जैसे कि 'स्टोन' ...या 'ब्लैक ' ...'व्हाईट' ...या फिर 'कालू', 'लालू' .....और 'डालू'! आगे का नाम, गाँव . ..सब गायब! एक नई पहचान से हम जुड़ेंगे ....! जैसे कि पायजामे से निकल कर हम धोती पहन लेंगे ....और ...फिर स्वतंत्र ....!!"

"और ये लाक्षाग्रह की अग्नि ....?"

"एकता में अनेकता को कैसे जलाएगी ....! नहीं समझे ....?"

"नहीं ....!!"

"हम सब के ....और सब हमारे ....!! हा हा हा! कित्ता आसान है ...? लड़ाईयां खत्म ...! शान्ति से जीओं ....खूब पीओ ...और ऐश ..करो!"

"कौन सिखा रहा है, ये सब ....?" मैंने तुनक कर पूछा है .

"वक्त ...माने कि मैं वक्त ...ये सब बता रहा हूँ, नरेन्द्र!"

"बक रहे हो, मित्र!" मैं भड़क जाता हूँ . "मैं नहीं मानता तुम्हारा लोहा ....! और हाँ, मैं जलूँगा भी नहीं –इस लाक्षाग्रह में ...! देखलेना .... देखलेना ....! मैं इस वैमनष्य की आग को बुझा कर ही दम लूँगा! मैं जोड़ूंगा देश को .....प्रान्तों को ....परिवेश को ....पुरुष और नारी को ....!!"

"अकेली कांग्रेस ही खा जाएगी, तुम्हें ....?"

"बूढी हुई ....! मैं युवा हूँ ...मेरे साथ देश का युवक है ....नई विचारधारा है ....और नए लोग हैं! मैं उन में से हूँ जिन्होंने वक्त को मुट्ठी में लेना सीख लिया है! अब तुम हमारी मुट्ठी में होगे, मित्र!"

मुझे सांस ने जगाया है! मुझे होश लौटा है! दम भी लौटा है ...और अब मैं स्वस्थ हूँ! मरने से बच गया हूँ . एक खौफ से उबर कर ऊपर आ गया हूँ ...!!

हिन्दू–मुसलमान का सियासती आंकड़ा मेरी समझ से अब बाहर नहीं है! 'गोधरा काण्ड' मेरे लिए एक सबक है . ...एक सबब है ....एक पाठ है . ..और एक चुनौती भी! मुझे सब स्वीकार है ....मैं नां तो नहीं कह रहा ....?

39

मैं पहले मरूंगा!

"जलियाँ वाला में हुआ नरसंहार मेरे लिए दूसरा सबक है!" गाँधी जी ने कहा था .

मैं अचानक ही दादा जी की आवाजें सुनाने लगा था . मैं सुनने लगा था कि कैसे ...गाँधी जी को हुए जलियाँ वाला बाग के नर–संहार ने झिंझोड़ कर ...नींद से जगा दिया था! आत्मा की गहराईयों तक वो दरक गए थे!पूरा देश ही नहीं ...अब तो पूरा विश्व ही ...आहात हो गया था .....अंग्रेजों के मानवता पर किए इस प्रहार से!!

"और पहला सबक क्या था, दादा जी ....?" मैं पूछ बैठा था .

न जाने क्यों मुझे अपने पूर्वजों की लड़ी इस युद्ध –कथा को ...सुनने में अपूर्व आनंद आता था! मैं एक पल भी रुकना न चाहता था ...झुकना न चाहता था ...और न पलकें तक झपकाना चाहता था! मैं चाहता था कि मैं ....इस समूची संघर्ष–गाथा को ....समाहित कर ...एक सच्चे देश–भक्त के रूप में फिर से पैदा हो जाऊं ...और ......

"पहला सबक मिला था ...जब उन्हें ...गोरों के आदेश पर ...प्रथम श्रेणी के डब्बे में सफर करने के जुर्म में ...उठा कर डब्बे से बाहर ...प्लेट फार्म पर पटक दिया था! तब घोर असमंजस ..और निपट निराशा को ...झेलती उन की आँखें फटी की फटी रह गईं थीं!"

"पर ऐसा क्यों हुआ था, दादा जी ...? कहाँ हुआ था ये –हादसा ....?" मेरी जिज्ञासा जोरों पर थी . मैं सब कुछ दादा जी से विस्तार में सुन लेना चाहता था .

"इस लिए, नरेन्द्र कि ...गोरों के अलावा ...कोई भी गैर प्रथम श्रेणी के डब्बे में सफर नहीं कर सकता था!"

"क्यों ...?"

"उन का राज था, भाई! उन का कानून था, बेटे! उन की रेल गाड़ी थी ...और मेरे मित्र ...सभी था ...उन का ...! एकाधिकार था – अंग्रेजों का! उन्होंने सारी सुख–सुविधाएं अपने लिए सुरक्षित कर लीं थीं . वो नहीं चाहते थे कि 'गोरों' के साथ 'काले' आ बैठें ?" हंस गए थे, दादा जी .

"'गोरों' के साथ 'काले' ...क्या मतलब हुआ इस का, दादा जी ....?" मैं तुनक था .

"अंग्रेज किसी और को बराबरी नहीं देना चाहते थे!" दादा जी विहंस कर बता रहे थे . "उन्हें भ्रम था –श्रेष्ठ होने का ...गर्व था – संपन्न होने का ...अहंकार था – सत्ता का ....और डर था – इसे गँवा देने का! अतः वो चाहते थे कि ...उन के अलावा ...सब को निम्न श्रेणी मैं गिना जाए ...गुलाम बना कर रक्खा जाए ...भाड़े का टट्टू बना कर जोता जाए ...और उन के श्रम के एवज उन्हें चंद सुख–सुविधाएं दे कर ...बहका लिया जाए! और जब गाँधी जी को उठा कर प्लेट फार्म पर पटका गया था ...तो ...उन्होंने इस होती साजिश को सूंघ लिया था!" दादा जी मेरी आँखों में कुछ ढूंढ रहे थे . "घटा तो ...गाँधी पर ....पर थे वो अकेले ....निःसहाय ...और ये घटना भी ...साउथ अफ्रीका में घटी थी!"

"साऊथ अफ्रीका में वो क्या करने गए थे ...?"

"लड़ने गए थे ....कानून की लडाई ...लड़ने गए थे ...वहां! अपने ही कुछ वहां रहते देश–वासियों ने ..उन्हें पुकारा था ...बुलाया था ...कि उन के साथ होते जुर्म से ...वो कानूनी तौर–तरीकों से लड़ें!"

"क्यों ....?"

"क्यों कि ...गाँधी जी एक बैरिस्टर थे! उन्होंने लंदन में रह कर ही तो अपनी कानूनी पढ़ाई पूरी की थी ? उन्हें अंग्रेजी आती थी . कानून भी आता था . वह भी अंग्रेजों की ही तरह सूट –टाई पहन कर रहते थे . और उन्हें भी भ्रम हो गया था कि वो अंग्रेजों की बराबरी में आ गए थे!"

"और अब उन का ये भ्रम टूट गया था ....?" मैंने प्रश्न किया था .

"हाँ! उन का ये बराबरी का भ्रम टूट गया था ...और उन्हें एहसास हो गया था कि ...अंग्रेज एक बुरी बला का नाम था!" दादा जी ने बात का निचोड़ मेरे सामने रख दिया था .

मेरी आँखों के सामने अब जलियाँ वाला बाग न था ...साऊथ अफ्रीका उभर आया था ....और अब मैं प्लैट फार्म पर पड़े गाँधी जी को ही निहार रहा था! मैं देख रहा था कि किस तरह अंग्रेज नंगी मानवता की पीठ पर . ..कोड़ों से प्रहार कर रहे थे ...और उठती चीखो–पुकार से उन का कोई लेना–देना न था!

"डर के काम नहीं चलेगा, मित्रो!" गाँधी जी ने अपने सहयोगियों–साथियों से सच–सच कहा था . "अंग्रेज हमें न मांगने से कुछ देंगे ....और न ही हमारा आग्रह सुनेंगे ...! हमें लड़ना तो पड़ेगा ...!!" उन के अंतिम वाक्य थे .

सभा में सन्नाटा छा गया था . सभी मौन थे . सभी जानते थे कि लड़ना इतना आसान काम न था ? अंग्रेजों के पास तब क्या नहीं था ...? कौन लड़ सकता था – उन से ? गाँधी जी भी लड़ाई की बात कह कर स्वयं सकते नें आ गए थे!!

"क्यों ....?" मैं अब उत्सुक था कि जानू कि ...गाँधी जी ने आखिर किया तो क्या किया ...?

"गाँधी जी की आँखों के सामने अंग्रेजों का पूरे का पूरा इतिहास आ खड़ा हुआ था, नरेन्द्र!"

"कौन सा इतिहास, दादा जी ...?"

"वही इतिहास जो उन्होंने स्वयं बनाया था ...स्वयं बढ़ाया था ...खून–पसीने से सींचा था ...और सुंदर सपनों से संजोया था! सदियों से वो लड़ते आ रहे थे ...! जीत–हार का मजा लेते–देते ...यहाँ तक पहुंचे थे! अब उन के हाथ एक साम्राज्य आ लगा था . और उन्हें अब पानी पर तैरना आ गया था ... हवा में उड़ना उन्होंने सीख लिया था ...उन के पास 'गन – पाउडर ' था ...तोपें थीं ...बंदूकें थीं ...और थे लाम–बद्ध हो कर लड़ने वाले पूर्ण प्रसिक्षित सैनिक! 'मिलिट्री' उन की एक कल्ट थी ...और उसे ढोते उन के जनरल किसी भी तरह के युद्ध को जीतने में समर्थ थे ...दक्ष थे! 'असंभव' शब्द उन के शब्द–कोष से निकाल दिया गया था! और यह सब गाँधी जी से छुपा न था ?" दादा जी चुप हो गए थे .

"साऊथ अफ्रीका ...मेरा मतलब ...दादा जी ....कि ....?"

"हिन्दुस्तान की तरह ही ...अंग्रेजों ने साऊथ अफ्रीका को भी हथिया लिया था . सब मुफ्त में मिल गया था, इन्हें! लम्बे–चौड़े फार्म हाउस बना–बना कर ...अंग्रेज यहाँ रहने लगे थे . पूरे जहाँ से ला–ला कर गुलाम यहाँ बसा लिए थे ...और कौड़ियों में खरीद लिए थे!"

"फिर कैसे लड़े इन से गाँधी जी ....?" मेरा मुंह सूख गया था . मैं चिंतित था . मैं महसूस रहा था कि जरूर ही गाँधी जी की जान पर बात बनी थी ? इतनी बड़ी लड़ाई अकेला आदमी लड़ता भी तो कैसे ?

"गाँधी जी का सोच सत्ता के सामने खड़े हो कर ...विकल्प खोज रहा था ...! वो बिलकुल गोली के सामने खड़े थे और सोच रहे थे कि ....क्या हो ...जो जंग जीती जाए ...? कतार दर कतार ...उन के जहन में एक शक्ति रेंगती चली आ रही थी ...! उन्हें एहसास हो रहा था कि ...जरूर ही वो इस जंग को जीत लेंगे ...पर ....."

"नहीं, नहीं! यह काम आसान नहीं है! ढोल से भी खाल जाएगी, गाँधी भैया ?" एक हिनुस्तानी बोल रहा था . "देश से पैसा कमाने यहाँ पहुंचे थे ...जान गंवाने नहीं ...? लौट जाएंगे, देश!" उस का निर्णय था .

"लौट सकोगे ....?" प्रश्न जुडी सभा से उगा था . "जाने कौन देगा, तुम्हें ....? अब तुम इन के गुलाम हो, तोता राम!"

"फिर तो मर के ही पिंड छूटेगा ....?"

"हाँ! अब तो ...करो ...या मरो ....!!" एक खतरे की तरह शब्द गूंजे थे!

गाँधी जी ने महसूसा था कि ....सभा में उपस्थित सभी लोग पूरी तरह से डरे हुए थे . उन्होंने स्वयं इस डर पर पहले काबू पाया था ...और फिर लोगों को समझाया था!

"मैं पहले मरूंगा ....सब के आगे चलूँगा ...और पहला प्रहार मैं सहूँगा! मैं 'सत्याग्रह' का स्वयं संचालन करूंगा! मैं आप की मांग उन के सामने रखूंगा! अगर हमारी मांगें नहीं मिलतीं तो ...हम 'अवज्ञा' आन्दोलन छेड़ देंगे ...और फिर ...इन के सब नियम–कानून ...ताक पर रख कर ....स्वतंत्र हो जाएंगे ....!!"

40

पूर्ण स्वराज ही मांगूंगा, मैं!

"आज तो बहकी–बहकी बातें कर रहे हो, वकील सहाब ....?" विरोध हुआ था . "क्यों मुफ्त में मरवाते हो, हम गरीबों को ....?"

"मौत से डरना ही तो ....मरना है, मित्रो! जिन्दा रहना है ...तो मेरे पीछे आओ! स्वाभिमान के साथ मौत को गले लगाते हैं .....गुलामी को अस्वीकार करते हैं ...और ...."

बहुत बड़ा संकट सामने था . अंग्रेजों की पुलिस के दस्ते ...सामने इन्तजार में खड़े थे . सत्याग्रही उन के लिए आते कबूतरों जैसे निरीह शिकार थे! इन के पास तो डंडे तक न थे ? बिलकुल निहत्थे थे ...और एक पागल वकील की राय पर ...मरने चले आ रहे थे! ये कानून का उल्लंघन कर रहे थे . हक मांग रहे थे . मान ही न रहे थे ....

बड़ा ही विचित्र खेल था!!

"रुक जाओ! आगे मत बढ़ना ...!! गोली चलेगी ...!!" पुलिस की चेतावनी आई थी .

लेकिन गाँधी जी चलते ही चले गए थे!

"और ....?" मैं पूछ रहा था .

"और डंडे बरसने लगे थे ...गोलियां चलने लगीं थीं ....और सत्याग्रहियों को पकड़–पकड़ कर घसीटा जाने लगा था ....! लहू बह चला था! चीखो–पुकार ....चल पड़ी थी! लेकिन आगे बढ़ता काफिला ...रुका न था ...झुका न था . ..टला न था ...और अड़ा रहा था ...खड़ा रहा था ...पिटता रहा था ...कराहता रहा था ....."

पीटने वाले ही बेदम हो गए थे!!!

सब को घसीट–घसीट कर ..जेल में ठूंस दिया था! 'सत्याग्रह' और 'अवज्ञा' आन्दोलन का अनूठा असर दिखा था . सत्याग्रहियों के साथ ...जेल में किसी ने भी ...अपराधियों जैसा सुलूक नहीं किया था! उन लोगों को स्वयं ही सत्याग्रहियों का दर्जा मिल गया था! और हाँ, एक अनूठा सम्मान उन के लिए हवा पर तैर आया था!!

"ये भी एक कला है, यारो ...?" सत्याग्रहियों ने स्वयं महसूस था . "गाँधी जी गलत नहीं हैं ? मरना–जीना तो मात्र दो अवस्थाएं हैं! लेकिन जो आज हासिल हुआ है ...इस का तो आनंद ही अलग है ....?"

"अब हम न झुकेंगे ....."

"अब हम न रुकेंगे ...." नारों की तरह साऊथ अफ्रीका के आसमान पर चढ़ कर गूंजा था . "अंग्रेज हैं कौन ....जो हमें गुलाम बना लेगा ....?" उन का दृढ निश्चय था .

अंग्रेज झुके थे . उन्होंने गाँधी जी की बात को समझ लिया था . गाँधी जी को मना लिया था . जनरल इस्मुट ने सत्याग्रह की पकड़ को ...पहली बार देखा था! उस ने मान लिया था कि ये सत्याग्रह ....बम के गोलों से भी ज्यादा कारगर था ...असरदार था ...!!

"सन १६०७ में इस आविष्कार का जन्म साऊथ अफ्रीका में हुआ था, नरेन्द्र!"

इस की खबर भारत पहुंची थी . गाँधी जी का नाम हवा पर चढ़ कर देश के कौने–कौने तक पहुँच गया था! भारत से गोखले गाँधी जी से मिलने साऊथ अफ्रीका गए थे! उन्हें एक आशा किरण के दर्शन पहली बार हुए थे! उन्हें लगा था कि ...गाँधी के सत्याग्रह के दर्शन में ...एक अपार शक्ति थी . ...और उन का आन्दोलन भी एक अनूठा ही अस्त्र था!!

गाँधी जी को साऊथ अफ्रीका में एक नया दर्जा दिया था अंग्रेजों ने!

गाँधी जी ने 'इस्पेशल इन्डियन एम्बुलैंस कोर ' का गठन किया था . उन का उद्देश्य बोआर के साथ होते युद्ध में अंग्रेजों की मदद करना था! उन्होंने युद्ध में घायल हुए सैनिकों की सेवा करने का व्रत लिया था! अंग्रेज गाँधी जी के इस आचरण से प्रसन्न हुए थे!!

सन १६१४ में जनरल इस्मुट ने गाँधी जी के साथ बैठ कर ...समझौते पर हस्ताक्षर किए थे! जून के महीने में हुए इस समझौते की खबर ...पूरे विश्व की एक ऐसी खबर थी ....जो 'अजूबा' थी!!

इस के बाद गाँधी जी भारत न लौट कर ...लंदन लौटे थे!!

"तब पूरे देश में एक शक दौड़ा था! जो दीपक साउथ अफ्रीका से रोशनी ले कर भारत आने वाला था ...वह लंदन कैसे गया ...? देश में घोर निराशा के बादल छाए थे . देश को एक नई दिशा की दरकार थी . क्रांतिकारी भी दो दलों में बंट गए थे! कुछ जेलों में पड़े थे और बुरे हाल में थे! अंग्रेजों का आतंक बढ़ गया था . बंगाल शांत हो गया था . पंजाब सुलगने लगा था . गदर पार्टी के लोग तोड़–फोड़ में लगे थे – पर कुछ कर न पा रहे थे!

प्रथम विश्व युद्ध का आरंभ हो गया था!!

एक आशा किरण लौटी थी! सोचा था – अंग्रेजों को भगाने का अच्छा अवसर था – लेकिन भगाता कौन ....?

और जब सन १६१० में गाँधी जी भारत लौटे तो लोगों ने उन्हें आँखें भर–भर कर देखा था! उन्होंने गुजरात में सत्याग्रह आरंभ किया था . लेकिन सन १६१८ में वापस ले लिया . इस के विपरीत उन्होंने अंग्रेजों की मदद करना आरंभ किया . सैनिकों की भर्ती कराई और धन–जन से मदद की!

शायद उन का सोच था की वो अंग्रेजों से एक रिश्ता बना लेंगे ... बराबरी का एक रिश्ता ? सन १६०६ में लिखे अपने 'हिन्द–स्वराज' में उन्होंने कुछ इसी तरह की संभावनाओं को खोजा था! लेकिन 'हिन्द–स्वराज' को अंग्रेजों ने गुजराती में छपने तक न दिया! अंग्रेजी में छपा 'हिन्द–स्वराज' अंग्रेजों के लिए कोई खतरा न था!!

"'अंग्रेजों का एजेंट है, ये गाँधी!' पुरजोर हवा फैली थी . " दादा जी बता रहे थे .

लेकिन जब गाँधी जी तिलक से मिले थे ...तो स्पष्ट बातें हुई थीं! सब तय हो गया था ....!!

"मैंने देश को डोल–फिर कर देख लिया है!" गाँधी जी ने तिलक से कहा था . "मैं समझ गया हूँ कि ...अंग्रेज हमें न कभी बराबरी देगा ...न हमें

स्वराज देगा! हमें अपना पूर्ण स्वराज अब हासिल करना होगा!" वह कह रहे थे . "पूर्ण स्वराज ही मांगूंगा, मैं!" उन्होंने वायदा किया था .

बाल गंगाधर तिलक की आँखों में एक विश्वास उगा था! उन्हें आभास हुआ था कि ...ये ...दो हड्डियों का आदमी ...'गाँधी' फौलाद का बना था! ये ..अब न रुकेगा ....अब न झुकेगा ....न हारेगा ...और न भागेगा ...और अब पूर्ण स्वराज ले कर ही दम लेगा ...!!

41

जाको राखे साईंयां!!

देश का मिडिया नगाड़े बजा रहा था! गुजरात का होम मिनिस्टर गुम!! चारोंओर से आवाजें आ रही थीं . अखबारों में अमित का नाम सुर्खियों में था! सी बी आई अपना खेल बड़े ही करीने से खेल रही थी . शिकार को दबोचने से पहले ...उस के साथ क्रीडाएं करना ...इन का शौक होता है! सी बी आई के पड़ते छापों की खबर ...मिडिया तक पहुंच रही थी . एन जी ओज ...भी अपने अपने काम को अंजाम दे रहे थे! विदेश की प्रतिक्रिया भी अजब–गजब ही थी!!

जुलाई २०१० बड़ा ही घटना –ग्रस्त समय था! घोर संकट के नीचे आ गए थे –हम दोनों! सच और झूठ तो दो बातें थीं ...अलग–अलग थीं ...! लेकिन जो सबूत सी बी आई के हाथ लगे थे ...वो तो झूठे हो कर भी सच थे ? कानून की विडम्बना को समझाने के लिए मेरे पास इस से बड़ा और कोई उदहारण नहीं हो सकता!

कांग्रेस की बगिया में फूल खिले थे!!

"जेल में डालो, इसे!" हर कॉंग्रेसी नेता की जुबान पर एक ही आदेश था . "बड़े चोर को भी घसीट लो!" उन का ये इशारा मेरी और था . "दोनों ने मिल कर ...आतंक उठा रखा है ...?" उन का रोष भी सामने था . "अरे! सत्ता का मतलब ..ये तो नहीं ...कि ... तुम चाहे जिस की जान ले लो ....?" उन का जजमेंट था!

२६ नवंबर २००५ में पुलिस की मुठभेड़ में मारे गए सोहराबुद्दीन शेख, उस की पत्नी कौसर बी ...और बाद में २६ दिसंबर २००६ में उन के ही एक

अंडर वर्ल्ड साथी – तुलसी राम प्रजापति को ले कर ...सी बी आई ने बवाल खड़ा कर दिया था! सी बी आई का कहना था कि ...मुठभेड़ झूठी थी ...और गुजरात पुलिस ने उन को धोखे से मारा था ...ये तो कोल्ड ब्लडिड मर्डर था ...और तुलसी राम प्रजापति चूंकि चश्मदीद गवाह था ...इस लिए पुलिस ने उसे मार गिराया था!

चूंकि अमित शाह गुजरात के गृह मंत्री थे ...अतः ये सब उन के ही इशारों पर हुआ बताया जा रहा था ? उन पर हत्या का आरोप लगा कर . ..अब सी बी आई उन्हें ...गिरफतार करने घूम रही थी!

परोक्ष रूप से तो ये सब ...मुझे ही घेर कर ...जेल में बंद करने का .. षड़यंत्र था! अब मैं सोहराबुद्दीन शेख के हाथों मरा नहीं था ....और वह मर चूका था ... तो मुझे कम–स–कम जेल तो जाना ही चाहिए था ...?

मेरे जिन्दा बचजाने के अफसोस में ....मेरे विरोधियों पर जूते बरस रहे थे! एक अदना–सा मोदी उन से मर नहीं पाया था ? अफसोस की बात ही थी! सोहराबुद्दीन शेख जैसे सरगना और कट्टर आतंकवादी को ...सुपारी देने के बाद भी ...मोदी नहीं मरा था ...? शर्म की तो बात ही थी ....!!

मैने एक बार फिर से सोहराबुद्दीन केस की फाईल उठा कर पढ़ना आरंभ किया था! मैं कोई मुद्दा ढूंढ लेना चाहता था ....! कोई नुकता निकाल लेना चाहता था – जो किसी तरह से अमित को जेल जाने से बचा लेता ...?

सोहराबुद्दीन शेख सन १९९० से ही हथियारों की तस्करी करता आ रहा था! उस के कारनामों के मामले पुलिस के पास दर्ज थे . सन १९९५ नें उस के गाँव –झिरिन्या, मध्य प्रदेश से पुलिस ने ४० ए के ४७ राइफल बरामद की थीं . उस ने इन हथियारों को अपने घर के कुए में छुपा रक्खा था . ये हथियार सोहराबुद्दीन शेख – रसूल परती के साथ मिल कर, दरियापुर –गुजरात से ट्रक में भर कर लाया था!

इसी दौरान संजय दत्त भी अवैध हथियार रखने के मामले में गिरफतार किया गया था! मामला सुर्खियों में था और महाराष्ट्र पुलिस ने सोहराबुद्दीन शेख के खिलाफ एफ आई आर भी लिखी थी . यह आदमी आतंकवाद से गहरे में जुडा था! इस की लिंक कराची तक थी . वहां बैठे शरीफ खान के लिए ये आदमी अपने गिरोह के जरिए गुजरात और राजिस्थान के मारबल व्यापारियों से हफ्ता वसूली करता था!

सोहराबुद्दीन शेख असल में अब तक तीन राज्यों का मालिक था! महाराष्ट्र पुलिस ने तो उसे भगोड़ा घोषित कर जान छुड़ा ली थी . राजिस्थान पुलिस अपने ही किसी गठ– जोड़ में इन का पानी भरती थी! गुजरात पुलिस अब दवाब में थी . चूंकि वहां का चीफ मिनिस्टर मोदी था ...माने की मैं था ... जिसे काम चाहिए था ...न नाम चाहिए था ...और न ही नामा ...सिर्फ काम ही चाहिए था ....! अमित शाह तो मुझे पहचानता था ...मानता था और मानता था कि ...हमें जनता की हिफाजत करने का जिम्मा मिला था ...! और जनता के हित में और हिमायत में ...सोहराबुद्दीन शेख को गिरफतार करना ही हितकर था ....!!

लेकिन कांग्रेस की धारणा इस के बिलकुल भिन्न थी!

हर राज्य की पुलिस और प्रशाशन अपने राज्य तक ही सीमित था! जब कभी दूसरा राज्य कोई मदद मांगता था ...तो फिर यह सोचना पड़ता था कि ...मदद मांगने वाला था कौन ...? उस के साथ अगर कोई वैमनष्य था ...तो पहले उसे समझना जरूरी था ...न कि उसे मदद देना ...! चूंकि गुजरात राज्य का चीफ मिनिस्टर मोदी था ...अतः गुजरात राज्य की कोई मदद करना नहीं चाहता था!

मोदी के नाम को लेकर तो अब ....हाई कोर्ट ...और सुप्रीम कोर्ट भी अपने फैसले बदलने लगे थे ...? उन पर भी राजनीतिक दवाब था ...और देश–विदेश तक की शिफारिशें थीं! हर तरफ से मोदी को घेरने का फेर डाला जा रहा था!!

अमित के गले में जो फंदा आ पड़ा था – वह भी तो मोदी की वजह से ही था ...? अमित के बाद अब दोषारोपण मुझ पर ही होना था!

"क्या करें, भाई जी ....?" अमित पूछ रहा था . "सी बी आई को ज्यादा दिनों तक चकमा नहीं दिया जा सकता ...? उन लोगों का तो दायित्व है . ...कि ....?"

"सरेंडर कर दो! कल का दिन ठीक है!" मैंने निर्णय ले लिया था . "बेल लेने में वक्त तो लगेगा ...?" मेरा अनुमान था . "जिस तरह से सोहराबुद्दीन शेख का मामला बताया जा रहा है ...उस से तो लगता है ...कि ...मामला उलझेगा ....?"

"उलझने दो ....!" अमित हंसा था . "उलझेगा ...तभी तो सुलझेगा ....?" उस की राय थी . "मैं सोचा करता था, भाई जी कि ...हमारे पुरखे जेल गए थे ....उन्हें काल–कोठरियों में बंद कर के रखा था ...उन्हें यातनाएं मिलीं थीं ....और ..."

"भय ...!" मैं एक दार्शनिक की तरह कह रहा था . "भय हमारे जीवन का एक महत्व पूर्ण मुद्दा है ...जिस की वजह से हम वो सब करते हैं जो हमें नहीं करना चाहिए! और अगर पुरखों की बात करते हो तो ....उन्होंने जेल भरना इसीलिए आरंभ किया था कि ...लोगों के मन से जेल जाने का भय निकल जाए! लोग खुल–खेल कर सामने आएं ...और चौड़े में आ कर लड़ें ...."

"हम भी चौड़े में आ कर ही लड़ेंगे ....?" अमित कह रहा था .

"और जीत भी हमारी ही होगी, अमित! ये सी बी आई का गेम नकली है! इस तरह के छलावे ज्यादा चलते नहीं! जानते हो, अंग्रेज क्यों हारे ... .?"

"इस लिए कि उन्होंने भी तो झूठे मुकद्दमे चलाए थे ....? झूठ का सहारा लिया था ....कानून का अपने हित में दुरूपयोग किया था ....पब्लिक की आँखों में धूल झोंकी थी ....और ..."

"बिलकुल ठीक ...! और कांग्रेस ने भी ये सब अपने अंग्रेज आकाओं से ...सीखा है! काँग्रेसी उसी तर्ज पर देश को चलाते आये हैं! और चलाते ही रहना चाहते हैं ....?"

"लेकिन अब तो ये चलेगा नहीं, भाई जी ...? मैं जेल तो जा रहा हूँ . ...पर मैं चुप बैठने वाला नहीं! मैं इन की कब्र खोद कर ही दम लूँगा!"

"मैं जानता हूँ, अमित!" मुझे प्रसन्नता हो रही थी . "हमारा ये संघर्ष ही तो रंग लाएगा ....?"

"एक विनती है ....?" अमित गंभीर था .

"बोलो ...!"

"आप ....मेरा मतलब है ...कि ....चाहे जो हो ....गुजरात का चीफ मिनिस्टर अरेस्ट नहीं होना चाहिए ....?" अमित की मांग थी .

मैं गहरे सोच में डूबा था! मैं तनिक थकान–सी महसूस कर रहा था . अमित मेरा दांयाँ हाथ था ....मेरा सहारा था ...और मैं अमित पर बहुत भरोसा करने लगा था! उस के जेल जाने के बाद ...कौन सा द्रश्य सामने आएगा ..., मैं अनुमान तक न लगा पा रहा था ...? काँग्रेसी तो घुटे घाघ थे ? जरूर वो मेरे लिए भी कुछ सोचे बैठे होंगे ....? चूंकि सेंटर में वो बैठे थे ....दिल्ली पर राज उन का था ...अतः किसी राज्य के मुख्य मंत्री को बे–दखल करना ...उन के लिए कोई बड़ी बात न थी ....?

"जाको राखे साईयाँ ....!!" मैंने अमित से अपने अचूक अंदाज में वही कहा था ....जो मैं स्वयं से कहता था . "करने वाला तो कोई और ही है, अमित, कांग्रेस नहीं ....!!" मैं गंभीर था ...गमगीन था ...!

कारण – आज गाँधी का जवाहर नहीं .....मेरा अमित जेल जा रहा था ....?

न जाने क्यों ...और अचानक ही मेरी मुट्ठियाँ तन आईं थीं ? मैंने महसूस किया था कि कांग्रेस ...अंग्रेजों से किसी भी माने में कम न थी! कांग्रेस ने जन–मानस को बाँट–बटोर कर अपने खाते में चढ़ा लिया था! चित भी उन की और पट भी उन की का हिसाब ...पूरे देश में रोप दिया था! सब के गलों में पट्टे बांध दिए थे! सब के नाम धर दिए थे! और सब के सब चोरी–चकोरी में शरीक थे! अच्छा एक धडा बन गया था ...जिस में पुलिस के पहरेदारों से ले कर ...सुप्रीम कोर्ट के जज तक शामिल थे! इन सब की जड़ें गहरे तक समाईं थीं ....और इन्हें उखाड़ना उतना ही कठिन था ....जितना कि ......

मेरी आँखें नम थीं!!

"मैं अब न रुकूंगा ....न झुकूंगा ....न चूकूंगा ....और न ही चोट खाऊंगा ....!" कोई था – जो मेरे अंदर से बोल रहा था . "मैं अब कांग्रेस मुक्त भारत की ही संरचना करूंगा ....! मैं अब नया इतिहास रच कर ही रहूँगा ....."

दादा जी का आदेश आज मेरी आँखों के सामने आ कर ठहर गया था! वह मौन थे ....पर उन की आँखें बोल रही थीं!!

"जिस दिन गाँधी छ्ह साल के लिए जेल गए थे ....उस दिन मैं ही नहीं, नरेन्द्र पूरा भारत रोया था!" दादा जी मुझे बताने लगे थे . "ये १८ मार्च सन १९२२ की बात है ...जब उन्हें देश–द्रोह के गुनाह के लिए छह साल की

कैद मिली थी! उस गुनाह के लिए ...जो देश–द्रोह था ही नहीं ....? निरी देश–भक्ति थी ....और ...."

"गाँधी जी ...लड़े थे ....?" मैंने दादा जी से पूछा था . "वो तो ....दो .. हड्डी के आदमी थे ....दादा जी .....फिर ....?"

"उन जैसा लड़ाका ...तो न पैदा हुआ है ....न ही होगा, नरेन्द्र!" दादा जी की आवाज में एक गर्व था ...सम्मान था ...और था एक सौहार्द! जैसे गाँधी उन का बहुत अपना था ...और अब वो उन की कथनी–करनी का एक सरोकार के साथ गुणगान कर रहे थे . "एक चमत्कार कर के दिखाया था, गाँधी ने! अब अंग्रेजों के भी हौसले पस्त थे . सब के हुलिए बिगड़ गए थे ...और सब बे–दम ...और बे–होश थे! उस बौखलाहट में ही तो उन्होंने गाँधी जी को जेल भेजा था ....?"

"वो कैसी बौखलाहट थी, दादा जी ....?"

"बौखलाहट यों, नरेन्द्र कि .....अंग्रेजों का अभिमान टूटा था .....!" दादा जी खुल कर हँसे थे .

में भी हंस गया था ....!!

42

इस बईमान सत्ता को मैं सजा दूंगा!

”कैसे टूटा, अंग्रेजों का अभिमान, दादा जी ...?“ मैं जानने के लिए उत्सुक था .

”उन्हें अभिमान था कि ...उन जैसा लड़ाका ...उस जमाने में और कोई था ही नहीं! उन्हें हवा में लड़ना आता था ..पानी पर लड़ना भी आता था ...जमीन के वो मालिक थे ...तलवार के धनी थे ...और ...उन की तोपों के मुंह खुले थे! अब वो अजेय थे ...चक्रवर्ती थे ...और विश्व के मालिक थे! सोने की चिड़िया –भारत के पंख तोड़ कर उसे अपनी जेब में डाल लिया था ...और अब बे–धड़क राज कर रहे थे ...माल कमा रहे थे!“

”भारत के लोग भी तो ....लड़ रहे थे ...?“

”कहाँ लड़ रहे थे ..? सब बिखर गया था, नरेन्द्र! युद्ध जीतने के बाद अंग्रेजों ने ऐसा जाल बुना था कि ...स्वराजियों को ..बीन–बीन कर मार डाला था! एक के बाद दूसरा कानून ...तीसरी दफा ...और चौथे ....का चक्रव्यूह रच कर ..उन्होंने 'होम रूल' के विचार को मिटटी में मिला दिया था! सब के हौसले पस्त थे ....और सभी निराश थे . यहाँ तक कि कम्युनिस्ट पार्टियाँ भी चौकड़ी भूल गईं थीं! अंग्रेजों ने सब को चकमा दे कर अलग–थलग कर दिया था . मुसलमान हिन्दूओं से प्रथक थे ...तो अछूतोद्धार के लिए लड़ते अम्बेडकर अंग्रेजों के साथ थे! प्रथम विश्व –युद्ध लड़ कर लौटे भारतीय सैनिक भी असंतुष्ट तो थे ...पर चंद तोहफे–तगमे दे कर अंग्रेजों ने उन्हें भी बहका लिया था!“

दादा जी का चेहरा अचानक जीवंत हुआ लगा था! उन की आँखों में तेज चला आया था!

"गाँधी जी ने एक छोटा प्रयोग सन १६१८ में किया था!"

"कैसा प्रयोग ...?"

"अपनी शक्तियों का प्रयोग, नरेन्द्र!" दादा जी की आवाज बुलंद थी . ये प्रसंग चंपारण और खेडा में घटा था . किसानों के साथ भी तो अंग्रेजी राज गोटें खेलने में लगा था ...?"

"कैसे ...?"

"उन से नील, कपास और तम्बाकू की खेती उद्योगपति –अंग्रेज बेगार के तौर पर ही कराते थे! सरकार उन से टेक्स भी लेती थी ....और उन का माल अपनी शर्तों पर खरीदती थी! अंग्रेजों के उद्योग भारत में पनपने लगे थे . खास कर कपडे का उद्योग तो जड़ें पकड़ गया था और उन की खूब कमाई हो रही थी! अंग्रेज बे–शुमार धन–दौलत ब्रिटेन भेज रहे थे ....लेकिन भारत तो भूखा ही मर रहा था ...? किसानों के पास तो खाने तक के लिए अनाज भी न था! और जब अकाल पड़ा ..तो ." दादा जी रुके थे .

"भूखों मरे होंगे ....किसान ...मजदूर ....और ....?" मैंने अनुमान से पूछा था .

"हाँ! और ऊपर से ..टैक्स वसूली में उन की कुर्की ...जमीन की नीलामी ....और फिर सजा ....? यही सब हो रहा था!"

"फिर ...?"

"गाँधी जी ने चंपारण ...और खेडा में ...जा कर विरोध प्रदर्शन किया! उन के साथ उन की नई टीम थी . जवाहर लाल नेहरू ने चंपारण को संभाला ....तो ...वल्लभ भाई पटेल ने खेडा में मोर्चा खोल दिया था! पुलिस का आतंक आया . सब को पीटा, जेल भेजा! एक बड़ा बवाल बना था –ये आन्दोलन! गाँधी जी ने कहा – हमें अंग्रेजों का शाशन और आश्वाशन दोनों ही अस्वीकार हैं! हमारा किसान इन के उद्योगपतियों के लिए कच्चा माल इन की शर्तों पर क्यों पैदा करेगा ? वह जो मर्जी आए अपने खेत में उगाए ? अपने उत्पादन को वह खुले बाजार में बेचेगा!

अंग्रेजों ने गाँधी जी की बातों का अनुमान लगा कर समझौता किया था . लोगों को जेलों से छोड़ दिया था . टैक्स मांफ किया था ....और फिर उन्हें फसल उगाने की आजादी भी मिल गई थी!

लोग प्रसन्न थे . गाँधी जी की जय–जयकार हुई थी . जवाहर लाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल और राजेंद्र प्रसाद ने पहली बार ही सफलता का स्वाद चखा था! लेकिन इस फतह की प्रतिक्रिया का स्वाद मीठा न निकला था ...!!

जिन्ना नाराज था . अम्बेडकर इसे फिजूल की बातें बता कर बरी था! लोग अब फिर से गाँधी जी को अंग्रेजों का एजेंट ही बता रहे थे . इस बात को भुला कर अंग्रेज अब और भी आगे निकल जाना चाहते थे!"

"कैसे ....?"

"जलियांवाला बाग की घटना, , , इसी का तो परिणाम थी ? अंग्रेज अब कुछ ऐसा करने पर तुल गए थे ....जो भारतीयों की जुबान पर हमेशा के लिए ताला डाल दे ? तभी ऐसी न्रशंस हत्याओं को अंजाम दिया गया था ....और कानूनन भी इसे ठीक ठहरा कर ...उन्होंने हवा में एक चेतावनी उछाल दी थी –खबरदार! मुंह खोला ...तो ...गोली खाओगे ...!!"

"फिर ....?" मुझे अब कोफ्त हो रही थी . मैं चाहता नहीं था कि हम यों हार जाते ?

"फिर ...जब गाँधी जी जलियांवाला बाग पहुंचे थे ....तो ..उन्होंने कहा था, "इन शैतानों की सरकार के साथ ...अब कोई भी समझौता करना ...या सहयोग करना ...पाप है, पाप!!" पहली बार गाँधी जी ने ...कठोर शब्दों का प्रयोग किया था!"

"क्यों ....?"

"उन का हिया काँप उठा था! इस तरह की अमानुषिक घटना का ....पूरे विश्व में और कोई उदाहरण न था ? निरीह भारतीयों को यों गोलियों से भून डालना ...६० सैनिकों का ...निहत्थे लोगों पर मशीन गनों से वार करना ...और बे–रहमी से मौतें बांटना ...जुर्म थे! कुँए में कूदते लोगों को देख–देख कर हँसना ....और हुई घटना के बाद भी ...झूठ के बाद झूठ बोलना ....गाँधी जी को बुरा लगा था!!

पूरा देश जलियांवाला बाग की घटना से लहूलुहान हुआ ....अब अकेले गाँधी जी की और देख रहा था! गाँधी जी ने सब्र के साथ अंग्रेजों के उत्तर का इंतजार किया था!

"अब तक हमने अंग्रेजी राज का ...हर तरह से सहयोग किया है!" गाँधी जी अंत में सितम्बर १६२० में सोच–विचार के बाद बोले थे . "हमने जंग में इन का साथ दिया ....हमने धन–जन दे कर इन्हें युद्ध जिताया ....हम सरकार चलाने में इन का सहयोग करते रहे ....लेकिन इन्होने हमें धोखे में ले कर ...चाल खेल कर ....कत्ल कर दिया है!! घायल कर दिया है ....मारदिया है ....!!! ये हमें स्वराज तो क्या ....एक सुई तक न देंगे ..? ये हमें गुलाम बना कर ताउम्र रखेंगे ...और माल–असबाब सब लूट कर ले जाएंगे!!"

"देश–द्रोह है, ये ....?"

"हाँ, है ....! मैं अब असहयोग करूंगा ....!!" गाँधी जी ने एलान किया था .

और देश में असहयोग की ऐसी लहर उठी थी कि अंग्रेज हक्के–बक्के रह गए थे!

पहली बार पूरे विश्व ने मुड कर देखा था – गाँधी जी की जोड़ी जंग का रूप–स्वरुप! देश बंद था! काम–काज सब ठप्प था!! स्कूल बंद ...कालेज बंद ....बैक बंद ...बाजार बंद ...! ऑफिस बंद ...और संचार व्यवस्था बंद .. .! रेल गाड़ियों का आना–जाना बंद ...और चक्का जाम ....!! देश बंद था . ...

पसीने छूट गए थे, सरकार के ....!!

"मैं अब मानूंगा नहीं ...! मैं असहयोग के बाद ...अवज्ञा आन्दोलन चलाऊंगा ...! मैं अहिंसा का सहारा लूँगा ...और सत्याग्रह पर बैठ मैं ...मानूंगा नहीं . ...और स्वदेशी को अंजाम दूंगा!! मैं उपवास करूंगा ....आत्महत्या करूंगा .... और इस बेईमान सत्ता को सजा दूंगा ...! अब मुझे पूर्ण स्वराज चाहिए ....और ...."

"गिन लो, नरेन्द्र गाँधी जी के हथियार ?" दादा जी हँसे थे . "असहयोग, सत्याग्रह, अवज्ञा, अनशन ...और उपवास ....? कितने मासूम अस्त्र– शस्त्र थे ...?" अब की बार वह खुल कर हँसे थे . "सच कहता हूँ, नरेन्द्र कि .....मुझे तब इस गाँधी पर ....गर्व हुआ था!!"

"क्यों ....?"

"क्यों कि ...मैंने देखा था ....मैंने देखा था कि ...गाँधी ने असहयोग आन्दोलन चला कर ...अंग्रेजों के पैर तोड़ दिए थे .... अवज्ञा आन्दोलन से हाथ काट दिए थे ...और फिर स्वदेशी आन्दोलन चला कर ...उन का गला ही चाक कर दिया था!" फिर हँसे थे, दादा जी . "उन के वो अजेय लगते तोप –तमंचे ...धरे–के–धरे रह गए थे! विश्व ने देखा था उन्हें घुटने टिकाते हुए ....और गाँधी के सामने गिडगिडाते हुए ...!!"

"गाँधी जी का साथ ....?"

"सब ने दिया था! देश एक सूत्र में बंध गया था . यहाँ तक कि स्वदेशी के आन्दोलन से ...देश के पूँजी–पति भी गाँधी जी के साथ हो लिए थे . एक 'मंगल मय' लहर देश में पहली बार ही दौड़ी थी! इस का हर दिल ने स्वागत किया था ...और सराहा भी था!!

सच था! राष्ट्रीयता का पहला अंकुर सन १६२० में ही उगा था! पूरे देश को लगा था कि ...वो सब मिल कर अंग्रेजों से जलियांवाला बाग की हुई हत्याओं का प्रतिकार चुका रहे थे ....जुल्म ढाते अंग्रेजी शासन को ... सजा दे रहे थे!

"सन १६२२ में गाँधी जी पर मुकद्दमा चलाया गया था . देश–द्रोह की धारा के तहत उन्हें ६ साल की सजा मिली थी! लेकिन गाँधी जी को इस का कोई गम ही न था! लेकिन जो वार उन्होंने किया था उस के परिणाम उत्साह जनक थे!"

"देश के राजे–महाराजे कहाँ थे, दादा जी ....?" मैंने अलग से ही एक प्रश्न पूछ लिया था .

"वो तमाशा देख रहे थे, नरेन्द्र!" दादा जी विंहस कर बोले थे . "सांप मरे ....या जाट ....? उन्हें तो फायदा ही–फायदा था!!

मेरा सोच कटा था ....!!

"मुसलमान मरे ...या फिर मोदी ....? कांग्रेस को तो फायदा ही फायदा था ....?" मैंने एक लम्बी उच्छवास छोड़ी थी . "कांग्रेस ही कलप्रिट है!!" मेरा निर्णय था .

43

गुनहगार तो गोरे थे!

मीडिया मेरी मिटटी खराब करने पर तुला था!

अमित के जेल जाने के बाद मैं अब अकेला था ....बहुत अकेला! लगा था –मेरा दाहिना हाथ नहीं था ...मेरा दिमाग सो गया था ....मेरा मन उदास था ...और ...सच कहूं तो मैं डर भी गया था! पुलिस पर मेरा कभी से विश्वास नहीं था ...और जो लोग दिल्ली में बैठ कर गोटें खेल रहे थे ...वो बहुत ज्यादा शक्तिशाली थे ...अनुभवी थे ...और अंतर राष्ट्रीय पहुँच वाले लोग थे! अब उन्हें मोदी चाहिए था – जिन्दा ...या मुर्दा ....?

हिटलर के प्रचार मंत्री –जोसफ गोएवल्स की तर्ज पर ही दिल्ली में बैठे मीडिया –मुगलों ने ...मुझे बदनाम करने का महा–मंत्र ढूंढ लिया था! उन का मानना था कि अगर एक झूठ को – सौ बार सच बता कर बोला जाए ...तो वह सच हो जाता है! ये बात हिटलर ने खूब आजमा कर देखी थी ....और उसे कामयाबी भी मिली थी! इसी तर्ज पर 'गोधरा काण्ड' को झूठ की कसौटी पर कस कर सच बनाने का प्रयत्न जोर–शोर से चल रहा था . 'गोधरा' को मेरे लिए ही विशेष रूप से तैयार किया गया था, 'लाक्षा –गृह' के रूप में ...और मुझे ही इस में दाह –दफ्न होना था! लेकिन विडम्बना देखिए कि मैं अभी तक जिन्दा था ....?

और आश्चर्य की बात ये थी कि अब 'गोधरा' का रूप –स्वरुप बिलकुल उल्टा हो गया था! गोधरा अब अपने सर के बल खड़ा था!!

"नहीं जी, नहीं! किसी मुसलमान ने आग नहीं लगाई बोगी में ....!" प्रचार हो रहा था . "ये तो सब नरेन्द्र मोदी का खेल है! ये स्वयं ...कार

सेवकों का ही कमाल है! खुद की गलती से जले थे, ये लोग! मुसलमानों के नाम तो इसे लिख दिया गया है!

"साजिश है ....साजिश! ताकि मुसलमानों का सफाया कर दिया जाए! ये सरकार नहीं चाहती कि यहाँ मुसलमान रहें ...फलें–फूलें ....खाएं–कमाएं ....! इन्हें तो सब अपने लिए ही चाहिए ....? सब हिन्दूओं का होगा – यहाँ! आज नहीं तो कल ...मोदी तो कामयाब हो कर ही रहेगा ....? मुसलमानों को बचाएगा कौन ...? केंद्र भी क्या कर रहा है ...? मोदी तो खुला घूम रहा है ....."

"अमित शाह तो जेल में है ...?"

"तो क्या हुआ ...? मास्टर माईंड तो मोदी है! हो सकता है ...इस में भी उस की कोई चाल हो ...? बाई गौड! ये आदमी ...आदमी नहीं ...कोई जादूगर है! जिसे भी छू लेता है .....वही इस का हो जाता है! कुछ पागल ....मुसलमान भी तो ....."

"हाँ, हाँ! इस हरामजादे रईस खान को देख लो ....? किस उस्तादी के साथ कोर्ट में बयान बदला है ....? अब कहता है – तीसता झूठी है ....पैसे खाती है ....मिली हुई है ..."

हाँ, हाँ! सच में सब मुसलमान बुरे नहीं है! सब बिकाऊ भी नहीं हैं . सब के सब साजिश में शामिल भी नहीं हैं! और जिनके साथ मेरे रसूक हैं ...वो मुझे जानते हैं ....पहचानते हैं ...और समझते हैं कि मैं ...किसी का बुरा तो करता ही नहीं! मैं खुशहाली की बात करता हूँ ....मैं ...."

"क्या खुशहाली की बात करता है ? पैसे ऐंठता है ....मोटे पैसे ..." वही प्रोपेगेंडा चल पड़ता . हिटलर का मंत्री बोलता है . "सेठों से पैसा आता है! उन्हें जमीनें मुफ्त बांटता है ....! सारा का सारा बनियान समाज बिकाऊ है! कहाँ का शरीफ है, ये ...?"

और अब दिल्ली के लोगों का भी कमाल देखिए!

एक हैं, मिस्टर सुधीर चौधरी! ये जी टी वि के सम्पादक हैं . इन के साथ टाईम्स ऑफ इण्डिया ग्रुप है! इन का एक धडा है ...जिस में सारे पहुँच वाले लोग शामिल हैं! इन्होने गोधरा काण्ड के बाद ..हुए –गुलबर्गा सोसाईटी काण्ड के बारे में मेरे साथ साक्षात्कार किया था . मैंने कहा – मैं मानता हूँ कि ...ये काण्ड एक भयंकर नर–संहार था ...लेकिन जो हुआ था

वो इतना चौंकाने वाला था कि ...मैं खुद भी हैरान था ...कि ...'ये सब हुआ कैसे ?'

जाहिर ये है कि इस काण्ड को भी रचा गया था!

कांग्रेसियों ने मुसलमानों के साथ मिल कर ...विदेशियों के इशारे पर . ..इस काण्ड को रचा था! इस में जो मौतें हुईं ...वो भी तयशुदा थीं! एहसान जाफरी – जो स्वयं एक कांग्रेसी नेता थे ....इस कांड में जला कर मार दिए गए थे! एक तीर से दो निशाने साधे गए थे ....! एहसान जाफरी से अदावट निकाली गई ....और उन्हें मौत के घाट उतार कर ....लाश को मेरे गले में लटका दिया गया ...!!

अब देखिए टी वी के सम्पादक सुधीर चौधरी का कमाल!

गुलबर्गा सोसाईटी में हुई ५० आदमियों की मौत पर मुझे सुधीर चौधरी सवाल पूछ रहे थे! पूरा देश–विदेश मेरा ये साक्षात्कार टी वी पर आँखें गढ़ाए–

गढ़ाए देख रहे थे! मैं एक तरह से तो एक अभियुक्त बना कठघरे में खड़ा था ...जैसे की इस घटना का सारा दोष मेरा था ...और मरनेवाला एहसान जाफरी एक शहीद था ....एक बे–जोड़ इंसान था ...और बाकी मरनेवाले लोग भी मुझे माफ करनेवाले नहीं थे!

"आप ने दंगा रोकने के लिए क्या–क्या किया ...?" सुधीर चौधरी पूछ रहे थे .

"मैंने दंगा रोकने के लिए वो सब उपाय किए ....जो एक चीफ मिनिस्टर कर सकता था! यहाँ तक कि मैंने ...बहत्तर घंटों की ...दिन–रात की दौड़–भाग के बाद ...सिचुएशन पर काबू कर लिया!"

"फिर भी गुलबर्गा सोसाईटी ....स्वाहा हो गई ....?" ये सुधीर चौधरी का व्यंग था . "एहसान जाफरी को जला कर मार दिया ...! क्यों ....?"

"एहसान जाफरी ने भीड़ पर गोली चलाई थी ....!" मैंने अपनी जानकारी उन्हें दी .

"तो .....???" उन्होंने मुझे चुनौती दी .

"तो ....भीड़ ने भी हल्ला बोल दिया ....!" मैं बता रहा था . "ये सिम्पली ....एक एक्शन के बाद हुआ रिएक्शन था ...! माने कि क्रिया के बाद हुई एक ...प्रतिक्रिया ....?" मेरा सुझाव था .

"वाह! आपने तो इसे एक साइंटिफिक नाम दे दिया ....?" सुधीर चौधरी ने बात को पकड़ कर उमेंठ दिया था . "यूं ...मीन ...न्यूटन की थ्योरी .... एक्शन एंड रिएक्शन ....?"

"देखिए ...! हम कोशिश कर रहे हैं कि ...हम इस ...होती क्रिया और प्रतिक्रिया की चेन को रोक दें ...ताकि न क्रिया हो ....और न ही प्रतिक्रिया ....! " मैंने अपने सुझाव को सही ठहराने का प्रयास किया था .

"तो आप का कहना है कि ....क्रिया की प्रतिक्रिया होना तो ....स्वाभाविक है ....? यह तो एक निश्चित नियम है ....?"

"मैं ...मैं ...यह नहीं कह रहा हूँ .....! मैं कह रहा हूँ ....कि ...."

लेकिन उन का तो खेल आरंभ ...! मेरी बात को धूल में मिला कर ... .सुधीर चौधरी ने अपने ही मतानुसार एक अजब–गजब बात गढ़ ली! उन्होंने जी टी वी पर खुल कर प्रचार किया कि मैं ...गुजरात का चीफ मिनिस्टर . ..नरेन्द्र मोदी ....गोधरा काण्ड को 'क्रिया' और होते दंगो को 'प्रतिक्रिया' बता कर ...मुसलमानों को ...सरेआम मरवा रहा था! गुजरात में दंगे भड़क रहे हैं ....और .....लोग मर रहे हैं ....और ......

और जो मैंने अपनी बात कही थी ...उसे उन्होंने मिटटी में मिला दिया था . जो रात–दिन एक कर मैंने दंगे रोके ...लोगों के आंसू पौंछे ...उन को सारी सहूलियतें मोहिया कराईं ...केम्प लगाए ...और उन के मनों में एक विश्वास पैदा किया ...व्यर्थ गया! विडम्बना ये कि मेरे इन प्रयासों और प्रयत्नों को किसी ने भी नहीं सराहा ...?

उलटे टाईम्स ऑफ इण्डिया ग्रुप ने मेरे कथन 'क्रिया और प्रतिक्रिया' को ले कर सुर्खियों में छापा कि ...गुजरात के मुख्या मंत्री नरेन्द्र मोदी स्वयं दंगे भड़काने में लगे हैं और इन दंगों को 'गोधरा' काण्ड की हुई प्रतिक्रिया बता रहे हैं!

यहाँ तक कि मैं और मेरे भेजे सन्देश ...टी वी और मीडिया के लिए अप्रत्याशित थे ....और मेरा कहा सब झूठ था!

मुख्य मंत्री कार्यालय से दंगा नियंत्रण के लिए भेजे मुख्य मंत्री नरेन्द्र मोदी के बयानों की ...प्रेस ने अवहेलना की! दूर दर्शन पर भेजी शांति के लिए अपील भी कूड़े दान में डाल दी! पूरी की पूरी रिपोर्टिंग इक तरफा

हुई! जनता को दंगों का एक पक्ष दिखाया और लोगों को भड़काने का काम मीडिया ने किया!

अंग्रेजी अखबारों का सम्पादकीय पढ़ कर ...लगता था – मानो इन्होने गुजरात राज्य के खिलाफ जेहाद छेड़ दी हो! इस की पूरी की पूरी रिपोर्टिंग ...कांग्रेस व् वामपंथी पार्टीयों के पक्ष में ...और एन डी ए की सरकार के विपक्ष में हो रही थी! वह 'गोधरा' और गुजरात के दंगों में लगातार फर्क करते हुए ...लिख रहे थे! और इन लेखों से प्रतीत हो रहा था कि ...ये तथाकथित सेक्युलरिज्म के झंडा वरदारों के पक्ष में ....और हिन्दू संगठनों के खिलाफ थे!

और ये लोग, हाँ, हाँ दिल्ली के लोग ....खुल कर कार सेवकों को अपनी मौत के लिए स्वयं जिम्मेदार बता रहे थे! और तो और इस काण्ड के बाद गुजरात में भड़के दंगों को ...लोग –राज्य प्रायोजित आतंकवाद करार दे रहे थे!

मैं अकेला ....मैं नरेन्द्र मोदी ....क्या करता ....? सारे झूठ सच हो–हो कर ....मेरे सामने खड़े थे ....और मुझे फांसी पर चढाने के लिए सबूत बनाते जा रहे थे! ये मेरे अंत को मुझे लगातार दिखा कर ...डरा रहे थे ....!!

"गाँधी जी को सजा क्यों हुई ...?" मैं दादा जी से पूछ बैठा था . "उन का क्या दोष था ...जो उन्हें दंड मिला ...?" मैं रोष में था .

"देश–द्रोह का आरोप उन पर लगा था!" दादा जी ने उत्तर दिया था .

"क्यों ....?" मैं उद्विग्न था .

"चौरी–चौरा पुलिस काण्ड ही इस का उत्तर है, नरेन्द्र!" दादा जी कुछ सोच कर बोले थे . "चौरी–चौरा में हिंसा भड़की थी ...? मौतें हुईं थीं .... और ...."

"और क्या ....?"

"और ये बेटे, कि ...देश की नींद खुल गई थी! गाँधी जी ने जन–मानस को फिर से जगा दिया था! एक नई प्रेरणा लोगों के दिल–दिमाग में समां गई थी . लोगों ने अंग्रेजों की शैतान और उन की पिठू पुलिस को 'हैवान' मान लिया था! कहीं ये सच भी था, नरेन्द्र! पुलिस बहुत ही बे–रहमी से दमन–चक्र चला रही थी! जिस तरह से लोगों को मारा–पीटा जा रहा था

...यातनाएं दी जा रहीं थीं ...डराया –धमकाया जा रहा था ...और जेलों में भरा जा रहा था ...इस का कोई जवाब न था ...? और यही कारण था कि चौरी–चौरा में हिंसा भड़क उठी थी!"

"चौरी –चौरा ....?" मैं फिर से प्रश्न पूछ रहा था .

"उत्तर प्रदेश में गोरखपुर के पास एक छोटा सा कस्बा है! लोग प्रदर्शन कर रहे थे ....तो ...पुलिस ने लाठी–चार्ज कर दिया! पहले तो लोग लाठी देखते ही भाग लेते थे ...पर इस बार भीड़ डट गई ...जम गई ...और ...और ...पुलिस पर पथराव होने लगा! पुलिस ने गोली चलाई! तीन लाशें ...देखते–देखते ....जमीन पर पड़ीं थीं! बे–गुनाहों का खून बह रहा था ? चीख–चिल्लाहटों से पूरा का पूरा माहौल भर गया था ...!!"

"मारो, सालों को .....!!" भीड़ में शामिल नौजवान पुकार उठे थे! "छोडो मत ...इन गद्दारों को ...!! ये साले अंग्रेजों के टुकड़ों पर पलते हैं ...उन्हीं के पिट्ठू हैं ....पालतू हैं ....कुत्ते हैं ....!!"

"टूट पड़ो ... देखते क्या हो ....? ये साले कल फिर हमें मारेंगे .....? आज ही हो जाए ...." कुछ जोशीले लोग आगे बढ़ रहे थे . फिर क्या था . ..? पुलिस के साथ जम कर जंग हुई ....! लोगों ने पहली बार अपनी आजादी की जंग लड़ी थी, नरेन्द्र!"

"नतीजा ....?" मैं चुप न था . मैं जैसे उस भीड़ के साथ था ...और लड़ रहा था!!

"तीन लाशों के बदले २... पुलिस के लोग मरे!" दादा जी ने हंस कर कहा था .

"ये तो हुई कोई बात ....!!" मैं अब तालियाँ बजाने की सोच रहा था . "मारा कैसे, दादा जी ....?"

"पुलिस चौकी में आग लगा दी थी! उन्हें उसी में जिन्दा जलाया था! किसी को भी भागने न दिया था . बहुर बड़ा ...काण्ड बन गया था ...ये, नरेन्द्र!"

"फिर क्या हुआ था, दादा जी ....?"

"वही ...जो अंग्रेज करते थे! नाटक ...!! गिरफ्तारियां हुईं ...! मुकद्दमे चले . १७२ लोगों को फांसी की सजा बुली .....और ...."

"लेकिन ....जब मुकद्दमा चला होगा ....तब ....?"

"रौलेट एक्ट लगा था! किसी भी भारतीय को अपना बचाव करने का अधिकार ही न था ....?"

"दादागिरी थी, ये तो ....?"

"हाँ! दादा गिरी तो थी ही ....? वरना ...हम और हमारा देश गुनहगार कब थे ...? गुनहगार तो गोर थे! आक्रमणकारी थे ....और जुल्म ढा रहे थे ....!

44

जनता का बैरी कब बचा है ?

"इत्ता बड़ा देश क्या कर रहा था, दादा जी ?" मैं असमंजस में था . गोरे थे ही कितने ...? अगर सब मिल कर इन्हें ललकार ही बैठते तो .....?"

"अब सब मिल कर गोरों को ललकार ही तो रहे थे! अचानक ही एक 'एका' बन गया था! अचानक ही देश–प्रेम जाग उठा था . न जाने कैसे, नरेन्द्र! देश भक्ति की भावना का उदय हो गया था! मात्रभूमि के प्रति जो प्रेम उमड़ आया था – बेजोड़ था ?"

मैं प्रसन्न था . मैं उत्साहित था . मैं उछल रहा था . लग रहा था – मैं प्रत्यक्ष में ...ही अंग्रेजों के सामने सीना ताने खड़ा था ...और ललकार रहा था – चलाओ गोली ....? है हिम्मत तो करो, वार ...? मैं देखता हूँ ....कि . ...."

"अंग्रेज भी हैरान थे ...परेशान थे ...! उन की भी समझ में कुछ न आ रहा था ...?" दादा जी बताने लगे थे .

"क्यों....?"

"क्यों कि ...अब उन का मुकाबला ...नई पीढी के नए जां –बाजों से था! पुराने नेता –तिलक १६२० में और गोखले भी १६१५ में चल बसे थे! लाला लाजपत राय भी अब बहुत बूढ़े हो गए थे . कुल मिला कर ये लोग अंग्रेजों से झक मार कर बैठ रहे थे! लेकिन जो नए लोग उभर कर आए थे ...वो खू –ख्वार थे!! बम और गोली का इस्तेमाल खुल कर होने लगा था! सरकारी खजाने लूटे जाने लगे थे! पुलिस पर प्रहार होने लगे थे . और सब से बड़ी बात थी, नरेन्द्र कि ....इन नई पीढी के लोगों ने ...समाज में अपनी

जगह बना ली थी! इन्हें अब लोग अपने घरों में शरण देने लगे थे ....इज्जत की निगाहों से देखने लगे थे ....और उन के साथ मिल कर 'पूर्ण स्वराज ' का स्वप्न देखने लगे थे! लोगों को लगने लगा था कि ...अब अंग्रेजों का हारना निश्चित था! लोग मान गए थे कि ...अंग्रेजी राज बुरा था ...उन के मंसूबे गलत थे ...और वो देश को लूट–लूट कर अपने घर भर रहे थे ....जब कि भारत भूखा मर रहा था ...?"

"और अंग्रेज ....?" मैं मचला था . मैं जानना चाहता था कि अब अंग्रेज कर क्या रहे थे ....?

"कानूनन हत्याएं कर रहे थे!" टीस कर बताया था, दादा जी ने . "कानून बना–बना कर ...निर्दोष लोगों को फांसियां तोड़ रहे थे ....!"

"तो ....?"

"तो ....क्या ....? लोगों में और भी असंतोष बढ़ा था! ये क्रांतिकारी बच्चे ही तो थे, नरेन्द्र ...? क्या उम्र थी – उन की ...? तुम से और तनिक बड़े मान लो ....? भगत सिंह २०–२२ साल का मान लो! इन्होने मिल कर 'हिन्दुस्तान सोसलिस्ट रिपब्लिक आर्मी ' बनाई थी! ये लोग शहादत के बे–ताब आशिक थे, नरेन्द्र! दे वर ईगर टू ....सेक्रीफाई ...." दादा जी ने जोर दे कर बताया था . "जान देना .....और जान लेना ....इन का सीधा–सीधा फॉर्मूला था! सब लोग घरों से भाग–भाग कर इस 'सोसलिस्ट आर्मी' में भरती हो गए थे . सब ने स्कूल–कालेज छोड़ कर ...केसरिया पहन लिए थे! कोई न तो शादी कराने के पक्ष में था ...न ही घर बसाने की किसी को सुध थी! सब आजादी के दीवाने थे ....आजादी के ही आशिक थे ....और जानों पर खेल कर खेल खेल रहे थे!!"

"और बड़े लोग ....?" मेरा प्रश्न था .

"बड़े लोग भी थे! उन में थे ...नेहरू, पटेल, राजेन्द्र प्रसाद ....जिन्ना . .आंबेडकर ....और थे सुभास चन्द्र बोस!" दादा जी ने बताया था . "ये लोग अंग्रेजों के साथ मिल कर आजादी का कोई सुलभ हल खोज लेना चाहते थे! गाँधी जी खून–खराबा नहीं चाहते थे . यही कारन था कि उन्होंने चौरी–चौरा के बाद ...सविनय अवज्ञा आन्दोलन वापस ले लिया था! अनसन किया था . अपील की थी कि हिंसा नहीं होनी चाहिए ...."

"क्यों....?" मैं बिगड़ा था . "जब अंग्रेज लोग ....हमें मार रहे थे ....तो हम ....?" मेरा मिजाज बिगड़ गया था ...और खून खौलने लगा था .

"सब खेल बिगड़ जाएगा ...!" गाँधी जी ने कहा था . "हमारी लड़ाई अहिंसा की लड़ाई है!" उन का एलान था . "हमें आजादी चाहिए ...प्रतिशोध नहीं ....!" वह कहते थे .

"और लोग .....?"

"लोग ....माने कि जनता ....ज्यादातर ...गाँधी जी के साथ थी! गाँधी जी में देश को एक कर्णधार मिल रहा था! गाँधी जी की बातों में वजन था ... .आग्रहों में भय था ....अनशन में जान थी ...... और आन्दोलन में चिनगारियां थीं ....जिन्होंने देश को जगा दिया था ....प्राणवान बना दिया था ....बे–खौफ बना दिया था ....और एक दिशा भी नियोजित कर दी थी ....."

"कौन सी दिशा ...., दादा जी ....?"

"पूर्ण स्वराज की दिशा, बेटे! जहाँ पहुँचना था ....." उन का इशारा था .

मैं भी अब भिन्न तरह से आंदोलित हो उठा था! मेरा मन उस आजादी की जंग में अब कपडे उतार कर नहा लेना चाहता था! में चाहता था कि . ..मैं ...आगे बढ़ता ही चला जाता ....और अंग्रेजों को गले से पकड़ कर .... आजादी मांगता ....और पूछता कि ...उन्होंने हमें बे–वजह क्यों गुलाम बना लिया था ...? "व्यापार करने आये थे, तुम तो ....?" मैं पूछ रहा था . "फिर पूरा देश ही हथिया कर बैठ गए ....? हमारी शराफत का तुम ने नाजायज इस्तेमाल किया ...? और आज हमें ...लूट रहे हो ...पीट रहे हो ....फांसी चढ़ा रहे हो ....और हमेशा–हमेशा के लिए गुलाम बना लेना चाहते हो ....! क्यों, भाई ...?"

"बड़ा ही विचित्र वक्त था, नरेन्द्र!" दादा जी ने मेरा सोच तोडा था . "आजादी का जूनून आसमान पर छा गया था! जान देने ....और जान लेने की होड़ लगी थी! 'हू–हू' ...और 'हर–हर' का उदघोष ..'वन्दे–मातरम' का

जयघोष .....और 'जय–हिन्द' के नारे हर जुबान पर चढ़ कर ....चहक रहे थे! मात्र भूमि के बंधन और बेड़ियाँ तोड़ने के लिए ....अब हर युवा दिल धड .कने लगा था! और ....और ....नरेन्द्र गजब तो ये था ....कि किसी को न तो गोली का डर था ....न बोली का! एक ...निडर–सा ......निर्भय का माहौल खड़ा हो गया था ...और ......"

"और ...अंग्रेज ....?"

"जुल्म ढाते ही जा रहे थे ....! सेल्लुलर जेल से ले कर ....समूची जेलों की काल–कोठरियां ....आजादी के दीवानों से ....लबालब भरीं थीं! अंग्रेजों ने युवा स्त्री ....और बच्चों तक को न बख्शा था, नरेन्द्र!"

"क्यों ....?" मैंने कारण पूछा था .

दादा जी कुछ पलों के लिए चुप हो गए थे . कुछ द्रश्य थे ... जो शायद उन की आँखों के सामने ...आ कर ठहर गए थे! कुछ थे ....जीवंत से कुछ पल थे ...जिन की अलग ही कहानी थी! दादा जी शायद बिसरे वक्त की स्लेट पर ...कुछ पढ़ने लग रहे थे!

"इसलिए नरेन्द्र कि ....सच में ही स्त्री ...और बच्चे ...तक अब जंग में शामिल हो चुके थे!" दादा जी अंत में बोले थे .

"बच्चे ....और स्त्रियाँ .....?"

"हाँ, हाँ!" दादा जी ने स्वीकार में सर हिलाया था . "सब के सब ...जंग में शामिल थे!" अब वो हँसे थे . "भाई! क्या जासूसी करते थे ...बच्चे ..... और किस तरह स्त्रियाँ पुलिस का उल्लू खींचतीं थीं ...., कमाल ही था!" दादा जी बता रहे थे . "एक अलग ही तरह की जंग थी ....जिसे लड़ने में अब आनंद आने लगा था! मरने में आनंद आने लगा था, नरेन्द्र! घाव खाना ....या घाव देना ...आम बात बन गई थी . खुल्लम–खुल्ला की लड़ाई थी . ...और अंग्रेज अब हमारा शत्रु था ....देश का शत्रु था .....!!"

दादा जी ने एक बहुत बड़ी बात कह दी थी – अंग्रेज अब देश का शत्रु बन गया था ....और अब शाशक न रहा था ...? उन के शुभ चिंतकों की संख्या घट गई थी .... और उन का बैर बढ़ गया था! और ये बैर अब जनता से था!!

जनता का बैरी कब बचा है .....?

"सुलग उठा था पूरा देश, नरेन्द्र!" दादा जी बताते ही जा रहे थे . "देश का हर कौना दहक उठा था! हर युवा दिल ...शहादत के लिए लालायित था ....! सब ने पढाई–लिखाई छोड् दी थी ....और ...सब आजादी की जंग में कूद पड़े थे!!"

"और अंग्रेज ....?" मैं अब रंग लेने लगा था . मैं बहुत प्रसन्न था!!

"भाग रहे थे ....चारों ओर ...दमन–चक्र का झंडा लिए दौड़ रहे थे ....! आग लगती तो ...बुझाते .... और फिर अगली आग को पकड़ने भागते ....! पूरा देश धधक रहा था ....पूरा देश ? क्या दिल्ली ...तो क्या लाहौर, नरेन्द्र! लखनऊ ..से ले कर कलकत्ता ...कानपुर ...पटना ....और झांसी ...सब के सब सजग थे ...भड़क उठे थे ....भभक रहे थे ....और ..और अब अंग्रेज डर रहे थे ..."

"सच ....?" मैं पूछ बैठा था .

"हाँ, सच!" हँसे थे, दादा जी . "एक लंगोटी वाले फकीर से ...मैंने एक बादशाह को ....भीख माँगते देखा था, नरेन्द्र!" अब भी आश्चर्य था, उन को .

"बादशाह बुरा था ...शायद ? इस लिए, दादा जी .....!" मैंने उन के इस आश्चर्य का उत्तर दिया था .

45

मौत से डर किसे नहीं लगता?

"तुम्हें आग में मूतने को किस ने कहा था ...?" अमला गुजरात राज्य के गृह मंत्री –अमित शाह से पूछ रहा था . "किस ने राय दी तुम्हें ...इस राजनीति की आफत को ओढ़ने के लिए ....? अच्छा घर–वार है ....व्यापार है ....नाम है ...काम है ...! राजनीती तो ......?"

"गुंडे करते हैं .....?" अमित शाह ने प्रश्नकर्ता से पूछ लिया था .

"हाँ ....!!" अमला गरजा था . उस की आवाज में तनिक सा क्षोभ था .वह साबरमती जेल का बहुत पुराना नम्बरदार था . "मैं तुम्हारे खान–दान को जानता हूँ, बेटे!" अमला की आवाज सहज हो आयी थी . "राजनीति का ये खेल .....?" उस ने अमित की आँखों में घूरा था . "बहुत घटिया है ....."

अमला का चेहरा एक तनाव से भरा था! कोई गहरा दुःख था जो उस की आँखों में उभर आया था . कुछ था –जिसे अमला उसे बताना चाहता था . सच्चा शुभ चिन्तक लगा था अमला, उसे!

"लेकिन मेरा मन तो करता है ...कि मैं देश, समाज ...और लोगों के लिए लडूं! मैंने अपने मन को खूब ही समझा कर देख लिया है, अमला काका ...! पर ये मानता ही नहीं! कहता है – तू लड़, अमित! हार–जीत की परवाह किए बिन ...तू लड़ता ही जा ..झगड़ता ही चला जा ...."

"मेरा भी तो यही हाल था, अमित बेटे ..? मेरे मन में जलती इस ज्वाला ने ही तो मुझ से लंका जलाने को कहा था ....! मैंने भी शपथ ली थी कि ... भ्रष्टाचारियों ...देश–द्रोहियों और बे–ईमानों ...को मैं ...मिटा कर रहूँगा ...! मैं उस वक्त तक लडूंगा ....." अमला चुप हो गया था .

"हार गए थे .....?" अमित ने उपहास करना चाहा था .

"हाँ ...! हार गया था ....!!" स्वीकार किया था, अमला ने . "मैं हार गया था, अमित! उम्र कैद ले कर यहाँ आ बैठा ....! और देख लेना ...यही हाल तुम्हारा भी होगा!" वह हंसा था . "बच्चे हो! पुलिस और प्रशाशन के हथकंडे ...तुम नहीं जानते ? कानूनी दाव–पेंच ....?"

"कानून तो हमारे साथ है!"

"कानून किसी के भी साथ नहीं है! कानून अँधा ...बहरा ....और बे–ईमान है! कुर्सी पर बैठा जज अपनी आँखों से नहीं देखता ....केवल फाईल पढ़ता है! उसे तो पता ही नहीं चलता कि ...पुलिस ने क्या लिख दिया ...? वह तो ...."

"पर मैं नहीं मानता ....:"

"मैं कौनसा मानता था ....? लेकिन जब मेरे ऊपर झूठा केस बना ...मुझे जेल में डाला गया ....मुझे झूठे गवाह–सबूत बना कर सजा दी गई ...तब जा कर मेरे होश ठिकाने आए ....! पर फिर क्या करता ....? आठ साल हो गए हैं, जेल की रोटी तोड़ते ....! सारी देश–भक्ति ......सारा समाज–सुधार .... और समूचा देश–प्रेम अब पच लिया है ....! केवल एक पश्चाताप ही है, अमित जो अब मेरा साथ देता है ...? काश मैंने भी अकल से काम लिया होता ....? काश ...मैं ...भी ...." अमला की आँखों में आंसू थे .

"मैं होश में रह कर लडूंगा, काका!" अमित अमला को धीरज दे रहा था . आप की सीख को यहाँ से गांठ बाँध कर ले जाऊंगा ....! पर मैं लडूंगा तो जरूर, काका ....!"

"भगवान् तुम्हारी रक्षा करें .....प्रार्थना करूंगा, बेटे ....!!" अमला ने आशीर्वाद दिया था .

अमित और अमला 'आज' और 'कल' की तरह गले मिले थे ....और फिर बिछुड़ गए थे! कहीं अमला के मन में अमित जा बैठा था ...! और अमित के मन में भी अमला आ बैठा था! झूठ और सच – दोनों ने संधि कर ली थी ....दोनों ने मिल कर आगे का मार्ग चुनने की बात गांठ बाँध ली थी!

"भाई जी ने कहा है, आप की बेल लगानी है ....?" भीमा सन्देश लाया था . "वकील से बात हो गई है . बेल होने की संभावना है!" भीमा ने बताया था .

"नहीं ....!" अमित एक छोटे सोच के बाद बोला था . "कहना – अभी बेल न लगाएं! कच्चा काम है!" उस ने सलाह दी थी .

जेल में आ कर अमित के अंदर एक अलग अंतर दृष्टि पैदा होने लगी थी!

कानून ...अपराध ....सजा और न्याय प्रक्रिया ....उसे अलग–अलग समझ आने लगे थे! जो एक प्रान्त के राज्य गृह मंत्री की समझ में न आया था . ..अब एक अभियुक्त की समझ में समाने लगा था! हर बुराई का उत्तर अच्छाई नहीं होती –अमित सीख रहा था! बुराई का जहर अगर बुराई के अमृत से ही धो दिया जाए तो ....परिणाम अच्छे निकल सकते हैं – वो सोचने लगा था!

"ये साजिशों का अंत नहीं ....आरंभ है, अमित!" उस की समझ कह रही थी . " अमला काका इस का उदहारण है! गवाह–सबूत पर टिकी है – पूरी न्याय प्रक्रिया! जो लोग जेल भिजवा रहे हैं ....वही गवाह–सबूत भी खड़े कर देंगे! उन का उद्देश्य सजा दिलवाना होगा ....और उन का उद्देश्य होगा ......" परिणाम सोच कर चुप हो गई थी, उस की समझ .

लेकिन बात अमित के कानों तक पहुँच गई थी!!

"अब उन का उद्देश्य होगा ....नरेन्द्र मोदी को भी जेल में बंद कराना . ...!" अमित अपने आप से कह रहा था . "उन का उद्देश्य है, मोदी को मिटाना! उन का उद्देश्य है ....उन के रास्ते में आने वाले उन तमाम रोड़ों को हटा देना ....जो ....?"

सहसा अमित की फटी–फटी आँखें तरह–तरह के वीभत्स द्रश्य देखने लगीं थीं!

वह देख रहा था कि नरेन्द्र भाई पर लगे इलजाम सच साबित होते जा रहे थे . देश का मीडिया सबूत लिए खड़ा था ...गवाहों की एक कतार चिल्ला–चिल्ला कर कह रही थी –....गुनाहगार है, मोदी ......हत्यारा है ....जहर की खेती करता है ....और मुसलामानों की हत्या का पाप इसी के सर पर है! हिन्दूओं को भी इसी ने भड़काया है! ये सत्ता का भूखा है . ये अपराधी है . इसे कुर्सी से हटाओ! इसे जेल भेजो!! ये समूचा नर–संहार इसी की कारिस्तानी है!

"ये झूठ है ....!" अमित की अकेली आवाज गूंजी थी . "ये गलत है ... !!" वह कह रहा था . "एक देश भक्त .....?"

"काहेका देश–भक्त ....?" रोष में बोली थी, भीड़ . "घमंडी है! जनता को गुमराह करता ...संघी है! स्वयं सेवक संघ का प्रचारक है ....! दलाल है ......"

"मैं नहीं मानता कि ...."

"तुम होते कौन हो ....? हो किस खेत की मूली ....? अभी तो जंग जुडी है! देख लेना ......जेल से बाहर नहीं निकल पाओगे ....! तीस्ता के तर्कश में बड़े जुटीले बान हैं! मीडिया ने अखबारों के पन्नों पर नफरत बो दी है ...! जज के सामने बोल कर तो देखना, बच्चू ...?"

"म...म..मैं जज के सामने ....."

"किस–किस का सामना करोगे ....? तुमने जो हत्याएं कराई हैं ....तुम्हारे नाम पर लिखी हैं! जब कोर्ट में मृतकों के सगे–सौहार्द ...सुबक–सुबक कर ...न्याय की दुहाई देंगे ...तो तुम्हारी तो आवाज ...स्वयं ही उस आर्तनाद में डूब जाएगी ...? 'नो बेल' कहेगा ...और जज फाईल फेंक देगा, बेटे!"

दुस्वप्न –सा कुछ अमित के आस–पास आ बैठा था ....!!

जेल में बंद लोगों को देख कर अमित की समझ में आने लगा था कि ...भीतर –बाहर में कुछ गड़बड़ है तो जरूर ....!

फिर एक चिंता सवार होने लगी थी! एक शक पैदा होने लगा था .

"क्या सच्ची देश–प्रेम की भावनाओं का कोई ...मोल नहीं होता ...?"अब अमित स्वयं से ही प्रश्न पूछ रहा था . "क्या 'मोदी–मंत्र' आगे के अन्धकार को नहीं काट पाएगा ....? क्या भारत को एक महान राष्ट्र बनाने का देखा सपना ....जेल में ही बंद हो कर रह जाएगा ...?"

"जेल तो तपोवन है, पगले ...!"एक अद्रश्य की आवाज थी . "अरे, पागल! हम सभी तो ....इन्ही जेलों में बंद रहे थे ....? तुम तो किस्मत वाले हो, अमित! अच्छी सुविधाएं हैं अब तो जेलों में ? हमारे जमाने में तो मित्र ..... हमें मच्छर ही खा जाते थे ....? बदबू मारती थी ....और अंग्रेजों की दी यातनाएं तो ....जग–जाहिर थीं! हमारे साथ तो जुल्म ढाए जाते थे!"

"मैं क्या करू....?"

"तपस्या करो ...! साधना करो!! साहस के साथ हर स्थिति–परिस्थिति का सामना करो! परिवर्तन तो आएगा ....! तुम नहीं तो कोई और लाएगा ..... ?"

"हाँ! ये कानून ....ये झूठ ...और ये सब...गवाह–सबूत ....सजा ....?"

"अन्धकार है, बेटे! छट जाएगा! सफलता का सूरज जब उदय होता है ....तब ये अन्धकार ...में पैदा हुए प्रेत ...भाग जाते हैं! सबेरे को लाने का प्रबंध करो! भारत की पुकार जो तुम सुन चुके हो ....वो सही है, बेटे! हाथ में आई बागडोर को ....अब किसी बह्‌काबे में आ कर ...छोड़ मत देना ....?"

"जी, जनाब!"अमित ने प्रफुल्लित मन से स्वीकार किया था . "परिणाम जो भी हो .....जंग जारी रहेगी .....! मेरा मन ठीक कहता है ....लड़ते रहो . ..लड़ते ही जाओ ....! फतह होगी ....और अवश्य होगी ...."

"आप से कोई मिलने आया है!" अमित को सूचना मिली थी .

"आने दो ...!" अमित सजग हुआ लगा था .

एक नहीं कई सारे लोग अमित से मिलने चले आए थे!!

"कमीशन की रिपोर्ट कमाल की है! आप सही हैं! आप सच्चे हैं ...!!"मिलने आए लोग बताने लगे थे . "अब आप की बेल हो सकती है . बाहर आ कर बातें होंगी ...." उन का आग्रह था. "आप के साथ पूरा देश है ...समाज है! अब आप अकेले नहीं हैं, अमित भाई जी!"

अमित की आँखें नम थीं . अमित का मन लोगों के प्रति आभार से भरा था! देश के लोगों से उसे कोई शिकायत न थी . बेईमान तो मीडिया था ... प्रेस था ....और वो लोग थे ...जो सत्ता के भूखे थे ...धन के लोभी थे .... देश–द्रोही थे!

"अब आसान होगा लड़ना ....!" अमित ने आँखें पोछते हुए कहा था . "आप लोगों का ...आभार .....?"

"आभारी तो हम हैं, मित्र!"जाते–जाते वो लोग कह रहे थे . "तुम जैसे दो–चार भी पैदा हो गए ....तो ...भारत ....?"

जेल में बैठा अमित बेल पर न आने की जिद कर रहा था!

लेकिन मुझे चिंता थी . चिंता थी क्यों कि बिना अमित के मैं अब अधूरा–सा महसूस कर रहा था . पहली बार अपने जीवन में मैने महसूस किया था कि ...अमित मेरा अभिन्न बन चुका था! प्रान्त का प्रशाशन चलाने में मुझे उस की ...पहुँच की अत्यधिक आवश्यकता थी . उस के नए–नूतन प्रयोग प्रान्त

के लिए ही नहीं देश के लिए भी हितकारी थे! अमित का सोच एक युगद्रष्टा का सोच था!!

अब अकेले में मुझे न जाने कैसे फिर से दादा जी याद आने लगे थे ?

"अचानक कलकत्ता के ऊपर काले बादल घिर आए थे! युद्ध के काले ...बादल!" दादा जी ने मुझे एक रहस्य और बतलाया था . "देश का चहेता ....देश की नाक ....और देश का मन–प्राण ...सुभाष एक बारगी फिजा पर छा गया था!" दादा जी की आँखें अब मशालों–सी जल उठीं थीं . "सच कहता हूँ, नरेन्द्र! वो घटना ....वो खबर ....और वो हवा पूरे देश को जीवंत कर गई थी! और हमारा बैरी बना अंग्रेज ...दहला गया था ...! छक्के छूट गए थे ....अंग्रेजों के ...."

"पर क्यों, दादा जी ....?" में अब उत्सुक था ., , , उल्लसित था ...और जानना चाहता था कि ..आखिर हो क्या गया था ?

"दशों दिशाएं बोल पड़ीं थीं ....पडौस में ...कलकत्ता के ही पडौस में . ..गोला–बारी हो रही थी! तोपें दन्ना रही थीं ....! अंग्रेजों के दुश्मन ...देश के दरवाजे खटखटा रहे थे!"

"कौन थे ....?"

"जापानी थे! और उन के साथ में थी हमारी आजाद हिन्द फौज! सुभाष बाबू की बनाई फौज ...हमारे देश की बनी प्रथम सेना ...जो अब देश को स्वतंत्र कराने के लिए आ पहुंची थी ....?"

"पर कहाँ से ....?" मैं भी अब प्रश्न पूछता ही जा रहा था .

"बर्मा के रास्ते ...कोहिमा को हासिल कर ...कौक्स बाजार ....और अब कलकत्ता ही था ....जो उन के हाथों आना था! सुभाष बाबू की आजाद हिन्द सेना सब से आगे थी . और उन्होंने ही सब से पहले कलकत्ता में प्रवेश करना था!"

"अचानक ...ये सब कैसे हुआ, दादा जी ....?" मैं पूछ रहा था . मुझे यह कहानी कुछ असत्य–सी लगी थी . अब तक अंग्रेज मेरे जहन में एक महान शक्ति के रूप में उभर आए थे . अचानक ही उन का यों काँप उठाना मुझे जम नहीं रहा था! "सुभाष बाबू .....?"

"सुभाष बाबू हिटलर से जर्मनी जा कर मिले थे! उन्होंने भारत को आजाद कराने के लिए ...हिटलर से मदद की मांग की थी . हिटलर ने नेता जी को जापान भेज कर ...अपने मित्र जापान को उन की मदद करने के लिए कह दिया था! जापान में सुभाष बाबू को सब तैयार मिला था! पुराने लोग – रासबिहारी बोस ...राजा महेंद्र प्रताप सिंह ...और वो सैनिक जिन्हें जापान ने कैदी बनाया था ...उन की मदद के लिए तैयार थे! यहाँ तक कि अन्य देश ...और पूरा का पूरा हिन्द–चीन नेता जी के आगमन पर प्रसन्न थे और नेता जी की मदद के लिए ...तैयार थे . यहाँ आ कर नेता जी को सम्मान मिला ...सहारा मिला ...और धन–जन सब मिला! उन्होंने यहाँ आ कर स्वतंत्र भारत के संविधान की संरचना की! संगठन को खड़ा किया ...बड़ा किया ...और अब ...अपने देश के दरवाजे पर ...आजादी की मशाल लिए ...खड़े थे .... दरवाजा खटखटा रहे थे ....!!"

"आप का मतलब कि ...हमारी गोला–बारी हो रही थी ...?"

"हाँ, भई! गोले दनादन ...बरस रहे थे ....! अंग्रेजों के कलेजे काँप रहे थे ...! उन की समझ में ही न आ रहा था कि करें ...तो ...क्या करें ....?"

"उन की फौज .....?"

"थी तो! पर थी –बे–मामूल! सारी सेना तो विदेशी मोर्चों पर लड़ रही थी ...? कलकत्ता पर कभी हमला भी होगा ....ये तो अंग्रेजों ने कभी स्वप्न में भी न सोचा था ....?"

"और लोग ....?"

"कलकत्ता के लोग आतंकित थे! कलकत्ता खाली होने लगा था! लोग शहर छोड़ कर चले जा रहे थे! एक खलबली–सी कलकत्ता में मची हुई थी!"

"और ...आप कहाँ थे ....?" मैंने हंस कर पूछा था . "भागने की सोच रहे होंगे ....?" मैंने दादा जी को कुरेदा था . "मौत से डर किसे नहीं लगता .. ..?" मैंने चुटकी ली थी!

46

'जय हिन्द' के नारे लगाता ही चला गया!

दादा जी का चेहरा एक बार तन आया था . मेरा किया मजाक उन्हें अच्छा न लगा था! मैंने भी महसूस किया था कि शायद ...मुझे दादा जी से इस तरह के प्रश्न नहीं करने चाहिए थे ? वो सच्चे देश–भक्त थे . सच्चे देश–प्रेमी थे! मैं चाहता था की उन से क्षमा मांग लूं ?

"दादा जी ....मेरा मतलब ....था! मुझे ....."

"मेरा मन था, नरेन्द्र कि में ...दौड़ कर ...सुभाष बाबू से जा मिलूँ ....! मेरा मन था, नरेन्द्र कि मैं ...भागूं ...और जा कर सुभाष बाबू के चरण पकड़ लूं ....उन का आभार व्यक्त करू ...और उन से प्रार्थना करू कि ...एक भी अंग्रेज बच्चा जिन्दा न बचे ....और चुन–चुन कर मारा जाए इन विशासघातियों को ...! ऐसा सबक दिया जाए इन्हें ....जो भविष्य ...में भी ...ये औरों के साथ ....

"इतने खुश मत होइए, दादा जी!" बाबू मित्र इशारे से दादा जी को कुछ समझा रहे थे . मेरे भी कान खड़े हो गए थे . "ये जापानियों की चाल थी ." उस ने कहा था . "सुभाष बाबू के नाम पर जापान भारत को पदाक्रांत करने की योजना बना चुका था! सुभाष बाबू के पास था क्या ...? तोपखाना तो जापानियों का ही था ? उन के पास तो छोटी–मोटी बंदूकें ही थीं, बस! बाकी तो सब जापान का ही था!" वह हाथ नचा–नचा कर बता रहा था .

सच मानीए मुझे वो आदमी – बाबू मित्र पक्का चोर और एक जानी दुश्मन लगा था . मैं तो उस का खून कर देना चाहता था . मुझे तो वो अंग्रेजों का मुखबिर लगा था जो अफवाहें फैला रहा था .

"तुम कैसे जानते हो ....?" अब की बार प्रश्न मैंने किया था . "सुभाष बाबू तो पक्के देश–भक्त थे ...!" मैंने दलील दी थी .

"जापानी तो जापानी हैं! वो भारत जैसी ...मोटी मछली को कैसे छोड़ देते ? और सुभाष बाबू के पास था क्या उन्हें देने को ....?"

"देश तो अपना था ....सुभाष बाबू का था ....?"

"देश अभी भी अंग्रेजों का था! उन्हीं के नीचे था . और उन्हें भी चिंता थी कि जापानियों को कैसे रोकें ....?"

"नहीं रोक पाए थे, जी!" मैंने उस आदमी को जैसे ठेंगा दिखाया था . "अंग्रेज तो भाग रहे थे ....डर गए थे ....जा रहे थे ...." मैं हंस रहा था .... खिलक रहा था .

दादा जी मुझे अपलक घूरे जा रहे थे . वो प्रसन्न थे . उन्हें मेरा किया प्रतिरोध अच्छा लगा था .

"फरवरी १६४४ चल रहा था ."बाबू मित्र फिर से बताने लगा था . "मैं झूठ नहीं बोलता, दादा जी .....जापानी हार रहे थे ....! और अमेरिका ....."

"लेकिन अंग्रेजों के साथ अब कोई नहीं था! न में .....और न तुम ....?" दादा जी ने तुरप लगाई थी . "मित्र! अंग्रेज भारत का विश्वाश खो बैठे थे ." दादा जी का कहा ये अंतिम सत्य था .

मुझे बहुत अच्छा लगा था . में तो दादा जी की तरह ही चाह रहा था कि ...हम चलें और सुभाष बाबू से तुरंत ही मिल लें! में तो चाह रहा था कि ...मैं भी एक बन्दूक ले लूं ...और धाय –धाय अंग्रेजों को मार डालूँ! पर था तो यह सब विगत ....? बातें हो रही थीं. था तो एक सोच ही ...?

"सोच चल रहा है! पर दादा जी अंग्रेजों को कम मत तोलो .....! ये काईयाँ ...हैं ...! अव्वल नम्बर के चार–सौ–बीस हैं! देख लेना ये भारत नहीं छोड़ेंगे ....? देख लेना –युद्ध जीतेंगे ....और फिर कभी भी भारत न छोड़ेंगे ...!" भविष्य वाणियाँ हो रही थीं, नरेन्द्र!

मैंने अपने इस सोच को जूते मार कर भगाया था!" दादा जी मुझे फिर से बताने लगे थे . "सुभाष एक महान नेता था – मेरे लिए . सन१८६७ में जन्मा सुभाष ... एक ऐसा नवयुवक था ...जिस की सारे भारत में ख्याति थी

. सुभाष शुरू से ही बिस्मार्क से प्रभावित था . वह कहता था – इतिहास उठा कर देख लो! कभी भी बहस द्वारा कोई बड़ा परिवर्तन नहीं आता! ये अनशन और ...सविनय आन्दोलन ...एक नैतिक अभियान को खड़ा कर सकते हैं ....पर सत्ता परिवर्तन नहीं! उस के लिए एक मात्र युद्ध ही विकल्प है! अंग्रेजों ने बर्बरता की पराकाष्ठा ला दी है ....अब तो ईंट का जबाब पत्थर ही है!!"

मेरे लिहाज से सुभाष बाबू ही सच्चे थे, नरेन्द्र!

"मैं होता तो ...उन के चरणों का दास बन जाता, दादा जी!" मैंने गंभीरता पूर्वक कहा था . "मैं होता तो ...."

"होता कब है, नरेन्द्र!" दादा जी स्वांस छोड़ कर बोले थे . "वक्त ही बलवान होता है, बेटे!" उन की आवाज कुंद हो आई थी . "कितना इंतजार था मुझे कि ...सुभाष बाबू की आजाद हिन्द फौज आए...कलकत्ता पर आक्रमण करे...गोले बरसाए इन गोरों के सरों पर ...मौत के घाट उतारदे...इन आताताईयों को ....और देश को स्वतंत्रता देदे ....."

"पर दे नहीं पाए ....?" मैंने पूछा था .

"सुभाष बाबू ने गाँधी जी से वायदा किया था कि मैं ...धुरी –राष्ट्रों से मिल कर ...युद्ध जीतूंगा ...और एक स्वतंत्र भारत ...आप को भेंट करूंगा!" दादा जी बताने लगे थे . "लेकिन लोगों ने इसे एक गढ़ा झूठ बता कर हवा में उड़ा दिया था! लोग सुभाष बाबू को 'हिन्दुस्तानी हिटलर' की उपाधि देने लगे थे! लोग कहने लगे थे कि सुभाष बाबू ...आजाद हिन्द फौज बना कर ...खुद ही ...राष्ट्रपति...प्रधान मंत्री ....और मुख्या सेना नायक बन बैठे थे! इस से साफ जाहिर था कि ....उन का इरादा हिटलर की तरह ही ...राज–पाठ करने का था!"

"अंग्रेजों का हाथ होगा, उन्हें बदनाम करने में ...?" मैंने पूछा था .

"अंग्रेज तो अब अपने बचाव में लगे थे! वो देश को बता रहे थे कि . ..उन का हिटलर से युद्ध ...मानवता की रक्षा, लोकतंत्र ...और जन–तंत्र की स्थापना के निमित्त था! वो नहीं चाहते थे कि हिटलर ...जैसा तानाशाह .. .संसार को तबाहो–बर्बाद कर दे! हिटलर को बदनाम करने में वो सफल हो चुके थे! अब सुभाष की बारी थी!!"

"क्यों ...?" मैंने दादा जी से प्रतिप्रश्न पूछा था . मैं न जाने क्यों सुभाष बाबू के बारे सब कुछ जान लेना चाहता था ? मैं चाहता था कि सुभाष जैसा ही पुरुषार्थ में भी हासिल करू.

"इसलिए नरेन्द्र कि अब अंग्रेज सुभाष को ही अपना घोर शत्रु मानने लगे थे . उन्हें पता चल गया था की ...आजाद हिन्द फौज, सरकार तथा उन का मुख्यालय रंगून में आ गया था ...जब कि ..उन का बेस अभी भी सिंगापूर में था! आजाद हिन्द फौज और सरकार ने समवेत स्वर में जयघोष किया था – दिल्ली चलो!!"

"मतलब कि ...बर्मा के रास्ते ...कलकत्ता होते हुए ....दिल्ली ....?"

"हाँ! सम्पूर्ण भारत को समग्र रूप से लेना ...और एक राष्ट्र की स्थापना करना ...सुभाष बाबू का मुद्दा था! उन का मुद्दा था एक राष्ट्र ...एक भारत .... और उन का ऐलान था –एक शत्रु –इंग्लेंड! उन का उद्देश्य भी एक ही था –स्वाधीनता!" दादा जी रुके थे . उन्होंने मुझे आँखें भर कर देखा था .लगा था –वो अपने सुभाष को अभी भी तलाश रहे थे!

"आप को सुभाष बाबू बहुत अच्छे लगते थे ...?" मैंने अबोध प्रश्न पूछा था .

"हाँ, नरेन्द्र! इस का कारन था . सुभाष जैसा देश–भक्त कभी कालांतर में ही पैदा होता है ? 'जननी जन्मभूमि ...स्वर्गादपि गरीयसी ....' का मंत्र सुभाष बाबू के ह्रदय में हर वक्त गूंजता ही रहता था . उन का अनूठा आग्रह था कि, 'मैं अपनी जन्म – भूमि के पुनह पैर छू सकूं! उन की मांटी को मांथे लगा सकूं!' उन का प्रचार–प्रसार जापान रेडियो के द्वारा जारी था . वह कहते थे – भारत भारतीयों के लिए है ...अंग्रेजों के लिए नहीं! ब्रितानी सरकार का ये कथन असत्य है कि जापान भारत पर कब्जा करना चाहता है! जापान और आजाद हिन्द फौज के बीच समझौता हुआ है – कि भारत की जो भी भूमि जीती जाएगी ...वहां जापानी सैनिक न तो लूट–पाट करेंगे और न ही ...बलात्कार करेंगे! और यह जीता हुआ प्रदेश समग्र रूप से आजाद हिन्द सरकार और सेना के अधीन होगा ...."

"यह सब कहना क्या जरूरी था, दादा जी ...? देश तो हमारा था ...फिर हमीं .....?"

"बड़े ही संकट का समय था ये, नरेन्द्र!"दादा जी की आवाज सतर्क थी . "गाँधी भी अब हलके पड़ने लगे थे . उन का सत्याग्रह और अहिंसा ...अब

झूठे पड़ते दिखाई देने लगे थे! अंग्रेज नई–नई चालें खेल रहे थे . निश्चित था कि अंग्रेज युद्ध जीतने की हालत में भारत को नहीं छोड़ेंगे! अब अगर कोई आशा–किरण थी तो वो ...सुभाष ही थे!!"

"सुभाष .....?"

"भूली याद की तरह –नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ...फिर से जनता के मन में ...उजागर हो गए थे ...! उन का दिया नारा, 'तुम मुझे खून दो ....मैं तुम्हें आजादी दूंगा ' फिर से जिन्दा हो गया था . फिर से लोग दीवानों की तरह 'जयहिंद' के नारे लगाने लगे थे . इस नारे में अजब आकर्षण था, नरेन्द्र!"

"कैसे, दादा जी .....?"

"सब कुछ न जाने कैसे ...उस 'जयहिंद' के नारे में अन्तर्निहित होता लगा था ...! लोग इस नारे के नाम पर अपने व्यक्तिगत भेद–भाव भूल गए थे! विविध धर्म ...और अनेकानेक देवी–देवता ...इस अकेले नारे के सामने निरस्त हो गए थे! सुभाष फिर से जन–मानस के दिल–दिमाग पर छा गए थे! लोग पलक–पांवड़े बिछा सुभाष का दिल्ली पहुँचाने का इंतजार करने लगे थे! प्रार्थना करने लगे थे ....और ...."

"बाकी सब लोग कहाँ थे, दादा जी .....?"

"सब अपने–अपने राग में जुटे थे . सब का एक ही उद्देश्य था कि किसी तरह अब अंग्रेज भारत छोड़ें ...और देश को आजादी मिले! जवाहर लाल नेहरू ने पुरजोर शब्दों में कहा था – ब्रिटिश साम्राज्य का पतन होना ...आज के ऐतिहासिक सन्दर्भों में भी जरूरी है!" दादा जी रुके थे . फिर उन्होंने कुछ सोच कर कहा था . "हाँ, नरेन्द्र! यह एक अवधारणा बन गई थी कि ... ब्रिटिश साम्राज्य के परास्त हुए बिना भारत स्वतंत्र नहीं हो सकता ...! यदि किसी हाल में भी ...ब्रिटेन और उस के सहयोगी राष्ट्र ...युद्ध जीते ...तो भारत को हमेशा–हमेशा के लिए ...उन का गुलाम रहना होगा!!" दादा जी चुप थे .

"फिर क्या हुआ, दादा जी ....?"

"फिर यही, नरेन्द्र कि ...देश के लोगों ने ही अब निर्णय करना था ...कि वो क्या चाहते थे ....? वो क्या चाहते थे – युद्ध ...या कि अहिंसात्मक आन्दोलन

....? गाँधी जी की आवाज तो हर किसी को डूब गई लगी थी . युद्ध....और युद्ध के सिवा ....लोगों को और कुछ सूझ ही न रहा था! अच्छा लग रहा था कि जापानी तोपों की आवाजें कलकत्ता में भी सुनाई दे रहीं थीं! अंग्रेजी पिट्ठू ...अब कलकत्ता छोड़ कर जाने लगे थे ....''

''और आप ....?'' मैं फिर से शरारती स्वर में पूछ रहा था .

''सच बताऊँ, नरेन्द्र .....?'' दादा जी मुस्कराए थे .

''सच–सच ही कहना, दादा जी .....!!'' मैं भी मुस्कराया था .

''मैं ही क्यों, नरेन्द्र! ....पूरा देश ही आँखें बिछाए बैठा था कि ...सुभाष बाबू आएं ...और दिल्ली के लाल किले पर अपनी आजाद हिंद सरकार का झंडा फहराएं ...और हम सब 'जयहिंद' के नारे लगाएं ....और 'जयभारत' की अवगूंज से ...हवा भी काँप उठे .....!!

'जैहिंद' के नारे लगाता ही चला गया ....., के गीत फिर से बजने लगे थे .....!!

47

कोब्रा पोस्ट और गुलेल!!

सोनल जेल में अमित शाह से मिलाने आई थी . उस का चेहरा उड़ा हुआ था . वह सोच रही थी कि शायद अमित आधा रह गया होगा ...? 'जेल का जीवन जांन न ले–ले ...तभी' वह सोचे जा रही थी . अमित के राजनीति में आने के लिए ...शायद वह भी कहीं जिम्मेदार थी! वह भी तो चाहती रही थी ....कि ....

"हल्लो, डियर!" अमित शाह उस के सामने आ खड़ा हुआ था . वह मुस्करा रहा था .

सोनल ने निगाहें भर कर अमित को देखा था . उस का चेहरा गुलाबों–सा खिला था . उस की आँखों के सपने सजग थे . उस की धारदार आवाज में विजई होने के संकेत थे! 'वह अमित शायद कोई दूसरा अमित था! यह काया–कल्प कैसा ?' सोनल ने एक पल के लिए सोचा था .

"डर क्यों रही हो ....? मैं ही तो हूँ, तुम्हारा ....अमित ....!!" अमित ने सोनल का सोच तोडा था .

"हाँ, हाँ! हो तो ...अमित ही ....!! पर ...अमित मैं तो सोचती रही थी . ...कि ...?"

"मैं भी तो यही सोचता रहा था, सोना ....कि ...जेल न जाने क्या बला होगी ....? सच कहूं तो ....जो मैं ...मिनिस्टर की कुर्सी पर बैठ कर भी न सोच पाया ....न देख पाया ...वह जेल में आ कर समझ आया! ये जेल नहीं, सोना! एक पाठशाला है! जो सबक और सवाल यहाँ हल होते हैं ...वो तो बाहर हो ही नहीं सकते!" अमित बताता ही रहा था .

"जे ...तो बहुत डर गया है ...!" सोनल ने शिकायत की थी .

"तुम उस की माँ हो ....! उसे संभालो ....और ...."

"अब संभाल दूँगी ....! आज तो मुझ में भी हिम्मत लौट आई है, अमित! सच कहती हूँ ...कि मैं इतनी डर गई थी ...कि .. हिम्मत जुटा कर ही ... मिलाने आ सकी हूँ ..."

"और ....अब ....?"

"मिलती रहूंगी ...."

"और .....?"

"लड़ती रहूंगी ...." सोनल हंस पड़ी थी .

"दैट्स ...बैटर ...! तुम हंसती हो ....तो ही ...अच्छी लगती हो ....."

"अच्छा ....?"

"ओके....ओके ...!!" अमित प्रसन्न था . "और, हाँ! अभी बेल लगाने की जल्दी न करना ....!" वह बताने लगा था . "कुछ मुद्दे हैं ....जो महत्वपूर्ण हैं! उन्हें अभी उठने देते हैं ....आने देते हैं! उस के बाद ही बेल लगाएंगे ...."

"मैं बता दूँगी!" सोनल अब सहज थी . "मैं तो कहने वाली थी कि .... सेहत का खयाल रखना ....पर देख रही हूँ ....कि ..."

"मैं मोटा हो गया हूँ ....?" अमित जोरों से हंसा था . "भीतर ...जो एक डर था ....वह भीतर आ कर बाहर बह गया है! सोना! अब से मैं ....शायद भविष्य की लड़ाई ...ठीक से लड़ पाऊंगा ? बहुत कुछ अधकचरा था ...जो साफ हुआ है!" वह बताता रहा था .

सोनल को भी लगा था जैसे अमित ने एक जंग जीत ली थी!

सोनल से मिल कर अमित प्रसन्न था . वह अकेला तन्हाई में बैठा–बैठा जेल के जीवन का जायजा ले रहा था! सब कुछ ठीक नहीं था . देश की न्याय–प्रक्रिया उसे दोषपूर्ण लगी थी . उसे लगा था कि ...जेल में बंद लोगों के साथ ...न्याय नहीं हो पा रहा था! लम्बे–लम्बे ...मुकद्दमे ...सुनाई गलत सजाएं ...और पुलिस और पहरेदारों का दुर्व्यवहार ....लोगों को स्वयं ही गुनाहगार बना रहा था! सब कुछ ठीक–ठाक नहीं था – वहां!!

'न्याय–प्रक्रिया का रूप–स्वरुप तो ...एक दम ही पारदर्शी होना चाहिए ...' अमित सोच रहा था . 'पर है तो ...सब का सब अंधा ...? आम आदमी की समझ न आने वाला कानून ....उन के ऊपर जुल्म ढा रहा है ...' अमित टीस आया था . 'मिसिंग लिंक –कहाँ है ? क्या है – जो हो ....और जो न हो . ...?' वह सोचने लगा था .

"अंग्रेजों की तो दुहरी नीतियां थीं, अमित!" अचानक उसे अमला की आवाज सुनाई देने लगी थी . "एक थी – हम गुलामों को गुलाम बनाए रखने के लिए ....और दूसरी थी उन के अपने लिए – जहाँ वो ही श्रेष्ठ थे ....मालिक थे ....दोषमुक्त ....और सर्वे–सर्वा थे!" उस ने अमित की आँखों में देखा था . "और सच मानो, अमित! यही खोट खा गया, उन्हें!" दो टूक बात बोली थी, अमला ने . "अगर अंग्रेज हमारे साथ ...गुलाम और मालिक का . ..भेद–भाव न बरत कर ... मिल बैठते ....तो ....?"

"जेल सुधार ...कानून में सुधार ...नीतियों में सुधार ...सुधार ....और भी सुधार ...." अमित सोचता ही जा रहा था! 'उन की दुहरी नीतियों के कारन ही ....समूचा भारत उन का दुश्मन बन गया था और अगर हमने भी ....इन नीतियो को न बदला तो .... ?" अमित ने एक खोट की काया पर उंगली धर दी थी!

"आज का अखबार पढ़ा है ?" अमला तन्हाई में चला आया था . "पोल खुलने लगी है! गवाह सच बोलने पर उतारू हैं!" अमला ने सूचना दी थी . "है तो कमाल ...?" उस ने हवा में हाथ फेंके थे . "जो गवाह कांग्रेस ने कर्नल कमला के केस में पेश किए थे – वो तो बहुत पक्के थे! कांग्रेस का बनाया कोर्ट–केस भी टूटा कहाँ ...? पर आज तो मैं हैरान हूँ, अमित भाई ...कि सच्चाई सामने आ रही है ...."

"आ कर रहेगी!" अमित ने मुस्करा कर उत्तर दिया था . "पापों का घड़ा शायद भर चुका है ...अब ?"

"ठीक कहते हो, अमित! भगवान् करे ...कि इस कांग्रेस का अब अंत आ ही जाए!" अमला ने आसमान की ओर देखा था . "सच मानो, बेटे! इस कांग्रेस के किए ...अपराध ...अन्याय और पक्षपात अंग्रेजों के किए जुल्मों से भी ज्यादा हैं!"

"बैठिए ....!" अमित शाह ने अमला को बहुत पास बिठा लिया था . "कोई व्यथा है ....आप के मन में ....?" उस ने पूछा था .

"हाँ..! एक बहुत बड़ी व्यथा है! या कहें कि ...कहानी है! एक झूठ की कहानी जो हमारे परिवार के साथ घटी है!" अमला बता रहा था . "मेरे पिता –कर्नल कमला सिंह आजाद का जो अंत हुआ ....उस की जिम्मेदार कांग्रेस ही है, और कोई नहीं! और साफ–साफ कहूं ...तो ...पंडित नेहरू का सीधा हाथ था ... उन के उस ....." रुका था –अमला . वह पिघलने लगा था ... .रोने लगा था!

"हुआ क्या था ...?" अमित ने आद्र आवाज में पूछा था .

"वो आजाद हिन्द फौज के सैनिक थे . सुभाष चन्द्र बोस के चहेते थे – कर्नल कमला सिंह आजाद! उन्होंने बर्मा में अंग्रेजी फौजों का मुकाबला किया था! उन्होंने अंग्रेजों का साथ न दे कर ...सुभाष बाबू का साथ दिया था! उन्होंने आजादी के बाद कांग्रेस पार्टी ही ज्वाईन की थी . चुनाव लड़ा था . जीता था और जनता की आँखों के तारे बन गए थे – कर्नल कमला सिंह आजाद!" वह रुका था . उस ने अमित की आँखों में झाँका था . "उन का एक सपना था! महान भारत बनाने का सपना!! वह चाहते थे कि ... भारत एक ऐसा राष्ट्र बने ...जिस की अपनी ही पहचान हो ....अपनी भाषा . ..अपना धर्म ....अपनी संस्कृति .....अपना इतिहास....और ......" वह चुप था .

"और .....?" अमित ने पूछा था .

"वो नेहरू के पास बैठते थे ....लेकिन नेहरू जी ....?" अमला की जुवान अटक गई थी . वह कुछ कहना चाहता था . पर वह कह न पा रहा था .

"नेहरू जी .....?" अमित ने ही पूछ लिया था .

"बहुत बड़े बन चुके थे ...! अंग्रेजों के अनुयाई थे! अंग्रेजों ...के सेवक थे ....! अंग्रेजों के बनाए कानून और व्यवस्था के समर्थक थे ....! कुछ भी बदलने ....या सोचने के लिए तैयार न थे . उन की आपस में झडपें होने लगीं थीं! बात पार्लियामेंट के बीच तक चल कर आ गई थी! कर्नल कमला सिंह आजाद ने खुल कर नेहरू जी का विरोध करना आरंभ कर दिया था! 'तुम देश को डुबो दोगे, पंडित!' उन्होंने सरेआम पार्लियामेंट में कहा था . और ....."

"और ....?"

"बस! यहीं पर उन का अंत आ गया था!!"

"कैसे ....?"

"कर्नल सहाब के पास हथियारों का एक अच्छा–खासा जखीरा था! वो हथियारों के प्रेमी थे . तरह–तरह की राईफल, पितौल ....और कुछ ऑटोमैटिक हथियार उन के पास थे! विश्व–युद्ध के दौरान उन का ये किया संकलन था! सब हथियारों का इतिहास था ...खरीद की पर्ची थी ....और लाइसंस भी था! एक फाईल में सब दर्ज था . हर इतवार की सुबह वह ...अपने हथियारों का मुलाहिजा करते थे ....सफाई करते थे ....और फिर रख देते थे!"

"फौजियों की तो आदत होती है ....?" हंसा था, अमित .

"हाँ! लेकिन एक सुबह पुलिस ने आ कर उन से सब बरामद कर लिया! उन्हें थाने ले गए ...और उन पर केस बना दिया! जब कोर्ट में केस आया तो उन्होंने पुलिस से अपनी फाईल मांगी . पुलिस ने साफ मना कर दिया ....और एक गंम्भीर केस उन के खिलाफ तैयार हो गया! वो भी सीधे ही पंडित जी के पास पहुँच गए थे!"

"फिर ....?"

"हम कानून को तो अपने हाथ में नहीं ले सकते, कर्नल साहाब ....?" पंडित जी ने कहा था . "और फिर तो जेल में ही मरे मेरे पिता जी – कर्नल कमला सिंह आजाद! अब मैं भी यहाँ बंद हूँ! अपने नहीं ...पर उन के उस गुनाह के लिए ...जो महान भारत बनाने का सपना वो संजो बैठे थे! ये एक बीमारी है, अमित!" अमला ने कहा था और वह फूट–फूट कर रोता रहा था .

अमित की बेल एक बवाल बन गई थी!

"जेल से बाहर आते ही अमित सारे सबूत गुनाहों की तरह मिटा देगा!"अभियोजन पक्ष की पुरजोर दलील थी . "उसे जेल में ही रखा जाए . ..जब तक कि छान–बीन पूरी न हो जाए ....!" उन की मांग थी .

लेकिन छान–बीन कब तक पूरी होगी – इस का कोई तर्क न था ....?

मुझे लगा था जैसे मेरा और अमित का दुश्मन हो गया था – पूरा भारत!

मीडिया और अखबारों में रौंगटे खड़े करने वाली कहानियां तैर रही थीं!

और न जाने कहाँ से देश में नए–नए मीडिया संगठन खड़े हो गए थे ...? कोब्रा पोस्ट और गुलेल चुन–चुन कर नफरत के तीर चला रहे थे! इन के निशाने पर हम दो ही थे .इन की कहानियों का उद्देश्य –हिन्दू–मुसलमान मुद्दे को इतना उछालना था ....कि पूरा देश जल उठे ....और इस आग में हम दोनों भस्म हो जाएं ...? इन की भाषा बहुत ही विषैली थी ...इन का लक्ष भी सटीक था ....और शब्द–बाणों को भी चुन–चुन कर इस्तेमाल किया जा रहा था! बानगी के तौर पर एक टी वी के साक्षात्कार में गवाह कह रहा था – जी.जी हाँ! जिस आदमी ने सईदा की हत्या की ...उस आदमी के ललाट पर 'ओउम ' लिखा था! हम उस आदमी को पहचान लेंगे ....अगर वो सामने आए ....तो ...?

ये आदमी उन २२ गवाहों में से एक था जिन्हें तीस्ता शीतलवाद और उस के सहयोगियों ने 'पाठ पढ़ा कर' हम दोनों के खिलाफ खड़ा किया था . इस टी वी साक्षात्कार का जन्म अरुंधती राय के 'आउट लुक ' में लिखे उस लेख से हुआ था जिस में उन्होंने सईदा की मौत – कहें कि दर्दनाक मौत – का विस्तार से वर्णन किया था! उन्होंने लिखा था कि ...मेरी एक मित्र ने पिछली रात बडौदा से मुझे फोन किया था! वह पंद्रह मिनिट तक फोन पर रोती ही रही थी . उस ने बताया था कि उस की एक मित्र सईदा को ...हिन्दूओं की दंगाई भीड़ ने पकड़ लिया था . फिर बेहद ह्रदयविदारक तरीके से उसे मारा गया था!

"कौन से हथियार से हत्या की थी – उस आदमी ने ....?" टी वी एंकर ने प्रश्न पूछा था .

"त्रिशूल से ...उस का पेट फाड़ा था ....उस आदमी ने ....!" गवाह बता रहा था . "एक ही हूल में उस आदमी ने ...सईदा के पेट का मवाद बाहर ला दिया था!"

"तो क्या ...सईदा गर्भवती थी ....?"

"जी! जी, हाँ! उस के पेट में सात माह का बच्चा था . वह बच्चा बाहर आ गया था!"

"फिर .....?"

"फिर ...एक दूसरे दंगाई ने ...उस बच्चे के शरीर में तलवार घोप दी थी ."

"ओह, हेल!" टी वी एंकर ने भी अपनी प्रतिक्रिया दी थी . "हाउ ....सेड ...?" वह कराह उठा था . "फिर क्या हुआ .....?" उस का अगला प्रश्न था .

"दंगाईयों की भीड़ 'हर–हर महादेव के नारे लगा रही थी ....और बल्लम–भाले हवा में उछाल–उछाल कर ...कूदती–फांदती रही थी ...." वह बताता जा रहा था .

"और मुसलमान ....मेरा मतलब कि ...वो दंगा पीड़ित लोग .....?"

"डरे–सहमे घरों में बंद थे ....! मौत की घड़ियाँ गिन रहे थे!! और ....."

"और ....पुलिस ....?"

"नदारद थी ......!!" उस ने घटना का तोड़ बयान कर दिया था .

अब मेरे देश को यह समझते देर न लगी थी कि ...मैं और अमित कलंकी थे! समाज के और मुसलमानों के दुश्मन थे . हम हिन्दू उग्रवाद का एक जीता–जागता उदहारण थे! हम इस बात का प्रमाण थे कि ...गुजरात में ही नहीं ....अब पूरे भारत में ...हमारे रहते हुए ...मुसलमानों की खैर नहीं थी!

अरुंधती राय के लिखे इस लेख को ले कर ...संसद में भी मामला उठ खड़ा हुआ था! यहाँ तक बात पहुंचते –पहुंचते ...अब यह भी साबित हो गया था कि ...जिस गर्भवती महिला सईदा की हत्या की थी – उस के साथ सामूहिक बलात्कार भी किया गया था!

कभी तुर्कों के लिए इस तरह के जुल्मों की कहानियाँ चला करतीं थीं ....लेकिन आज अपने भारत में ...हिन्दूओं के किए जुल्मों का ...गुणगान हो रहा था ...? हिन्दू – जो स्वभाव से ही भीरु है ....डरपोक है ....अहिंसावादी है ....धर्मपरायण है ....और पाप–पुण्य, कर्म–कुकर्म ...तथा सही–गलत से भी भय खाता है ...आज अचानक ही ...इतना न्रशंस कैसे बन गया ....?

और मित्रो! अब यह भी एक प्रमाण है कि ...अरुंधती राय की लिखी ये कहानी ...गलत थी ...मिथ्या थी ...और गढ़ी गई थी! सईदा नाम की तो कोई औरत थी ही नहीं ....? और न इस का कोई प्रमाण था ...कि वो गर्भवती थी ...उस के साथ बलात्कार हुआ था ...या कि उस की मौत हुई थी!!

लेकिन राष्ट्र की निगाहों में ...नरेन्द्र और अमित का चरित्र हनन कर . ..यह सिद्ध किया जा रहा था कि ...हम दोनों मानव नहीं ....दानव हैं! हमारे इरादे नेक नहीं ....फेक हैं!

48

हुए महासमर का मैं ही हीरो था!

फिर एक बार मुझे अपने परम प्रिय –पूज्य दादा जी याद आ रहे थे!

"हैरानी की बात तो ये थी, नरेन्द्र कि ...हमारे कांग्रेसी न जाने क्यों लोगों के बीच सुभाष विरोधी माहौल पैदा करने मैं लगे थे ? ये लोग सुभाष को हिंदी –हिटलर बता रहे थे . त्रिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में सुभाष पर व्यंग करते हुए कहा गया था ."भारत के हिटलर की जय!" सुभाष के आजादी हासिल करने के मार्ग को सभी कांग्रेसी गलत बता रहे थे!"

"क्यों ....?" मैंने तड़क कर पूछा था . अब तक मैं सुभाष का हो चुका था .

"ब्रिटिश सरकार ने इस प्रोपेगंडा के लिए नेहरू को सराहा था . नेहरू का बोला वाक्य, "द ...वे ...सुभाष हैज ...चोजन ...इज ..नैचुरल्ली ...रांग ... .! आई कांट ....एक्सेप्ट ......बट ....मस्ट ...ऑब्जेक्ट ....!!" उन के लिए ये बोला वाक्य बीज–मंत्र का काम कर रहा था . "

"तो क्या सुभाष बोस गलत थे ...?" मैंने जिज्ञासा वश ही पूछा था . "क्या वो हिटलर थे ...?"

"नहीं, रे ...!" दादा जी ने मेरे शक को हवा में उडा दिया था . "सुभाष बाबू कच्ची गोलियों से न खलते थे!" दादा जी हँसे थे . "बहुत पक्का खिलाडी था, वो!" दादा जी ने मेरी आँखों में झाँका था . "सुभाष ने जर्मनी में रहते हुए जानते हो क्या कहा था ?" दादा जी हुमक आए थे .

"क्या कहा था ...?" मैंने भी उत्सुकता से पूछा था .

"कहा था – हिटलर को मेरी ओर से स्वतंत्रता है ...कि वो चाहे तो ब्रिटिश के बूट चाटे ...? माने कि ....उन के तलुवे चाटे ...."

"हिटलर के सामने ....जर्मनी में ऐसा ...कहा था ...सुभाष ...ने ...?" मैं भी हैरान था .

"हाँ, हाँ! वहां के स्थानीय अखबारों में साफ–साफ छपा था! बाद में लोगों ने उस का रूपांतर कर स्थिति को संभाल लिया था ....! वरना तो . ....."

"वरना ...तो ...?" मैंने फिर भी पूछा था .

"सुभाष किसी हिटलर से न डरता था ...! बराबरी का व्यवहार रखता था, वह!" दादा जी हंस रहे थे .

मैं स्वप्न देखने लगा था . मैं सुभाष के साथ खड़ा हो 'जयहिंद' के नारे लगाने लगा था . मैं सोचने लगा था कि ...कितना साहस होगा उस आदमी के पास ...जो हिटलर जैसे तानाशाह के सामने भी झुका न था ....?

"सुभाष तो कहते थे – कांग्रेस में जीवन–शक्ति का अभाव है! वह कोरी नैतिकता को अपना आधार बना कर ...चलना चाहती है! में तो कहता हूँ . ..कि बिना रक्त बहाए ...हमारा आजादी का स्वप्न साकार नहीं हो सकता . ...?"

"फिर उन का सपना ....अपना सपना साकार क्यों न हुआ ....?" मैंने तर्क किया था .

दादा जी अचानक चुप्पी साध गए थे . दादा जी का मौन तो बोल रहा था ...पर उन की जुवान चुप थी! उन की आँखों में एक दुःख आ बैठा था . विफल होने की सुभाष की पीड़ा का प्रेत ...मैंने दादा जी की निस्तेज आँखों में बैठा देखा था!

"पराजय के प्रमाणों से कोई आँख नहीं मिला सकता ...., नरेन्द्र!" दादा जी ने अपना मौन तोडा था . "हिटलर की हार ....! जर्मन ...रूसियों का मुकाबला नहीं कर पाए ...!! इसी तरह सुभाष बोस हारा! बर्मा की भीषण वर्षा ऋतू का न तो जापानियों की फौज मुकाबला कर पाई ....और न सुभाष की आजाद हिन्द फौज ....? दोनों की भारी क्षति हुई . ५० प्रतिशत आक्रमणकारी सेना नष्ट हो गई! स्थल मार्ग से राशन–रसद तक पहुंचाना असंभव था!

और चीन की सीमा पर भी खतरनाक स्थिति पैदा हो गई थी!" दादा जी ने कहीं दूर देखा था . वह जैसे हुए इस हादसे को याद ही न करना चाहते थे!

"फिर ....?" मैंने पूछ लिया था ...तो वह लौटे .

"फिर क्या था, नरेन्द्र ....? आजाद हिन्द फौज इस भयावह स्थिति का सामना न कर पाई! उन के पास अब न तो युद्ध–सामिग्री थी ...और न ही खाने–पीने को कुछ शेष बचा था! इरावदी के तट तक उन्हें जैसे–तैसे लाया गया ..."

"और फिर .....?" मैं अब रो पड़ना चाहता था . मेरा समूचा उत्साह ठंडा पड़ गया था .

"और फिर तो वह ...ह्रदयविदारक घटना हुई ...." दादा जी बहुत दुखी थे .

"कौन सी घटना ....?"

"६ अगस्त सन १६४५ के दिन ...अमेरिका ने ...जापान के खुशहाल नगर ...हिरोशिमा पर एटम बम से वार किया ....!! देखते ही देखते ....पूरा शहर ...जल कर राख हो गया .....! उफ ...! कैसी तबाही थी ....? कैसा वीभत्स द्रश्य था ....? कैसा धुआँ उठा था ... और वो उस अमानवीय हमले का दानव ...सब सटक गया, नरेन्द्र!!" दादा जी रोने लगे थे . "पहली बार ... मानव इतिहास में इस तरह का नर–संहार हुआ था ....? पहली बार पूरे विश्व ने इस ...जघन्य अपराध को होते देखा था! पहली बार किसी राष्ट्र के साथ इतना अन्याय हुआ था! हे, इश्वर ....! हे, परमात्मा .....!" दादा जी हाथ जोड़े सुबक रहे थे . "पूरा विश्व ...भयभीत था ...अमेरिका के किए इस ... अमानुषिक आक्रमण से ....."

और मैं भी तो सुन्न पड़ गया था ....मात्र उस घटना को सुन कर ... जिस ने मानवता को दहला दिया था ....!!

"१... अगस्त १६४५ को जापान ने आत्मसमर्पण करने का निर्णय लिया था!" दादा जी बता रहे थे . "लेकिन आजाद हिन्द सरकार ....सुभाष की सरकार ...जिसे नौ देशों से मान्यता प्राप्त थी ...अपने में पूर्ण थी ...सम्पूर्ण थी! देश–वासियों को तो सुभाष चाहिए था ? उन की सरकार का भी स्वागत

था ....और उन की मान्यताओं का भी महत्त्व था! गाँधी जी ने भी स्पष्ट कह दिया था कि ...जापान भारत का शत्रु नहीं था! ब्रिटेन और अमरीका का शत्रु था! अगर अंग्रेज भारत छोड़ते तो ...जापानियों के कदम कभी ...भारत की भूमि पर न पड़ते! उन्हें ...विश्वास था ....." दादा जी न जाने क्यों फिर से उदास होने लगे थे . "गजब की बात ...ये थी ....कि ...." वो कहीं गुम थे .

मुझे भी एक उदासी घेरने लगी थी . मैं भी महसूसने लगा था कि ...मेरा चहेता –सुभाष ...अचानक ही ...आजादी की कहानी से बाहर कूद कर ... कहीं और ही भाग गया था!

"सुभाष बोस .....?" मैंने फिर से दादा जी को कुरेदा था .

"इस के बाद आज तक ...सुभाष बाबू का अता–पता किसी ने नहीं दिया ......" दादा जी की आवाज में एक लाचारी थी . "सच मानो, नरेन्द्र कि ...मैंने इतने प्रयास किए .....कि कोई ...सुभाष बाबू का कोई सूत्र ...सुराग ......?"

अंधी आँखों के उस पार बैठे –सुभाष ....मुझे हँसते–खेलते दिखाई दे रहे थे! उन की आवाज मुझ तक पहुँच रही थी, "तुम मुझे खून दो ....मैं तुम्हें आजादी दूंगा!"

"आजादी मिलाना तो अब और भी कठिन हो गया था, नरेन्द्र!"

"क्यों .....?"

"अंग्रेज युद्ध जीत गए थे! महासमर समाप्त हो गया था . अमेरिका, फरांस ....और ब्रिटेन की जीत ...हुई! लेकिन भारत ....की स्वतंत्रता की घोषणा नहीं हुई ...?" दादा जी ने बताया था .

"क्यों....?" अब की बार मैंने तुनक कर पूछा था .

"अंग्रेजी सरकार ने एक नया शगूफा शुरू किया था!"

"कौन सा ....?"

"आजादहिंद फौज के तीन अधिकारियों – शाहनवाज, सहगल और लेफ्टिनेंट जनरल ढिल्लों पर ...सम्राट – माने कि ... इंग्लेंड के सम्राट के विरुद्ध ...विद्रोह, अपहरण ...तथा हत्याओं में ...भाग लेने का अभियोग ... लगा कर ...कोर्ट मार्शल ....माने कि मुकद्दमा चलाया जा रहा था!" दादा जी ने नए तथ्य उजागर किए थे!

"बेईमानी थी ....अन्याय था ...बदनीयती थी ....!" मैं भड़का था .

"हाँ! पूरा देश भी इस होते कोर्ट मार्शल को अंग्रेजों की चली नई चाल के ही रूप में देख रहा था! लोग इस होती कार्यवाही को देश का अपमान ...और बदले की भावना से प्रेरित ...अंग्रेजों की कूटनीति मान रहा था! उन की नीयत में खोट था!" दादा जी ने भी स्पष्ट ही कहा था . "अंग्रेज फिर से बेईमानी पर उतारू थे! वह चाहते ही नहीं थे कि ....भारत आजाद हो .....!!"

"और लोग क्या चाहते थे ...?"

"पूरा हिन्दुस्तान एक मत हो कर आजादहिन्द सरकार के साथ था . " दादा जी ने कहा था . उन के आँखों की चमक लौट आई थी . "ऐसा एका मैंने देखा नहीं था, नरेन्द्र! पूरा देश चिल्ला उठा था ...कि आजाद हिन्द के सैनिकों पर ...अंग्रेजी राज के खिलाफ युद्ध करने के कारण ही ...जबरदस्ती मिथ्यारोप लगा कर ...अपमान व् प्रताड़ना की द्रष्टि से मुकद्दमे चलाए जा रहे ...थे!"

"और फिर ....?"

"भूला भाई देसाई ने इस मुकद्दमे में ...अपने दिए बयान से ये सिद्ध कर दिया था ...कि आजाद हिन्द फौज ने न तो विश्व के विरुद्ध युद्ध किया था ...और न ही भागने वाले सैनिकों की हत्या की थी! 'यह कहना सरासर गलत है कि ..जमी हुई ब्रिटिश सरकार के खिलाफ ...यदि कुछ लोग – जो उन के गुलाम हैं, विद्रोह का झंडा उठा लें ...तो वे गद्दार कहलाएंगे ...? गुलाम ही तो अपनी आजादी के लिए युद्ध करेगा ...? दूसरा कौन करेगा . ..? हर गुलाम मौजूदा सरकार के लिए यदि ...अपनी आजादी की घोषणा कर रहा हो ...तो वह भी गद्दार नहीं है! तो फिर लाखों लोगों की जिन के पीछे शक्ति हो ...और जिसे नौ राष्ट्रों का ..स्वतंत्र सरकार के रूप में मान्यता मिल चुकी हो ...और वह बराबरी की हैसियत से युद्ध की घोषणा कर रहा हो ...तब उसे मात्र विद्रोही कैसे माना जा सकता है ....? ये तो एक सरकार से दूसरी सरकार का खुल्लम–खुल्ला युद्ध था!!"

"और फिर ....?" अब मैंने उल्लासित हो कर प्रश्न पूछा था .

"और फिर, बेटे! देश में आई आजादी की उत्तुंग लहर ने ...अंग्रेजों के पैर उखाड़ दिए ...!" दादा जी हँसे थे . "क्या लोग ....क्या सेना ....क्या

पुलिस .....और क्या देश–परदेश ....सब कुछ अंग्रेजों के विरुद्ध था! उन्हें जाना ही पड़ा ...!!" अब दादा जी ने भी हाथ झाड दिए थे .

मुझे लगा था ...कि मैं अभी–अभी एक युद्ध जीत कर चुका था! और उस हुए महासमर का मैं ही तो हीरो था ...? मैं अब सुभाष को नहीं ढूंढ रहा था ...मैं तो अब स्वयं को तलाश रहा था ...भविष्य में होने वाले संग्रामों के लिए ...तयारी कर रहा था ...!!

49

सम्पूर्ण मानवता रो पड़ी थी, नरेन्द्र!

"भारत को महान बनाने का सपना ही एक बीमारी है, अमित!" अमला के कहे शब्द बार–बार उमड़ रहे थे ...उठ रहे थे ...और व्यालों की तरह उस के गले से लिपट कर कह रहे थे, "तुम्हारा सपना ...भी तो यही है, अमित ?"

वह चुप था . शांत समुद्र–सा वह ...उस साबरमती जेल के भीतर एक तूफान की तरह आ बैठा था! न जाने क्या उस के भीतर भरा था ...जो गरम–गरम लावे की तरह ...बाहर बह निकलना चाहता था! भ्रष्टाचार .... अनाचार ..अत्याचार ....और अव्यवस्था को जला कर राख कर देना चाहता था! वह चाहता था कि ...एक साम्राज्य की स्थापना हो ...एक अनूठे साम्राज्य की, जहाँ मानवीयता का मान हो ...जहाँ आदर्शों का आदर हो ....जहाँ का हर नागरिक प्रशिक्षित हो ....और सम्मानित हो!

"आज की व्यवस्था ...बैईमानों की है ...लुटेरों की है!" अमला कहता ही जा रहा था . "मेरे पिता जी – कर्नल कमला सिंह आजाद ...जेल में मरे . ..मैं भी जेल में हूँ ...! क्यों कि हम बुराई से जंग हार गए हैं!! अमित तुम मत लड़ो ....इस आग में तुम मत कूदो ...मेरे लाल ?" अमला बिलख रहा था . "तुम एक संभ्रांत परिवार के बालक हो ...! तुम्हें कमी क्या है, अमित ....जो तुम .....?" अमला ने अमित की आँखों को पढ़ा था . स्वच्छ आसमान की तरह वो आँखें साफ थीं . "तुम्हें चाहिए..क्या ...?" अमला अंत में पूछ बैठा था .

कितना कठिन प्रश्न था, ये ? और इस का उत्तर आज भी उसे न आता था ...! वह जानता ही नहीं था कि ...अपने लिए उसे ..क्या–क्या दरकार था ....? भिन्न प्रकार की भूख थी, अमित की! वह महसूसता था कि ...उसे ...

धन–माल ...जमीन–जायदाद...या कल–कारखाने कुछ भी तो नहीं चाहिए था ? वह जो लेना चाहता था ...वह तो आसमान पर टंगा चाँद था! ...महान भारत ...था – वह!!

"पागल हो गए हो, तुम ...?" अमित ने अपने पिता अनिल चन्द्र की आवाजें सुनी थीं . क्यों तुम ...आवारा बनना चाहते हो ....? जिन का कोई घर –घूरा नहीं होता ...वो लोग स्वयं सेवक बनते हैं ...?"

"नहीं, पापा ...! स्वयं सेवक का मान होता है! स्वेच्छा से समाज की सेवा करना ...और ..." अमित ने दलील दी थी . उस की कच्ची और कोरी समझ ने पहली बार ...जिन्दगी के आस–पास से कुछ चुना था . "समाज सेवा ....."

"मूर्ख बनाने का आडम्बर है, बेटे!" अनिल चन्द्र गरजे थे . "जो लोग तुम्हें ये सीख दे रहे हैं ...घोर स्वार्थी हैं ...सत्ता के भूखे ....कुत्ते हैं! भोले–भाले बच्चों को जाल में फंसा कर ...उन का जीवन बर्बाद कर देते हैं! न तुम पढ़ सकोगे ....न तुम शादी कर सकोगे ....और न ही तुम व्यापार करोगे ....? फिर ....फिर ...." उन का गला रुंध गया था . "अकेला बेटा .....परिवार का अकेला ....चिराग ....?" वह रोने ही लगे थे .

उन के भाव और भावनाओं को तब अमित समझ ही कब पाया था .... ? एक बाप की अपने बेटे से ..की अपेक्षाओं के बारे ...उसे समझ कहाँ थी ...? उस कुल १४ साल की उम्र में ...उस ने तो मन लगाने के लिए एक खिलौना खोज लिया था! उस का मन करता था कि वो ... शाखाओं में जाए ...उन के क्रिया–कलापों में भाग ले ...उन की भाषा बोले ...उन के से कपडे पहने ...और कंधे पर लाठी रख कर ...एक अभिमान के साथ ...सडकों पर डोले ...और गर्व से कहे – मैं हिन्दू हूँ ....!!

"क्या कोमल विचार है ....?" अमित हंस पड़ा था . "तब तो उन मुहावरों के माने पता ही न था!" वह स्वयं से कहता है . "पर आनंद खूब आता था! लगता था –भारत का सरताज मैं ही था! भारत का मैं अकेला ही रखवाला था! और मेरी लाठी में इतना दम था कि ...किसी भी आतताई के हाथ को एक ही वार में तोड़ डालता ...और जो भी भारत की ओर आँख उठता –उसे फोड़ डालता .....

"जोरों से लाठी मारते हो, अमित!"शाखा के शिक्षकों की शिकायत थी . "ये मात्र ...शिक्षा होती है ..., मित्र! सहारे से काम लो ...लड़ने का वक्त आए ... तब जौहर दिखाना ....!" उन का आग्रह था .

"आ गया न ...लड़ने का वक्त ....?" स्वयं से पूछा था, अमित ने . "अब तो वार करना ही होगा ....?" वह कह रहा था . "वरना तो ....भाई जी .....?"

सोच और भी गहराने लगा था ....!!

"'गोधरा काण्ड' का धरा गोधन कोई मामूली खेल नहीं था ?" अमित की समझ अब सब आ रहा था . "यह एक सोचा–समझा ... योजना बद्ध .. .अंतर्राष्ट्रीय ...अभियान था ...जिस का मूल मुद्दा ...भारतीयता को अन्तः समाप्त करना था ....हमारे हिन्दू होने से पहले ही हिंदुत्व को समाप्त करना था! सेक्युलरिज्म के शस्त्र से ...अब की बार देश को इस तरह से काटना–बंटाना था कि ...फिर कभी भी कोई एक न हो पाए ....? कभी भी यहाँ कोई सर न उठा पाए ....कोई भी गर्व से कुछ करने के काबिल ही न रहे ....किसी के पास लगाव–जुड़ाव ...के लिए कुछ न बचे ...और जो अंत में बच रहे –वो निरी छूंछ ही हो! और आदमी के इस रेत को ...मलवे को गुलामी का एक पुख्ता जिस्म पहना कर ...वर्कर्स तैयार कर लिए जांय ...जो काम करें ... सिर्फ काम करें ...उन के लिए जो चालाक हैं...चतुर हैं!!"

"जिन्दगी का दूसरा नाम ...कुछ देना है, लेना नहीं!" नरेन्द्र मोदी की आवाजें लौट–लौट कर अमित के कानों तक आने लगीं थीं. "मित्रो ....बन्धुओ ....भाईओ ...! मैं तो कहूँगा कि ...जितना आनंद देने में आता है ...उतना न तो लेने में आता है ...और न ही लूटने में! मैं चाहता तो अब तक अपने लिए किले बना लेता..गढ़ खड़े कर लेता ...इत्ता कमा लेता कि ...." रुक कर उन्होंने सामने एकत्रित विद्यार्थियों की टोली को निहारा था . "तुम लोग इस राष्ट्र की शक्ति हो ...प्राण हो ......सामर्थवान हो ...! तुम लोग अगर चाहो तो ....युग बदल दो ...तुम लोग चाहो तो चलते वक्त को रोक दो ....और अगर तुम लोग चाहो तो ......"

"आप क्या चाहते हैं ....?" प्रश्न अमित ने पूछा था .

"तुम्हें ....!"बे–लोस उत्तर था, नरेन्द्र मोदी का . "सच में ही अमित ...मैं तुम्हें चाहता हूँ! तुम होनहार हो ....चरित्रवान हो ...और तुम एक अनूठी प्रतिभा के धनी हो! मैंने तुम्हारे भीतर से भारत के भविष्य को देखा है, मित्र! सच

में ...! हाँ, सत्य भाषण के बाद मैं बात समाप्त करूंगा कि ...अगर तुम मेरे साथ जुड़ जाओ ...तो ...."

वक्त वहीँ ठहर गया था! हवा भी रुक कर ताक–झांक करने लगी थी! रात्रि का वो प्रहर हिलना ही न चाहता था! आसमान पर बैठे सितारों ने नरेन्द्र मोदी की मांग को बड़ा कर दिया था . आसमान भी उन दोनों को अमर हो जाने के संकेत दे रहा था! इस मिलन को देखने के लिए उन के मित्रों की आँखें भी खुलीं थीं! नरेन्द्र मोदी की आवाज अभी भी मरी नहीं थी! नरेन्द्र मोदी की पसरी बाँहें ...अमित के आव्हान के लिए फैली ही रहीं थीं! और ...अमित ....?"

उस ने अपने मुकाम को उस दिन पा लिया था ....खोज लिया था ...! उस के प्रश्न का उत्तर उस दिन आ कर मिला था! और न जाने कैसे नरेन्द्र मोदी भी उस के बारे सब कुछ जानते थे ? एक आश्चर्य ही था कि ...जो वह नहीं जानता था ...वह मोदी जी को पता था ....?

उस शाम के सन्नाटे में अमित और नरेन्द्र मोदी ...एक दूसरे के सामने कई लम्हों तक खड़े रहे थे ....अलग–थलग ....प्रथक–प्रथक ....भिन्न–भिन्न मुद्राओं में ...असम्प्रक्त ....!!

दोनों के बीच समानताएं तो थीं ...पर उम्र की एक बड़ी असमानता भी तो थी ....? नरेन्द्र मोदी पके–पौडे युवक थे! लेकिन अमित तो एक कच्ची ककड़ी–सा लुंज–पुंज युवक ही था ...? उस के भीतर का फैलाव नरेन्द्र मोदी के सिवा किसी और को नजर ही न आया था ...? कुल १८ साल का अमित नरेन्द्र मोदी के लिए – बड का एक पूर्ण पौधा था!

"मैं .....म–म मैं आप के लिए क्या कर पाऊंगा ...., सर ?" भारी कंठ से पूछा था, अमित ने .

"वही ....जो कभी सुभाष ने किया था, अमित!"

"सर ...! पर ....., सर ......"

"देश का युवक तुम्हारी भाषा समझ लेगा, अमित!" हँसे थे, नरेन्द्र मोदी . "तुम्हारी अभिव्यक्ति ....तुम्हारा रुझान ...और तुम्हारा समपर्ण ....तुम्हें वहां तक ले जाएंगे ....जहाँ हमारी राह हमारा रास्ता देख रही है, अमित!"

"सर! पर मैं तो कुछ समझ ही न पा रहा हूँ ...?"

"मैं जानता हूँ! लेकिन मैं ना समझ नहीं हूँ! मैंने जो देखा है ...समझा है .... और जो भोगा है, मैं उसी के आधार पर ...तुम्हें चुनना चाहता हूँ, मित्र!"

"तो ...मेरा भी समर्पण ...स्वीकारिए, सर!!" अमित नत–मस्तक था .

कोई क्या नाम देता इस घटना को ....? कौन–सा रिश्ता बताते, इसे . ..? क्या था – जो उन दोनों को साथ–साथ ले आया था ...? उन का तो परिचय भी पूरा न था ....???

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की बागडोर अब अमित के हाथों में थी!

तन्हाई के उस नितांत एकांत में ....अमित शाह महसूसता है कि .... 'सत्ता' के माने तभी समझ आता है जब ...सत्ता हाथ में आ जाए! सत्ता हाथ में आते ही अपने अर्थ समझा देती है ...! सत्ता हाथ में आते ही – हाथ का हाव–भाव ही बदल जाता है! बोली–भाषा तक अलग–थलग हो जाती है! आँखों में भी अलग ही चमक होती है! और आवाज में जो रौब–रुबाब आ जाता है ...वो तो एक दम अजब की ही बात लगाती है!!

और निर्णय लेने की क्षमता ...काम करने का सलीका ...जोड़ने–तोड़ने की कला ....तथा ...हार–जीत का दंगल ...सब गोटों की तरह स्वयं ही फिट होता चला जाता है! जीत–हार के बजते नगाड़े ....हर्ष–विषाद को पीने–पचाने की कला ....सब कुछ सिखाने लगती है ...!

"और ....और हाँ! और भी ना जाने क्या–क्या नहीं सीखा है ?" अमित ने अंगडाई तोड़ी थी . "पर .....अभी तक ......?"

दिन २६ जनवरी २००१ का था! मैं दिल्ली में था . मुझे दिल्ली में रहते हुए अब एक अरसा हो गया था! १९९८ में जब ये मेरा नेशनल सेक्रेटरी – ओर्गानाइजेशन, का चयन हुआ था ...तब से मैं यहीं था! मुझे दिल्ली अब रास आने लगी थी . मैं गुजरात को भूल अब भारत को याद रखने लगा था! मेरा मन अब महान भारत के गली–कूचों में डोला करता था! और मैं कभी आसाम ...तो कभी जम्मू ...और कभी विदेश तो कभी स्वदेश ....में विचरता रहता था! मुझे अपना ये पद भाने लगा था!

अब हमारी पार्टी को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बनानी थी! अटल जी का राज था! अटल जी से लोगों को आशाएं थीं! वह एक

असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे! उन के पास दूर–द्रष्टि थी . वह श्रजन करता थे! और मैं भी सोचता था कि ..उन के इस साथ आए सामीप्य में –मेरी समझ में भी बहुत बड़ा इजाफा हुआ था! मेरा दिमाग जैसे दशों दिशाओं में खुल गया था! जैसे कि ...जीवन में पहली बार ही मेरी समझ में एक नागरिक की परिभाषा आई थी! मुझे भारत की सीमाओं ...और उन की सुरक्षा का ज्ञान पहली बार हुआ था!!

"मैं तैयार था . मैं आज गणतंत्र दिवस की परेड देखने के लिए उल्लासित था . मैं और भी अपने मित्रों और साथियों को निमंत्रण दे चुका था! 'आप आएं ...और हमारी परेड ...देखें!' मैं उन से कहता रहा था . देश के प्रति समर्पित होने के लिए ये मेरे लिए एक नया अवसर था!

तभी, हाँ ...तभी! एक जोरों का झटका लगा था! मेरे भीतर–बाहर का सब हिल–डुल गया था! मैं गिरते–गिरते बचा था . आकाश–पाताल एक हो गए लगे थे ? मैं बुरी तरह से बमक पड़ा था! क्या था, ये .? मैंने स्वयं से पूछा था . तभी फोन की घंटी बज उठी थी .

"हाँ, मन्नू .....?" मैंने फोन पर कहा था .

"भूचाल ....था ....!"मालवीय बोल रहा था . "दो मिनट का था ..! ७.७ का था ....!"

"तो .....?" मैं झल्ला पड़ा था . "परेड देखने तो आ रहे हो, ना .....?" मैंने पूछा था .

"नहीं ....!" वह तडका था . "तुम पागल हो .....! गधे ....हो ...तुम ...!!" वह मुझे फोन पर ही गरियाने लगा था . "बर्बाद हो गए ....हम ...और ...तुम .....?" वह अपनी कहे जा रहा था .

"क्या हुआ, व्वे .....?" मैंने बड़ी ही सौम्य आवाज में पूछा था .

"गुजरात गया ....!!" उस ने कहा था . "भुज में आया है, ये भीषण भूचाल ....!! सब कुछ गारत हो गया, मित्र!"

"गेट ....योर ...प्लेन ....!!" मैंने उसे आदेश दिए थे . "लेट'स गो ....!! लेट'स ....रन ...!! लेट'स ...." मैं अब हांफ रहा था . "मैं पहुँचता हूँ, मन्नू! देर न ...लगाना ....." मैंने फोन रखते हुए कहा था .

"कुर्सी पर बैठे आदमी के भाग्य का देता है, विधाता!" मैंने आह रिताते हुए स्वयं से कहा था . "ये आदमी नेक नहीं है! ये देश–भक्त भी नहीं है!!" मैंने कुर्सी पर बैठे चीफ मिनिस्टर केशोभाई पटेल के लिए ऐसा कहा था . मैं अब तक बहुत कुछ जानता था! मैं दिल्ली में बैठा था – पर बे–खबर न था ?

"आ रहे हो, सर ....?" अमित का फोन था .

"फौरन ....पहुँच ...रहा हूँ!" मैंने उड़ते हवाई जहाज के भीतर से कहा था . "बस! अब पहुंचे ...तुम्हारे पास ...!" मैंने उसे आश्वासन दिया था . "और, हाँ! उन का क्या हाल है ....?" मैंने चीफ मिनिस्टर के बारे पूछा था .

"बीमार है!" अमित ने बताया था . "बहाना है, बीमारी का!" वह क्रोध में था . "सारी तबाही का कारण–ही .... ये आदमी है!" अमित बौखला रहा था . "सम्पूर्ण बर्बादी है, सर!!" अब अमित रुआँसा हो आया था . "हवाई जहाज से नजर भर कर देखना ...! लगेगा ....कि ...."

सच कहा था, अमित ने . भुज और उस के आस–पास के प्रदेश ....पूर्ण रूप से तबाह हो गए थे! मेरा हृदय काँप–काँप उठा था! इतना भीषण ... और वीभत्स द्रश्य मैंने जीवन में पहली बार ही देखा था!

"हीरोसीमा पर ....एटम बम मारा था, ...अमरीका ने!" मैं अचानक ही दादा जी की आवाजें सुनने लगा था . "समूचा शहर ही जल कर राख हो गया था! ऐसी तबाही विश्व ने पहली बार ही देखी थी! सम्पूर्ण मानवता ही रो पड़ी थी, नरेन्द्र!" कहते–कहते दादा जी भी रो पड़े थे .

50

आदमी चाहे तो आसमान छू ले!

"और ....और ...जापान ....?" मैं पूछ रहा था .

"घुटने टिका दिए थे, जापान ने!" उन का उत्तर था .

"और ....और ...सुभाष ....?"

"ला–पता ....!!" हाथ झाड़ते हुए बताया था, दादा जी ने . "आजाद हिन्द फौज ने भी तो घुटने टिका दिए थे ....? हार गए थे .....रन–बान्कुरे . ...!! और फिर ......"

सपना टूटते क्या देर लगती है ...? जब तक बयार बह रही होती है . ...आसमान भी साफ होता है ...रोशनी बरकरार रहती है ....तब तक समय भी साँसों के साथ–साथ सरकता रहता है! अच्छा ...हो ...या बुरा ...घटता ही चला जाता है! जैसे ही किसी आहट से आँख खुलती है .... सपना चला जाता है!!

"किसी ने तलाशा नहीं, सुभाष को .....?" मैं पूछ रहा था .

"कौन तलाशता उसे ....?" दादा जी का प्रतिप्रश्न था .

"क्यों ....? आजाद हुए भारत ने ....अपने उस सपूत का ....पता ..."

"कौन ...पूछता है, नरेन्द्र ....? रात गई ....बात ...गई ....!" दादा जी टीसे थे . "सुभाष बाबू को यहाँ कौन चाहता था ....? सत्ता हाथ में आने के बाद तो .... खेल ही अलग से आरम्भ हुआ!" दादा जी गंभीर थे . "कौन मरा ...कौन जिया ....कौन जाने ....? कितने बर्बाद हुए – किस ने गिनती की . ...? किसी को क्या मिला – कोई नहीं जानता ...! हाँ! एक बात अवश्य उजागर हो कर आई!"

"वो ...क्या ....?"

"जो अंग्रेजों के मित्र थे – माल उन्हीं को मिला! जो उन के शुभचिंतक थे ...वही मुनाफे में रहे! बाकी को समझ क्या थी ....? लड़ने–मरने वाले आदमी को कभी कुछ मिला है, क्या ....?"

"नहीं ....!"

"तो फिर सुभाष बाबू को क्या मिलता .....? वो आ भी ...जाते तो शायद ......"

"शायद देश के कर्णधार होते .....?"

"नहीं, नरेन्द्र! सुभाष के दुश्मन तो पहले से ही उस का विकल्प सोचे बैठे थे! वो जानते थे कि ....सुभाष सत्ता में अपनी दावेदारी अवश्य करेगा ....! वह हक मांगेगा ...हक ले कर रहेगा ...! वह इतना समर्थ है ....कि ...."

"वह स्वयं क्यों नहीं लौटे .....?"

"कहाँ से लौटते ....?" दादा जी ने मुझे पूछा था . "थे कहाँ ....? लोग कहते थे – हवाई जहाज गिरा ...और वो लाश हो गए .....! लोग कहते थे कि ....वो अलग जहाज ले कर मंचूरिया की ओर उड़ गए ....! कुछ कहते कि ...वो साधू बन गए ....! और कुछ लोग कहते कि .....वो ...."

"खोजा किसी ने नहीं .....?"

"नहीं ....! और अगर खोजा भी तो ....केवल इस लिए कि ...कुछ इस तरह की पुष्टि हो जाए कि ...'न बांस रहे ...और न बांसुरी!'

मैं न जाने क्यों एक जिद्दी बालक की तरह उस दिन ...दादा जी से खूब ही लड़ा था! जैसे सुभाष को न खोज पाना ...दादा जी का ही कसूर था – मैं उन से रूठ गया था! मैं खफा था! मैंने खाना भी नहीं खाया था! मैं सोच रहा था कि मैं ....सुभाष बाबू को जरूर खोज लूँगा ...! जाऊंगा ...मंचूरिया तक ....! पैदल ...चल कर जाऊंगा ....!! और उन को खोज कर ले आऊँगा! मैं उन्हें खोज कर ही रहूँगा ...और उन्हें पूछूंगा ...कि .....

"काल का ग्रास बना आदमी ....लौट भी आए ...तो ....उस की कोई अहमीयत नहीं होती, नरेन्द्र!" दादा जी बताने लगे थे . "हो सकता है ...कि ...नेता जी ने भी यही सोचा हो ....और वो ला–पता हो गए ...हों ....?" अब

दादा जी ने भी अपना मत पेश किया था . ”हो सकता है .....“ वह कहते रहे थे ...पर मैं था कि सुन ही न रहा था .

मैं भी सोच रहा था . मझे भी तो किसी ने नहीं तलाशा था ...? आज घर छोड़े मुझे साल होने जा रहा था! किस–किस ने मुझे खोजा होगा ....? क्यों खोजे ...मुझे कोई ....? मैंने स्वयं से ही प्रश्न पूछा था!!

और दादा जी को भी किस ने खोजा था ....? वो भी तो अकेले ...यहीं मौत की घड़ियाँ गिन रहे हैं ? जीवन –यापन भी एक यतीम की ही तरह करते हैं . लोगों की दया–दुआ पर ही पलते हैं . और मैं ....? कौन था, मैं .....? मैंने पूछा था . क्यों था –मैं ...? मैं जानना चाहता था! एक मन तो आया था कि ...घर की ओर मैं ...स्वयं ही लौट चलूँ . पर फिर मेरा मन न माना था! वह कहीं और भी भटक लेना चाहता था! मैं कुछ और भी सटीक उत्तर खोज लेना चाहता था! जीने के लिए कुछ ऐसे ठोस प्रमाण चाहिए थे मुझे ....जो ....

”मिलता किसी को कुछ नहीं है, नरेन्द्र!“ दादा जी का सपाट उत्तर था . ”भ्रम है .....माया है ....मोह है ....!! आत्मा ...तो अकेली है ....!“

”मैं नहीं मानता, ये दर्शन, दादा जी!“ मैं नाराज था .

दादा जी हँसे थे . बहुत देर तक हँसते ही रहे थे! उन की समझ में कुछ आ रहा था . वह महसूस रहे थे कि ...मेरा मन बिदक गया था! उन्हें पूर्वाभास था कि ...मैं अब रुकूंगा नहीं ...? और वो भी मुझे रोकने के लिए समर्थ न थे!

”फकीर हूँ, बेटे!“ दादा जी कहते रहे थे . ”लेकिन तुम्हारे लिए तो मैंने कुछ जोड़ लिया है! जाना चाहो ....तो जाओ ....!! तिखाल में धन धरा है! लेते जाना . मेरा इंतजार ...मत करना नरेन्द्र! मेरा क्या ...? रहा ...या ..कि ...गया ...!!“ वह खिलखिला कर हंस पड़े थे . ”हंस तो अकेला ही जाता है, बेटे!“ वह बता रहे थे .

”और ...अब मेरी उड़ान ....?“ मैंने भी स्वयं से पूछा था .

”वड़नगर ....?“ उत्तर था .

”गलत ....!!“ मैंने जोरों से कहा था . ”खाली हाथ वड़नगर न लौटूंगा!मेरी मुराद मिली कहाँ है, मुझे ....?“

फिर एक अन्धकार था! फिर मेरा रास्ता गुम था! फिर मेरी बुद्धि भ्रमित थी! फिर से एक घोर निराशा ने आ घेरा था, मुझे! स्वतंत्रता संग्राम का पूरा ब्यौरा सुन कर मैं घायल हो गया था! सुभाष का ला पता होना ही मुझे तोड़ गया था . सुभाष की इस तरह की नियति होगी ....कोई कैसे अनुमान लगा सकता था ....? जिस नेता जी ने देश में एक जलजला ला दिया हो ... आजादी की मशाल रोशन कर दी हो ...देश के युवकों को जांन देने पर राजी कर लिया हो .... 'खून के बदले खून' का नारा दिया हो ....और जो संसार के इतिहास में जगह पा गया हो ....वह यों गुमनामी के दलदल में समा जाएगा ...., बुरा लगा था, मुझे!!

अपने देश वासियों से भी शिकायत थी, मुझे!

लेकिन हाँ, वड़नगर के लोगों के साथ मेरे संवाद अभी भी चलते रहते थे! मैं चाहता रहता था कि ...मैं ...एक दिन जब वहां लौटूंगा ...तो मेरे पास सब कुछ होगा ...! नाम...नखरा ...घन–माल ....और एक सौहरत ....सब कमा कर साथ ले कर चलूँगा! तब लोगों को बताऊंगा ....दिखाऊंगा ....और कहूँगा, 'आदमी चाहे तो आसमान छू ले!' यों गरीबी में दिन काटते ...तुम गधे हो!उठते क्यों नहीं ....? गरीबी कोई ढोल है –जिसे तुम पीटते रहते हो ....?

"गंगा सागर का मेला पड़ा है!" दादा जी ने मेरा ध्यान तोडा था . "चलोगे ....?" उन्होंने पूछा था .

"क्या है, ये गंगा सागर ....?" मैं पूछ ही बैठा था .

"सब से श्रेष्ठ तीर्थ है, हम हिन्दूओं का ....!" वह बोले थे .

"तब तो मैं अवश्य ही चलूँगा!" मैंने सहर्ष कहा था .

तीर्थों पर जा कर ही तो लोगों की मुरादें मिलती हैं ..... मैंने अपने आप से ये एक वायदा किया था!!

51

जरूर–जरूर कोई विस्फोट होगा!

हवाई पट्टी पर खड़े अमित को मैंने उतरने से पहले ही देख लिया था!

वह अकेला न था . उस के साथ उस के चुनिन्दा लोग, लीडर, समाज–सेवी और जा–बाज ...स्वयं सेवक मौजूद थे! वह नेक और जुझारू इरादों से लबालब भरा था! वह आज दो–दो हाथ करने आया था! वह आए उस दैत्याकार भू–कंप से जूझने को तैयार खड़ा था! एक शक्ति–पुंज–सा अमित उस दिन मुझे बहुत भला लगा था!

मैं भी स्वयं में धन्य हुआ लगा था! मैंने जो भी अब तक अमित को सिखाया–पढ़ाया था ...उस ने उसे मूर्त कर के दिखा दिया था! अमित में एक आग थी – ठंडी एक आग थी –उस में ....जो मुझे देश –हित के लिए हितकर लगी थी! यही कारण था कि मैं ...अमित को ले कर बहुत आशावान था ....स्वस्थ था!

"भाई ...जी ....!!" गर्रा कर रोया था, अमित . वह मेरी बांहों में समां गया था . मैंने भी उसे सीने से चिपका लिया था . "बर्बाद ...हो...गया ..., भाई जी ....सब ....!!" उस ने उल्हाना दिया था . "लोग ...." वह सुबक रहा था .

"फिर से बसा लेंगे.....सब ...., अ–मि!" मेरे भी होंठ काँप रहे थे . मैं भी उस के साथ रो पड़ा था . सबब भी रोने का ही था . "फिर से ....बनाएंगे . ...सब ....!!" मैंने अमित की पीठ ठोकी थी . "तुम जैसा श्रष्ठा ...जहाँ हो .. .वहां ....तो ...." मैं कुछ कहते–कहते रुक गया था .

मैंने जमा लोगों को भी देखा था . वो सब भी मुझ से मिलने–भेंटने के लिए ...बे–ताब थे! अपने भरत–मिलाप से लौट अब हम दोनों ...अपने लोगों से मिले थे!

"चीफ मिनिस्टर की तो नींद ही नहीं खुली है .....?" मिलने आए लोगों में से एक बता रहा था .

"चोर है, ये आदमी ....! लूट कर खा गया, गुजरात को ....! अब कहते हैं– बीमार है ....!!"

"हम तो स्वस्थ हैं, पंडित जी ....? चलो! देखते हैं – क्या करना होगा ....?" मैंने तनिक गंभीर स्वर में कहा था . "वक्त शिकायतों का नहीं .... सेवाओं का है! देखते हैं– लोगों को क्या चाहिए ....? देखते हैं ....कि ....."

"मैंने सब संजोलिया है, भाई जी!" अमित बीच में ही बोला था. "मैं आप का दिमाग जानता हूँ . मैंने उसी के अनुसार सब व्यवस्था बो डाली है! आप चल कर देख लें ...."

और मैंने देखा था कि ...अमित ने ...वास्तव में ही उजड़े लोगों को बसाने की पूरी व्यवस्था कर डाली थी . पानी, भोजन, दवा–दारू ....और आने–जाने की पूर्ण व्यवस्था ...उस ने कर ली थी! उस के स्वयं सेवक चारों ओर काम में लगे थे . उस के आदेश–निर्देश चारों ओर हवा में गूँज रहे थे!

अमित ने केम्प लगवाए थे . अमित ने सहायता केंद्र स्थापित करा दिए थे . उस ने संचार व्यवस्था को नया रूप दे दिया था . उस का गिरोह त्रसित और घायल लोगों को ...भू–कंप के बे–रहम जबड़ों से निकाल –निकाल कर सुनिश्चित स्थानों पर ले जा रहा था .

लग रहा था – मानवीयता का अनूठा मेला ...वहां लगा था . दुःख बांटे जा रहे थे . सुख प्रदान किए जा रहे थे . पीड़ा में साझा हो रहा था . प्यासे को पानी और भूखे को रोटी मिल रही थी . वहां डाक्टर थे. वहां सेवक थे . की व्यवस्था में फिर से जीने का इरादा था! आशा थी. अनुराग था....और था –अपनत्व!!

लोग अकेले नहीं थे! यह बात भी अमित ने सिद्ध कर दी थी!!

और मैं ....? अमित का आभारी था ....!!

चाय पीते–न–पीते ...पूरे प्रदेश का नजारा ...मेरी आँखों के सामने आ कर ठहर गया था!

सत्ता के लिए होते संघर्ष का वह वीभत्स द्रश्य मेरी आँखों के सामने कई पलों तक खड़ा रहा था! पार्टी में अपनी धाक जमाने के बाद केशू भाई पटेल ने एक तरह से तो .... पूरे गुजरात को अपने नाम लिख लिया था! चूंकि पटेलों का वर्चस्व था ...और केशू भाई उन के अगुआ थे ...अतः गुजरात एक तरह से ...पटेलों के ही नाम लिख गया था!

शंकर सिंह बघेला अपनी पहुँच और पकड़ का ....जिक्र करते भी ...तो उन्हें चुप करा दिया जाता! महता की आवाज भी नीची ही रहती!!

"आप अपने आप को गुजरात का महाराजा मानते हैं ....?" मैंने यूं ही एक दिन केशू भाई के सामने मुंह खोला था . "अपने सिवा ....आप को ...."

"तो .....? तुम हो कौन, भाई......???" गरजे थे, केशू भाई . "दो टेक के आदमी हो, महाशय ." उन्होंने मुझे धमकाया था .

"और इसी दो टके के आदमी के बल पर पार्टी ने चुनाव जीता है ....?" मैंने उन्हें याद दिलाया था .

"बकते हो ....! तुम्हें घमंड हो गया है ....? मोदी...! मैं तुम्हारे दांत भी कील दूंगा ...." उन्होंने एलान कर दिया था .

और सच में ही उन्होंने मेरे लिए मुसीबतें खड़ी कर दीं थीं!!

एक साथ सारे पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की निगाहें ...मेरी ओर घूम गईं थीं! एक साथ मेरे अब तक के किए–धरे पर पानी फिर गया था! एक साथ मैं ....एक गुनहगार–सा साबित हो गया था! एक साथ ....एक पल में मैं नायक से खल–नायक बन गया था!

अमित का बताया एक–एक तथ्य मेरी समझ में समां गया था!!

"ये लोग ....न देश के हैं ...न ही प्रदेश के!" अमित की राय थी . "न ये राजनेता हैं ....और न ही राजनीतिज्ञ हैं! ये कोरे सठ हैं! स्वार्थी हैं. पेट–भक्त हैं . सत्ता के भूखे भेडिए हैं . समाज में कोई मरे ....कोई जिए ...इन की बला से ....! इन का अपना स्वार्थ ही ...इन के लिए ...सब कुछ है . ये अपने यारों–प्यारों को ही ...सब कुछ सौंपना चाहते हैं! परिवारवाद इन की नस–नस

में ...समाया हुआ है! ये अपने से आगे ...एक गज भी नहीं देखते हैं!" अमित उद्विग्न था. "इन्हें तो हटाना ही पड़ेगा, भाई जी .....?" उस का सुझाव था .

"वक्त को तो आने दो, अमित ....!" मैंने उसे शांत स्वभाव में बताया था . "हर कुत्ते के दिन आते हैं!" मैंने भी रोष जाहिर किया था .

"बघेला का षड़यंत्र चल रहा है ....!" अमित ने सूचना दी थी . "फिर पछाड़ेगा ....इसे .....?"

"चलने दो .....!!" मैंने बे–बाक ढंग में कहा था . "हमें ...कभी भी इस तरह के षड़यंत्र नहीं रचने हैं, अमित! हमें तो देश और प्रदेश दोनों के प्रति ....ईमानदार रह कर काम करना है! न देश पराया है ....न प्रदेश अपना है! ये सब सत्ता का सपना है, मित्र! इस में पड़ कर कभी राह नहीं भूलेंगे .... बस इतना भर याद रखना ....!" मैं मुस्कराया था .

"चोर पीछे के दरवाजे से घुस आया है, नेता जी!" केशू भाई पटेल को सूचना मिल गई थी . "आप के काटे का इलाज भी उस ने खोज लिया है!" केशू भाई के खास आदमी – मीनू पटेल ने उन्हें सूचित किया था . "पूरे प्रदेश में उसी की जय–जयकार हो रही है!" उन के कानों तक आवाज पहुँच चुकी थी!

राजनीती का दंगल भी तो अजब–गजब होता है ....? सत्ता के सूत्र भी तो बहुत ही बारीक होते हैं ....? कब ...कौन–सा पेंच ढीला हो जाए .... कसनेवाले को भी ज्ञात नहीं रहता ....? और अगर तनिक–सी भी निगाह घूम जाए .....तो ....? गजब ही हो जाता है ....!!

"इसे सूचना किस ने दी ....?" केशू भाई पूछ रहे थे .

"अमित शाह ने ....!" मीनू ने बताया था . "यही ...अमित शाह तो इस का चहेता है ....? आप की नब्ज भी उस के हाथ है ?" मीनू ने स्पष्ट कहा था .

"लेकिन ....कैसे ....?" अब की बार चौंके थे, गुजरात के मुख्य मंत्री . "मैंने तो पूरी सावधानी के साथ ....इसे ..प्रदेश से बाहर करा दिया था ....! फिर .....?"

"अमित शाह के यहाँ रहते .....मोदी का प्रदेश पर हक बना ही रहता है! वह आज भी लोगों के मनों पर छाया हुआ है! चुनावों में नहीं देखा था .....?"

"पण ...वोट तो हमारे नाम पर गिरा था ....?" मुख्य मंत्री बोले थे .

"नहीं ....!" मीनू बता रहा था . "वोट भी मोदी के इशारों पर ही गिरा था ....! और वोट अमित शाह के स्वयं सेवकों के इशारों पर ...गिरा था! लोग ...."

"बकते हो, तुम!!" बिगड़ गए थे, मुख्य मंत्री . "घूस ...खा गए हो .....?" उन का प्रश्न था . "आज से मत आना, तुम ....मीनू ....." वह क्रोधित थे .

और तख्ता पलट गया था –केशू भाई का ....!!

तन्हाई के एकांत में बैठा अमित रह–रह कर आते हवा के झोंकों से एक दुश्मन की तरह जूझ रहा था! आज ये हवा क्यों सता रही थी–उसे . ....?

"भीतर बैठे रहो! बाहर नरेन्द्र मोदी का तख्ता पलट जाएगा ....!!" उसे चेतावनी मिली थी . " हिन्दू–मुस्लिम डिवाइड ....और नरेन्द्र मोदी के दिए पुलिस को आदेश ....सब ले कर डूब जाएंगे, बंधू! आज भी यही सिद्ध किया जा रहा है ...कि ...नरेन्द्र मोदी दोषी है! उसी ने पुलिस को कहा था कि . ..हिन्दूओं को बदला लेने दिया जाय ....मुसलमानों को मारा जाए ...प्रदेश को मुस्लिम–मुक्त बनाया जाए .....और ...."

"कौन है –ये ...जो ....?" अमित ने बौखला कर पूछा था .

"शाहरुख ......!"

"कौन शाहरुख .....?"

"जस्टिस शाह आलम की बेटी! स्वयं जस्टिस शाह आलम ....और उन का वही गिरोह ....तीस्ता ....और वो पूरा एन जी ओज का ...गिरोह ....!!"

खतरा इतना बड़ा और भयंकर था कि ....अमित शाह को चक्कर आ गया था!

"कितनी गहरी जड़ें जमा लीं हैं ......इन एन जी ओज ने ....और जस्टिस आफ्ताव आलम ने ....? एक पढ़े–लिखे विद्वान् जज की हैसियत रखनेवाले इंसान .....इतना गिर कर सोचेंगे ....वह हैरान था! वह हैरान था कि ...हिन्दूओं के प्रति ....किस तरह एक सोची–समझी मुहीम चल रही थी ...? शाहरुख जैसी मुसलमान महिलाओं को बहका कर ....इन षड़यंत्रकारीओं ने ....बम–गोलों की तरह तैयार कर लिया था!!

जरूर–जरूर कोई–न–कोई बम–विस्फोट होना था! जरूर ही नरेन्द्र भाई को ....'बाई हुक ....और ....बाई क्रुक ' ये लोग जेल में डाल देंगे ..... और अगर एक बार वो जेल चले गए ....तो ....गया –सब!!

सब किया–कराया मिटटी में मिल जाएगा .....?

52

होनहार हो मेरे लाल!

क्या–क्या नहीं हुआ ...? कौन–सी कोर–कसर उठा के रखी है! अमित सोच रहा था! यहाँ तक कि, ' कंसर्न्ड सिटिजन ट्रिब्यूनल ' का सेवानिब्रत जजों द्वारा गठन करना ...और मार्च–अप्रेल २००२ को ही 'गोधरा' गुजरात के दंगों की जांच करने ....गुजरात पहुँच जाना ...एक आश्चर्य की बात थी! न तो इस आयोग का गठन सुप्रीम कोर्ट ने किया था ...और न ही हाई कोर्ट ने ....? और न ही किसी राज्य या केंद्र सरकार ने इन्हें चुना था ...? सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज जस्टिस बी आर कृष्ण अय्यर की अध्यक्षता में स्वनिर्मित इस जांच दल में ...सुप्रीम कोर्ट के ही पूर्व जज जस्टिस पी वि सावंत, बोम्बे हाई कोर्ट के पूर्व जज जस्टिस एच सुदेश ...एवं ...पूर्व जज जस्टिस लोनी शामिल थे!

यह गठन भी रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव द्वारा गठित –बैनर्जी कमेटी जैसा ही था –जिसे २००६ में गुजरात हाई कोर्ट ने ...असंवैधानिक –करार दिया था!

कमाल तो ये था कि ये स्वनिर्मित जांच दल कह रहा था ...कि ... साबरमती एक्सप्रेस में आग किसी बाहरी भीड़ ने नहीं लगाई ...बल्कि अंदर से ही लगी! जस्टिस कृष्ण अय्यर तो स्पष्ट कह रहे थे कि ...गुजरात में हुए नरसंहार के लिए ...नरेन्द्र मोदी को गिरफतार किया जाए ...और उन पर हत्या का मुकद्दमा चलाया जाए .....?

"ये अधिकार जस्टिस कृष्ण अय्यर को किस ने दिया ....?" पहला प्रश्न दागा था, अमित शाह ने . गुजरात सरकार की ओर से वो प्रश्न पूछ रहे थे . " हैं कौन

...ये श्रीमान जी ...जो ...बे–बुनियाद फैसले सुना रहे हैं ...? ये क्यों चलती वैध जांच प्रक्रिया में ...रोड़ा अटका रहे हैं ....?"

और फिर गुजरात हाई कोर्ट में याचिका दायर कर ....इस आयोग की कहानी का ...अंत ला दिया था – अमित ने!!

लेकिन अब ...शाहरुख और आफ्ताव आलम ...उन के सामने थे! उन के इरादे भी कम घातक न थे ....? भगवान् न करे .....???

कानून का पेच अगर उल्टा पड़ जाए ...तो इस काटे का इलाज फिर . ..नहीं हो पाता ....?

"निकलो, अमित!" उस का मन बोल रहा था . "भाई जी ....अकेले हैं! बात बिगड़ गई तो ......???"

ताबड़–तोबड़ अमित का सन्देश मिला था तो मैं सकते में आ गया था . था कुछ – मैंने भी अनुमान लगाया था . फिर मैं उस से मिलाने पहुँच गया था!

"चाहे जो करो ....अब मुझे बाहर निकालो, भाई जी!" उसी मुलाकात में अमित ने गोट चल दी थी . "मुझे शक है ....कि ...आप चोट के नीचे आ जाएंगे ....!" उस ने स्पष्ट कहा था . "शाहरुख ...और आफ्ताव आलम ... मुसीबत बो रहे हैं ....! अगर उन की चाल सीधी पड़ गई ...तो हम पिछड़ जाएंगे ...."

हम दोनों एक लम्बे अरसे तक एक –दूसरे की आँखों को पढ़ते रहे थे ....परखते रहे थे ...! एक अविश्वास था ...जो बार–बार अमित की आँखों में लहक आता था!

"आफ्ताव आलम ..निहायत ही कट्टर मुसलमान है! धर्म के नाम पर ... .अपने मजहब के लिए ....और इस्लाम की खातिर ...वह कोई भी कीमत चुका सकता है!" अमित ने स्पष्ट रूप से कहा था . "जहाँ धर्म ...हम लोगों के लिए एक कमजोरी का नाम है ....वहां इन के लिए धर्म एक जज्बे का नाम है ...जूनून है ....पागलपन है! अच्छा खासा पढ़ा–लिखा मुसलमान ... धर्म का नाम लेते ही पागल हो जाता है!" तनिक हंसा था, अमित. "और हम हो जाते हैं –विनम्र ....नत–मस्तक ....मौम ...और दयालू ...!" उस ने कटाक्ष किया था . "यही हमारी सब से बड़ी कमजोरी है, भाई जी!" अमित ने दो टूक कहा था .

अमित कितना सही था ....या कितना गलत ....यह आज फिर एक बार मेरे सामने प्रश्न बना खड़ा था!

"गंगा सागर हिन्दूओं का महान तीर्थ है ...., नरेन्द्र!" दादा जी की आवाज फिर से मैं सुनने लगा था . "सारे तीरथ ...बार–बार ....गंगा सागर ...एक बार ...!" दादा जी ने जुमला कसा था . "मकर संक्रांति ....की १४ जनवरी को ...हर साल मेला लगता है!" वह बताने लगे थे .

"क्यों .....?" मैं पूछ बैठा था .

"बस ...लोग मानते हैं ....मनाते हैं ...! देश–विदेश तक का हिन्दू आता है! मान्यता है ...गंगा सागर में स्नान करने की ....! और ....."

"धरम में क्या धरा है, दादा जी .....?" मैंने उपहास किया था . "मैं तो इसे निरा ढोंग मानता हूँ ....!" मेरी बे–बाक राय थी .

"जा कर देखो, न ....?" दादा जी की राय थी . "देखो ....सोचो .... समझो .....! लोगों से भी पूछो ...! आने वाले यात्रियों से मिलो ...! तब कोई राय कायम करना ...!!" उन का सुझाव था .

"कितने ....न जाने कितने तीर्थ है, हमारे .....?' मैं फिर से हंसने लगा था . "हमें तो मालूम ही नहीं ....."

"चार धाम हैं, हिन्दूओं के!" दादा जी ने मुझे बताया था .

"एक को तो मैं भी जानता हूँ!"

"कौन सा ....?"

"यही ...! गंगा सागर ....."

"नहीं, पगले ....! ये चार धाम में शामिल नहीं है! बदरीनाथ, द्वारका, पूरी और रामेश्वरम – ये चार धाम हैं! देश के चार छोरों पर स्थित हैं .हमारे पुरखों का मुख्य मुद्दा ... हमें भारत –भ्रमण कराने का था! ये देश को जानने के लिए था ....लोगों से मिलने के लिए था ....! वो बड़े ही दूर–दर्शी थे! चूंकि देश बहुत बड़ा था ....और आना–जाना आसान न था ...अतः उन्होंने इसे धार्मिक अभियान बना दिया था! श्रद्धा ...पूजा ...के महत्व को ..इन तीर्थों के साथ जोड़ कर ...मोक्ष का लालच दिया था! और यही कारण था कि ...हर हिन्दू चार–धाम की यात्रा करना अपना सौभाग्य मानता था!"

"पर अब तो कोई नहीं जाता ....?"

"जाते हैं! मैंने चारों धाम किए हैं!" दादा जी ने प्रसन्न हो कर बताया था . "अगर हम ठीक से सोचें, नरेन्द्र! तो धरम ढकोसला नहीं ....एक सच्चाई है ....मान्यता है ...और जीवन जीने के लिए एक ठोस सत्यता है!!"

"करम ....करना ....?" मैंने फिर से प्रश्न किया था .

"धरम के साथ करम जुड़ा है!" दादा जी ने बात काटी थी . "करम तो ....गौ –हत्या भी है ...?" अब दादा जी ने मेरी आँखों में घूरा था . "लेकिन ...ये ...क–र–म .....?"

दादा जी ने इस बार मुझे गलत कदम पर पकड़ लिया था!!

तब मैंने गंगा सागर जाने की राह गही थी .....!!

पर मेरे मन में कोई मोक्ष पाने का लालच न था! और न ही मैं किसी भव–सागर से पार ही होना चाहता था! मैं तो इस में गोते लगा–लगा कर स्नान करना चाहता था! मैं चाहता था कि जीवन को ठोस और सही मूल्यों के साथ जिया जाए ...! बिना किसी पक्ष–पात के मैं ...अपने जीवन को इस तरह जीऊं ....कि उस में कुछ गुण –ज्ञान अवश्य ही हो!

गंगा सागर की यात्रा कम कठिन न थी ? रेल के बाद बस की यात्रा . ..एक पागलपन से कम न थी! न जाने कहाँ से लोगों के हुज्जूम ...इक्कठा हो–हो कर ...आ रहे थे! एक भीड़ का सैलाब–सा चलता चला जा रहा था! गंगा सागर गाँव पहुंचते–पहुंचते मैं ...हैरान और परेशान था! नाव में चढ़ कर गंगा पार करने से ले कर ...कई मीलों तक रेत, दलदल और कीचड में चल कर ...मैं गंगा सागर गाँव पहुंचा था! बहुत थक गया था! बहुत दुखी था . आज मन को खुश करने के लिए मेरे पास कुछ भी न था ....?

लेकिन सच कहूं तो दूसरे ही पल न जाने क्या हुआ था ....कि मैं उस गंगा सागर द्वीप के ऊपर ...लहराते ना–ना प्रकार के धरम –ध्वजों को देख कर ...अभिभूत हो उठा था!

एक अलग किसिम का जन–समूह ...एक विचित्र बसावट में ...बिखर कर उस बलुहे विस्तार पर उभर आया था! तम्बू थे . कुटियाँ थीं . छप्पड़ थे . और थे खुले में लगे डेरे ....? लोग खा–गा रहे थे . नांच–कूद रहे थे!

भजन–कीर्तन कर रहे थे . और सब के सब आनंदविभोर थे! उस नीले आसमान के नीचे ...तने तम्बू ....मुझे अजीब–सी अनुभूतियों से भरने लगे थे!

उस होती चहल–पहल और ....संवाद–परिसंवाद में ...मुझे गूढ़–ज्ञान–सा ...कुछ समझ आने लगा था! लगा था –वो जो भी था ....मोक्ष ही था! जो वहां था –वही तो ज्ञान था ? जो लोग कह–सुन रहे थे ...वह धर्म था ...और उस धर्म का अर्थ था – प्रेम–पूर्वक ...साथ–साथ ...मिल–जुल कर रहना . ....!!

वहां किसी ने भी कोई विशेष व्यवस्था न बनाई थी! जो भी था ...वह सब सहज ही रचा–बसा ...एक समूह था! अति मानवीय इस समूह का एक ही मुद्दा था – श्रद्धा ...और पूर्ण विश्वास के साथ ..गंगा सागर में डुबकी लगाएं ...और माँ गंगा के सागर–मिलन को ..उन की पूर्णता का प्रतीक मान कर ...एक पर्व की तरह मनाएं!!

गंगा – नदी न रह कर सागर बनती है! सुहागिन–सी ....अपनी जीवन–लीला को समाप्त कर ..अपने प्रिय में प्रवेश पा जाती है ....!!

"गौ–मुख से ले कर गंगा सागर तक का सफर कर के पहुंचे हैं!" एक फकत नंगा साधू बता रहा था . "हमारा अखाड़ा ...श्रेष्ठ है ...सर्वोपरि है ... ! और हम कल सर्व प्रथम स्नान का आरम्भ करेंगे ...!" उस का एलान था . "हमारे गुरू ...बाबा अवधूत जी ...कल्याण कल स्नान के बाद प्रवचन करेंगे! " एक घोषणा थी . "मुख्य मंत्री जी कल पधारेंगे ....और ...."

मैं अब कुछ न सुन रहा था! मैं अब केवल अवधूत जी कल्याण के बारे कल्पना कर रहा था .....!!

और मैं उन का प्रवचन सुने बिना रह न सका था!

और आप सच मानिए कि ... जो कुछ अवधूत कल्याण जी ने कहा था – मुझे आज तक अक्षरसह याद है ....!!

"इस देश को धर्म ने ही बचा लिया है, मित्रो!" अवधूत जी कल्याण ने कहा था . "मुगलों का आक्रमण हुआ! हमारी अस्मिता पर ही प्रश्न चिन्ह लग गया ....? हमें जबरन ही मुसलमान बनाया गया! फिर ईसाई आए! उन्होंने भी हमें खूब ही कुचला ....! हमें ईसाई बनाने के लिए उन्होंने भी लालच के बड़े–बड़े बकरे बांधे! कितने ही लोगों को इंग्लेंड ले गए ? राजे–रजवाड़ों को बहका कर ...उन के राज्य हड़प लिए ......और ...."

क्या–क्या बताऊँ ....? मैं अब दादा जी को भूल ...इन अवधूत कल्याण जी का शिष्य बन गया था! मैं इन से इतना प्रभावित हुआ था कि ....आपा ही भूल गया! मैंने भी तब उन्ही की तरह अवधूत बनने का ....निर्णय ले लिया था!

"रहो, हमारे साथ!" कल्याण जी ने कहा था . "संगत की सेवा करो ...!" उन का मेरे लिए आदेश था . "तुम्हारा ...मार्ग ....जहाँ तक मैं देख पा रहा हूँ, नरेन्द्र!" हंस गए थे, वो . "खैर! भविष्य तो हमें भी कहाँ सूझता है ....?" उन्होंने मुझे कई पलों तक घूरा था . "रहो, कुछ दिन हमारे साथ! हमें प्रसन्नता होगी!! पर हाँ ....हो तो होनहार, मेरे लाल ....!!"

53

बोलता–डोलता अमित सच् का प्रतीक है!

भुज में आए भूकंप की कहानी सुन कर अटल जी का चेहरा तमतमा गया था! उन का मुख–मंडल ठीक एक ब्रह्माण्ड –सा तन कर वक्त के सामने खड़ा था . त्रिकाल उन की द्रष्टि में समाया था ...और भूत, भविष्य तथा वर्तमान ...अपने–अपने हक के लिए लड़ रहे थे! राजनीती का पूरा का पूरा परिद्रश्य उन के सामने आ कर ठहर गया था!

"संक्रमण काल है, नरेन्द्र!" एक लम्बी उच्छवास छोड़ कर वह बहुत देर के बाद बोले थे . "एक मुख्य मंत्री को अपने प्रदेश की चिंता नहीं ...? उसे अपने ही स्वार्थ सही लगते हैं – लोग नहीं! सारा –का–सारा माहौल ही विषाक्त हो गया है! क्या करें ....? किसे लें ....किसे छोड़ें ....? अबा –का–अबा ही ...?' घोर निराशा में उन की त्योरियां तन आईं थीं . "वो ...है ...कहाँ .. .?" उन का अगला प्रश्न था .

"बीमार है!!" मैंने शांत स्वर में बताया था .

"बहाना है – ये बीमारी .....! रोग है ....." वो ठहर गए थे . "कहते भी तो लज्जा आती है ....?" उन का स्वीकार था .

"शंकर सिंह ...." मैं यों ही बोला था .

"शंकर सिंह हों .....भयंकर सिंह हों .....और लोई ...सिंह हों .....?' उन का उल्हाना था . "महता हो ....दलीप हो .....और कोई महीप हो .....?" उन्होंने मेरी आँखों में देखा था . "सब –के– सब अकर्मण्य हैं, नरेन्द्र!" उन की आवाज में अनंत का रोष था . "न जाने ...क्या होगा इस देश का ....?" उन

की चिंता थी . "प्रदेश के लोग मर रहे हैं ....बर्बाद हो रहे हैं ... मलबे में दबे हैं ...और मुख्य मंत्री ....?"

"स्थिति ...नियंत्रण में है, अटल जी! आप निश्चिन्त रहें ....." मैंने उन्हें सांत्वना दी थी .

"तुम से मुझे आशाएं ...हैं!" वो धीमे से बोले थे . मैं तुम्हारा काम देखता आ रहा हूँ! तुम्हारी निष्ठा की मैं कद्र करता हूँ . पार्टी को तुम जैसे होनहार युवक ही तो चाहिए ....? न ....कि ...." उन के मुंह का स्वाद खट्टा चूक था! "खैर! मैंने तो अपना निर्णय ले लिया है! ज्यादा सतरंज खेलना बेकार है!" वो एक गंभीर स्थिति से उभर आए थे . "तुम जा कर गुजरात को संभालो ...!" अचानक ही आया था – उन का आदेश! "नरेन्द्र ....!" अब वो मुझे निहार रहे थे . "मेरे ...अपने ....!! नहीं, नहीं ....! तुम ही तो मेरे सपने हो, नरेन्द्र!" वो अपने कवि के चोले में लौट आए थे . "मुझे तुम से वो उम्मीदें हैं ....जो एक गुरु को अपने शिष्य से होती हैं! और लो! मैं तुम्हें वो उत्तराधिकार सौंप रहा हूँ ....जो एक बाप अपने लायक बेटे को सौंपता है!" वो अब चुप थे .

मैं भी चुप था! मेरे दिमाग में एक बर्फीला तूफान आ कर फिट हो गया था!

मैं न जाने कौन से सन्नपात के नीचे था ...? मैं न तो कुछ सोच ही पा रहा था ...और न ही कुछ समझ ही पा रहा था! अटल जी जो कह रहे थे – मैं उसे सुन तो रहा था ...पर उस पर कोई प्रतिक्रिया न हो रही थी ...? शायद मैं जो सुन रहा था – उस के लिए मैं तैयार न था ...या कि ... आशावान न था! जो घटने जा रहा था ...वो तो अघटनीय था ....अनोखा था ...विचित्र था ...और शायद ..पवित्र भी था ....?

कहीं, ...हाँ, हाँ कहीं ...मुझे इस दिन का इंतजार तो था ....? क्योंकि . ..मैं अब सत्ता पा कर ...अपने जोर आजमाने का सपना देखने लगा था!!

"देखना, नरेन्द्र कि ...कहीं ...हमारी कौम को बट्टा न लग जाए ....?" अटल जी ने मुझे सचेत किया था . "विचित्र खेल है, ये! बिलकुल ...चूहा–बिल्ली का मुकाबला है! दिमाग से काम लोगे ...तो कामयाब हो जाओगे ...!" उन्होंने मुझे फिर से निहारा था . "और हाँ! अपने निजी स्वार्थों को समेट कर रखना ...! हक है – वही लेना! लेकिन देते समय उदार बने रहना ...!" अब उन्होंने

मुझे प्रेम–वत्सल निगाहों से घूरा था . "तुम, मेरे मन के हो! मैं चाहता रहा था कि ...तुम्हें ...बड़ी जिम्मेदारियां दूं . आज वक्त आ गया है, नरेन्द्र!" उन्होंने मेरे सर पर हाथ धरा था . "भगवान् तुम्हें दीर्घायु दे ...क्यों कि मैं तुम्हें अकूत जिम्मेदारियां दे रहा हूँ! प्रदेश के बाद ....देश ...और देश के बाद ....?" हँसे थे, अटल जी . "यात्रा है, पगले! और हमारा धर्म चलते रहना है ....!" उन्होंने मुझे वक्त से चेता दिया था!

अचानक मैं आज प्रचारक से शाशक बन गया था!!

मैंने प्रथम सूचना अमित को ही दी थी . अमित उछल पड़ा था . अमित उल्लासित था . अमित ....भावुक था! और अब अमित न जाने क्या–क्या कहने लगा था .....?

"अभी से बाबले हो गए .....?" मैंने अमित से चटक आवाज में पूछा था . "अच्छा, बताओ! लोगों का क्या हाल–चाल है ....?"

"सब प्रसन्न हैं ....प्रभावित हैं ....! आप के आगमन की देर है ....कि ...."

"ज्यादा कुछ नहीं, अमित!" मैंने संकेत दिया था . "कीप इट ए .... लो ...प्रोफाइल .....इवेंट ...!" मैंने आदेश दिया था . "समझ गए ...., न ....?" मैंने प्रश्न दुहराया था .

"समझ गया ....!" अमित हंस रहा था . "आप आईए ......" उस ने स्वागत–शब्द कहे थे .

और ....मैं ....? मेरा स्वयं में बुरा हाल था! अमित को तो मैंने डपट दिया था ....पर ...मुझे स्वयम को रोक पाना कठिन हो रहा था ? भय .... भावनाएं ...विचार ....और आशाएं ...आ–आ कर मुझ से चिपक जातीं . कहतीं – वक्त आ गया है, नरेन्द्र! इस पाजी को मिटा ही देना ....और उसे भी मत छोड़ना ...! और हाँ! वो तो तुम्हारा अपना है ? जागीरें उसे देना! धन का बंटवारा भी स्वयं करना ...? सत्ता का सदुपयोग करना ...! देखो, नरेन्द्र! तनिक–सी भी उक–चूक ले बैठती है! केशो को ...ही देख लो ....?

और अटल जी ने जो कहा था – मैं उस पर ही मनन कर रहा था! उसे पाठ की तरह याद कर रहा था –मैं! उगलियों पर गिन–गिन कर कंठस्त कर रहा था ....कि अब मुझे प्रदेश का मुख्य मंत्री बन कर क्या–क्या करना होगा ...?

"कुछ हट कर करूगा!" मेरा उल्लसित हुआ मन मुझे साधे था . "प्रदेश का रूप–स्वरुप ... कुछ इस तरह गढ़ूंगा ...कि ...पूरे देश के लिए एक आदर्श बन जाए! दुःख–दर्द और इस गरीबी का तो ...अंत लाने का हर प्रयत्न ... करूंगा! हर हाथ को काम ....और ...हर परिवार को खुशहाली दूंगा ....! मैं वो दूंगा ....जो ...."

"देश–काल की चाल तो ....समझ लो, जादूगर ...?" मुझे किसी ने टोका था . "दोस्तों में खेलने लगे ...? दुश्मनों को कौन गिनेगा ....? मत भूलो कि मुख्य मंत्री बनते ही .... तुम्हारे आस–पास सांप–छछूंदर आ बैठेंगे ....? सत्ता संभालना बच्चों का खेल नहीं है, नरेन्द्र ...?"

"भाग जाऊं ..... ?" मैंने गुर्रा कर पूछा था .

"नहीं! " उत्तर आया था . "उलटी गिनती आरंभ करो ....! ये देखो कि ...पहला वार कौन करेगा ....? ये भी समझो कि तुम्हारे मुख्य मंत्री बनने से ...कौन सब से ज्यादा संकट में आएगा ....? पहला वार बचा गए ...तो समझो कि ....बच गए ....!!"

"हाँ... ! " मैं अब एक सोच के सागर में तैर रहा था . "पहला ....वार . ...? हाँ, हाँ! वही करेगा ....और अवश्य करेगा ....!!" एक साथ ही मैं संभाल गया था . "अमित को बताना होगा ....कि ...." एक साथ ही सारी होनी–अनहौनी को मैंने आत्मसात कर लिया था .

राजनीति बहुत टिकाऊ नहीं है – मैं सोच रहा था! तीर है ...तर्कश है ...तर्क भी है ...पर जिन्दगी और मौत इन में से किसी की भी कायल नहीं है! वह जब तक है – है! और जब नहीं है – तो नहीं है!! हमें बस चंद लम्हों के बीच से ...जीना है! आँखें खुली हों ...या बंद हों ....क्या फर्क पड़ता है ....?

अब मेरा विवेक भी मुझे समझा रहा था – शाशक को चोर नहीं होना चाहिए! उसे लालचों से असम्प्रक्त रहने की कला में दक्ष होना चाहिए! सामाजिक शोषण से लोगों को त्रान दिलाना शाशक का पहला धर्म है! व्यवस्था का अर्थ ...समाज के समग्र सुख में है! जो हो ...वो – सब का हो ...! और सब के लिए हो ...! परम्पराएं पड़े ....तो उन के निशान ...लोगों के दिल–दिमाग पर अंकित हों! संम्पन्न समाज ...की संरचना एक संभावना है –सपना नहीं! सब का साथ ...सहयोग ...मनोयोग ...अगर मिलता है ...तो ही ...बात बनती है! अपने–तेरे का चाकू अगर चलता है ...तो मन फट जाते हैं!!

"लोग तो लड़ेंगे ....?" एक उल्हाना आया था . "धर्म के नाम पर ...कर्म के नाम पर ...जाती और जीत–हार को ले कर .....वो लड़ेंगे तो जरूर .....!!"

"और मैं भी लडूंगा, जरूर!" मैं बाहर आ कर अखाड़े में आ खड़ा हुआ था . "देखता हूँ, कौन जीतता है ....?" मैंने अंखिया कर पूरे गुजरात प्रदेश को देखा था .

अमित आज तन्हाई में अकेला बैठा था! अमला नहीं आया था . वह नाराज था . उसे भारतीय जनता पार्टी से शिकायत थी . कांग्रेस पार्टी का कोई कुछ नहीं बिगाड़ पा रहा था – अमला का उल्हाना था! 'तुम्हारा मोदी बेकार आदमी है!' कह कर वह चला गया था .

लेकिन अमित का सोच लौट–लौट कर ...मोदी की मन–पसंद बातों में उलझा था!

१६८२ में ...पहली बार जब अमित की मुलाकात मोदी से हुई थी तो उसे लगा था – वह किसी आदमी से नहीं, अपने अभीष्ट से मिल रहा था! मोदी की आंखों में आशाओं के तैरते समुन्दरों को देख कर अनायास ही जीवंत हो उठा था –वह! हार –जैसा उन आँखों में कुछ भी न था! एक नया पन था – जीतने का नया मंत्र ...लड़ने की उमंग ...कुछ कर दिखाने का दुस्साहस ...और बैरियों पर हावी हो जाने की बेजोड़ कला –उस में थी!

और फिर सन २००२ में उसे मोदी के संरक्षण में ही सरखेज से चुनाव लड़ने का मौका मिला था! चुनाव लड़ने की कला, कौशल ...और चतुराई . ...चालाकी उस ने मोदी से ही ली! चीते की चाल चलता मोदी ...अपनी सतर्क आँखों से लोगों के मनों में उतर जाता! उन से ...उन की बराबरी पर आ कर ...उन की ही भाषा में बात करता! उन से उन के हित–साधन की बातें करते–करते ...अपने हित की बात उन के गले उतार देता! अपनापन ...और एक ऐसा सच्चा सौहार्द वह सभा –सम्मेलनों में पैदा करता ...जहाँ लगता कि ....उन को उन का ही कोई सुहृद मिल गया है ...! लगता – वह उन का है ...उन के लिए है ...और उन का ही रहेगा ...!

आदमी से उस का नाम ले कर बातें करना ....बुजुर्गों के पैर छू कर . ..उन से आशीर्वाद लेना ...महिलाओं की पवित्र भावनाओं का आदर करना . ...और बच्चों के सहज हास–परिहास को बांहों में बटोर लेना ....मोदी का अपना स्टाईल है!

कितना अपनापन दे जाता है – ये आदमी . अमित हैरान था!

सरखेज में चुनाव लड़ते वक्त ....उस ने भी तो इसी कला का प्रयोग किया था ....? उस ने भी तो सरखेज के चप्पे–चप्पे की खबर ले ली थी . ...? उस ने भी तो नरेन्द्र भाई जी की ही तरह ....अपने भरोसे के लोग चुने थे! उन्ही के द्वारा तो उस ने अपनी बात जनता तक पहुंचाई थी ? और उन्ही के द्वारा तो उस ने सरखेज के भीतर–बाहर का पूरा का पूरा परिद्रश्य देख लिया था! घर–घर जा कर अमित ने अलख जगाया था! कहा था – मैं आप का सेवक हूँ! मैं नरेन्द्र मोदी जी का दास हूँ .....उन के अजश्र प्रेम का पुजारी हूँ! मैं उन का अनुयाई ..इस लिए हूँ ...कि वो आप के लिए पूर्ण रूप से समर्पित हैं ...जनता के हैं ...देश के हैं! उन का उद्देश्य जनता की सेवा करने के सिवा और कुछ नहीं है!

"अगर हमारी जीत होती है –तो आप की जीत होती है!" अमित लोगों को बताता . "अगर प्रदेश की प्रगति होती है ....तो आप की प्रगति होती है!अगर आप संपन्न होते हैं ....तो राष्ट्र संपन्न होता है! अतः हमारी नीतियां आप को ही सम्पन्न बनाने के लिए बनेंगीं ...और आप के ही सहयोग से बनेंगीं!!"

लोग अमित को बड़े ही ध्यान पूर्वक सुनते थे! बड़े ही धैर्य के साथ ...वो बैठे–बैठे ...इस उमंगों से भरे सागर को निहारते रहते थे! उन्हें लगता –अमित उन्ही का बेटा–बच्चा था ...जो उन्ही के खेत–खलिहानों में ....कल से ही हल चलाएगा ...और सच्ची–मुच्ची की फसल उगाएगा! अभी तक के लोग तो ठग थे! केशू भाई ...बघेला ....या थगेला .... सब के सब स्वार्थी थे ...झूठे थे ....!!

अमित – बोलता –डोलता ...एक सच का प्रतीक लगता था – उन्हें!!

54

मैं नहीं मरूंगा, पगले!!

चुनाव लड़ने की कला को आत्मसात करने के बाद ही वह भाई जी का दाहिना हाथ बन गया था! वो भी जांन गए थे कि अमित अब अचूक निशाने मारने लगा था! अब तक के लडे अट्ठाईस चुनावों में से वह एक भी चुनाव न हारा था ....?

"इस सब का श्रेय भाई जी को जाता है!" अमित ने स्वीकारा था . "और अगर अमला की अभिलाषा कभी पूरी हुई ...तो वो भी भाई जी के हाथों ही होगी! कांग्रेस का बस्ता भी भाई जी ही बॉधेंगे!" वह प्रसन्न था . "बघेला ... और केशू भाई भी तो दो दिग्गज ही थे ...? दोनों उच्च कोटि के नेता थे ...!! लेकिन भाई जी के साथ भिड़ते ही ....जौंक की तरह ...पानी हो गए थे ...? उन के व्यक्तिगत स्वार्थ उन्हें खा गए ...!" अमित ने असली बीमारी पर उंगली धरी थी . "भाई जी ...जो भी करते हैं – निस्वार्थ करते हैं! सब के हित में और सब के लिए करते हैं!" उस ने निचोड़ निकाला था . "मैं भी बाहर निकल कर ...फिर से ..बढ़–चढ़ कर वही करूंगा ... जो भाई जी चाहते हैं! हिन्दू राष्ट्र के विचार को अब हम छोटा न होने देंगे!" उस ने स्वयं से कहा था .

अमित की आँख अचानक ही दिल्ली की ओर मुड गई थी!अमित

की बेल को ले कर एक भीषण बवाल खड़ा हो गया था!

"केंद्र के तेवर तीखे हैं!" मुझे मेरे नियुक्त अधिवक्ता बता रहे थे . "केंद्र नहीं चाहता कि ...अमित को बेल मिले ....?"

"क्यों ....?"

"इस लिए कि ...अमित को एक ...घोर साम्प्रदायिक तत्व के रूप में देखा जा रहा है!" मुझे बताया जा रहा था . "देश के गण–मान्य लोग, विचारक ...विधिवेत्ता ...और राज–नेता ये मानने लगे हैं कि ...ये आदमी – सो कॉल्ड 'अमित शाह' ..पूरे देश को साम्प्रदायिकता की आग में ...अकेले हाथों झोंक देगा! अगर इसे जेल से रिहा कर दिया तो ....."

मेरा दिमाग घूमने लगा था! घोर निराशा ने आ कर मुझे अँधा बना दिया था! क्रोध था ....जी हाँ! क्रोध था –जो मुझे सब कुछ जला कर राख करने की सलाह दे रहा था! अमित के प्रति मेरा लगाव और प्यार मुझे बहुत तंग कर रहा था ...! और जो मेरी राजनीतिक मजबूरियाँ थीं ...वो तो मुझ से भी बडी थीं ? मैं मात्र एक राज्य का मुख्य मंत्री ही तो था ....?

"लेकिन मुझे हर कीमत पर अमित की बेल चाहिए ....!" मैंने अपना मंसूबा कह सुनाया था .

चुप्पी छा गई थी! सब उपस्थित लोगों को सांप सूंघ गया था! मेरे मुख्य सलाहकार साल्वे का चेहरा पीला पड़ गया था!

"आप ...समझ नहीं रहे हैं ....सर ...कि ..." साल्वे ने मुझे समझाना चाहा था . "आज पूरा देश दो गुटों में बंटा खड़ा है! हिन्दू–मुसलमान की विभाजन रेखा ...को अमित शाह ने रेखांकित कर दिया है! साम्प्रदायिक सोच ...नफरत ... वैमनस्य और विग्रह ...उस मोड़ पर आ कर खड़े हैं ....जहाँ देश खंड–खंड हो कर बिखर सकता है ....? और ....."

"नोंनसेन्स ....!!" मैं गरजा था . "ये सब मन–गढ़ंत कहानियां हैं, वकील साहब! अमित शाह वैसा कोई ऐरा–गैरा, नत्थू खैरा ...नहीं है! वह मिनिस्टर है, मेरा ? वह एक जिम्मेदार नागरिक है ...इस देश का ...? इन आती ... उड़ती ...अफवाहों ...के चक्कर में न आएं आप ....! पत्रकार ....मीडिया ... और पार्टियाँ ...सब मिले हुए हैं! सब को ...."

"लेकिन ....क्यों ....?" साल्वे ने जोर दे कर पूछा था . उन्हें मुझ पर भी शक था .

"इसलिए कि ....चोरों को ...मोदी नहीं चाहिए ...!" मैंने भी दो टूक उत्तर दिया था . "आज जो साजिश चल रही है ....आप उसे समझ नहीं पा रहे हैं ....? लेकिन मैं साफ–साफ देख रहा हूँ ...कि ...देश ...."

"जन–मत ....?"

"जुटाऊंगा ....जन–मत भी .....!!" मैंने टीस कर कहा था . "फिलहाल तो मुझे अमित की बेल चाहिए ....! एट ....एनी ...कौस्ट ...आई ...वांट हिम . ..आऊट ....!!" अब मैंने आदेश दिए थे .

मैं अकेला था . निपट अकेला था – मैं! लेकिन अनंत की आवाजें मुझे कभी भी इस तरह ...निराश–उदास देख कर ...चली आतीं थीं! और तब मैं अकेला न रह जाता था!

"हिन्दू –मुसलमान का मसला बड़े–बड़े पेच खा गया है!" मैं अपने गुरु जी श्री अवधूत जी महाराज की आवाजें अचानक ही सुनने लगा था . बड़ी ही मनहूस घडी थी वो ....जब ये इस्लाम भारत आया था ....और हमने इस का आगत–स्वागत किया था ....?" उन की आवाज में दर्द था . "हमारी संस्कृति ....संस्कार ....और सभ्यता ...गंगा जल से पवित्र हैं! 'वसुधैव कुटुम्बकम' का मंत्र ...हमारे दिमाग की ही उपज है! संकारों से ही हम बड़े हैं ....विस्तृत हैं ....विशाल हैं! और ये बाहर के लोग ....?" वो रुके थे .

"लालची हैं ...!" मैंने एक शब्द सुझाया था .

"हाँ ....! या कि कहें – भूखे–नंगे हैं! हमारा जैसा वैभव इन के पास नहीं है! अतः जो भी यहाँ आता है ...उस की आँख में हमारा ये वैभव समा जाता है! फिर वह ...हमें मार कर ...परस्त कर के ....छल से –बल से ... घात–प्रतिघात से ... हमारा सर्वस्व छीन लेना चाहता है ...? वह तो हमें जीने तक का अवसर प्रदान नहीं करना चाहता, नरेन्द्र ...?"

गुरु जी की आवाज में एक अटूट वेदना थी!!

"घोर अमानवीय ये लोग ....मानवता को भूल ...दानव बन कर हम पर . ..कहर ढाते हैं! और हम ......?"

"लड़ते ही नहीं .....?" मैंने उपहास करना चाहा था .

"लड़ते हैं!" उन्होंने कहा था . "हम लड़ाके हैं ....बांके वीर हैं .... सच्चे–अच्छे सैनिक हैं!" गुरु जी हँसे थे . "लेकिन अयाश ...और अहंकारी नहीं हैं! मुसलमानों के आगमन के बाद से ही हमारी अपनी परम्पराओं का पतन हुआ, नरेन्द्र!" वो बताते ही रहे थे .

मुसलमान –शब्द अनायास फिर आ कर मेरे गले में फांस की तरह अटक गया था!

कुछ था ...कुछ ऐसा जाल था ...जो मुझ पर फेंका जा रहा था –मुझे बदनाम कर – मुसलमानों का घोर बैरी सिद्ध किया जा रहा था! मुझे हर कीमत पर मिटाने का ...षड़यंत्र अपने चरम पर था!

"अब हमें मुसलमानों से क्या उम्मीदें रखनी चाहिए ...?" मैंने एक अटपटा प्रश्न गुरु जी से पूछा था . "देश ...अब तो आजाद है ......"

"कहाँ, नरेन्द्र ?" वो फिर से टीस आए थे . "कट्टर हैं, ये इस्लामी ....! इन्हें सुधारना तो दूर .....इन से तो दूर रहना तक दूभर हो जाएगा ....?" उन की द्रष्टि उठी थी . वह तनिक संभाल गए थे . "मुसलमान और ईसाई आज भी हिन्दुओं को अपनी रयाया के रूप में देखते हैं! मौके की तलाश में हैं, ये लोग!"

"तो हम क्या करें ....?" मैंने पूछा था .

"अब हमें –अपने शाशक का रूप–स्वरुप बनाना है! ऐसा रूप–स्वरुप जहाँ वो आम न हो कर खास हो! ऐसा स्वरुप जो एक नैतिक डर को जन्म दे! खास कर विधर्मियों के लिए हमें अब कड़े नियम–कानून बनाने होंगे! सहज में उन्हें बराबरी सौंप कर फिर गुलाम हो जाना बुद्धिमानी नहीं है, नरेन्द्र!"

गुरु जी चुप थे . मैं भी सोच में डूबा हुआ था . बात तो सच थी . लेकिन उस का सच होना संभव न लग रहा था! देश जहाँ आ कर पहुँच गया था – वहा से लौट कर....अब सतयुग में आना ...मुझे भी असंभव लगा था!

"मालिक हो ....शाशक हो .... नेता हो ....या कोई भी अगुआ हो ....उस का चरित्र अलग होता है! और अलग होना भी चाहिए!" गुरु जी बताने लगे थे . "संकट जब गहराता है तो ....एक चरित्र ही है ....जो आदमी का साथ देता है ...अपना उस का चरित्र!!" उन का कहना था .

और आज वही बात सच थी!!

मैं अफसोस के साथ सोच रहा था कि ...जस्टिस आफ्ताव आलम जैसे उच्च कोटि के लोगों का सोच भी कितना घटिया, टुच्चा और ...साम्प्रदायिक

था ...? उन की बेटी – शाहरुख ....किस कदर होनी–अनहोनी के साथ खेल रही थी ...? ये लोग आज भी अपने आप को शाशक मानते थे ? आज भी उन का इरादा था कि ....

"अगर अमित शाह ...जेल से बाहर आ गया तो ...गुजरात में आग लग जाएगी!" मैं एक शोर सुन रहा था . "गुजरात का ही नहीं ....पूरे देश का मुसलमान ...भयभीत है ....नाराज है! विदेशों में भारत की छवि बिगड़ी है! हमारे व्यापार पर भी प्रभाव पड़ा है! लोग हमें नीची निगाहों से देखने लगे हैं! हिन्दू साम्प्रदायिकता का ये विषैला सांप ...हमारी सारी सद्भावनाओं को सटक रहा है! सोनियां गाँधी ने कहा है .....राहुल जी भी बोले हैं ......! ममता ....और माया ...का मत है ....कि ...."

"नहीं मिलेगी, बेल .....?" मैंने साल्वे को पूछा था . मेरे पसीने छूट रहे थे .

"उम्मीद ...अभी बची है!" उन का उत्तर था . "प्रेस ने कहर ढा रखा है! आप के नाम के नगाड़े बजा–बजा कर ...मुसलमान नांहक में पेट पीट रहे हैं!"

"लेकिन ...वो मुसलमान ....जो मेरे साथ हैं ....जो मेरे भक्त हैं ....जो मेरे लिए ....."

"वही एक आशा –किरण है .... जिसे ले कर मैं लड़ रहा हूँ!" साल्वे हँसे थे . "आप बुरे नहीं हैं ....आप को तो बुरा कहा जा रहा है!!" वह जोरों से हंस पड़े थे .

"शाशक का चरित्र, नरेन्द्र .....?" गुरु जी की आवाजें थीं .

"जी, गुरु जी! मैं सही मईनों में ...एक शाशक का चरित्र गढ़ूंगा ....! मैं आप को कभी निराश नहीं करूंगा ....मैं लडूंगा ...और आप के आशीर्वाद से ...जीतूंगा भी जरूर ....."

"अमित तुम्हारा ...अभिन्न है ....?"

"मैं जानता हूँ, गुरु जी!!" मैंने स्वीकारा था .

और ....आज अमित बेल पर छूट रहा था ....!!

एक अच्छी–खासी जंग हो कर चुकी थी! एक तूफान आ कर गया था!बेल के ऊपर पाबंदियाँ थीं ....शर्तें थीं ...और हिदायतें थीं ...कि ....अमित

गुजरात में न रहेगा!अमित – एक अजूबे की तरह ...कोई सांप ...या बिच्छू–सा कुछ बन कर ही ...जेल से बाहर आया था! और अमित एक अचम्भे की तरह फिजा पर छा गया था ...!!

अमित से लोग मिलने आ रहे थे . अमित को मीडिया ने घेर लिया था! अमित से प्रश्न पूछे जा रहे थे . अमित के बारे में कयास लगाए जा रहे थे!!

"मुझे अपनी नहीं, आप की चिंता खाए जा रही थी, भाई जी!" अमित मुझे बता रहा था . "अब मैं प्रसन्न हूँ! मैं तो जहन्नुम में ...रह कर भी ... जिन्दा ...रहूँगा!" हंस रहा था, वह. "लेकिन ....आप .....???"

"मैं नहीं मरूंगा, पगले ....!!" मैंने अमित को हिए से लगा कर कहा था .

55

दिल्ली के जूते के नीचे नहीं रहेंगे, भाई जी!!

यह २६ अक्टूवर २०१० शुक्रवार का दिन था!

सच में तो मैं किसी भी देवी–देवता –या किसी भी टोना –टोटका का कायल नहीं हूँ! पर, हाँ! परम ब्रम्ह परमात्मा में मेरा अटूट विश्वास है! वह मेरे साथ हर दम बना ही रहता है . मैं यह जानता हूँ ....और मैं यह भी मानता हूँ ...उस ने जो करना है ...वह तो करना है!!

पर आज ...इस दिन ....इस शुक्रवार के दिन ....उसे न जाने क्या करना था ....? मैं मात्र यह सोच–सोच कर ही रोमांचित हो रहा था!

"चित्त भी ....और पट भी ....! कुछ भी हो सकता है ...?" मुझे साल्वे ने बता दिया था . "हाँ...! हमारी तैयारियां मुकम्मल हैं! हमारे तर्क अचूक हैं! हमारे पास सबूत है . हम यह सिद्ध कर देंगे कि ...अमित शाह का सुहराबुद्दीन ...या किसी अन्य की हत्या से ...कुछ लेना–देना नहीं है! और हम ये भी सिद्ध कर देंगे कि ...ये सी बी आई का मन गढ़ंत मुकद्दमा है! ये अमित शाह को फंसाने की साजिश है! और इस में ऊंची हस्तीयों का भी हाथ है! हमारे पास एविडेंस है ...लिखित रूप में ...यह बताने के लिए कि ...अमित शाह का चरित्र हनन किया जा रहा है! और यह कि ...यह एक राजनैतिक शरारत है ...जिस में अमित शाह ही नहीं ...नरेन्द्र मोदी भी निशाने पर हैं!!"

"बेस्ट आफ लक .....!!" मैंने कांपते हुए होठों से कहा था!

"मुझ पर भरोसा रखिए ....आप ?" साल्वे ने जाते–जाते कहा था . "न्यायालय में न्याय अवश्य मिलता है!" उस का कहना था .

मेरी बिगड़ी हालत तनिक सुधर गई थी!

और उस दिन हाई कोर्ट में जौहर हुए थे!!

देश–प्रदेश की ही नहीं ....विश्व की ताकतें उस दिन तुल कर खड़ीं थीं! अपने–अपने पक्ष संभाले ...उस दिन हर तर्क हाई कोर्ट में आ पहुंचा था! और दुनियां की हर पहुँच अब जज के सामने आ खड़ी हुई थी! अचानक अमित शाह एक अपराधी से उठ कर ....आराध्य बन गया था!

"निरी साजिश का शिकार हुए हैं, अमित शाह – मई लार्ड!" आवाजें आने लगीं थीं . "इन्हें तो मात्र इस लिए फंसाया जा रहा है कि ये ...."

"हत्यारे हैं ....!! इन्होने ...निर्दोष लोगों की जानें ली हैं! ये ...इतने शातिर हैं ....माई लार्ड ...कि ...अपने मातहत पुलिस कर्मियों से ... इन्होने कुकृत्य कराए ....उन्हें प्रमोशन ...और पद–प्रतिष्ठा का लालच दिया ....और गलत सूचनाएं थमा कर ...बे–गुनाहों के गले चाक करा दिए! और ये सब के सब ...कोल्ड ब्लडीड ...मर्डर ...हैं, योर ओनर ...! इन के इशारों पर ....पुलिस वालों ने जो नर–संहार किए हैं ...शर्मनाक हैं!! जो साम्प्रदायिकता के बीज इन्होने बोये हैं ...उन की नफरत की फसल ...हमारी न जाने कितनी पीढ़ियों को काटनी होगी ...? हिन्दू–मुसलमान के भाईचारे के ...ये हत्यारे हैं! आज देश जिस कगार पर आ खड़ा हुआ है ....उस के लिए यही जिम्मेदार हैं ....."

"कैसे ....? सबूत ....?" जज ने मांग की थी .

"ये देखिए ....मीडिया की रिपोट ...! अखबार ....और ये देखिए ....."

"सब का सब मन गढ़ंत है, योर ओनर .....! सी बी आई के ये सब ... तोते हैं ....."

छोटी सी एक हंसी कोर्ट के परिसर के आर–पार तक निकल गई थी!

"आप का कोई तोता नहीं है ....?"

"है, योर ओनर ....!" फिर से वही हंसी लौटी थी . "मेरे पास सबूत है! ये देखिए ....और ये लीजिए ....और ये भी पढ़िए ....! पुलिस वालों को जेल में जा–जा कर ...खरीदा जा रहा है, माई लॉर्ड!!"

घमासान युद्ध चल रहा था! तर्क के तराजू पर न्याय तुल रहा था ...! कभी डंडी ...इधर ...तो कभी डंडी उधर ...! जज सहाब भी विभ्रम में थे!

दोनों पक्षों की दलीलें कारगर थीं . दोनों पक्षों के पास सबूत भी थे . और दोनों पक्षों का न्याय पाने का हक भी बराबर का था ...?

"लगता है कि ....अमित शाह को बेल मिलनी चाहिए ....!" हाई कोर्ट की बेंच कह रही थी . "लेट अस ..हैव ...ए ..फैअर गेम ...? लेट द ...ट्रायल प्रूव द केस ....!!" जज उठ गए थे .

अमित शाह को बेल मिल गई थी .....!!

शुकवार का ये २६ अक्टूवर का दिन बहुत ही लंबा हो गया था!

आज रात हो कर ही न दे रही थी ? आज कोई सोना ही न चाह रहा था! आज हर कोई टी वी और मीडिया को सुनने में व्यस्त था! आज सब समझ लेना चाहते थे कि ...सच् क्या था ...और झूठ क्या था ...? अमित शाह क्या वास्तव में ही एक हत्यारा था – आम प्रश्न पैदा हो गया था ...!

"नहीं, नहीं! हाई कोर्ट का फैसला गलत है! सब बिकाऊ हैं! नरेन्द्र मोदी ने सौदा किया है!" नौबत यहाँ तक पहुँच गई थी .

"जस्टिस आफ्ताव आलम ......!!" किसी ने इस नाम को एक नारे की तरह बुलंद किया था . "चलते हैं ..! न्याय माँगते हैं ...!! उन को बताते हैं ...कि उन की ही नाक के नीचे ...हाई कोर्ट क्या–क्या गेम खेल रहा है ...? किस कदर नरेन्द्र मोदी का जादू ...न्याय की आँखों पर पट्टी बाँध कर ... अपराधी अमित शाह को ...."

"कल शनिवार है! फिर इतवार है ...!!" कानून विद बोले थे . "कुछ नहीं हो सकता! कोर्ट बंद है!!"

"होगा ...? जरूर होगा ....???" एक व्यक्ति अखाड़े में कूदा था . "जस्टिस आफ्ताव आलम को आप लोग जानते नहीं ....? इतने जीवट वाला इंसान मैंने आज तक देखा नहीं ? चलो! अर्जी ...लिखो!!"

"लेकिन ....कोर्ट ....?"

"उन का घर तो है ....? वो ...तो हैं ...?" उस आदमी की दलील थी . "काम होगा ...! ये ..बेल केनसिल ....कराएंगे ...! हाथों ...हाथ ....और हम . ..."

"नहीं होगी .....?"

"होगी ....!!! और अगर न होगी तो ....पूरा देश जलेगा .....! फिर से 'गोधरा' होगा ....? फिर से ....."

हवा में गर्मी थी . रात जाग रही थी ....!!

"मैं भी सो न पा रहा था ....!!" जस्टिस आफ्ताव आलम कह रहे थे . "कैसे ....कैसे ...हुई बेल ....? इस अपराधी को तो देश निकाला मिलेगा ...! ही ...इज ...टू बी ....हैंग्ड ....!!" उन का कहना था . "मैं देखता हूँ! लाओ! अर्जी ...दो ...!! देखता हूँ ....कि ...."

और देखते ही देखते .....जस्टिस आफ्ताव आलम ने ...अपने घर पर ही कोर्ट की कारवाही आरम्भ कर दी थी!

"अमित शाह को ...गुजरात से बाहर उस समय तक रखा जाए ...जब तक कि उस की बेल कनफर्म ..न हो जाए ...! सी बी आई हाई कोर्ट के फैसले से सन्तुष्ट नहीं है! अत ह ..इस फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी जाएगी ...! इस हालत में अमित शाह ....."

क्या–क्या बालाएं न थीं ....? मैं तो हैरान था .....?

गले मिलते मुझे और अमित शाह को ....पुलिस ने आ कर अलग कर दिया था ....!!

"आप को प्रदेश छोड़ कर जाना होगा ......?" अमित से उन का कहना था . "जस्टिस आफ्ताव आलम के .....आदेश ....."

अमित गुजरात में नहीं रहेगा – अजीब–सी बात थी!

लेकिन अमित जहाँ भी रहेगा ....गुजरात का ही हो कर रहेगा – यह भी मैं जानता था!

"आप व्यर्थ की चिंता कर रहे हैं ...!" अमित की आवाज में खुशी की एक खनक थी . "मैं और सेजल दिल्ली रहेंगे ...!" वो बता रहा था . "पहले आप ने दिल्ली में ...गुप्तवास काटा .... अब हम रहेंगे ....?" वह मजाक कर रहा था . "आई नीड ....सम ...रेस्ट ...!!" वह बता रहा था . "सेजल साथ रहेगी तो ...कुछ राहत मिलेगी ....." वह फिल्ल–फिल्ल कर हंस पड़ा था .

"पाजी ....!!" मैंने उसे कन्धों पर पीटा था . "नौटी ...ब्बॉय ....!!" मैंने प्रसन्नता से कहा था . "लेकिन ......"

"आप का काम .....पहले ...!" अमित ने वायदा किया था . "मैं भूलता कब हूँ, भाई जी ....? मुझे भी चिंता है! मेरे पास योजना है!! फिक्र न करें ....आप ...." वह मुस्करा रहा था . "ये ...महाशय ...आफ्ताव आलम ...खुद भी नहीं जानते कि ...ये क्या कर बैठे ....?" उस ने चुटकी ली थी . "होतव्य के हाथ ...बहुत लम्बे होते हैं, भाई जी! हमारा शुभ हो रहा है! एक के बाद दूसरे दुश्मन के ताश खुलते जा रहे हैं ...." वह बताता रहा था .

"लिस्ट तो लिख रहे हो, ना .....?" मैने पूछा था .

अमित हंस कर चला गया था ....!!

लेकिन मैं अपने सोच को मुट्ठियों में भरे चुपचाप खड़ा ही रहा था ...!

संघर्ष अभी समाप्त कब हुआ था ? अभी तो वह आने को था ...! आरम्भ होने के लिए इजाजत मांग रहा था! हंस रहा था ...और मेरी सामर्थ मुझे बता रहा था ...! मैंने आँख उठा कर देखा था ...तो ...मुझे चुनौतियाँ खड़ी दिखाई दी थीं ...! चुनौतियाँ –ही–चुनौतियाँ ....जो मेरे लिए अब नई तो न थीं ....पर थीं – भ्रामक ? जनता ....और जन–मत ...एक हवा थे ...? कब . ..किधर मुड जाएं – इन का कोई भरोसा नहीं ....?

"अब हम ...ज्यादा दिन ...दिल्ली के जूते के नीचे नहीं रहेंगे, भाई जी . ...?" और एक अमित था कि घोषणा किए जा रहा था . "अब हमें ....." वह रुका था . उस ने मेरे चहरे को पढ़ा था . "अब हमें ...दिल्ली चलने की मुहीम .....?" वह खड़ा–खड़ा मुझ से उत्तर मांग रहा था!!

56

मुझे निर्वाण लेने से रोक दिया था!

अमित ने शायद मेरा दिमाग पढ़ लिया था ? उस ने मेरे मन की बात ले ली थी .

"कृष्ण–बलदेव अब गोकुल से मथुरा ....माने कि दिल्ली जाएंगे ?" मैं मुस्कराया था . "कंस –मामा – माने कि कांग्रेस के पंजे पकड़ेंगे ....!! और ....." मैं रुक गया था . मेरा सोच भी ठहर गया था . मैं एकबारगी विगत में भागने लगा था!

"और .....?" अमित ने फिर से उत्तर माँगा था . वह अधीर हुआ लगा था, मुझे . आज वह किसी जल्दी में था .

"और ...बहू बन कर देश में आई ...और अब 'माता जी' बनी ...सोनिया जी से सीधा मुकाबला ....और आमने–सामने की टक्कर होना ...स्वाभाविक है, अमित!"

"तो होने ...दो! डरता कौन है ....?"

"डरने की बात नहीं .....करने की बात है! तैयारी करने की!" मैं गंभीर था . "तुम एक बात जान लो, अमित ...कि ...'कंस' और ...."माता जी' दोनों ही अभेद्य गढ़ हैं!" मैंने अब अमित का चेहरा पढ़ा था . "काम नहीं ....दो नाम उन की सुरक्षा में ढाल बने खड़े हैं . 'गाँधी' और 'नेहरू' दो नाम हैं ...जो अमरता पा गए हैं! ये दो नाम, अमित हर किसी के जहन में जा बैठे हैं! गाँधी ने ही सब किया – ये सब मानते हैं! नेहरू – महान हैं, यह भी हर कोई मानता है! एक शब्द ...एक भी शब्द ...इन दो नामों के खिलाफ बोला जाए ...तो लोग इसे 'गाली' मानते हैं, अमित!" मैं ठहर गया था .

"तो ....?" अमित ऐंठ कर ...मुकाबले में आ गया था .

"तो ....'अमित' और 'मोदी' दो नए नाम हैं! बच्चे हैं – इन दो नामों के मुकाबले!! लेकिन हैं भी यही दो नाम ....जिन्हें ...हमें बड़ा करना होगा ....? पहुँचना होगा ...लोगों के दिमागों में ...और पुराने नामों को निकाल ....नए नाम ...बिठाने होंगे ....?"

"कैसे ....?"

"काम ....!!" मैं हंस पड़ा था . "तरीका वही है, अमित ...जो हमने गुजरात में अपनाया है! अब हमारे नाम से पहले ...हमारा काम बोलने लगा है!" मैं मुस्करा रहा था . "देश–विदेश .....जनता –जहान .... हमारा काम देखने गुजरात आते हैं! छू–छू कर देखते हैं ...पढ़ते हैं ....सुनते हैं ....सोचते हैं . ..और फिर एक मन बना कर लौटते हैं ..." मैंने अमित को पढ़ा था . "और जानते हो ....वो क्या ले कर जाते हैं ....?"

"क्या ....?"

"'मोदी' .....'अमित' ......और 'गुजरात' .....!!" मैं फिर से हंस पड़ा था . "और ...गुजरात से उठा कर ....हम इसी टेम्प्लेट को ...'भारत' के ऊपर सेट करेंगे .....!!"

"बनता है ....!!" अमित ने स्वीकार में सर हिलाया था .

मेरी बांछें खिल गईं थीं .....!!

और अमित के आग्रह पर ....आज मेरा भी गुजरात छोड़ कर दिल्ली भागने का मन बन गया था ....!!

"घर से भाग कर आए हो ....ना ....?" निर्मोही अखाड़े के महामंडलेश्वर ...कल्याण जी मुझे पूछ रहे थे .

और आश्चर्य ये कि ...मैं ...अचानक एक भगोड़े के भाव से भर गया था!मैं तो भूल ही गया था कि मैं ...वड़नगर से भाग कर कलकत्ता आया था ....और अभी भी हवा में ही तैर रहा था ....?

"जी .....जी ....गुरु जी ....!!" मैंने बड़ी ही विनम्रता से स्वीकारा था .

"मैं भी घर से भाग कर ही आया था ....!" कल्याण जी अब जोरों से हँसे थे . "हम दोनों अब एक जात के हुए, नरेन्द्र!" उन्होंने सहज स्वभाव में कहा था . "क्यों भागे ...घर छोड़ कर ....?" उन्होंने पूछ ही लिया था .

"मैं ....मैं ....अपने आप को ढूंढ नहीं पा रहा हूँ, गुरु देव!" मेरे स्वर और भी विनम्र हो आए थे . "मैं ......" मेरा कंठ भर आया था . मैं चुप हो गया था .

"वक्त बताता है .....आदमी को उस का ठिकाना, वत्स!" वो सौहार्द पूर्वक बोले थे . "मुझे ही देखो ...? पूछो मुझे ....कि मैं ....क्यों भगा था ....?" वह मुस्कराए थे . उन्हें कुछ याद आया लगा था .

और मुझे लगा था कि ...हम दो 'भगोड़े' ....अचानक ही रेल गाड़ी के डिब्बे में ...साथ–साथ आ बैठे थे ....और अब एक अज्ञात की ओर दौड़े चले जा रहे थे ....! हम दोनों अब चाह रहे थे कि ...अपने–अपने सपने कह सुनाएं ....ताकि हमारा सफर ...सफर न लगे ....एक यथार्थ बन जाए ....!!

"मुझे आश्चर्य होता है, नरेन्द्र कि ....मैं एक तपस्वी ....घोर तपस्या के बाद भी ....मात्र एक घटना को नहीं भूला हूँ ...जिस की वजह से मैंने इस संन्यास के मार्ग को अपनाया ...ब्रहमचर्य ...धारण किया ....एक वक्त भोजन करने का ब्रत लिया ....और ....और अपना तर्पण तक कर बैठा ....?"

"कुछ अघटनीय होगा .....या कोई अजूबा ....जो ....?" मैं तनिक निर्भीक हो कर बोल पड़ा था . उन के सामीप्य ने मुझे तनिक निडर बना दिया था .

"अ–जू–बा ......? हाँ, हाँ! अजूबा ही कहें ...तो ठीक होगा ....!" वह प्रसन्न हो कर बोले थे . "आज तक ये अजूबा जिन्दा है ....मरा ही नहीं .... ? मैं इसे भूला भी नहीं! और सच मानो, नरेन्द्र कि ....निगाह चूकी नहीं कि ...." मुस्कराए थे, कल्याण जी .

"कि ....?" मैं भी एक शरारती बच्चे की तरह उन के सर हो लिया था .....उन के विगत में झांकने के लिए!

"कि ....ये ...मेरा शत्रु .....जन्मजात शत्रु –कामदेव ....मेरे लिए अलकापुरी रच देता है! लो, जी! एक हँसता–खेलता ....संसार आ खड़ा होता है! खिलते फूल ...चहकते पंछी .....बहते झरने ....नदी–पहाड़ ....और जो कल्पना में भी न हो ....वह भी निगाहों के सामने आ कर ठहर जाता है!" गुरु जी ने अब मुझे नई निगाहों से निहारा था . वो सोचने लगे थे –शायद कि ...अपनी अगली दास्तान ...मुझ से कहें कि नहीं ...? मैं तो उन के लिए अभी बच्चा ही तो था ...?

"ठीक तुम्हारी उम्र ही तो थी – मेरी!" गुरु जी लौटे थे . "जिन्दगी ने आँखें खोल दी थीं! मैं आनंद लेने लगा था ....जीवन का आनंद .... और जीने का किराया वसूलने लगा था!"

"किस से ....?"

"पिता जी देते थे ...!" गुरु जी मुखर हो आए थे . "घनी थे! बहुत बड़े धनवान थे! पैसा ब्याज पर चढाते थे . लोगों से अनाप–सनाप ब्याज लगा कर ....उन के घर–बार तक नीलाम कर देते थे! पैसा नहीं ...तो कुछ दो – गाय, भेंस, घोडा, , , या घर ....? या फिर जो भी हत्थे लगे – दो भाई ... .? कर्जा तो पटाना ही होता था ....लोगों को ....? तो सब चलता था ...!" हँसे थे, गुरु जी . "यहाँ तक, नरेन्द्र कि ...." वह रुक गए थे . किसी गहरे सोच में जा डूबे थे .

"मैं क्या देखता हूँ, नरेन्द्र ...? पिता जी का रथ नई हवेली के सामने आ कर रुका था . पिता जी रथ से बाहर आए थे . फिर एक बूढा ....अध–बूढा आदमी रथ से उतरा था . और ....और फिर उतरी थी ....एक परी! नई –नवेली वो परी जिस अदा से रथ से नीचे उतरी थी ....मुझे लगा था जैसे वो अलकापुरी से आई कोई अप्सरा थी! फिर वो पिता जी के इशारे पर .. .आहिस्ता–आहिस्ता चल कर ...नई हवेली में समां गई थी . और पिता जी उस अध–बूढ़े व्यक्ति को ले कर ...चौपाल पर आ गए थे . मैं अब भी इस घटना को अपलक देख रहा था . कई लम्हों के बाद वह आदमी कुछ ले कर चौपाल की सीढियां उतर रहा था . मैंने आगे बढ़ कर उस का हुलिया पढ़ा था . गमगीन था . आँखें आंसूओं से भरीं थीं . मन भारी था . और लडखडाते कदमों से वह ....उस कुछ को ले कर लौट गया था!" गुरु जी रुक गए थे . उन्होंने मुझे चलती निगाहों से देखा था . मैं पूरे ध्यान से उन की कहानी सुन रहा था .

"आप के पिता जी ....?" मैंने ही उन का मौन तोडा था .

"पहले भी सात शादियाँ कर चुके थे! सात हवेलियाँ भी बना चुके थे!! ये आठवीं हवेली अब उन की आठवीं पत्नी के लिए थी ...मैं समझ गया था! मैं समझ गया था कि ...पिता जी ...हमेशा की ही तरह उस परी को भी अलकापुरी से ...कर्जे की एवज उठा लाए थे! और वो ...उस परी का बूढा बाप ...कर्जे में सब कुछ दे बैठा था!!" गुरु जी असहज हो उठे थे .

"ना जाने क्यों, नरेन्द्र ....? उस दिन मुझे ...अपना बाप ....बाप नहीं ... एक जल्लाद लगा था! मैं ....मैं ...उस दिन से ही ...उन के खिलाफ हो गया था! मैं ....मैं ...." उन का कंठ भर आया था .

"घर छोड़ कर ....भाग लिए थे ....आप .....?" मैंने कहानी का जैसे अंत ला दिया था .

"नहीं, नरेन्द्र!" गुरु जी भावुक थे . "मैं सीधा ही हवेली में जा घुसा था! मेरा इरादा था कि ....मैं ...उस परी से कहूँगा ....कि ..."

"कहा ....कुछ ...?" मैं भी अधीर था .

"कहाँ ....? मैं तो उसे देखता ही रह गया था, नरेन्द्र! कैसा आकर्षक सौन्दर्य था .....? कैसा मोहक केश–विन्यास था ....? कैसा रंग–रूप था ... .और ...और ...वो उस का चंचल नयनाभिराम ....जिस में मैं ...अपांग डूब गया था ....मेरे लिए तो सर्वथा ...नया–नूतन ...और अपरिचित ही था ....?"

"आप विनीत हैं, ना ....?" उस ने ही मुझे पूछा था . कितनी मधुर आवाज थी, नरेन्द्र ? "मैं ...चित्रा ....!!" उस ने विहस कर अपना नाम बताया था . "ब्याह लाए हैं ...मुझे ...आप के पिता जी ....!" उस ने मुझे सीधी सूचना दी थी . "बैठो ...!" उस ने मुझ से आग्रह किया था . लेकिन मैं खड़ा ही रहा था . मैं उसे देखता ही रहा था – अपलक! "आ –ओ, ना ....?" चित्रा ने अब मेरे एक दम समीप आ कर आग्रह किया था . उस के शरीर से उठती मोहक सुगंध मुझ तक पहुँच गई थी . एक आमंत्रण था –जो चित्रा ने मेरी ओर उछाल दिया था . मैं पागल हो गया था . मैं चित्रा को बांहों में भरने का साहस जुटाने लगा था . मैं ......" गुरु जी ने मुझे निरखा था . "सच, नरेन्द्र! मैं पागल हो गया था ....और ...चित्रा को मैंने बांहों में भर लिया था! और . ..और उस ने भी मुझे स्वीकार लिया था! फिर हमने....हाँ, हाँ ....हमने अपने उस मिलन को ... खूब मनाया था ....खूब गाया था ....और ..."

"और ....?" मैं भी माना न था – पूछ ही बैठा था .

"चित्रा के साथ ...एक दिन पिता जी ने ....पकड़ लिया था ....और नंगी कुल्हाड़ी से वार किया था ...! वार बचा कर मैं तो भाग आया था ...पर चित्रा का क्या हुआ नरेन्द्र, मैं नहीं जानता ....?"

गुरु जी संभले थे . होश लौटा था, उन्हें! उन्होंने ने मुझे फिर से निगाहों में भर कर तोला था!

"निष्पाप आँखें हैं, तुम्हारी!" वह एक लम्बी चुप्पी के बाद बोले थे . "भारत का भविष्य है, उन में!" गुरु जी मुझे अपलक देख रहे थे . "मन करे ...जब तक रहो, हमारे साथ! लेकिन पुत्र ....?" आज उन्होंने भी मुझे वेदांत के बाद ...निर्वाण लेने से रोक दिया था!

57

राजनीति के क्षितिज पर पहला धमाका!!

"कुत्ता तो पागल हो गया, अमित!" नरेन्द्र मोदी फोन पर बातें कर रहे थे . "दिल्ली से बड़ी–बड़ी भ्रामक सूचनाएं मिल रही हैं!" वह बता रहे थे .

"अच्छा है, भाई जी!" अमित चहका था . "अब इसे मारने में आसानी होगी!" अमित शाह अब सहज था . "इन्हें उम्मीद ही नहीं थी कि ...बेल मिल जाएगी ...?" अमित ने अपनी राय दी थी .

"बादल फिर से घिर आए हैं!" मोदी बता रहे थे . "सी बी आई को झटका जो लगा है ? बात तो आगे तक जाएगी ...." उन का अनुमान था .

"मैं अब नहीं डरता, भाई जी!" अमित का दो टूक उत्तर था . "आप गुजरात को संभालें ....मैं इन को संभाल लूँगा ...!" उस की आवाज बुलंद थी . "मैं तो घुस पड़ा ....इन में ....."

"कर क्या रहे हो ....?"

"लोग आए हैं, मिलने! घर पर खूब रौनक है . बधाईयाँ आ रही हैं . लोग दिवाली मनाने की बात कर रहे हैं ...? प्रसन्नता की ये लहर ....अगर आप देख लेते ...तो गद –गद हो जाते, भाई जी!! लोगों का ये प्यार ही तो मुझे जिन्दा रखता है, भाई जी ....?"

"मनाते हैं, दिवाली! लेकिन ....."

"मैं खबरदार हूँ, भाई जी!"

अमित शाह लोगों के बीच लौट आए थे ....!!!!

"हमें उम्मीद ही नहीं थी, भाई जी कि ....आप को बेल मिलेगी ....?" पार्टी का एक सदस्य सौमित्र बोल पड़ा था .

"क्यों ....?" अमित शाह ने प्रश्न पूछा था . वह अपने अनुयाईयों की राय भी जान लेना चाहते थे .

"भाई जी! पूरा –का–पूरा जमघट ....खिलाफ ...? दिल्ली तक से जोर जो लग रहा था! शोर मच रहा था कि ....अगर अमित शाह जेल से बाहर आ गया तो ....भयंकर तूफान आएगा ....गुजरात फिर से जल उठेगा ....दंगे भड़केंगे ...और हिन्दू–मुसलमान बिफर–बिफर कर लड़ेंगे ...."

"लड़े ...क्या ...?" अमित शाह हँसे थे .

"वो तो ...दिवाली मनाएंगे ....हमारे साथ ....!!" हंसा था सौमित्र भी . "लेकिन अखबारों ने तो गजब ही काट दिया था ...? क्या–क्या नहीं ....लिख गए ...भाई लोग ....?"

"पैसे लेते हैं, मित्र भाई!" दूसरा कोई पार्टी सदस्य बोला था . "बिकाऊ प्रेस है . और ये मीडिया वाले लोग तो ...महा ...." गलियां दीं थीं उस ने .

"देखो, दोस्तो....?" अमित शाह बड़े ही खुश–खुश मिजाज में बोले थे . "न्याय ....और अन्याय ..दोनों ही खुले में लड़ते हैं! अन्याय को अपनी हार का पता होता है ....पर वह लड़ता भी जरूर है! सत्यमेव जयते –ये कोई झूठा संवाद नहीं है ...? ये सच है ....!!" उन्होंने अपने जमा साथियों को नजर भर कर देखा था . "मैं और आप साथ–साथ काम करते हैं! और अब तक आप ने भी महसूसा होगा कि ... झूठ को किसी भी भाव खरीदा जा सकता है ...! लेकिन ...लोगो ...ये भी सच है कि सच नहीं बिकता ....?"

"सत्यमेव ...? जयते ....!!" नारे लगने लगे थे . "सच नहीं बिकेगा, भाई जी ...!" और लोग गले मिल रहे थे ....मिठाईयां खा रहे थे ....मोद मना रहे थे ....

और अब अमित को जम गया था कि वह ....जंग हरगिज नहीं हारेगा . ....!!!!

"अनाप–सनाप क्यों बोल रहे हो ....?" सेजल का प्रश्न था . घर शांत था . वो दोनों अपने अन्तरंग पलों में लौट आए थे . सेजल का चेहरा फूलों–सा खिला था . "दीवारों के भी कान होते हैं – ये तुम जानते तो हो, अमित .

..?" उस ने अमित को चेताया था . "अभी तो तूफान आएगा ....? दिल्ली के लोग यों हार नहीं मानेंगे ....? और एक तुम हो कि ....यों नगाड़े पीट रहे हो ....."

"डंके की चोट पर ही तो लड़ता हूँ, मैं ....?" अमित ने सेजल को समेटते हुए कहा था . "डरो मत ...! लेट ...द ....इनएविटेबल ...हैपन ....!!" उस ने एक दार्शनिक की तरह सेजल को समझाया था . "अरे, तुम्हारा तो ...बेटा है ....? तुम्हारे पास तो एक साम्राज्य है ....? मुझ एक अकेले को ...देश के नाम लिख भी दोगी तो .....कौन घाटा है, तुम्हें ....?" हंस रहा था, अमित .

"मुझे उल्लू .....बनाने में ...तुम्हें आनंद आता है, ना ....?" सेजल गंभीर थी .

"अरे, अरे ....!! लो, भाई ...., मैं चुप .....!!!!" अमित ने मना लिया था, सेजल को .

गुजरात जाग रहा था – तो दिल्ली भी कहाँ सो पा रही थी ....?

"इस बिच्छू को क्यों छोड़ दिया ....?" सी बी आई डाईरेक्टर से प्रश्न पूछा जा रहा था . "तीन–तीन हत्याएं .....दिन–दहाड़े ....? चश्मदीद गवाहों ...की मौत ....? और अब ...ये तुम्हारे सारे सबूत मिटा देगा .....!!" उल्हाना आ रहा था . "यार! ये तो कोई बात ना बनी ....? तुम से तो उम्मीद थी . ...कि ...." फोन अचानक कट गया था .

नींद हराम हो गई थी – सी बी आई डाइरेक्टर – अमर प्रताप सिंह की ....!!

"इस की बेल केंसिल कराओ ....!" आदेश आ रहे थे . "आँख के नीचे रखना, इसे ?" हिदायतें दी जा रही थीं . "तुम जानते नहीं, इस आदमी को .....?" चेतावनी थी .

अचानक ही अमित शाह राजनीति का एक नामी–गिरामी सितारा बन . ..क्षितिज पर छा गया था! पत्रकारों का जमघट कांग्रेस आफिस में धरना दिए था . उन्हें केस के बारे में पूरी –की–पूरी जानकारी चाहिए थी! वह अमित शाह को मिली बेल को ले कर चिंतित थे . इतने सारे अमानवीयता के गीत गाने के बाद भी .....एक जघन्य अपराधी जेल से बाहर आ गया था ...? अखबार के हर पन्ने पर उन्होंने तो अमित शाह का ही नाम लिखा था ....और लिखा था – ये आदमी नर–पिशाच है! इस ने पुलिस के हाथों ...वो

अपराध कराए हैं ....जो ...आज–तक के इतिहास में तो नहीं मिलेंगे ....? और उन सब ने तो शाहबुद्दीन को मिलकर ...देवता–तुल्य सिद्ध कर दिया था!! लेकिन ...

"राम जेठमलानी ने कहा है कि ...ये शाहबुद्दीन ...तो शातिर बदमाश है! इस के पीछे ५ प्रदेशों की पुलिस ...दसियों साल से लगी है! इस के पास से ...४७ ए के ४७ राईफलें बरामद हुई थीं ....और १०० ग्रिनैड मिले थे! एक लाख के करीब ....केश ...और ..."

"ये तो ....बी जे पी के वकील हैं! ये तो गुमराह करते हैं ....!" कांग्रेस के अधिवक्ता अभिषेक मनु संघवी बता रहे थे . "सी बी आई कोई पागल है जो ६ महीनों से ...तफतीश कर रही है ....? ये देखिए ...सी बी आई ने कौन–कौन धाराएं लगाई हैं ....०२ ...बी–४१८ ...और १२० बी ...! इस के अलावा भी धारा ...४१, ...४२, ...६४, ६५, ६८, ...८४...और २२१ के तहत ... मुकद्दमा दायर किया है! ये बे–दाग बच ही नहीं सकता ....?" उन्होंने पत्रकारों को जैसे सिद्ध कर दिखाया था और कहा था – धीरज धरो –तुम्हारी मेहनत रंग ला कर रहेगी!!

पत्रकारों को कुछ मसाला तो मिला था . अभिषेक मनु संघवी की दलीलों में दम लगा था –उन्हें! अब प्रश्नों के बाद प्रश्न तीरों की तरह आ रहे थे! और मुद्दा ...अमित शाह ही था!!

"अरे, भाई! हम तो अपना काम कर चुके हैं!" अब कपिल सिब्बल बता रहे थे . "अब केस सी बी आई का है! कानून अपना रास्ता लेता है .... हमारा–तुम्हारा नहीं! और फिर सुप्रीम कोर्ट ने तो सी बी आई को कहा है ....कहा है कि ....तीन–तीन मौतें हुई हैं ...! मानव समाज का यह पहला केस है ...जहां ...बे–गुनाहों को ...पुलिस ने बे–रहमी से मार गिराया ? अब तो . ...." उन्होंने जमा लोगों को ...नजर भर कर देखा था . वो प्रसन्न थे कि लोग अब अमित शाह का 'सर' मांग रहे थे! "धीरज धरो! सब होगा ....!" उन्होंने हवा में हाथ हिला कर कहा था .

दिल्ली अचानक जाग उठी थी! एन डी सी की मीटिंग में भाग लेने गुजरात के मुख्य मंत्री आए थे! जमा लोगों ने मोदी जी को एक अजूबे की तरह देखा था! पहला ही मुख्य मंत्री था –मोदी ...जिस ने अलग से नाम कमाया था ....और जो दिल्ली के दिल में तीर की तरह आ छिदा था!

"कैसे मेनेज की .....बेल ....?" साथ बैठे मुख्य मंत्रियों ने चुटकी ली थी .

"केस झूठा है!" मोदी जी ने दो टूक उत्तर दिया था . "कहने पर गढ़ा गया है!" मोदी जी की बात में दम था . "केंद्र में बैठे लोग ....अपने आप को खुदा मानते हैं!" अब मोदी जी ने चुटकी ली थी .

"क्यों ...पंगा ...लेते हो, यार ....?" किसी ने हौले से कहा था और सब लोग हंस पड़े थे .

मोदी जी को फिर एक बार लगा था कि ...राज अभी भी ....अंग्रेजों का ही था ...और भारत देश के लोग आज भी गुलाम ही थे!!

प्रेस कांफ्रेंस में अमित शाह का चेहरा दप–दप ...चिरागों –सा जल रहा था!

एकत्रित हुए पत्रकारों को उम्मीद थी कि ...उन्हें एक रीता–थोथा अमित शाह ही मिलेगा ....जो शिकायत कर रहा होगा कि ...उस के साथ घोर अन्याय हुआ था! उसे झूठे केस में फंसाया गया था ...!! पर यहाँ जो अमित उन के सामने था – वो तो कोई और ही था ...?

"कैसी रही – जेल –यात्रा ....?" पहला प्रश्न तीर की तरह अमित शाह की ओर आया था .

"सुखद ....!!" हंस कर कहा था, अमित शाह ने . "आरामदायक ....!!" उन्होंने दुहराया था . "कितनी ....कितनी ...शान्ति ....? कितना–कितना सुकून ....?" वो प्रसन्न हो कर बता रहे थे . "देखते नहीं ....? मोटा हो कर लौटा हूँ .....!!" वह फिर से हंस पड़े थे .

पत्रकारों के चहरे उतर गए थे . वो अब अमित को 'बे–शर्म' वगेहरा की उपाधि दे दे ना चाहते थे ...पर थे तो विवश ...?

"मोदी जी कब जेल जाएंगे ....?" फिर दूसरा विष का भुना तीर आया था .

लेकिन अमित शाह चौंके नहीं थे . वो हँसे थे! अब उन्होंने चारों ओर द्रष्टि घुमा कर देखा था! हवा गरम थी . लोगों के दिमाग भी गरम थे . लोग लड़ने के मूड में थे . उन्हें रोष था कि ...अमित शाह जैसे अपराधी को बेल मिली तो मिली कैसे ....?

"ये तो ...आप लोगों ने ही तय करना है ....?" फिर हँसे थे, अमित शाह . "वैसे ...उन का जेल जाना ....है बहुत कठिन .....!!"

"क्यों .....?"

"उन्होंने क्या किया है ....?" अमित शाह बेधड़क बोल रहे थे . "अरे, भाई! सारे गुनाहों का मालिक तो मैं हूँ ...? वो तो ...निर्दोष हैं!" अमित शाह बताने लग रहे थे .

एक चुप्पी छाने लगी थी . यों विष के भुने तीर भी अकारथ जाएंगे – उन्हें तो उम्मीद ही न थी ....? उन्हें तो उम्मीद थी कि ....अमित शाह ...को घेर कर ...वो लोग आज खूब ही जलील करेंगे ...और फिर रहा–सहा कीचड मोदी के मुंह पर पोत कर ... अपनी –अपनी कहानियां छापेंगे ...और लोगों को बताएंगे कि ....मोदी का जेल जाना भी तकरीबन तय ही था!!

दिल्ली को भी इसी प्रकार की कहानियों की दरकार थी ....?

कहीं मोदी और अमित शाह का डर ...दिल्ली के लोगों के दिलों में .. .जा बैठा था!

"गुजरात के चुनाव बारह में आ रहे हैं, अमित जी ....?" पत्रकारों ने चर्चा का रुख मोड़ा था . "इस बार तो ....कांग्रेस .....?"

"अब कांग्रेस गुजरात में कभी भी नहीं लौटेगी, मित्रो!" दो टूक उत्तर था, अमित शाह का . "पिछले बीस साल से ...कांग्रेस सपने देख रही है ... गुजरात में आने के ...? लेकिन दोस्तों अब अगले पचास सालों तक ...तो इन का आना होगा नहीं!" जोरों से हंस पड़े थे, अमित शाह .

ये भी तीर खाली जाते देख ...पत्रकार तिलमिलाने लगे थे . फिर उन्होंने उसी पुराने अमोघ –अस्त्र को दागा था!

"गोधरा ...को याद करते हैं ...लोग ...तो .....?"

"भूल गए गोधरा को तो ....गुजरात के मुसलमान ....!" अमित की आवाज में दम था . "अब कांग्रेस को मुसलमानों का वोट कभी भी नहीं मिलेगा ....!!"

"क्यों ....?"

"इस लिए कि ...कांग्रेस ...नफरत बता कर मुसलमानों को तोडती है . ...और हम उन्हें प्रेम बता कर जोड़ते हैं! कांग्रेस केवल वोट लेने का सौदा

करती है ...पर हम विकास की बात करते हैं! गुजरात का मॉडल ...देश में हुआ एक नया ही प्रयोग है, मित्रो! और इस विकास में हम सब शामिल हैं! हमने समाज को बांटा नहीं ....जोड़ा है! गोधरा के बाद कोई दंगा तो नहीं हुआ ....? हिन्दू–मुसलमान ...अब भी तो साथ–साथ रह रहे हैं ....?"

और प्रेस के लोग अब चुप थे!!

"और मित्रो! मैं तुम्हें बता देता हूँ कि ....अगर केंद्र में कांग्रेस रही तो . ...एक दिन जब ये पाकिस्तान हमारे सरों पर आ बैठेगा ...तब आप को होश आएगा ....?" अब अमित ने चुटकी ली थी . "टू ... हैव ...कांग्रेस ...एट सेंटर ...इस नांट ...सेफ....!!" घोषणा की थी अमित ने . "और मैं दावे के साथ कहे देता हूँ ....कि ...मोदी जी 'मोदीनौमिक्स' ले कर दिल्ली पहुंचेंगे जरूर!!" हँसे थे, अमित शाह . "आप लोग स्वागत के लिए आना ना भूलना ....?" कह कर वो उठ गए थे .

राजनीति के क्षितिज पर ....ये पहला ही धमाका हुआ था ....!!

58

अब मैंने आक्रमण के आदेश देने थे!!

"दिल्ली लुट रही है, नरेन्द्र!" मैं आवाजें सुन रहा था . "तुम सो रहे हो ...और लुटेरे देश में डाके मार रहे हैं ...? धन–माल लूट–लूट कर लिए जा रहे हैं!" आवाज एक दम स्पष्ट थी . "बफोर्स .....!" मैं सुन रहा था . "टू .. .जी ....?" आवाजें आती ही जा रही थीं . "सत्यम .....?" कोई कहता ही जा रहा था . "कॉमन वेल्थ गेम्स में तो ...लूट मची है, रे!" मुझे किसी ने झिंझोड़ डाला था . "तुम .....तुम ...सोते ही रहोगे ....?" अब की बार उल्हाना आया था . "अकेले गुजरात को ले कर ...कब तक झांझ बजाते रहोगे ....? है क्या, अकेला गुजरात ...? यही तो हर बार हुआ है ..और बारी–बारी देश लुटा है! याद नहीं ......"

अब आ कर मेरी नीद खुली थी . मैंने आँखें खोल कर देखा था . धूनी तप रही थी . कोयले दहक रहे थे . भीना–भीना पवन ...छोटे–छोटे झकोरों से ...बीमार पड़े देश को प्राणदान दे रहा था . गुरु जी ध्यानावस्थित थे! मैं भी उठ कर बैठ गया था . लेकिन ....

"भूल गए ....?" गुरु जी ने मुझे विहंस कर पूछा था . "मैंने बताया न था, नरेन्द्र कि ....भारत ...की गुलामी का इतिहास बृहद है ? याद हो तो ...मैंने कहा था कि ....शुरू–शुरू में जब भी अरब और तुर्क आए थे ...तो हम लड़े थे! लेकिन हम गांधार को बचा न पाए थे ...? कारण था ...! तुर्कों की भारी संख्या ...और राजा जयपाल का छोटा बजूद! यहाँ से कोई भी मदद न पहुंची . हार गए – जयपाल ? सब हार गए – राज–पाठ ...धन–दौलत .. ..और यहाँ तक कि ...स्त्रियाँ भी लुटीं ... और अंत में ....

"अंत में .....?" मेरी नीद खुल चुकी थी .

"अंत में ...चिता बना कर ....जल मरे .....!" गुरु जी की आवाज में आक्रोश था . "क्या करते, बेचारे ....? उन की तो रानी भी साथ लड़ी थी ....? पर विवश थी ....हार गई थी ....!" गुरु जी ने बताया था . "गंधार गया ....और उस के बाद तो ......"

उस के बाद तो हम हारते ही चले गए थे – मुझे याद आने लगा था!

"सत्रह बार आक्रमण किया ...मुहम्मद गजनी ने ...! और हर बार वह एक न एक शिकार को खा कर ही गया ...? धन–माल भी ले कर गया! समग्र भारत तमाशा देखता रहा ....?" गुरु जी ने मुझे घूरा था . "जैसे कि आज ....तुम तमाशा देख रहे हो ....?" वह हंस पड़े थे . "सोच रहे हो – तुम ने तो गुजरात को महान बना लिया ...है! तुम ने तो अपनी मंजिल पा ली है!! और अब तुमने तो ....."

"मैं ....मैं ...और क्या करू.....?" मैं निराश था . "एक मुख्य मंत्री हूँ ....एक प्रान्त का .....सो ...मैं ...."

"देखते नहीं हो, दिल्ली में फिर से ...विदेशियों का राज हो गया है ....?" कड़क आवाज में पूछा था, गुरु जी ने . "मुखौटे हैं, मनमोहन!" उन्होंने स्पष्ट कहा था . "देश में साजिश चल पड़ी है! लोगों को बहकाया जा रहा है! अब की बार ..हिन्दूओं को नंगा कर के ...देश निकाला दिया जाएगा ....और ....."

मैं थर्रा गया था! मैं हिल गया था!! गुरु जी सच ही कह रहे थे ...? एक साथ – धर्मनिरपेक्षता की चली चाल ....मेरी समझ में आ गई थी!

"सब कुछ हार जाओगे, नरेन्द्र!" गुरु जी गरज रहे थे .

मुझे पसीने आ गए थे! दिल्ली पर हमला .....दिल्ली पर चढ़ाई ......?

"गजनी के पास भी क्या था, नरेन्द्र ?" गुरु जी ने मुझे स्नेह से पुकारा था . मैं डर गया था, ना! "गजनी कोई बहुत बड़ी ....राजधानी ...या कुछ ऐसा गढ़ न था – जिस का बखान किया जाए ...?" उन्होंने मुझे फिर से ध्यान पूर्वक देखा था . "यों ही एक उजाड़–वियावान था –सब! पहाड़ी इलाका ...असभ्य लोग ....!" उन की आवाज कड़क थी ."लेकिन ...ये गजनी –अच्छा सैनिक था ...चतुर सिपहसालार था ...और दूरदर्शी था! बहादुर तो

वो था ही ...पर उस ने अपने सरीखे ...और भी बहादुरों को आमंत्रित कर लिया था! कहा था – वहां भारत में धन की धाराएं बहती हैं! वहां सुंदर स्त्रियाँ मिलती है!! वहां के आदमी डरपोक हैं ....और हम आसानी से .. लूट–पाट कर माल कमा लाएंगे!!! चलते हैं .....? वह कहता और उस जैसे ही लुटेरे उस के साथ हो लेते ..."

गुरु जी ठहर गए थे . गुरु जी जैसे थक गए थे! गुरु जी की आँखें नम हो आईं थीं!!

"और हम, नरेन्द्र ....? हम इस भारत–भूमि का भोग करते ....कायर, चूहों की तरह ....बिल बनाने लगते हैं ...! हम शुतुर मुर्ग की तरह ...रेत में मुंह गाढ़ कर ...सोचते हैं कि ...हम तो अब सुरक्षित हैं! लोग सोचते थे – क्या करेगा अब गजनवी ....हमारा ...? लूट–पाट करेगा ...और कुछ माल और स्त्रियाँ ले कर चलता बनेगा ...! हमारा बिगड़ेगा, क्या ....?"

खोटा सोच था –मैंने माना था . कायरतापूर्ण प्रतिक्रिया था – हमारी, मैं गुरु जी की बात समझ गया था!

"ये नहीं कि ....हमारे राजों–रजवाड़ों के पास ...लाव–लश्कर न था ...? और ना यही कि ...हमें लड़ना न आता था ...? लेकिन हमारे पास गजनी जैसी सूझ–बूझ ना थी ....साहस न था ...दूरदर्शिता न थी! हम उठ कर कभी गजनी की ओर चले ही नहीं ....? हमने कभी दो कदम उठा कर न धरे – दुश्मन की ओर ? हम इंतजार करते रहे ....हर बार, उस के आने का . ...और आ कर लौट जाने का ....!"गुरु जी ने मुझे फिर से देखा था .

"पर ....पर ...अब तो ....?"

"क्यों ....? बारी–बारी लाशें उठ जाती हैं, नेताओं की ....?" गुरु जी ने स्पष्ट कहा था . "हर बार हार जाते हैं ....हम! लेकिन न तो ....उठते हैं ... और न ही एकजुट होते हैं ....?" सफेद सच का बयान कर रहे थे, वो . मैं भी सोचने लगा था कि ...सब कुछ हमारी आँखों के सामने ही घट रहा था ...पर फिर भी हम आपस में लड़ते चले जा रहे था ....?

"तुम ....! नरेन्द्र मोदी – तुम, अकेले ...अब ...इस वक्त की ...उन की आँख की किरकिरी हो! उन्हें लगता है कि तुम ...उन का रास्ता रोकोगे ? उन के पास तुम्हारे बारे में सब सूचनाएं हैं . 'गोधरा' के रचे लाक्षाग्रह से जिन्दा बच गए हो – ...इस का मतलब ये नहीं कि तुम्हें जीवन–दान मिल

गया है ?" गुरु जी गंभीर थे . "मुझे तुम्हारी चिंता है, पुत्र!" वो कहीं सोचने लगे थे . "ये लोग बहेलिए हैं! तुम चाहे जितना इन का भला सोचो ..... पर ये मौका आते ही ....तुम्हारे पंख उखाड़ देंगे .....और ...."

अँधेरा छा गया था ....मेरी आँखों के सामने ....!!

"संग्राम वो जीतता है ....जो पहला तीर मारता है!" गुरु जी बता रहे थे . बैठ कर मौत का इंतजार तो हमने हर बार किया है ?" उन का ये उल्हाना था . "हमला करो तो .....जानें ....?" वो मुझे चुनौती दे रहे थे . "सवेरा तो होने को है, नरेन्द्र ....? इस बार मत चूक जाना, पुत्र!!" और वो चले गए थे .

मैं जागा था! मैं उछाला था!! मैंने सब से पहले ...अमित को फोन पर पुकार लिया था! मैं अब ...बैठ कर ...या कि चूहों की तरह बिल में घुस कर मरना न चाहता था ....?

अब मैंने ...आक्रमण के आदेश देने थे ....!!

59

रौंगटे खड़े हो गए थे –ब्रिटिश साम्राज्य के!!

मेरी दृष्टि उठी थी और आसमान छू गई थी!!

अचानक ही 'गुजरात' के स्थान पर 'दिल्ली' आ कर मेरे दिमाग में बैठ गई थी . अब मैं गुजराती न रहा था . पूरे भारत का हो गया था . और हाँ! अचानक ही मुझे सिस्टर निवेदिता का कहा भी याद हो आया था . 'विश्व –भ्रमण' करना, नरेन्द्र! आदमी का दायरा बड़ा होता है! सोच सुलझता है!' और मैं ये भी जानता था कि ...दिल्ली – एक मासूम–सा लगने वाला शहर ... वो बला है जहाँ ...न जाने कितने शाशक, विचारक और विद्वान् आए .. .और चले गए ? उन के पद–चिन्ह दिल्ली आज भी लिए बैठी है! और उन की वीर–गाथाएं भी ...दिल्ली के खंडहरों के साथ–साथ बिखरी पड़ी हैं! और अब मैं ....मैं एक अदना–सा नरेन्द्र मोदी ...अपने दिल्ली जाने के विचार को पक्का कर बैठा था ....!!

छोटा काम न था ? मैं जानता था! और जान का भी खतरा था –मैं मानता भी था!!

"सुपारी दे दी है, आप के नाम की, भाई जी!" अमित की आवाजें थीं . "किसी भी कीमत पर ...अब कांग्रेस आप को ....?" अमित ने मुझे प्रश्नवाचक निगाहों से देखा था .

"मैं मौत से नहीं डरता, अमित!" मैंने विहस कर कहा था .

"पर मैं डरता हूँ, भाई जी!" अमित की आवाज में एक सरोकार था . "इस लिए कि ....भारत अनाथ हो जाएगा ?" अमित भावुक था . "परमात्मा का दिया ...ये एक फरिश्ता भी अगर उड़ गया ....तो देश को कांग्रेस सटक लेगी ?" उस ने स्पष्ट कहा था .

अमित की बात में दम तो था ? अब तक कांग्रेस की लूट सामने आने लगी थी!

कांग्रेस एक कांटे की तरह मेरे गले में आ कर फंस गई थी . कोई था – जो कह रहा था कि ...'कांग्रेस' एक महान उपलब्धि का नाम है . कांग्रेस मात्र एक पार्टी ...या कि ...संस्था ही नहीं ... एक बहती जीवंत विचारधारा है! इसे समझ कर चलो, नरेन्द्र!

बात सच थी. मैंने कांग्रेस को ले कर उस के इतिहास का अवलोकन किया था!

अंग्रेजों की ही बनाई थी –कांग्रेस पार्टी! डाक्टर ह्युम इस के प्रणेता थे . उन का मनसूबा था कि कांग्रेस एक संस्था के रूप में भारतवासियों की सुख–सुविधाओं के लिए काम करे! ये अपने अंग्रेज मालिकों से ...उन के मातहत भारतवासियों के लिए ..चंद सहूलियतें मांगे ...और कुछ वैसी ही रियायतें ले–ले कर ...उन के गुलामों के दिल जीत ले! ऐसा लगे कि ... अंग्रेज मालिक जैसा तो ...उदार उन का कोई अपना देवी–देवता भी न था ...?

और यह कांग्रेस की पहली ही उपलब्धि थी! पढ़े–लिखे भारतीय लोगों को ये विचार बहुत ही भा गया था! सभी ने कांग्रेस का स्वागत किया था ... और उस के मेम्बर भी बन गए थे . अब अंग्रेज मालिकों के साथ उन का अच्छा रसूक बन गया था!

बात बिगड़ी जब तिलक जैसे लोगों ने ....पूर्ण स्वराज माँगा ...और सुभाष चन्द्र बोस जैसे सदस्यों ने बगावत कर दी! विग्रह को रोकने गाँधी आगे आए ...तो सुभाष देश ही छोड़ कर चले गए ....! फिर भी कांग्रेस ने अपने अंग्रेज मालिकों के लिए ...निरंतर काम किया!

"कांग्रेस ब्रिटिश साम्राज्य की लड़ाई में ...धन–जन से मदद करेगी ..." ये एलान हुआ जब कि ...जब कि देश वासी नहीं चाहते थे कि ...वो इस लड़ाई की बला को अपने सर लें! लेकिन हमारे ही पढ़े–लिखे लोग, जो अंग्रेजों की स्वामि–भक्ति के लिए मशहूर हो गए थे – आगे आए और ...देश को युद्ध की भट्टी में झोंक दिया ? धन–जन की बेशुमार क्षति हुई ...और अंग्रेज युद्ध जीत गए!

उन के लालच के बिठाए कबूतर भी युद्ध जीतने के फौरन बाद की उड़ गए!

"कौन सी आजादी ....?" अंग्रेज अब गाँधी जी से पूछ रहे थे . "कब कहा था, हम ने ....?" उन का प्रश्न था . "अभी तुम लोग इस लायक नहीं ...कि तुम्हें आजाद कर दिया जाए ....?" मांग का तोड़ हो गया था .

कांग्रेस खुश थी . उस के मालिक भी प्रसन्न थे . चालाकी से उन्होंने सब कुछ हासिल कर लिया था! देश के लोग ठगे–से देखते ही रह गए! जो उन के लिए लड़े थे –उन्हें मामूली –सी पेंशन दे दी! कुछ को ..चंद तगमे और इनाम–इकरार दे कर चुप कर दिया!!

"कांटा तो निकल गया ....!!" सुभाष के मरने की खबर पा कांग्रेस ने चुपके से जश्न मनाया था . कांग्रेस के तो वरिष्ट नेता भी न चाहते थे कि ...सुभाष लौटे ...? सुभाष तो इन के लिए –कोढ़ में खाज थे ...!!

और अब ये नरेन्द्र मोदी क्या था ....?" प्रश्न मैंने ही पूछा था .

मैं जोरों से हंस पड़ा था! मैं हँसता ही रहा था! मुझे लगा था कि अब की बार ...शायद कांग्रेस को ...मोदी को मारने का सौभाग्य प्राप्त न हो ...? शायद कांग्रेस – जो बूढी हो चुकी थी ...अब की बार विफल हो जाए ...? लेकिन तभी मेरे मानस पटल पर ...कांग्रेस की कामयाबियां एक–एक कर छाने लगीं थीं!

स्वतंत्रता मिलने के बाद ...कांग्रेस के सामने सब से बड़ा खतरा था – एक जुट हुआ –भारत!!

अंग्रेज जा रहे थे! लेकिन वो जाना न चाहते थे ....? वो तो यहीं रहना चाहते थे! वो तो सत्ता स्वयं चलाना चाहते थे! वो न चाहते थे कि अपने बने–बनाए साम्राज्य को ...कंगाल भारतीयों के हाथ सौंप ...खाली हाथ लौटें ...? तब ...हाँ, तब कांग्रेस ने गोटें खेलीं थीं! मुस्लिम लीग के पेट को फाड़ कर ......जिन्ना जैसे जिन को ला खड़ा किया था ...कांग्रेस ने! कहा था – इसे बनाएंगे स्वतंत्र भारत का प्रधान मंत्री ...ताकि मुसलमान भाई प्रसन्न रहें ....और देश का भाईचारा भी बना रहे ....?

ये एक अचूक अस्त्र था – कांग्रेस का ....? जिन्ना, गाँधी और नेहरू – इन तीनों गोटों को कांग्रेस ने ब–खूबी खेला! भनक लगते ही गाँधी बोले थे – तोड़ दो कांग्रेस को! अब कांग्रेस का कोई अस्तित्व नहीं रहा ? लेकिन तभी नेहरू सामने आ खड़े हुए थे –कांग्रेस ने हमें आजादी दिलाई है – उन का कहना था ...!

कांग्रेस नहीं टूटी ...पर भारत टूट गया ....? भारत बिखर गया ....और यह सब किया –कांग्रेस ने ....! कितनी चतुराई से कांग्रेस ने काम लिया ...? देश को बांटा ....हिन्दू–मुसलमानों को बांटा ...अपने यारे–प्यारों को ही माल–मसौदा दिया ...उद्योगपतियों को ...ब्रिटेन बुलाया ...व्यापार में उन्हें हिस्सेदारी दी ... और कुछ को तो वहीं बसा भी लिया ? बड़े–बड़े ओहदेदारों को भी ... इंग्लेंड में बुला कर ...स्थापित किया ...और उन के बच्चों को नागरिकता दी! और भारत के पूरे–के –पूरे हुनर, लियाकत और ...हिम्मत को कौड़ियों के भाव खरीद लिया ...?

कमाल ही था ....? एक आश्चर्य जैसा ही तो था ...? इतना बड़ा नर–संहार होने के बाद भी ....बटवारे को ...भारतीयों ने ...जश्न की तरह मनाया था!!

"जिस दिन आजादी आएगी, मित्रो!" मुझे नेहरू जी के दिए बयान याद हो आए थे . "उस दिन ...भगत सिंह की लाश हमारे और राज के बीच रख्खी होगी ....? और जलियाँ वाला बाग हमारे दिल–दिमागों में धधक रहा होगा ....?" कितना बड़ा एलान था ?

लेकिन हुआ क्या ....? चालाकी से अंग्रेजों ने कांग्रेस की मदद से ... भारत को गुलाम ही बना कर रखा! कॉमन वेल्थ का गठन कर ...अंग्रेज शाशक ही बने रहे! भारत का सोच–विमोच ....राय – मशविरा ....सब इंग्लेंड से ही चला ...और कांग्रेस पूरे देश की मालिक स्थापित हो गई!!

"कांग्रेस ने भारत को आजादी दिलाई ....!" का प्रचार–प्रसार जोरों से होने लगा था! "बिना खडग–बिना ढाल ...के गाँधी जी ...आजादी ले आए ...!" लोग गाने–बजाने लगे थे . "कांग्रेस के इस गीत के लिए ....नेहरू –गाँधी जैसे ....बलिदानी वीर ....?"

"गलत ...!!" मैं बीच में ही बोल पड़ा था . "सरासर गलत है ....ये प्रचार–प्रसार!" मैंने खुली और मुक्त आवाज में कहा था . "कांग्रेस की हार हुई थी ...कांग्रेस ने शोक मनाया था ...! अंग्रेजों के जाने का कांग्रेस ने ....."

"जीता कौन ....?" प्रश्न आ खड़ा हुआ था .

"जीता था –सुभाष चन्द्र बोस ....!" मैंने डंके की चोट कहा था . "भगत सिंह का नहीं ....आजादी के सौदे में ...सुभाष चन्द्र बोस का शव बीच में रखा गया था!" मैं बताने लगा था . "मुझे दादा जी का बताया एक–एक शब्द याद था! मैं जनता था कि सुभाष चन्द्र बोस ...भारत की जनता के

बहुत लाडले थे ....उन के नयनों के तारे थे! और अगर वो लौट आते ... स्वदेश ...तो ....कांग्रेस का अंत तभी आ जाता ...."

कांग्रेस ने ...अंग्रेजों के साथ मिल कर ....चालाकी से ...सुभाष चन्द्र बोस को मार तो दिया ....लेकिन वो सुभाष बाबू के करतब ...और कारनामों को ... न मार पाए ...और न ही सुभाष को भारत के जन–मानस के दिल–दिमाग से ही निकाल पाए ? और द्वितीय विश्व–युद्ध जीतने के बाद भी ....इस विश्व–विजेता को ....सुभाष चन्द्र बोस की लाश ने परस्त कर दिया ....!!

अंग्रेज और कांग्रेस युद्ध जीतने के बाद शरारत पर उतर आए थे!

आजादी के नाम पर भारतीय नेताओं को अंगूठा दिखा कर ...ब्रिटिश साम्राज्य ने अब एक नई चाल खेली थी . वो चाहते थे कि सुभाष चन्द्र बोस की लाश और लश्कर को ...इतने गहरे में गाढ़ दें ताकि ...कभी भविष्य में ... ना तो आजादी का प्रश्न उठे ...और न ही सुभाष चन्द्र बोस की बनाई आजाद हिन्द फौज –जैसा कोई बवाल खड़ा हो ?

"कोर्ट मार्शल ....!!" एलान हुए थे . "इन बागियों को ...कैद में डालो ... नजरबंद करो ...इन्हें! इन को देश के साथ द्रोह करने की सजा मिलेगी! ये सब राज के खिलाफ लड़े हैं ? इन्होने राज के साथ बगावत की है ? पेंशन नहीं ....इन्हें तो फांसी तोड़ी जाएगी! प्रमोशन ...नहीं इन्हें तो जेलों में सडा –सडा कर मारा जाएगा ....ताकि भविष्य में भी सनद रहे कि ...ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ बगावत ...करने का अंजाम क्या होता है?" ये सनसनी खेज खबरें देश में सन्नाने लगीं थीं!

सुभाष चन्द्र बोस को तो ब्रिटिश साम्राज्य ने पहले से ही बागी घोषित कर दिया था! अब आजाद हिन्द फौज को ......?

लाल किला चुना था सारे आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को नजरबंद करने के लिए! इन सैनिकों के सारे हक–हकूक रद्द कर दिए गए थे! अब इन्हें गुनहगार घोषित कर सजाएं सुनानी थीं!

भूला भाई देसाई – जो ब्रिटिश राज के जाने–माने पब्लिक प्रोसिक्यूटर थे, को आदेश हुए थे कि ...वो दिल्ली में लाल किले में नजरबन्द इन सैनिकों का कोर्ट मार्शल कराएं ...और इन्हें सख्त –से–सख्त सजाएं दिलवाएं .....

ब्रिटिश राज फिर से भारतीयों को फांसी पर लटकाने के मनसूबे बनाने लगा था!

ये खबर देश में आग की लपटों की तरह फैली थी! सुभाष बाबू को परमात्मा का भेजा पीर मानने वाले लोग क्रोधित हो उठे थे! जो सैनिक भारत की आजादी के लिए लड़े थे ....उन पर आई मुसीबत को भांप ..अब पूरा देश ही गमजदा था! लोगों को तनिक भी संदेह न था कि ...अब अंग्रेज इन लोगों को फांसी पर लटकाएंगे ....?

भारतीय सैनिक – जो ब्रिटिश साम्राज्य के लिए लड़े थे ...और जिन्होंने अपनी जानों पर खेल कर युद्ध जीता था ....सकते में आ गए थे! ये सैनिक जिन का कि कोर्ट मार्शल होना था – कोई और नहीं उन्ही के तो सहयोगी थे ...? साथी ...और मित्र ही तो थे ....? फैलती फांसी होने की अफवाहें इन्हें डराने लगीं थीं!!

एक लम्बे सोच के बाद इन सैनिकों को लगा था – कि ..ब्रिटिश साम्राज्य ...चोरों की एक जमात से आगे ...और कुछ न था ....? उन के साथ भी तो घोर अन्याय हुए थे ...पक्षपात हुए थे ....और उन का भी तो शोषण हुआ था ...? मालिक अंग्रेज थे – वो तो मात्र किराए के टट्टू ही थे ...? असल में तो ब्रिटिश राज अपने ही सैनिकों को वरीयता देता था ...और उन की तनख्वाहें और इज्जत–आबरू भारतीय सैनिकों के मुकाबले ...कई गुना ज्यादा थी ....?

"मार डालते हैं, इन सालों को .....?" सेना में रोष भड़कने लगा था . "जोकों की तरह चिपक गए हैं ....? ये तो हमारा खून पी कर ही मानेंगे ....?" उन का विश्वास था .

सैनिकों की बगावत की भनक अंग्रेजों और कांग्रेस दोनों को लग चुकी थी! लेकिन इस मोर्चे पर कांग्रेस अकेली और विवश खड़ी रह गई थी! उस की पहुँच सैनिकों तक न थी ?

"देश–द्रोह का मुकद्दमा तो बनता ही नहीं, श्रीमान?" भूला भाई देसाई भरी अदालत के सामने बोले थे . "ये सैनिक तो अपने देश की आजादी के लिए लड़े थे ....? इस पर देश–द्रोह बनता कहाँ है ....?" उन्होंने प्रश्न किया था .

"लेकिन ये ब्रिटिश राज के खिलाफ लड़े थे ....?"

"वो तो सारा देश ही लड़ा है ...यही क्यों .....?" उत्तर था – भूला भाई देसाई का . "माई लार्ड! अपनी आजादी के लिए लड़ना कोई अपराध नहीं होता ...अन्याय नहीं होता ...बल्कि पुण्य होता है ...सराहनीय होता है!" उन्होंने

भरी अदालत में बताया था . "ये सैनिक तो ...भारत के वो लधेंते –लाल हैं ...जिन्हें जनता ..सर–आँखों पर बिठाती है!" उन्होंने अदालत को गौर से देखा था . "अगर इन को सजाएं मिलीं तो .....मेरा अनुमान है, श्रीमान ...कि देश की जनता बे–काबू हो जाएगी ...और उस स्थिति में ...."

"सैनिक विद्रोह पर उतर आए हैं ....!!" लार्ड माउंट बैटन ने चर्चिल को बता दिया था .

रौगटे खड़े हो गए थे –ब्रिटिश साम्राज्य के!!

60

बदबू मारती है –इस अपने–तेरे के संसार में!

मुझे भी तो इसी प्रकार का रोमांच हुआ था जब मैंने पहली बार क्रिस्टी को देखा था ?

गंगा सागर श्रद्धालूओं की भीड़ से नाक तक भरा था! देश–विदेश के लोग गंगा स्नान की तैयारियां कर रहे थे . आज के दिन का महान महात्म्य था! आज के दिन ...इस घडी और नक्षत्र में गंगा सागर आ कर गंगा में स्नान करना बड़े ही महत्व का था!

धूनी जल रही थी . गुरु जी एकाग्रचित्त हो कर अपनी साधना में लीन थे!

अचानक जीर्ण–शीर्ण ... पीत–श्वेत अंग–वस्त्र में ...ऊपर से नीचे तक लिपटी एक आकर्षक ...सुंदर ...लम्बी ...गोरी ...नीली आँखों वाली ...और अपनी भूरी जटाओं को फहराती – युवती धूनी के सामने आ खड़ी हुई थी! मैंने आँखें झिपझिपा कर उसे देखा था . उस ने भी मुझे एक अजूबे की तरह ...पहचानने की कोशिश की थी! छातियों से ले कर उस का नीचे घुटनों तक का शरीर ढंका था! बाकी का सब भस्म में पुता था! मुझे वो महिला परलोक से आई कोई परी लगी थी!

"तुम ......?" उस ने पहले मुझे प्रश्न पूछा था क्यों कि मेरा यहाँ होना भी तो एक अजूबा ही था ?

"नरेन्द्र ....!" मैंने साहस बटोर कर कहा था . मैं अब भी सोच रहा था कि कहीं ये ...सिस्टर निवेदिता तो नहीं आ गई ? "म...म...मैं ....." और क्या कहता आगे – समझ में ही न आ रहा था .

"क्या हुआ ....?" गुरु जी ने आँखें खोल दी थीं . उन्होंने सीधा प्रश्न पूछा था . शायद वो जानते थे कि उस सुंदरी का वहां आना कोई अर्थ रखता था ?

"राबर्ट की म्रत्यु हो गई है!" उस युवती ने गुरु जी को सूचना दी थी .

गुरु जी ने फिर से आँखें बंद कर एक छोटी प्रार्थना की थी .

"मैं ...मैं ...चाहती हूँ कि ...." वह रोने लगी थी . "अ–ग–र .....आप ....?"

"बैठो!" गुरु जी ने आदेश दिया था . "देखो, मंजू! क्रिस्टी तो कब की मर चुकी है ....? उस का तर्पण भी तुमने कर दिया ....? अब राबर्ट तुम्हारा .....?"

"पिता ....तो थे ...ही ....?"

"अब नहीं! मंजू का कोई पिता–माता नहीं है! वह तो सन्यासी है .... निर्मोही है ....! अकेली है ....ईश्वर की है!" मुस्कराए थे, गुरु जी . "व्यर्थ के शोक में क्यों पड़ती हो ....?" गुरु जी ने पूछा था . "कौन है – जो मरेगा नहीं ....?" उन का प्रश्न था .

"इतनी बड़ी संम्पत्ति है ....गुरु जी! बैक में भी .....पैसा .....है ....और ....."

"तुम क्या करोगी .....?"

"सोचती हूँ, दान ही कर दूं ....? निर्मोही को ही दे दूं, सब ....?"

"उचित है!" गुरु जी ने संयत स्वर में कहा था .

अब गुरु जी ने और मंजू ने पलट कर एक साथ मुझे घूरा था!

"आते हो, नहाने नरेन्द्र ....?" मंजू ने मुझे पूछा था . "ले जाऊं नरेन्द्र को, गुरु जी ....?" उस ने आज्ञा मांगी थी .

"ले, जाओ .....!" गुरु जी ने आज्ञा दे दी थी . "पर नरेन्द्र को दीक्षा नहीं देनी है!" उन्होंने मंजू को बताया था . "इसे तो संसार में लौटना होगा .....!" उन का स्वर उच्च था . "उसी के लिए तैयारी होनी है, नरेन्द्र की!" हंस गए थे, गुरु जी .

"चलो, नरेन्द्र!" मंजू ने मुझे बांह पकड़ कर उठाया था . "बातें करेंगे . ...." वह कह रही थी . "तरस गई हूँ, गप्पें मारने को ....?" वह अब गुरु जी को देख रही थी . "राबर्ट को भी भूल जाऊंगी ....."

"नरेन्द्र को बता कर ....?" गुरु जी मुस्कराए थे ."यही ठीक रहेगा ....! दुःख बट जाता है ....तो ...छोड़ जाता है!" उन का कहना था .

हम गंगा किनारे आ बैठे थे . मंजू ने अपना श्वेत –पीत ...अंग–वस्त्र . ..मुझे भी स्नान करने के लिए दिया था . अब हम दोनों एक जैसे ही लग रहे थे! आते–जाते लोग हमें शकिय निगाहों से देखते ... और निकल जाते! लेकिन मैं और मंजू बे–खबर हो अपनी ही गप्पों में उलझे थे!

"मेरे पिता रोबर्ट यहीं भारत में वायसराय के आफिस में सेक्रेटरी थे! ढेर सारा धन–दौलत कमा कर भारत से लौटे . लन्दन से कुछ दूर उन्होंने बायना में जागीर खरीदी . माँ –लूसी के साथ एशो–आराम से रहने लगे! मेरा जन्म भी बायना में हुआ . दम्पति – जाने–माने लोगों में से एक थे! उन की सोशल लाइफ व्यस्त होती ही चली गई . मैं तो आया और नौकरों के साथ ही खेलती! बहुत बड़ी जागीर थी . उस में मैं – एक नन्हीं –सी बच्ची ....ढूंढे न ...मिलती ...?" मंजू ने मेरी आँखों में झाँका था .

कैसी भेद भरी निगाह थी – मंजू की ....? मैं डर गया था . मैं सोच रहा था कि ...जरूर ही मंजू ....मुझे .....

"फिर दोनों ...अलग–अलग रहने लगे थे ." मंजू ने बात खोली थी . दोनों के रास्ते कहीं न मिलते थे! और जब कभी दोनों आमने–सामने होते थे – तो ...उन के आपस में लड़ने की आवाजें ....मैं सुनती रहती थी! रोबर्ट माँ को 'बिच' कह रहा होता ....तो माँ उसे ...ब्लडी बास्टर्ड, कह – बखान कर रही होती! फिर कभी–कभी जब उन में ज्यादा झगडा हो जाता तो .. ..नौकर–चाकर भागते और उन की सुलह–सफाई कराते! और फिर दोनों पंछियों की तरह ....घोसला छोड़ कर भाग जाते!!"

"और ....तु–म–.... मेरा मतलब ....आप ....?" मैं कहानी को ध्यान से सुन रहा था .

"लावारिस ....थी ...मैं तो ....नरेन्द्र ...?"

"फिर .....?"

"फिर एक दिन ....बड़ा काण्ड हुआ! दोनों खूब लड़े ...और रोबर्ट ने लूसी को पीट दिया! लूसी दौड़ी ...और किचिन से मीट –चौपर ले कर अपना गला काट लिया! मैं इन पलों में डूब कर उन की होती जंग देख रही

थी! और जब लूसी ने अपना गला काटा ...और सर जमीन पर गिरा ...तो ... मैं ही नहीं ...रोबर्ट भी बेहोश हो कर ...वहीं ढेर हो गए थे!! "

"फिर ....?"

"फिर, नरेन्द्र! होश आते ही मैं उठी .....और भाग ली! मैं भागती ही रही ...और ...भारत लौट आई! मैंने सुना था –हिमालय और वहां कंदराओं में तपस्या करते साधुओं के बारे! मैं सीधी हिमालय की ओर चली ....और लोगों ने मुझे यहाँ ...इस निर्मोही अखाड़े तक पहुंचा दिया!" अब मंजू ने फिर से मुझे देखा था . "अब तो रोबर्ट भी मर गया ....?" उस ने गहरी निस्वांस छोड़ी थी .

"गरीब भारतीयों का माल लूट कर ले गए थे ....?" मैं मन–ही–मन कह रहा था . "ये तो होना ही था, क्रिस्टी ?" न मैं रोया था ...और न ही मैंने कोई अफसोस जाहिर किया था .

मंजू लौटी थी . उस ने मुझे हाथ पर छुआ था . में भी अब अपने आप में लौट आया था . मंजू की आँखें निरभ्र आकाश की तरह थीं! वह अपने लिए व्रत के प्रति समर्पित थी!!

"रोबर्ट ने मुझे खोज लिया था! वह तो भारत को ...और यहाँ के लोगों को ...खूब जानता था!"

"रोबर्ट क्यों कहती हो ....? 'पिता जी ' ....क्यों नहीं ...?"

"मैंने व्रत ले लिया है, ना ....? मैं तो अब 'क्रिस्टी' हूँ ही नहीं ? मैं तो अब एक ....मौज हूँ, नरेन्द्र! ...मैं ...मंजू हूँ ....जो एक अकेली आत्मा है ...और मेरा अभीष्ट ...परमात्मा है!" मंजू ने मुझे भी विचलित कर दिया था . "रोबर्ट और लूसी का ..जीवन देख कर तो ...जीने की चाह ही चुक गई थी!"मंजू चुप हो गई थी . मैं उस के मौन को परखने लगा था . "क्या, रे ....?" वह फिर से चहकी थी . " बदबू मारती है – इस अपने तेरे के संसार में ....?" उस ने कहा था . "लेकिन ...अब ...?" उस ने मुझे बांह से पकड़ा था . "चल! लगाते हैं – डुबकी .....? गंगा मैया ....जानें ...."

और हम दोनों गंगा के प्रवाहित होते पवित्र जल में डुबकियाँ लगा रहे थे ....!!!

61

बेचारे! फिर लौटे ही नहीं!!

दिल्ली ....? हाँ, हाँ! अब दिल्ली ही मेरी आँख में आ जड़ी थी!!

"मुझ से मत भिड़ो, मोदी ...!" दिल्ली ही थी जो मेरे सामने खड़ी–खड़ी हंस रही थी ... मैं बड़ी ही मुक्त ....और सख्त मिटटी से बनी हूँ!" मैं आती आवाजों को स्पष्ट सुन रहा था . "कितने आए ...कितने गए ....? हा हा हा!!" हंस रही थी, दिल्ली! "छुपा तो कुछ भी नहीं है ....?" उस ने मुझे संकेत दिया था . "आँख उठा कर देख लो ....उन प्रमाणों –से खंडहरों को!" उस का इशारा इतिहास की ओर था . "उखाड़ फैंका न मैंने ...उन तमाम – तैमूरों...तुर्कों ...और मुगलों को ...जो मर्द बनते थे ... और इन अंग्रेजों को भी ....जो चालाकी में दम भरते थे ....? " सटीक बातें थीं ....सच भी थीं ....

"पर मैं ...मेरा मतलब ...कि मैं ....." कुछ कह देना चाहता था, मैं!

"मैं –वाले ही तो हैं, ये सब लोग ....? अब इन की रूहें ...इन खंडहरों में बसी हैं! और आज तक विलाप कर रही हैं ....और पूछ रही हैं ....कि ये मरे क्यों ? परास्त हुए ....तो क्यों ....?"

"पर मैं ...यों न मानूंगा, माँ!" मैं विनम्र हो आया था . मैंने भारत माँ का सम्मान किया था . "मैं न भागूंगा ....! मैं ...दो–दो हाथ अवश्य करूंगा ....! फिर जीऊं ...या खेत रहूँ .....?"

"नेता जी की तरह ....?" भारत माँ पूछ रहीं थीं . "हारने वाला तो वो भी नहीं था न, नरेन्द्र! वो तो जीत ही गया था! पर ...."

"पर ....?" मैंने पूछा था .

"कांग्रेस ..!" उत्तर आया था . "कांग्रेस अंग्रेजों के साथ मिल कर गोटें खेल रही थी! देश भी तो कांग्रेस के इशारे पर ही बंटा ...? "

"हुआ क्या था, माँ ....?"

"हुआ ये कि ...अंग्रेज सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज के चंगुल में आ फंसे थे! अब उस तोते को न मार सकते थे ....और न ही छोड़ सकते थे ....? देश की जनता में रोष व्याप्त हो गया था ....और ...."

"और ....?"

"नेवी के छह जहाज ....जो अभी तक समुद्र के बीचों–बीच खड़े थे ... .अंग्रेजों के खिलाफ बगावत कर बैठे थे! भारतीय थे –सब सैनिक! अंग्रेजों के सौतेले व्यवहार से क्षुब्ध थे! उन के साथ जो सुलूक होता था ...वह गुलामों जैसा ही तो था ....? अतः उन लोगों ने आवाज बुलंद की – आजादी की!"

"डुबो दो छह–के–छह जहाज..........!!" चर्चिल – ब्रिटेन के प्रधान मंत्री का आदेश था .

लार्ड माउंट बैटन हैरानी में पड गए थे! वह तो समझ रहे थे कि देश का रुख किधर था ....और अब यहाँ उन का कोई समर्थक न बचा था ...? कांग्रेस ही डूबते तिनके का सहारा थी!

"इन गुलामों को ....समुद्र के गहरे में दफना दो ....!" चर्चिल बहुत नाराज थे . "बू तक ...ना आए, , , आजादी की .....ऐसा ......" उन के आदेश स्पष्ट थे .

"लेकिन ....लेकिन ...फिर ..अंग्रेज भी एक ना बचेगा ....? " लार्ड माउंट बैटन ने बताया था . "देश के लोग रोष में हैं ....और अब कांग्रेस कुछ भी न कर पा रही है ....!"

"तो .....?"

"दे–दे ते हैं ...इन्हें ...."

"देश दे–दें ....? भारत दे–दें ....? गोन मैड ....? पागलों जैसी ...." चर्चिल चीखने–सा लगा था . "जानते हो ....परिणाम ....?"

"जो भी होगा ....होगा ...!! पर अब हमें देश देना ही होगा ....?" माउंट बैटन ने साफ कहा था . "भारतीय सेना भी विद्रोह पर उतर आई है! एयर

फोर्स भी नाराज है . सैनिक सब क्षुब्ध हैं! आजाद हिन्द फौज के साथ हैं! हमारे पास सेना को रोकने के लिए है क्या ....?"

"तो ....सुनो!" चर्चिल की आवाज संगठित थी . "बाँट दो, देश को ....! टुकडे – टुकडे कर दो ....! इस तरह बांटो कि ...हमारे ही हाथ रहे सब हुछ ....? मैंने जिन्ना को बुलाया है . अम्बेडकर यहाँ है ....और ..मास्टर तारा सिंह को तुम संभालो! हो सके तो ....रियासतों के लोगों को भी शामिल करो ...? कुछ दाल ....कुछ खिचड़ी ....और बहुत सारा तेल–फुलेल ....! सब इस तरह से नष्ट–भ्रष्ट कर डालो ताकि ...ये लोग समझ ही न पाएं ...और न ही संभाल पाएं ...."

"कोशिश करता हूँ ....!" कहते हुए माउंट बैटन ने पसीने पौंछे थे .

"नहीं, देश नहीं बंटेगा ...." गाँधी जी ने साफ–साफ बताया था, माउंट बैटन को . "अगर तुम चाहो तो ...मेरे शरीर के टुकडे–टुकडे कर डालो .... मेरी लाश को ...." गाँधी जी गंभीर थे . "मैं देश को बंटने न दूंगा ....?"

"जिन्ना बनेगा ...स्वतंत्र भारत का प्रधान मंत्री ....?" दूसरी शर्त थी माउंट बैटन की .

"बना दो ....! मुझे क्या आपत्ति है ...?"

"मुझे आपत्ति है, बापू!" जवाहर बोला था . "देश का प्रधान मंत्री तो मैं ही बनूँगा ....!" जवाहर कांग्रेस के दम पर बोल रहा था . कांग्रेस ने अब तक सब तय कर लिया था .

"पटेल को पूरा देश चाहता है ....?" गाँधी जी ने तुरप लगानी चाही थी .

"लेकिन अब वही होगा, बापू ....जो जवाहर चाहता है!" घोषणा हुई थी . दंभ पूर्ण घोषणा ....! "अब आप ...आराम फरमाईये ...!!" हँस गया था, जवाहर .

"गाँधी जी .....?"

"कांग्रेस ने ही तो मरवाया था ....? बंटवारे में ये भी तो शामिल था ? नेहरू और कांग्रेस को निष्कंटक भारत का राज चाहिए था ...? सो उन्होंने ले लिया था ....!" भारत माँ हंस कर चलती बनी थी .

मैं अब अकेला खड़ा था . कैसे लड़ पाऊंगा ...कांग्रेस से ....मैं तय ही न कर पा रहा था! कांग्रेस तो ...पूर्ण ...और प्रवीण लड़ाका थी ....? हर

प्रकार के संघर्ष ....और ...संजीदगी से गुजरी थी ...और न जाने कितनी विकट परिस्थितियों का सामना किया था ...? पर मैं तो ...एक दुध मुहां बच्चा था – उस के लिए ....?

हाँ, हाँ! तब मुझे भी याद आया था कि ...मेरे पास भी लड़ाई का कुछ साज–सामान था ....!!

मैं एक निःस्वार्थ सेवक बन चुका था! वक्त ने मुझे यही एक गुरु मंत्र दिया था ...कि मैं निःस्वार्थ समाज–सेवा करू ...देश सेवा करू ....और अपने संगी–साथियों का ...भरोसा पा लूं! मैंने किसी को वायदा कर के दगा नहीं दी . किसी का काम नहीं रोका . हर किसी का सहयोग किया . निःस्वार्थ पार्टी में ...मैंने जी तोड़ काम किया . लिया कुछ नहीं ...माँगा भी कुछ नहीं! जिस ने मुझे पुकारा ...मैं उसी के साथ जा खड़ा हुआ ...और उस की भरपूर मदद की! जिस ने पुकारा ...उसी को पार किया –चाहे वो कोई भी था ....? बड़े–बड़े नेताओं के मैंने हंस–हंस कर बड़े–बड़े काम निकाले ...रथ–यात्राएं निकालीं ...रैलियां आयोजित कीं ...चुनाव लड़ाए ....और जब अटल जी प्रधान मंत्री बने ...तो मैं हर्षातिरेक से कूदता–फांदता ...उन के चरणों में जा गिरा था ....!!

यही –ढाल–तलवार ...आज भी मेरे हाथों में ज्यों –की–त्यों ...जड़ी थी ...!!

"यही तो परिभाषा है – एक सच्चे स्वयं सेवक की, नरेन्द्र!" अटल जी थे . वो मुझे आशीर्वाद देने चले आये थे ...हमेशा की तरह! "लेकिन राजनीति की लड़ाईयां लड़ने के लिए ....एक स्वयं सेवक को देश–धर्म भी देखना होता है! राज–धर्म – एक अलग ही विधा है, नरेन्द्र!" वह बताने लगे थे ."मैं जानता हूँ कि तुम ...कर्तव्य –निष्ट हो! तुम सच्चे सिपाही और एक अच्छे देश–भक्त हो! लेकिन जहाँ ...शाशक बनता है – आदमी ...वहां उस की संज्ञा बदल जाती है!" उन्होंने मुझे गौर से देखा था .

"कैसे ....?" मैं पूछने लगा था .

"मुझे देखो, न!" उन का आग्रह था . "मैंने हर बार एक ही कोशिश की ....कि मैं देश में एक ऐसा साम्राज्य ला दूं ....जो बे–जोड़ हो! जैसे कि मैंने अपने ....पडौसी देशों के साथ ..मैत्री पूर्ण सम्बन्ध बनाने चाहे ...? मैंने अहंकार और अभिमान छोड़ कर ...बस यात्रा की ...और बुलावे भेजे! मैंने हर किसी

को मनाया ...समझाया ...और कहा कि हम सब ...मिल–जुल कर रहें! लेकिन ...देखा ...कि हुआ क्या ....?"

"लेकिन क्यों हुआ ...?" मैंने पूछ लिया था .

"भय बिन ....होय ..न प्रीत ....!" अटल जी अपने कवि के चोले में लौट आए थे . ...और शाश्त्रों से उठा –उठा कर प्रमाण देने लगे थे . "याद है ... जब मैं पहली बार पी एम् बना था ...१... दिन के लिए ....? मैंने इस्तीफा दिया था – क्योकि हमारी सरकार के समर्थन में कोई नहीं आया था ...? और कांग्रेस हम पर हंसती रही थी ....हमें अंगूठा दिखाती रही थी ....और हम ...... ?" मुझे गौर से देखा था, अटल जी ने . "मैंने तब कहा था – अगली बार हम बहुमत ले कर आयेंगे ....पूर्ण बहुमत!" वो रुके थे .

"दूसरी बार ....जब ललिता जी ने समर्थन वापस लिया था ....?" मैंने उन्हें याद दिलाया था .

"कांग्रेस की चाल थी! एन डी ए की सरकार को गिराने में ...कांग्रेस को फायदा था! कांग्रेस नहीं चाहती थी कि उस के सिवा और कोई देश में शाशन करे ....?"

"आपने गुजरात के लिए मुझे ....आशीर्वाद दिया था! सो मैंने ....."

"प्रसन्न, , , हूँ, मैं! तुम से मैं बहुत प्रसन्न हूँ, नरेन्द्र! तुम से मुझे उम्मीद है कि ....तुम ..."

"लेकिन ...ये कांग्रेस .....?" मैंने सीधी बात की थी . "मेरे तो पहले ही पीछे पड़ी है ? मुझे तो जेल भेजने के सारे प्रयत्न हो रहे हैं . आप तो देख ही रहे हैं ....कि ..."

"संघर्ष है जिन्दगी, नरेन्द्र!" उन का आदेश था . "मौत से आगे ...जिन्दगी का ...कोई और अंत नहीं! तो फिर लड़ो ...? हाँ! राज्य की लड़ाई में ...और देश की लड़ाई में अंतर है ? जमीन–आसमान का अंतर है! केंद्र के लिए एक समग्र व्यक्तित्व की आवश्यकता है . खास कर ...दिल्ली के लिए ....तो ....?" हंस गए थे, अटल जी .

मैं फिर वहीं आ कर टिक गया था! कांग्रेस ही मेरा मार्ग रोके खड़ी थी!!

अचानक ही मैं उन महारथियों के नाम गिनने लगा था ...जो कांग्रेस से लड़े थे ...और सफल भी हुए थे!

विश्वनाथ प्रताप सिंह पहले ही कांग्रेसी थे ...जिन्होंने कांग्रेस का तख्ता पलटा था ...! उन्होंने राजीव गाँधी पर बीफोर्स तोप सौदे में दलाली खाने का आरोप लगाया था . इस मुद्दे को ले कर पूरा देश ही आंदोलित हो उठा था! इस सौदे में तोपों की खरीददारी जैसे संगीन मामले में ...दलाली खाना ... पहली बार लोगों ने सुना था! विश्वनाथ प्रताप सिंह जनता के सामने एक सच्चे देश–भक्त के रूप में उदय हुए थे!

उन की छवि साफ थी, उन का विगत भी सही था . राजे–महाराजों के कुल–खानदान के थे –विश्वनाथ प्रताप सिंह! लोगों को एक दम वो भा गए थे! राजीव गाँधी भी कोई खिलाड़ी न थे ? घबरा गए थे . 'गली –गली में शोर है ...राजीव गाँधी चोर है' – देश के आर–पार बज उठा था . चुनाव हुए थे . विश्वनाथ प्रताप सिंह को बहुमत मिला था . कांग्रेस की हार हुई थी . और फिर बी जे पी के साथ मिल कर केंद्र में सरकार का गठन हुआ था!

लेकिन कांग्रेस नहीं चाहती थी कि ये गठ –बंधन सफल हो!

तब कांग्रेसियों ने विश्वनाथ प्रताप सिंह को याद दिलाया था कि ..अगर वो कांग्रेस की सलाह पर चल पड़े तो ...आजन्म प्रधान मंत्री ही बने रहेंगे ... जनता के चहेते होंगे ....देश के लाडले होंगे ...विश्वनाथ प्रताप सिंह! और अगर बी जे पी के साथ टिके रहे ...तो मिटटी में मिल जाएंगे! हिंदुत्व का मुद्दा ही ले डूबेगा, उन्हें ? जब कि मंडल कमीशन की सिफारिशें ...अगर वो ... अमल में ले आएँगे ...तो ...अमर हुए धरे हैं!!

"भई! कांग्रेस का बेस तो वही है! मुसलमान...पिछड़े लोग ....और ब्राह्मण ...इन्ही को ले कर ...तो बहुमत बनता है ? मार्शल कौमों को हराने का ... अचूक अस्त्र है, ये! आप इस मंडल को लागू करते ही ....अजेय हैं!!

और मंडल की घोषणा होते ही बी जे पी ने समर्थन वापस ले लिया था!

कांग्रेस का यही इरादा तो था ...? विश्वनाथ प्रताप सिंह को कांग्रेस के साथ बगावत करने की सजा उस ने उन्हें चौराहे पर खड़ा कर के दी थी!!

बेचारे! फिर लौटे ही नहीं ....!!

62

दिल्ली मेरे साथ ही जाएगी –जसोदा!!

लेकिन अब मेरा मन चला–चली में था! में चल पड़ा था –दिल्ली की ओर!!

मैं गुरु जी के बोल सुन रहा था ....!!

"कल डेरा उखड जाएगा, नरेन्द्र!" वो बता रहे थे . "काशी की ओर प्रस्थान करेंगे ...!" वो बता रहे थे . "रास्ते में पड़ाव पड़ते रहेंगे ....और हम चलते रहेंगे ...." वो बहुत प्रसन्न थे . "आनंद आता है, रे!" उन का मन प्रफुल्लित था . "बहुत रह लिए, गंगा सागर!!" वह मौन हो गए थे .

लेकिन मेरा मन चल पड़ा था! पड़ाव–दर–पड़ाव मैं चल पड़ा था . मुझे न जाने कैसी खुशी ने आ घेरा था ...? मैं जिन्दगी को कदम–दर –कदम चल–चल कर नाप रहा था ...महसूस कर रहा था! अभी तक घर की ओर मुड़ने का मेरा मन न था ? लेकिन मैं घर को भूला भी न था ...?

यात्रा आरंभ हुई थी . था क्या नागा बाबाओं के पास ...? अपने–अपने लंगोटे और लाठियां उठा कर चल पड़े थे! रास्ता सभी को याद था . पड़ाव भी ज्ञात था . रास्ते में ही सब ने भिक्षा मांग कर ..अपनी क्षुधा पूर्ती कर लेनी थी! न कोई इच्छा थी ....न कोई चाह ...! राह सीधी थी ...और उसी पर जाना था!!

"क्या कभी ...आप को चित्रा की याद आई ....?" मैंने रास्ता चलते–चलते गुरु जी के शांत मन–प्राण को हिला दिया था . मैं उस घटना के परिणाम जान लेना चाहता था .

अचानक गुरु जी चौंके थे! वह कहीं से हिल गए लगे थे!!

"सच–सच बताता हूँ, नरेन्द्र!" उन की बोली गुरु–गम्भीर थी . "सत्य तो ये है, नरेन्द्र कि ...'हाँ' भी ....और 'ना ' भी ...!" मुड कर देखा था, उन्होंने मुझे . "'हाँ' तो इस लिए, नरेन्द्र कि ...कि ...कमाल ही था ...कि ...तनिक–सी मन की चूक पर ...चित्रा मेरे पास आ खड़ी होती! मैं भी चित्रा के सौन्दर्य को निज–का –तिज देख लेता! उस की मधुर मुस्कान मुझे पुकार लेती! और उस के आग्रह ....? उफ ....!! कितना उन्माद भरा होता – उस के उन आग्रहों में ....?मैं तुम से बयान नहीं कर सकता, नरेन्द्र!" गुरु जी चुप हो गए थे .

मैं भी चुप था . मैं भी यही सोच रहा था कि ...पुरुष के लिए 'औरत' एक उन्माद का दूसरा नाम ही है ...? औरत जब पुकार लेती है .....पुरुष को ... तो उस के पैर रुक नहीं पाते ...? संयम बिगड़ ही जाता है ....और ....

"संयम...साधना ....तपस्या ...और त्याग ....कुल शक्तियां मिला कर ... मैंने एक ही प्रयत्न किया ...कि मैं चित्रा को भूल जाऊं ....?"

"क्यों ....?"

"क्यों कि ..., नरेन्द्र! वो वासना थी – –जो मुझे बुलाती थी! चित्रा मेरी पत्नी तो न थी ...? ये तो व्यभिचार ही तो था ....? बुरा ही तो था ....? अनैतिक ही तो था ...? फिर मुझे इसे भूल ही जाना चाहिए था ....????"

"चित्रा का क्या हुआ ....?"

"कुछ पता नहीं! मैंने कभी घर की ओर मुड कर ही न देखा ...आज तक ...!मुझे पता नहीं, नरेन्द्र कि ..वहां ..उस के बाद क्या हुआ ....? न मैंने कभी कोशिश ही की ....! परमात्मा के चरणों को पकड़ कर मैं ... निर्मोही अखाड़े में पड़ा ही रहा ...और अंत में मुक्ति पा ली मैंने ...संसार के व्यामोह से ...!!" वो अब प्रसन्न थे . "लेकिन, नरेन्द्र! तुमने ये सब क्यों पूछा ....?"

"इस लिए ....गुरु जी ...." मैं हिचकी ले गया था . "इस लिए कि ....मैं ...शादी–शुदा हूँ!" मैंने भीतर की बात उगल दी थी . मैं ये सत्य गुरु जी से छुपाना न चाहता था . "शादी ....." मैं चुप हो गया था .

"हो तो गई, शादी ....?" गुरु जी ने ठोस सत्य पर उंगली धरी थी . "शास्त्रों के अनुसार तो ...तुम ने अपनी पत्नी को ...स्वीकार कर ही लिया ...?" पूछ रहे थे, वो .

"ह ह ह हाँ ...!" मैं कठिनाई से कह पाया था . "मैंने विरोध तो किया था ....पर ...."

"ये होतव्य –होता है, नरेन्द्र! होने से रुकता नहीं! जो मेरे साथ हुआ ....जो मंजू के साथ हुआ ....और जो तुम्हारे साथ हुआ ....उसे तो होना ही था ...?" गुरु जी ने एक अटल सत्य पर उंगली धर दी थी . 'आगे जो होगा ...वह भी होगा ही ....!" वह हंस पड़े थे . "मैं और तुम उसे रोक ही नहीं सकते ....?"

"तो ...क्या ...हम ...." मैं कुछ पूछ लेना चाहता था .

"आने वाले भविष्य के लिए ....साधना कर सकते हो ....प्रार्थना कर सकते हो ....लेकिन उसे मोड़ नहीं सकते ...? अब ...इस जीवन में ...जो घटेगा . ..वो तो घटेगा ....!!"

"क्या घटेगा ....?" मैं तुरंत ही पूछ लेना चाहता था . लेकिन चुप रह गया था . न जाने क्यों मैं आज नहीं चाहता था कि 'घटनीय ' को जानूं ...?

"तुम्हारी तो अभी उम्र ही कुछ नहीं है, नरेन्द्र!" गुरु जी सहज हो गए थे . "बच्चे हो!" उन्होंने मुझे स्नेह पूर्वक देखा था . "परमात्मा ने तुम्हारे लिए कुछ नायाब ही रच रखा है!" उन का कथन था . " मैं अनुमान ...तो लगा सकता हूँ ....अर्थ नहीं बता सकता ....!!" हाथ झाड दिए थे, गुरु जी ने .

"मुझे तो यों ही ....चलने–फिरने .....घूमने–घामाने में .....आनंद आता है .गुरु जी!" मैंने हलके मन से कहा था .

"वह चाहता है ....प्रकृति चाहती है कि ....तुम खुली आँखों से उसे देखो ....समझो ....और सोचो!" एक पल के लिए रुके थे, गुरु जी . "तुम्हारा बिछोह यों ही नहीं हुआ ....?" वह अब एक सत्य को उजागर कर रहे थे . "उस की ये चाल है!" फिर हँसे थे, गुरु जी . "कभी ...याद तो करते होगे .... ?"

"जसोदा बैन को मैं भी कहाँ भूल पाता हूँ, गुरु जी ....?" मैंने स्वीकारा था . "एक अपराध बोध–सा भरने लगता है ....मुझ में ...." मैं गंभीर था . "न जाने क्यों ....मन खट्टा हो आता है ...जब सोचता हूँ ...कि जसोदा बैन ...की क्या गलती ....उस का क्या दोष .....?"

"सहयोग ....समझो इसे, नरेन्द्र!" गुरु जी ने अमृत–वचन कहे थे . "पुरुष और नारी का सम्बन्ध ...जब प्राकृतिक नियमों के अनुसार होता है ...तो वो

स्वयं ही दो से एक हो जाते हैं ....मनसा–वाचा और कर्मणा ...जुड़ जाते हैं! केवल म्रत्यु ही उन्हें अलग करती है ....और कोई नहीं ....!!"

"लेकिन ....लेकिन ...गुरु जी .....मेरा मन तो गृहस्थ में जाता ही नहीं ....?"

"मत जाने दो! अपना कर्म तो करोगे ....? तुम्हारी पत्नी का ...तुम्हारे हर कर्म में ...साझा रहेगा, पुत्र! कल तुम बड़े बनोगे ....वह भी बड़ी बनेगी .....! कल तुम ...." अब गुरु जी मुझे देख रहे थे . "कर्म करते रहो ....श्रेष्ठ कर्म ...! उसे दु:ख न होगा ...और न ही पश्चाताप ....होगा! क्यों कि ...उन तुम्हारे श्रेष्ठ कर्मों में ...उस का भी साझा होगा ....?"

"जो आज्ञा, गुरु जी!" मैंने हाथ जोड़ कर उन की आज्ञा को स्वीकारा था .

फिर हम दोनों कदम–से–कदम मिला कर अपनी यात्रा पूरी करते रहे थे! हम चुप थे ...पर कहीं भीतर से हम सुलग गए थे ...!!

"दिल्ली मेरे साथ ही जाएगी, जसोदा ....?' मैं हंसा था . "उसे तो लोगों ने कब का खोज लिया है ...? उसे तो कांग्रेस ने भी एक उपलब्धि मान कर सीने से लगा लिया है . कांग्रेस के लिए तो तोप है, जसोदा ...? जगत के सामने कब और कैसे ..उसे मेरे खिलाफ ...उजागर कर बैठें ...कौन जाने ....?

लेकिन मैं गुरु जी के आदेशानुसार ...श्रेष्ठ कर्म करूंगा ....और जसोदा को उस की सहभागिता मिलती ही रहेगी ....

63

मैं अपनी उसी जिद पर कायम था!

ललचाई आँखों से मैं दिल्ली की ओर देखने का अपराध कर बैठा था!!

एक जिद्दी सैनिक की तरह –मैं भी अब सामने मुंह फाड़े खड़ी मौत के मुंह में बढ़ता ही जाना चाहता था ....अपने बढ़ते कदमों को रोकना न चाहता था! अंजाम की अगर सैनिक को परवाह न थी ...तो मुझे भी कब थी ? मैं भी सैनिकों की तरह ही 'आगे–आगे' बढ़ने को बावला हो गया था!

पीछे मुड कर देखना मेरे गणित के हिसाब से गलत है!!

पर हाँ, मेरी द्रष्टि बार–बार उठ कर मुझे उन संग्रामों के द्रश्य दिखा रही थी ...जिन्हें हमारे अगुआ हार गए थे ...और जिन्हें विरोधियों ने चाल–चालाकियों से जीता था ? अपमानित किया था –उन्हें ...कठोर दंड दिए थे ...और फांसियां तोड़ीं थीं . मुझे एहसास था कि दिल्ली में कुर्सी पर ईसा बैठा है! मैं जानता था कि ईसा और इस्लाम ने –प्रथ्विराज जैसे वीर को मारा था ...भगत सिंह जैसे देश–भक्त को फांसी की सजा दी थी ....और जलियाँ वाला बाग जैसा काण्ड किया था ...? उन्हें जनता से नहीं –सत्ता से प्यार था ....! ये सब कुछ अपने स्वार्थ के लिए करते थे ....?

आज भी ...हमारी आँखों के सामने दिल्ली में वही सब हो रहा था ...जो हमारे हित में नहीं ....उन के हित में था! और वही आश्चर्य था ...कि हमीं ... हमारे लोग ही ...भारतीय उच्च वर्ग के लोग ही ....उन के सहयोग में थे ... जब कि जनता ......

न जाने कैसे मैं अब अपने हुए शहीदों की लाशों से बतियाने लगा था ....?

"हमारी मांगें पूरी हों ....!!" पहली ही बार मैं दिल्ली में –झंडा हाथ में लिए नारे लगा रहा था! ये सन १९७१ का समय था! इंदिरा जी का शाशन काल था . अटल बिहारी बाजपाई उन के विरोध में उतरे थे . "हम अपना हक ले कर रहेंगे ....!!" हमारी आवाजें आसमान तक जा पहुँचीं थीं .

तभी पुलिस ने आ दबोचा था –हमें! पकड़ कर जेल में बंद कर दिया था!

तब ...हाँ ...तब मैं सकते में आ गया था! तनिक डर भी गया था . मुझे लगा था कि ये खेल इतना आसान न था – जितना कि लगता था ...? सत्ताधारियों के सामने खड़े हो कर ...अपनी बात कहना – बहुत कठिन बात थी! हाँ, हाँ! तभी ...तभी मुझे गाँधी जी याद आए थे – जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के सामने अपनी आवाज बुलंद की थी ...आजादी मांगी थी ....और ....

"घबराना मत, नरेन्द्र!" अटल जी मुस्करा रहे थे . "ये जेल यात्राएं ... देश–भक्तों के लिए ...गहनों जैसी हैं ...जो उन्हें चमका देती हैं! आये हो तो ...डटे रहना ....!!" उन का आदेश था .

इंदिरा जी का शाशन काल बड़ा ही रोचक था! देश ने युद्ध जीता था! देश का मान बढ़ा था . देश में प्रगति हो रही थी . पोकरण में विस्फोट हुआ था ....तो भारत एक और इनाम पा गया था! पाकिस्तान के दो टुकडे हो गए थे! ये एक बड़ी उपलब्धि थी! अमेरिका भारत से प्रसन्न न था . लेकिन रूस के साथ २० साल तक साथ रहने के वायदे हो चुके थे! ब्रिटेन अपनी अटकलें लगा रहा था ....ताकि खाने–कमाने का उस का भी जरिया लगा रहे .....

छोटी–मोटी राजनैतिक पार्टियों के लिए देश में जगह न बची थी! कांग्रेस का रूप–स्वरुप खूब बड़ा हो चला था! पुराने कांग्रेसी नेता ...मार खा कर लौट गए थे ...और अब घाव चाट रहे थे! इंदिरा जी ने कांग्रेस से अलग हो कर ...अब अपनी अलग पार्टी बना ली थी! संजय गाँधी पूरी तरह से राजनीति में आ चुके थे! अब उन की मारी ही हलाल थी ....

संजय गाँधी का मारुती उद्योग भी अब जोरों से चर्चा में था ....!!

"सच मानिए, मिश्र जी!" वरुण जी बता रहे थे . "मेरा माथा तो तभी ठनका था .... जब मैंने श्रीमती इंदिरा गाँधी को ..लाल बहादुर शास्त्री की मौत पर ...हँसते देखा था ...?" उन की आँखों में एक अजीब आश्चर्य था . "मैं तो तभी भांप गया था कि ...अब नेहरू–गाँधी का ही राज रहेगा ....देश

में ..." उन्होंने हाथ झाडे थे . "और वही बात सच है ...!!" उन का इशारा संजय गांधी की ओर था .

बात भी साफ होती जा रही थी! होते सुधार ...संचार ...प्रगति ...और प्रतिष्ठा में ...केवल एक ही परिवार का नाम बार–बार आ रहा था! इंदिरा . ..नेहरू ...और गाँधी के अलावा ...और किसी नाम की चर्चा ही न थी ...? जैसे भारत का पूरा–का–पूरा विगत ...मर गया था ...? जैसे यहाँ न कोई शहीद था ...और न ही कोई सैनिक ...! जैसे सारे–का–सारा श्रेय एक ही परिवार के नाम लिख दिया गया था ....?

रोकता भी तो कौन ...? इंदिरा जी ने सब नेताओं को तो घर बिठा दिया था ...?

और अब जो कोई हिम्मत भी करता ...उस के लिए संजय गांधी ब्रिगेड तैयार हो चुका था! यूथ –पावर को ...संजय गाँधी ने अपने हाथ में ले लिया था! हर संभव ...और असंभव ..काम अब उनके ही जरिए होने लगा था! उन्हें भावी प्रधान मंत्री के रूप में लोग देखने लगे थे!!

हम ....हमारी पार्टी ...और हमारा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ....किसी गिनती में न था! हमें तो जड़–मूल से मिटाने की मुहीम बन रही थी! हम तो छुप–छुप कर ही अपना काम कर पा रहे थे ? लेकिन अपने धेय के साथ ...पूरी लगन से हम लगे थे!!

सुना था कि ....बिहार में कोई चिंगारी सुलग उठी है ....? रेल–वे में भी उन्हीं दिनों ...जबरदस्त स्ट्राईक चल रही थी! कोई थे –जार्ज फर्नांडिस . ..जिन्होंने बीड़ा उठाया था ..शाशन के खिलाफ! लेकिन उन्हें हटाने, , , और मिटाने के लिए ...पुरजोर कोशिशें होने लगीं थीं! इंदिरा जी भी जिद पर थीं ....कि वो जार्ज के सामने और नहीं झुकेंगी ....! और जो भी हो रहा था – सब ठीक था ...श्रेष्ठ था!! उन की जय–जयकार थी! हर ओर उन्ही का जय–घोष था ...स्वागत था! लोग अब इंदिरा जी का लोहा मानने लगे थे! फिर ये जार्ज जैसा मच्छर उन का बिगड़ भी क्या लेता ....?

हम जैसों की गिनती तो अब तमाशबीनों में ही थी!

और जो जलजला बिहार में आया था –उस के प्रणेता थे – जन –नायक श्री जय प्रकाश नारायण! कहते थे – ये गांधीवादी हैं ....और सर्वोदय चलाते हैं! ये समाजवाद के संवाहक हैं और प्रजातंत्र की वकालत करते हैं! ये

स्वतंत्रता सेनानी हैं ...और देश की आजादी के लिए जेलों में रहे हैं! गाँधी जी के साथ कन्धे–से–कन्धा मिला कर इन्होने स्वतंत्रता संग्राम में काम किया है!

मैंने भी अब मन से जय प्रकाश नारायण को खोजा था! देखा था ... टटोला था ...कि अगर वहां कुछ है तो मैं भी ले लूं ....इन्हें आत्मसात कर लूं ...? मैंने पाया था – कि जय प्रकाश नारायण ...एक शु द्ध समाजवादी आत्मा थे ...अपूर्व थे ...और उन के सपने अभी तक उन के ही पास बैठे थे! उन की बातें न तो गाँधी जी ने सुनीं थीं ....और न ही नेहरू जी ने मानीं थीं! उन्हें बस यों ही एक खाली स्थान पर रख दिया गया था ....जहाँ उन्हें खप जाना था .....वक्त के साथ–साथ ......

लेकिन जय प्रकाश नारायण भी किसी जलजले की तलाश में ही जी रहे थे .....?

उन्होंने उन तमाम विद्रोहियों ....क्रांतिकारियों ....और उन समर्थ समाजवादियों को पढ़ा था ...जो आज के समय में प्रासंगिक थे! मार्क्स .लेनिन, माओ और लिंकन ...तक उन्होंने सब को कुरेदा था! लेकिन भारत के सन्दर्भ में उन्हें कोई उत्तर आज तक न मिला था! वह चाहते थे 'सर्वोदय' और वो चाहते थे ...एक ऐसी सम्पूर्ण व्यवस्था 'राम राज्य' जैसा एक स्वप्न ...जहाँ हर कोई जिए ...हक के साथ रहे ...और प्रगति करे!

लेकिन अब तो देश ...पूरा –का–पूरा देश एक ही परिवार की मुट्ठी में आ कर बैठ गया था ....?

अब तो केवल संजय गाँधी ही प्रासंगिक रह गए थे ....??

इंदिरा जी की आड़ में संजय शाशन चल पड़ा था! हर किसी अनुयाई को अब संजय गाँधी का खौफ सताने लगा था! और लोग मानते थे कि जय प्रकाश नारायण का उठा जलजला भी ...शांत हो जाएगा ....कुछ कर न पाएगा ...?

लेकिन जब जार्ज फर्नांडिस ...आ कर जय प्रकाश नारायण से मिले .. .तो बात ही बदल गई! लगा –तूफान आएगा ....! अवश्य आएगा ...! और जो नेता बैठ कर घाव चाट रहे थे – वो भी ....अब सक्रिय हो गए ....और जय प्रकाश नारायण के साथ आ मिले! देश के आर–पार एक साथ एक आवाज गूँज गई! हवा हिल गई! सत्ता डर गई! तब इंदिरा गाँधी ने ईसा–मूसा

के दिए महामंत्र का जाप किया ....और राष्ट्रपति फकुरुद्दीन अहमद से कह कर ...देश में एमर्जेंनसी ...लगा दी!!

ये भी एक आश्चर्य ही था ....? मुझे याद है कि ...एक भू–कंप जैसा देश में आया था ...और रातों–रात नेताओं की गिरफ्तारियां हुईं थीं! उन्हें जेलों में भरा गया था ...और चारों ओर एक अनाम–सा संग्राम छिड़ गया था . तब मैं भी तनिक–सा समझदार हुआ था! तब मुझे भी काम मिलने लगा था! मुझे कहा गया था कि मैं बच कर रहूँ! कहीं मैं जेल न चला जाऊं ...? क्यों कि मुझ जैसे लोगों को ही तो अब काम चलाना था ...? पार्टी देखनी थी . ..काम देखना था ...और जिन्दा भी रहना था ...?

हाँ, मैं मानता हूँ कि रंग भी खूब आया था! मैं कभी सिख बन कर भागता ... तो कभी साधू बन जाता था! मुझे गुप–चुप नेताओं से मिलने में ...बहुत आनंद आता था! उन के मन की बात और मंसूबे दूसरे नेताओं तक ले जाने में ...मुझे गर्व महसूस होता था ...! और तब ...हाँ–हाँ तब मुझे भी कुछ–कुछ राजनीति समझ आई थी! तब एक अलग –से ...कोमल–सा अंकुर मेरे भीतर उगा था ...जहाँ सियासत समझना ...चलाना ...और चरितार्थ करना ...आना मुझे आवश्यक लगा था! साधारण आदमी बन कर जीना तो ...जीना ही है –कुछ करना नहीं है ? लेकिन कुछ करने के लिए तो ...आदमी को सब कुछ आना आवश्यक है!!

"मैं कहता हूँ, आप लोग इस शाखा–वाखा का राग अलापना छोड़ दो!" मैने जय प्रकाश नारायण जी को कहते सुना था . "विलय कर दो ...आर एस एस को ...जनता पार्टी में ?" उन का कहना था . "हिन्दू राष्ट्र अब कोई 'संभावना' नहीं रह गई है! ये मात्र एक विचार है – जो बौना है! सर्वोदय को अपनाईये ...जहाँ देश में ...सब रहें–सहें ...समान अधिकार ले कर सब चलें ....और सुखी जीवन जियें ...?" उन की सलाह थी

"गलत कह रहे हैं, श्रीमान जी!" न जाने क्यों मैं चीख पड़ना चाहता था . "ये आप का सर्वोदय –ही अधूरा विचार है, हिन्दू राष्ट्र नहीं!" मैं चिल्ला कर कहना चाहता था . "हिन्दू राष्ट्र तो एक सही 'संभावना ' है – जो आज नहीं तो कल –जैसी किसी सत्यता की तरह सही है ..और ये तो हो कर रहेगा ...!" लेकिन तब मैं था –क्या ...? एक मच्छर ही तो था ....उन महान जय प्रकाश नारायण जी के सामने ...?

"ये ईसा और मूसा कभी नहीं चाहेंगे कि ...हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति . ..और हिन्दू राष्ट्र बने ...या हिन्दू किसी तरह से आगे बढ़ें ...? ये तो हिन्दूओं को ....उन के धर्म को ....भाषा को ...समाप्त कर के ...समूल नष्ट कर के ही मानेंगे, श्रीमान!" मेरे विचार बहने लगे थे . "आप फिर एक बार गलती कर रहे हैं ?" मैं कह देना चाहता था . "ये देश को हिन्दूओं से फिर छीन लेंगे! ये विश्वासघात करते हैं! ये जाहिल हैं ....न्रशंस हैं ...हत्यारे हैं! आप इन्हें क्यों गले लगाना चाहते हैं ? ये हिन्दूओं के सगे नहीं हैं ....?" मैं अपने उदगारों को रोक ही न पा रहा था .

उस दिन ....हाँ, हाँ ...उसी दिन ....आप के इस जिद्दी सैनिक नरेन्द्र मोदी का जन्म हुआ था! उस दिन मैंने राजनीति को समझ कर और अपने गुरु अटल जी के चरणों में प्रणाम कर –हिन्दू राष्ट्र और हिंदुत्व की रक्षा करने का व्रत ले लिया था!

और आज मैं –उसी अपनी जिद पर कायम था!!

64

मुझे जीत के नगाड़े बजाने हैं!!

"आ रहे हो, नरेन्द्र ...?" अचानक मैं अपने विगत की बातें सुनने लगा था . क्रिस्टी थी . भिक्षा माँगने जा रही थी . उस ने मुझे मनाया था कि .. मैं भी उस के साथ जाऊं ...और देखूं कि भिक्षा कैसे माँगते हैं ....और लोग भिक्षा कैसे देते हैं ? "चलो! पड़े–पड़े क्या करोगे ....?" क्रिस्टी का उल्हाना था .

मैंने क्रिस्टी को नजरें पसार कर देखा था .साक्षात दिव्यांगना लग रही थी! उस का पीत परिधान उसे और भी आकर्षक बना रहा था! उस की कन्धों तक झूलती सफेद लटें – हंस –विहंस रही थीं! क्रिस्टी एक अजीव–सा उन्माद भरती लग रही थी . मैंने सोचा था की कन्नी काट दूं ...और उस के साथ भिक्षा माँगने न जाऊं . कारण – भिक्षा मांगना मुझे बुरा लगता है!

"काशी के लोग हैं!" क्रिस्टी बता रही थी . "भारत की पुन्य–प्रताप वाली नगरी है ...? चल कर देख तो लो कि ....?" क्रिस्टी ने एक महत्वपूर्ण विचार मेरे सामने रख दिया था .

अचानक ही मैं नींद त्याग कर उठ बैठा था!

काशी –हम हिन्दूओं का तीर्थ ही तो थी – मुझे याद आ गया था! काशी हमारी संस्कृति और साहित्य का केंद्र रही है – इतना तो मैं जानता था! और काशी आज के सन्दर्भ में क्या है – ये मैं क्रिस्टी के साथ जा कर देख सकता था ?

"चलो!" मैं उठा कर खड़ा हो गया था .

अब हम दोनों भिक्षा माँगने निकल पड़े थे ...!!

निर्मोही अखाड़े के नियमानुसार हमें केवल छह स्थानों से ही भिक्षा मांगनी थी! और अगर हमें छहों स्थानों में से ...भिक्षा न मिली तो ...हमें आज के दिन भूखा ही रहना था! और अगर हमें एक ही स्थान पर पर्याप्त भिक्षा मिल गई तो ...हम अन्य पांच स्थानों पर भिक्षा माँगने नहीं जाएंगे! यह सब तय था!!

मेरी और क्रिस्टी की अजब ही जोड़ी बनी थी ....?

मैं न तो क्रिस्टी का शिष्य लग रहा था ...और न ही सहायक ...? मैं जैसे कोई तमाशबीन ही था – जो साध्वी क्रिस्टी के साथ किसी कौतूहल वश हो लिया था ? लेकिन फिर भी लोगों की निगाहें तो उठतीं ...कुछ देखतीं ...और फिर गिर जातीं! हम दोनों का कोई सम्बन्ध ही स्थापित न हो पाया था ...पर हम थे साथ–साथ ...और भिक्षा के आग्रही थे ?

"भिक्षाम देहि ...!!" अब क्रिस्टी ने पहले दरवाजे पर भिक्षा प्राप्त करने का आग्रह किया था .

एक वृद्ध महिला घर के बाहर आई थी . उस ने हम दोनों को अर्थपूर्ण आँखों से देखा था . कुछ अनुमान लगा कर वह आगे बढ़ी थी ...और उस ने क्रिस्टी के पैर छुए थे .

"अहो, भाग्य!!" वह कह रहीं थीं . "मेरे द्वार ...आप आईं ...? तर गए, , , हम तो ...!!" कहते–कहते वो मेरे भी पैर लेने चलीं थीं .

"नहीं, माँ ....!" मैं पीछे हट गया था . "मैं तो आप का पुत्र हूँ!" मैंने कहा था ..और उन के पैर छुए थे ...आशीर्वाद लिया था .

"अंदर आईये ...न ...?" उन का आग्रह था .

"नहीं, माँ! हम आपके गृहस्थ में प्रवेश नहीं करेंगे!" क्रिस्टी ने उत्तर दिया था . "निर्मोही अखाड़े से हैं! भिक्षा ले कर ..."

वृद्ध अंदर चली गई थी . हम दोनों घर के बाहर ही खड़े थे . एक भीड़ जमा होने लगी थी . महिलाओं ने क्रिस्टी के पैर छू–छू कर आशीर्वाद लिया था . फिर घर की मालकिन अपनी बहुओं के साथ बाहर आई थी ...और हमें ढेरों दान दे डाला था! लेकिन क्रिस्टी ने उतना ही ग्रहण किया था ...जितना कि हम दोनों के लिए पर्याप्त था! फिर एक विरक्त भाव से क्रिस्टी वापस लौट रही थी . मैं उस के साथ था भी ....और नहीं भी ...?

"गंगा घाट चलें ....?" क्रिस्टी ने पूछा था . "दो पल ...बैठेंगे ...गंगा तट ...पर ...?" उस का सुझाव था . "आज का अभीष्ट तो आ गया ...?" वह प्रसन्न थी .

मुझे गंगा घाट जा कर बैठना अच्छा लगा था ....!!

अचानक ही मैं ...भारतीय सभ्यता ...संस्कार ...और आचार–विचारों के बारे ...सोचने लगा था! कितनी गहरी समझ थी – हिन्दू समाज की ...और कितनी श्रद्धा थी –साधुओं के लिए ...., मैं हैरान था ...? क्रिस्टी के पैर छूना ...एक श्रेष्ठ सभ्यता का प्रतीक ही तो था ...? और यथेष्ट भिक्षा देना ...बताता था कि, , , भारत आज भी अभाव ग्रस्त न था ? सुखी और संपन्न था!!

सदियों से लुटते आने के बाद भी ...हमारी देने की प्रथा लुप्त नहीं हुई थी ....?

"मुझे भारत बहुत अच्छा लगता है, नरेन्द्र!" क्रिस्टी बताने लगी थी

"क्यों...?" मैंने पूछा था .

"इसलिए कि ...यहाँ के लोग ...सही अर्थों में 'मानव' हैं! जब कि ...अन्य स्थानों के लोग ....?"

"अन्य लोग, कौन ....?"

"जैसे कि मेरे ही पिता जी ....? या कहूं ...कि सम्पूर्ण अंग्रेज जाति .... भूखे भेडियों जैसे लगते हैं, मानव नहीं!" क्रिस्टी के मुंह का जायका ही बिगड़ गया था . "मानोगे, नरेन्द्र कि ...मेरे पिता जी ने लार्ड कर्जन के साथ रह कर ...पेट भर कर कमाया, भारत में! यहाँ के राजे–महाराजे तो उन्हें अमूल्य भेंट दे कर जाते थे ? धन उन के पास पानी की तरह बह कर चला आया था! और जब उन्हें लगा था कि ...अंग्रेज लौटेंगे ...तो वह पहले ही इंग्लेंड चले आए थे!" क्रिस्टी चुप हो गई थी . वह शायद गंगा के विस्तारों में डोल रही थी .

"फिर ...?" मैं अब चुप न रहना चाहता था . मैं चाहता था कि क्रिस्टी की राय अपने देश के बारे ले ही लूं .

"इंग्लेंड में जा कर उन्होंने ...आलीशान कैसिल तैयार कराया! एक लम्बा–चौड़ा फार्म बनाया . घोड़े ...बग्घी ...कार ...और हर तरह के सनसाधन जुटाए! और फिर ...."

"और फिर ....?" मैंने पूछा .

"और फिर उन्होंने भारत के बारे ही लिखना आरंभ किया! लगा –जैसे भारत का भूत उन के सर चढ़ गया था ? घर में सजा–वजा कर रखी ... भारत से लाई सौगातें ...वह हर आगंतुक को दिखाते ...और भारत के ही किस्से सुनाते! लेकिन माँ का हाल अलग था! उन्हें भारत से नफरत थी . ...चिढ थी ...और वह कार उठा कर सैर–सपाटे पर निकल जातीं . और जब देर रात लौटतीं ...तो पिता जी की आँखें लाल–लाल जल रहीं होतीं! और फिर दोनों ...आमने–सामने ...

"और ...आप ....?'

"क्या बताऊँ, नरेन्द्र ...? घायल हो कर रह जाती! रोते–रोते ...बिस्तर में न जाने कब सो जाती ...?"

क्रिस्टी चुप थी. क्रिस्टी गंगा के विस्तारों में ही कुछ खोज रही थी .

"काश! पिता जी भारत छोड़ कर ही न जाते ....?"क्रिस्टी ने एक लम्बी उच्छवास छोड़ी थी . "और लोगों के साथ मिल कर भारत में ही रहते ...? साहब बन कर नहीं ...उन के सहयोगी बन कर ..." मैं तनिक हंसा था .

"दोष यही है ...!!" मैने क्रिस्टी की आँखों में पलट कर देखा था .

"हाँ, हाँ! दोष यही था, अंग्रेजों का कि ...वो इस देश के लोगों का आदर न कर पाए ...? यहाँ की श्रेष्ठ संस्कृति को अपनाया नहीं ....? सब नष्ट करना चाहा ....? लोगों को गुलाम बना कर ...."

क्रिस्टी की आँखों को गीला होते देखा था – मैंने!!

"रोया मत करो, क्रिस्टी ....!" गुरु जी उसे फटकार रहे थे . "तुम निर्मोही हो ...! तुम मंजू हो!! ये तुम्हारा पुनर्जन्म है, पगली ? अपने इस स्वर्ग को अपवित्र क्यों करती हो ...?"

"भारत ....और इंग्लेंड .....?" क्रिस्टी गुरु जी को कुछ बताना चाहती थी .

"एक नहीं ....हो पाए ....?" गुरु जी हँसे थे . "प्रभू की माया है, पगली! सब कुछ संस्कारों से ही मिलता है!" उन का अंतिम वचन था .

मुझे याद है – आज भी याद है! गुरु जी कहते थे – सब कुछ पूर्व निर्धारित है, नरेन्द्र! जो होगा – सो ही होगा!! तुम्हारा सर काटने वाला भी

मजबूर होता है ...और फूल मालाएं पहनाने वाला ...भी यह नहीं जानता कि वो क्यों ऐसा कर रहा है ...?

अतः जो वो रचता है ...वो तो होगा ही – मैं अब यह मान कर चलता हूँ!!

मुझे दिल्ली के लिए कूच करना है! मुझे हिन्दू राष्ट्र की स्थापना करनी है! ये मेरे लिए आदेश हैं! प्रभु के यहाँ से आए आदेश हैं! फिर मैं उस परमपिता प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन क्यों करूंगा ...? मैं दिल्ली चलूँगा .. ..चलूँगा ...अवश्य ...चलूँगा!!

मुझे जीत के नगाड़े बजाने हैं ....!!!!

65

गुजराती 'गाँधी' को गुजराती 'मोदी' काटेगा!

"लोमड़ी बहुत परेशान है, भाई जी!" अमित कह रहा था . हम भविष्य के लिए मुहीम बनाने बैठे थे . मैंने दिल्ली जाने की तैयारियां आरम्भ कर दीं थीं .

"क्यों ...?" मैंने भी यों ही के अंदाज में अमित से पूछा था . "शायद शेर से ....? उस की दहाड़ सुन कर ....???"

"नहीं, भाई जी!" अमित हंसा था . "वह एक मच्छर से तंग आ गई है!" अमित ने नया सगूफा छोड़ा था .

"मच्छर से ...? एक मच्छर से ....लोमड़ी ....?"

"हाँ, हाँ! मच्छर उसे हर बार काट लेता है! उस के कान पर आ कर शोर मचाता है! डंका बजाता है ....युद्ध के लिए ललकारता है! और जब वो मारने दौड़ती है ...तो भाग जाता है ?" अमित जैसे कोई कहानी कह रहा था . मुझे भी रंग लेने की सूझी थी .

"कहाँ भाग जाता है ...?" मैंने प्रश्न किया था .

"गुजरात!" अमित ने हाथ फैला कर कहा था . "गुजरात भाग जाता है ....हर बार जीत जाता है .....और हर बार ....."हंस रहा था, अमित .

मेरी भी हंसी छूट गई थी . हम दोनों खूब हँसे थे! बात अमित की भी सही थी . अब की बार हमारा चौथा वार था –और हम २००२ से ही गुजरात में शाशन चला रहे थे! 'गोधरा' काण्ड को हमने शिव की तरह ...गरल मान कर पी लिया था ....और पचा भी लिया था! हिन्दू–मुसलमान का समीकरण

भी हमने बिठा लिया था! हमने लोगों के साथ सीधे सम्बन्ध बना लिए थे! हमने 'विकास' की बांह पकड़ी थी और हम एक लम्बे रास्ते पर चल पड़े थे!

हमें महत्वपूर्ण सफलताएं मिलीं थीं! हमें जनता का प्यार और दुलार मिला था! हमें ...सहयोग ...और हर सहारा मिला था! गुजरात सच्चे माईनों में हमारा घर था ....हमारा गढ़ था ....और अगले संग्राम के लिए ...हमारा बेस था!! गुजरात का ये २०१२ का चुनाव ...हमारे लिए 'डू ओर डाई ' का पैगाम था! ये हमारा ...'मरना ...जीना' था ...और हमें ये चुनाव हर कीमत पर जीत लेना था ...!!

"शक्ति पर जूते बरसे हैं, भाई जी!" अमित ने एक और भी सूचना दी थी .

"क्यों ....?"

"उसे कहा गया है कि ...जो भी वो करे ....पर चुनाव में मोदी हारना ही चाहिए ? और दिल्ली ...माने कि सेंटर ..शक्ति सिंह गुहेल को ...मूं–माँगा – देने पर तुला है! हर कीमत चुकाने के लिए तैयार है, दिल्ली की सरकार ? उन्हें मोदी की हार चाहिए .....! उन्हें ...मोदी .....

"लेकिन क्यों ....?" मैंने ये प्रश्न जान –बूझ कर पूछा था .

"इसलिए कि ...उन्हें डर है ...कि ..मोदी .....?" अमित ने मुझे घूरा था .

"मोदी – क्या ....?"

"मोदी ....दिल्ली आ रहा है .....!!" वह फिर हंसा था . "हौसले पस्त हुए लग रहे हैं – दिल्ली के ...मात्र मोदी के नाम से ...? 'मोदी' के स्वप्न आने लगे हैं – लोगों को! और ......"

"लेकिन, आमिर .....?"

"पता नहीं, भाई जी ...? ये खबर हवा पर उड़ने क्यों लगी है ....कोई नहीं जानता! हमने तो अभी तक किसी से जिक्र तक नहीं किया ....?" वह हंस रहा था .

मैंने भी अभी तक अपनी जुबान पर दिल्ली को बैठने नहीं दिया था! जो था – सब दिमाग में ही था ...!!

"और अपनों को क्या–क्या पता है ....?" मैंने अपनी पार्टी की खबर भी पूछी थी .

"सब को ....सब पता है, भाई जी!" अमित ने स्पष्ट कहा था . "हमीं हैं ....जिन्हें कुछ पता नहीं .....!!" वह फिर मुस्कराया था . "हमारे बारे ...लोग हम से ज्यादा जानते हैं –मुझे भी यह जान कर विश्वास नहीं हुआ था ...? पर, भाई जी ...."

"हम पर जासूसी हो रही है ....?" मैंने सीधा प्रश्न पूछा था .

"क्यों नहीं होगी ....?" अमित का प्रति प्रश्न था . "आप अब कोई साधारण वस्तु नहीं रहे, भाई जी ...?" उस ने अपने लहजे में कहा था . "आप ...अब ..एक 'राष्ट्रीय' मुद्दा बन चुके हैं! दिल्ली अब आप को ...साफ–साफ ..एक खतरे के रूप में ..देख रही है! और पल–पल की खबर ...उन तक पहुँच रही है!" बे–बाक बात थी, अमित की .

"कौन सी खबरें जा रही हैं, अमित ...?" मैंने पूछ लिया था . मैं भी जानना चाहता था कि वो कौन–कौन कमियां हैं ...हमारी जो हमें दगा दे सकतीं थीं! या कि जो हमें परास्त कर सकतीं थीं ...?

अब अमित ने मुझे अपांग देखा था . कुछ सोचा था ...कुछ याद किया था! और कुछ अनुमान भी लगाया था ? अमित की अक्ल की मैं दाद देता हूँ . उड़ती चिड़िया के पर यही गिनता है! ना जाने कैसे इसे सब पता होता है ....और ...

"लोग रात–दिन गुजरात आ रहे हैं, भाई जी!" अमित बताने लगा था . "खबरें लेने आते हैं! गुजरात में डोल–डोल कर ...कहीं कोई सडांध खोज लेना चाहते हैं ...! चाहते हैं कि ...अखबारों के लिए ...कोई ऐसी सौगात ले जाएं ...गुजरात से ...जो जाते ही सुर्खियों में आ जाए और टी वी तथा मीडिया पर आतंक की तरह छा जाए ...? और ...और मोदी उस हादसे में मारा जाए ...?" उस ने फिर से मुझे देखा था .

"पर ले कर क्या जा रहे हैं ...?" मैं अधीर हो गया था –जानने के लिए .

"बैग भर–भर कर 'विकास' ले जा रहे हैं! सडांध की जगह सुगंध ले जाते हैं! मोदी के नाम की सुगंध ...एक भाईचारे की सुगंध ....और एक ऐसी सुगंध जो ....अन्यत्र दुर्लभ है! प्रदेश में ना तो कोई झगडा होता है ....और ना ही कोई झंझट है ...? लोगों तक हर सुविधा पहुँच रही है . प्रदेश– पूरे देश में एक अलग ही उदाहरण बन गया है! 'देखो! गुजरात जा कर' लोग कहते सुने जाते हैं! हर प्रदेश अब गुजरात की नकल करना चाहता है! लेकिन ....."

"लेकिन .....?"

"लेकिन 'मोदी' कहाँ से आए ....?" हंसा था, अमित . "कुर्सी पर बैठा हर आदमी ....अपने भले की सोच रहा है ...! प्रदेश तो ....?"

हाँ! अमित का कहना सच था ...अक्षर सह सत्य था! कुर्सी पर बैठते ही आदमी को अपने ही नजर आने लगते हैं! अपने लोग ...अपना स्वार्थ ... अपना भविष्य और अपनी ही छवि ....तथा अपना ही हानि–लाभ वह सब से पहले देखता है! और जनता ...प्रदेश ....और देश ....जैसे कुछ होता ही नहीं ...? गुजरात का भी तो यही हाल था ...? कुर्सी पाने तक के लिए टक्कर होती है ....? और फिर चाहे शेरा हो ...या ..बघेरा ....अपना ही स्वार्थ आगे होता है ...?

और अब देश का भी तो यही हाल था .....?

जम कर लूट हो रही थी – मैं जानता था! मैं मानता था कि देश में एक विदेशी सरकार ...पुनह स्थापित हो चुकी थी! अपने देश में अपनों के लिए कुछ नहीं ....हो रहा था ? जो हो रहा था वो उन के लिए था जिन्हें भविष्य में देश को निगलना था ...पकड़ लेना था ...बाँट लेना था ...? और आश्चर्य ये था कि ...पूरा तंत्र उन के लिए ही काम कर रहा था ...? चाहे सिद्ध थे ...विचारक थे ....मनीषी थे ...या कि राजनेता थे ...सब एक अद्रश्य मालिक का पानी भर रहे थे ...? कुल मिला कर उन्हें अपने इनाम–इकरार चाहिए थे ...फिर चाहे देश लुटे ...टूटे ...गुलाम बने – उन की बला से ....?

"मुकाबला जंगी होगा, भाई जी ...?" अमित ने मेरा सोच तोडा था . "गुजरात के चुनाव ..दिल्ली के लिए ...बहुत ही महत्वपूर्ण हो गए हैं ...?"

"क्या –क्या तैयारियां चल रही हैं ...?" मैंने पूछा था .

"बस एक ही उद्देश्य है –उन का! मोदी और अमित को ...इतना नीचे . ..जमीन में गाढ़ दिया जाए ...ताकि किसी को ढूंढें भी न मिलें ....! और फिर गुजरात को ...."

"क्या करेंगे, गुजरात का ...?" मैंने सीधा प्रश्न पूछा था . मैं नहीं चाहता था कि गुजरात किसी भी हाल में उन के हाथ लग जाए!

"आनंदी ...को पकड़ा देंगे ....?" अमित ने तुरंत उत्तर दिया था . "बहुत सही रहेगा ..., भाई जी!" अमित ने मेरी आँखों में देखा था . "दिल्ली में

जमने तक का समय ....तो हमें ...गुजरात से ही मिलेगा ...?" अमित का तर्क था .

"ठीक...! बहुत ठीक ...!!" मैंने स्वीकार में सर हिलाया था . "आनंदी ही अपनी है ...?" मैं मान गया था . "किसी के दबाब में आनेवाली हैसीयत नहीं है!" मैं कहता रहा था .

"दिल्ली में यह खबर भी पहुंची हुई है ....?" अमित कह कर हंस रहा था .

"ओह, नो ....?" मैं आश्चर्य से उछल पड़ा था . "तब तो ...फतह ...हमारी ही होगी, अमित ... ?" मेरा अनुमान था .

एक बारगी मेरी निगाह गुजरात के पूरे प्रदेशको चूम कर लौटी थी . मैं देखना चाहता था कि चुनाव की होती तैयारिओं में कोई कमीं तो नहीं थी ...? कोई ऐसा नुकता – जो हम नजरन्दाज कर जाएं ...और कल को नासूर बन जाए ...? जनता का मन बड़ा ही कोमल होता है! तनिक–सी भी चोट लग जाए ...तो आहात हो जाता है! खास कर अपने कर्णधारों से जनता को वही आशाएं होती हैं ....जो परमात्मा से होती हैं ? और परमात्मा भी ...उन्ही का दास है ...सेवक है! जन–मानस का एक अलग ही महत्व है – मैं यह मान कर चलता हूँ!

"अमित ....?" अचानक मेरे दिमाग में एक विचार कौंधा था . "अब की बार महिलाओं को कितनी सीट सौंप रहे हैं ...?" मैंने पूछा था .

"भाई जी! आप प्रसन्न हो जाएंगे ...ये जान कर कि ..मैं २५ सीटें महिलाओं के नाम लिख चुका हूँ! १८५ में से २५ ज्यादा तो नहीं ....पर कम भी नहीं हैं ...? अगर २० तक भी जीत कर आती हैं ....तो ..हमारा अनुपात सही बना रहेगा ...!"

"गुड, वैरी गुड ...!!" मैं प्रसन्न था . मुझे अमित से इस प्रकार की उम्मीदें रहती हैं ?

"मैं अब की बार एक नया प्रयोग करना चाहता हूँ, भाई जी ...?" अमित का आग्रह आया था .

"क्या, भला ....?" मैंने पूछा था .

"'मोदी' ....'मोदी' ....'मोदी' ......और ...'मोदी' ....!!" अमित कहता ही जा रहा था . "मतलब कि ...मोदी ही मोदी ....? हवा में 'मोदी' .....आकाश में

..'मोदी' ...अखबार में ..'मोदी' ....मीडिया में ...'मोदी' ...और जनता की जुबान पर 'मोदी' ....एक मंत्र की तरह 'मोदी' ...और 'मोदी' ....?" अमित ने एक नया पासा फेंका था!

मैंने अब अमित को चौंक कर देखा था . मैं समझने की कोशिश कर रहा था कि ...आखिर अमित कहना क्या चाहता था ...? मेरा दिमाग तो अब तरह–तरह के अनुमाओं से भर गया था ...और डर गया था ...? कहीं हम . ..'मोदी' का ये मंत्र फैला कर जनता को डरा तो नहीं देंगे ...? कहीं लोग समझ बैठेंगे कि ..मैं ...'मोदी' ...सत्ता पाने के लिए ...दीवाना हो गया था .. .और मैं ......?

"आप घबरा क्यों गए ....?" हंसा था, अमित . "मेरा प्रयोग है, ये ....? मेरा प्रयास है ....आप का तो नहीं ....?" अमित रुका था . उस ने मुझे असहज होते देख लिया था . "मैं आप से 'मोदी' नाम उधार ले रहा हूँ ...भाई जी . ..? ये मेरा जिम्मा है कि मैं ...इस का सदुपयोग कैसे करू...?"

"कैसे करोगे ....? क्यों करोगे ....? और अगर .....?"

"डरने की बात नहीं है ...?" अमित सहज था . "अब देखिए ...! 'गांधी' .... नाम ही तो है ? है भी गुजरात का ...हमारा ...लेकिन अब ये हमारा नहीं है ... ? इस को उन लोगों ने हम से छीन लिया ...जिन का न तो इस नाम से कोई सरोकार है ...और न ही गुजरात से ...? 'गाँधी' ....इंदिरा गाँधी ....संजय गांधी ...राजीव गाँधी ...सोनिया गांधी ....प्रियंका गाँधी ....राहुल गाँधी ....ये सब गाँधी हैं कब ....? ये कब थे – गाँधी ...? लेकिन नाम चुरा लिया ...चालाकी से गाँधी बन गए ...और उन हमारे परम पूज्य गाँधी जी को ...लूट लिया ...? उन का तो नाम तक ले लिया ....और अब काम करते हैं .....?" अमित मुझे घूर रहा था . "आप समझें, भाई जी ....कि हमें ...इस 'गाँधी' का तोड़ खोजना है ...?"

"पर कैसे ....?"

"डायमंड कट्स द डायमंड ....!!" हंस गया था, अमित . "गुजराती 'गाँधी' को ....गुजराती ...'मोदी' काटेगा ...!!" अमित ने बात का तोड़ कर दिया था .

66

काशी का कायाकल्प मैं करूंगा!!

"मैं 'मोदी' की मिटटी से ...'गाँधी' को गहरे में दफना दूंगा! आप देख लेना, भाई जी कि ...'मोदी–मंत्र' जनता के सर चढ़ कर बोलेगा ...और ये इन नकली 'गांधियों' को ध्वस्त कर देगा ...!!"

"लेकिन, अमित ....?"

"हम तो झूठे नहीं हैं ...? हम तो चोर नहीं हैं ...? 'मोदी' तो हमारा है ...? आदमी है –मोदी ...असली हाड–मांस का बना है ...जीता–जागता ... जीवंत नेता है ...जिस में अकूत जान है ...श्रेष्ठ प्राण है ...और सच्चे और अचूक इरादे हैं!" अमित हवा पर छा गया था . मैं चुप था . मैं उस से सहमत था . मैं अमित के विरोध में न था ....!!

"नाम ....? क्या धरा है, नाम में नरेन्द्र ...? मैं अपने आप को मना रहा था!

लेकिन तभी गुरु जी का तेजपुंज चेहरा मेरी आँखों के सामने उदय हो गया था! वह मुझे लाल–लाल लोचनों से घूर रहे थे . काशी का नाम काशी न रहा – ये हमारा दुर्भाग्य ही रहा, नरेन्द्र!" उन की आवाज चली आ रही थी . "शायद तुम्हें ज्ञात ही न हो कि काशी ... नगरी का क्या महत्व है ?" उन्होंने मुझे एक अज्ञानी बालक की तरह देखा था . "पूरे विश्व में ये एक ही नगरी है – जिस का जन्म धरती के जन्म के साथ हुआ ...? शिव ने बसाया था –इसे! काशी–विश्वनाथ ......?" वो कहीं गुम हो गए थे .

मुझे भी लगा था कि शिव आ कर हमारे बीच बैठ गए थे!

"वैदिक नगर था ये.पुत्र!" जैसे शिव स्वयं मुझे समझा रहे थे . "वेद, पुराण और सारे उपनिषद यहीं से जन्मे हैं! हमारी वैदिक संस्कृति का भी यहीं जन्म हुआ! विश्व की सांस्कृतिक विरासत का एकमात्र केंद्र था –काशी!" वह बता रहे थे .

"मोक्ष मिलता था –काशी में ....?" मैंने पूछा था .

"हाँ! यहाँ शिक्षा प्राप्त करने के बाद शिष्य ...मोक्ष को प्राप्त होते थे! उन की शिक्षा सम्पूर्ण होती थी .....और ...."

गंगा तट पर बसा यह पुरातन शहर –काशी मुझे लुभाने लगा था!

"मुगल शाशकों ने इसे सब से ज्यादा बर्बाद किया!"गुरु जी मुझे बताने लगे थे . सच मानो, नरेन्द्र कि ...इन शाशकों को ...ना जाने क्या आनंद आता था कि ...काशी जरूर आते थे ....और लूट–पाट ....मार–धाड़ ...के साथ–साथ ...हिन्दू मंदिरों को ध्वस्त करना ...इन का शौक ही बन गया था ....?"

"क्यों ....?" मैं नाराज था .

"ना जानें क्यों, नरेन्द्र! सब से पहले ११६४ में कुतुबुद्दीन ऐबक ने काशी को लूटा ....और हिन्दूओं और हिन्दू संस्कृति का विनाश किया था! फिर १. ..७६ में तुगलक आया और उस ने भी अपनी भड़ांस खूब निकाली! १४६६ में लोधी से भी न रहा गया ...और वह भी काशी चला ही आया था ? इस के बाद औरंगजेब ने तो ...पूरे देश में ही हिन्दूओं का जीना हराम कर दिया था ...? इन आक्रमणकारीओं ने ...हमारी सम्पूर्ण शिक्षा ...व्यवस्था को समाप्त कर दिया था! नालंदा को जला दिया था ...सारनाथ को ....."

"किसी ने भी नहीं रोका ....इन्हें ......?" मैं ने ...तनिक रोष में आ कर पूछा था .

गुरु जी चुप थे . कहीं खो गए थे . शायद कोई माकूल उत्तर ढूंढ रहे थे – मेरे लिए! क्यों कि मेरे कोमल शिशु मन को वह कोई ठेस न पहुंचाना चाहते थे! पर मैं समझ रहा था कि ....हम .....

"हम संगठित हो कब पाते हैं, नरेन्द्र ....?" गुरु जी की आवाज में एक टीस थी . "औरंगजेब के जाने के बाद ...अंग्रेज आ गए ....! इन्होने अलग ही चालें चलीं ....? काशी के एक जमींदार – मंशा राम को ...राजा बनाया ...बहकाया ...और बाद में पूरा प्रदेश हड़प लिया ...?"

"फिर ....?"

"फिर इन की वही चाल सामने आई! एनीबेसेंट ने पंडित मालवीय को बहका कर ...बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी की ...स्थापना करा दी! उस का उद्देश्य था कि ..हिन्दू संस्कृति की शिक्षा–दीक्षा का अंत आ जाए! 'न रहेगा –बांस – न बजेगी बांसुरी!' की कहावत चरितार्थ कर दी! उस ने तो काशी का अंत ही ला दिया ...? इसे 'बनारस' बना दिया और ....अंग्रेजी शिक्षा का आरंभ कर दिया ...ताकि अंग्रेज हमेशा–हमेशा के लिए शाशक बने रहें .... और हम उन के गुलाम!!"

मुझे गहरा आघात लगा था ....!!

हमारी सांस्कृतिक धरोहरों को ...आक्रमणकारियों ने ...बाहर से आ–आ कर तोडा ...और हम उठे ही नहीं ....लड़े ही नहीं ...?यह आखिर क्या था जो हमें लड़ने से रोकता रहा था ....?

"हम लड़ते तो थे, नरेन्द्र! लेकिन अपनी–अपनी लड़ाईयां लड़ते थे ... और हार जाते थे ...? हमारे अपने ही सहोदर दुश्मन से मिल जाते थे ...और हमें हरा देते थे ...?" गुरु जी ने मुझे सच्चाई बता दी थी .

"चलते हो, काशी देखने ....?" क्रिस्टी ने मुझे पूछा था . "मुझे काशी–विश्वनाथ के दर्शन करने हैं ....!" वह बता रही थी .

मैंने मुड कर सामने खड़ी क्रिस्टी को एक मुसीबत मान कर घूरा था! मुझे लगा कि – ये भी एक लुटेरे की बेटी थी –जो भारत को लूट कर लौट गया था ....इंग्लेंड! और फिर मेरी आँखों के सामने ...मुसलमानों के ...आक्रमण करते काफिले ...उठ खड़े हुए थे! ना जाने क्यों – ये काशी–विश्वनाथ ... फिर भी जिन्दा थे ...? फिर भी ....ना जाने कैसे ..हम भारतीय आज भी जिन्दा थे ....?

"चलो! साथ रहेगा ....!!" क्रिस्टी ने मुझे अपने साथ ले लिया था . मैं भी चाहने लगा था कि ...कम–से–कम मैं ...काशी की लुटी–पिटी काया को ...देख तो लूँगा ...? मैं देख तो लूँगा कि काशी को कहाँ–कहाँ घाव लगे थे ....और क्या वो आज भी रिस रहे थे ....? मैं देखूँगा कि ...."एक से दो भले ....?" कह कर क्रिस्टी हंस पड़ी थी .

हम दोनों अब मन बना कर चल पड़े थे! हमारे पैरों में पर लग गए थे! हम काशी–विश्वनाथ के दर्शनों के लिए भागे चले जा रहे थे! हम उड़ान भर रहे थे ...और कुछ अलौकिक पा लेना चाहते थे ....?

"ओए!ओए ...!!" मुझे एक अध् –बूढ़े व्यक्ति ने ललकारा था ."ये ...कौन है, ब्बे ....?" उस ने क्रिस्टी की ओर इशारा किया था .

मैं ठिठका था . फिर मैंने हिम्मत कर उस व्यक्ति का मुकाबला किया था . मैं उसे बताने लगा था कि ..क्रिस्टी ...निर्मोही अखाड़े की अवधूत थी .... तपस्विनी थी ....और काशी–विश्वनाथ के दर्शन–लाभ के लिए जा रही थी!

"अब्बे! तू काला ....और ये ....गोरी ....?" साथ का दूसरा व्यक्ति हमारी ओर झपटा था . "जरूर कोई दाल में काला है ....!!" उस ने घोषणा की थी .

क्रिस्टी ने मेरी बांह पकड़ी थी ....और ...भाग ली थी!!

फिर हम सामान्य हुए थे और चल कर लौट आए थे! हमारे दर्शन लाभ का चाव ...'काले–गोर के भेद' की भेंट चढ़ गया था! आज भी लोग 'काले–गोरे' के मेल को अजूबा ही मानते थे ? तभी शायद ...अंग्रेजों का हेल–मेल ... भारतीयों के साथ न हो पाया होगा ....– मैंने सोचा था!

काशी का नाम भी बनारस हो गया था ...और देश में हर शहर का नाम ही बदल गया था ...? गांवों के नाम भी बदले थे ...? हर धाम का नाम बदली था ....और ...सब पर या तो मुसलमानों की छाप थी ...या फिर ब्रिटिश की ? शिक्षा का स्थान अंग्रेजी प्रणाली ने ले लिया था ...और अब ...गुलाम पैदा हो रहे थे – धडाधड! विचित्र बात थी ...? हमारा देश था ....पर हमारा था नहीं ...?

शायद अमित की बात ही सच थी .....?

पूरा देश एक नाम के नीचे दबा खड़ा था ...झुका खड़ा था ...विनम्र हुआ खड़ा था ...और पूर्ण समर्पण के मूड में था ...? चमत्कार ही हुआ था कि . ..'गाँधी' के नाम को चुरा कर ...नकली लोग शाशक बन कर हमारे सरों पर बैठे थे ...और अब पूरा देश उन की भक्ति करने में जुटा था ....?

पहले इस 'नाम' के काम को करेंगे – मैं सोच रहा था! भारत को भारत कह कर तो बुलाएं ....मैं स्वयं को कह रहा था! अपनी जन्म–भूमि के ...मुंह पर पड़ी मिटटी को ...तो हटाएं ...उसे जिलाएँ तो ....?

"अमित ...!" मैं एक लम्बे अंतराल के बाद बोला था . "म ...म ...मैं चाहता हूँ कि ....काशी ...से ...अगर चुनाव ....लडूं ....तो ....?"

"बनता है, आप का ....भाई जी ...!" अमित का उत्तर था . "काशी हमारा तीर्थ है ...और उस का उद्धार भी आवश्यक है ....? " अमित ने बात को सिरे चढा दिया था .

मैं प्रसन्न हो उठा था! 'मैं आ रहा हूँ, गुरु जी!' लगा था – मैं जोर–जोर से पुकार रहा था .'मैं आ रहा हूँ ....मैं ...उद्धार करूंगा ....मैं लडूंगा ....मैं जीतूंगा ....और आप देख लेना ...कि मैं ...इन आतातताइयों को ...."

तभी एक बार फिर मेरे दिल्ली जाने का इरादा पक्का हो गया था!

और आज ही मैंने सोच लिया था कि ...चुनाव मैं लडूंगा ...और वो भी काशी से ही लडूंगा ....बनारस को मैं ही संभालूँगा ...काशी–विश्वनाथ को . ..शिव की नगरी को ....हिन्दूओं के इस परम तीर्थ को ...१६ महाजनपदों में से प्रथम ...और ...श्रेष्ठ काशी का ...कायाकल्प मैं करूंगा!!

चुनाव तो मैं उसी दिन जीत गया था .....!!

67

चोर के पैर नहीं होते तो झूठ का सर नहीं होता?

२०११ का समय चल रहा था! गुजरात में सुलगे लाक्षाग्रह –२००२ के गोधरा काण्ड की आग बुझने लगी थी . अब उस का कहीं धुआं भी उठता दिखाई न देता था! कहा जा रहा था कि मोदी ने बड़ी ही उस्तादी के साथ ...मुसलमानों को मनालिया था! और न जाने कौन से लालच का लेप लगाया था कि ...मोदी के खिलाफ कोई भी बोलने को तैयार न था ...?

लेकिन दिल्ली में नए ज्वालामुखी धधक उठे थे!!

"मैंने पहले ही चेतावनी दी थी, सर ...कि इस अमित को आजन्म जेल में ही रखा जाए ...?" संजीव भट्ट –आई पी एस की आवाज में रोष था. वो निराश थे . "गढ़े मुर्दे उखाड़ रहा है ....? बफोर्स को ले कर फिर से राजीव जी पर हमला हो रहा है! कांग्रेस को बदनाम किया जा रहा है ...ताकि ..." उन का स्वर तनिक और ऊंचा हुआ था ताकि ...उस की पुकार को ज्यादा–से–ज्यादा जमा कांग्रेसी सुनें ?

भय और आतंक की हवा पर बैठा –अमित शाह ...सब के सामने बारी–बारी डोल गया था! उस का विकल्प अभी तक कोई भी कांग्रेसी नहीं निकाल पाया था ...?

"अब तो वह मैडम का नाम भी खुले आम ले रहा है, भाई जी ...?" गुजरात के कांग्रेसी नेता –शक्ति सिंह गुहिल के स्वर भी तीखे थे . "इटली से जोड़ता है ....बफोर्स को ....और कहता है ...कि ..." वह ठहरा था . अब एक और नया डर आ कर सामने खड़ा हो गया था .

नरेन्द्र मोदी और अमित शाह ....दो गुजराती जैसे दिल्ली को दहलाए दे रहे थे ....?

"चुनाव आ रहे हैं, बारह के ....?" होम मिनिस्टर चिदम्बरम बोले थे . "कैसी तैयारियां चल रही हैं ....?" उन का प्रश्न था . "दफना दो ....अब की बार .....? न रहेगा बांस ...ना बजेगी ...बांसुरी ....?" उन्होंने तनिक मुस्कराने का प्रयास किया था .

"सर! इस अमित शाह ने एक नया ही शगूफा छोड़ा है ....!" शक्ति सिंह गुहिल ने एक और भी नया डर दिखाया था .

"क्या ....?" चिदाम्बरम चौंक गए थे .

"कहता है – कांग्रेस –मुक्त गुजरात ....?" शक्ति सिंह की आवाज ऊंची थी जिसे हर किसी ने सुना था .

एक चुप्पी छा गई थी! संकट जैसा कुछ आरम्भ हो गया था! वास्तव में यह तो पहली बार ही ...कांग्रेस के इतिहास की ... एक घटना थी जहाँ ... एक अदना–सा आदमी ...कांग्रेस मुक्त गुजरात की बात कर रहा था ...? कांग्रेस –एक पार्टी जिस ने देश को आजादी दी ...देश को क्या–क्या नहीं दिया ....आज सभी को मरणासन्न दिखाई दे रही थी ...? रोमांच था ...रौगटे खड़े थे ....कांग्रेसिओं के ...जो उस के नाम पर पल रहे थे ...शाशन कर रहे थे ....कमाई खा रहे थे ....और ....

"कल को ये कहेगा – कांग्रेस मुक्त भारत .....?" गरजे थे – नए नेता, ओम धवन . "और कल को कहेगा – हटाओ सोनिया ...लाओ ...मोदी .... और ...."

"तुम कह तो रहे हो .....?" मैडम की आवाज में रोष था . "हू ....इज . ..दिस ...इडियट ....?" उन का प्रश्न था . "ना कहें लोग ....तब कहें ....?" उन्होंने प्रतिरोध किया था . "अपने ही लोग मूर्ख हैं ....?" उन्होंने पार्टी के प्रभारी लोगों को कोसा था . "हम क्या नारा दे रहे हैं ....?" अब उन्होंने सीधा शक्ति सिंह गुहिल से प्रश्न किया था .

कोई उत्तर नहीं आया था . केवल चुप्पी ही लौटी थी! जमा कांग्रेसी अब एक दूसरे का मुंह ताक रहे थे! वास्तव में मैडम के सिवा और किसी को कुछ सोचने–विचारने की इजाजत ....कहाँ थी ? ज्यादा–से –ज्यादा राहुल

गाँधी ही थे जो अपनी राय व्यक्त कर सकते थे ...? पुराने मंत्री तो केवल सुनते ही थे ...मनन ही करते थे ....और ...अमल भी बाद में करते थे! बाकी सब तो केवल अनुसरण ही करते थे!!

"आप क्या सोचते हैं, बारह के चुनाव के बारे ....?" अब की बार मैडम ने अपनी निगाह गुजरात राज्य के सेक्रेटरी पर केन्द्रित कीं थीं .

"मैडम! हम अब की बार महिलाओं को ज्यादा सीटें देंगे! मोदी और अमित शाह की ये चाल है ....कि वो ....ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को ... टिकिट ..." वह घबराए हुए थे .

"बेवकूफी ...की भी हद होती है ....?" मैडम बौखला गईं थीं . "मैं ....मैं ....चुनाव ...किसी भी कीमत पर ...न हारूगी ....?" घोषणा की थी, मैडम ने . "चाहे ...जो हो ...., करो ....!! जो भी बने करो ....लेकिन ...." अब उन्होंने जमा सभी कांग्रेसिओं को एक साथ घूरा था .

"एक मोदी ....अदना–सा मोदी ......खुला घूम रहा है ...?" संजीव भट्ट कहना चाहते थे . "पूरी केंद्र सरकार जोर आजमा चुकी है ....परास्त हो चुकी है ....? अब जीतेंगे ....ये ...बारह के चुनाव ....गुजरात में ....? माई ...फुट ....!!" उन्होंने जैसे मैडम की मांग पर लात मारी थी .

"हमने 'कोल–गेट' में ...राजा और सम्बंधित लोगों को ..जेल भेजा है ....! इस का तो जनता में सही सन्देश गया है ...!" गृह मंत्री चिदाम्बरम ने जमा लोगों को सरकार की की कार्यवाही का ज्ञान कराया था . "हमने कहा है कि ...कानून ...अपना काम करेगा ...!!" वो फिर से हँसे थे .

लोग सब चुप थे! लेकिन सब को एक साथ याद हो आया था कि ... 'कोल–गेट' में सरकार की कितनी थुक्का –फजीहत हुई थी ...? और आज भी जनता को याद था कि ...देश की अपार संपत्ति का सौदा कर कांग्रेस की सरकार ने १.७५ लाख करोड़ का चूना लगाया था ...और अपने सभी यारों–प्यारों को १६४ कोल–फील्ड्स बेच कर –खूब धन कमाया था!!

"मोदी की मीटिंग्स में ...आज–कल यही चर्चा रहती है, भाई जी!" शक्ति सिंह गुहिल ने कहा था . "और तो कुछ है नहीं – हमारे खिलाफ ....? वो इन्हीं चर्चाओं में उलझा रहता है ? लेकिन हम ...लोगों के साथ हैं ...संपर्क में हैं ....!"

"लेकिन लोग ...निराश हैं, सर!" संजीव भट्ट फिर से बोले थे . "कांग्रेस सरकार केंद्र में है ....पर मोदी खुला घूम रहा है ....?" उल्हाना दिया था –संजीव भट्ट ने .

"तो तुम भी कुछ करो, ना ....?" एक तीखा प्रश्न आया था – संजीव भट्ट की ओर . "तुम भी तो कुछ करो, मेरे भाई ....?"

"मैं तो जी–जान से लड़ा हूँ, सर!" संजीव भट्ट ने कहा था . "मेरे खिलाफ तो उस ने – माने कि गुजरात सरकार ने ... और एक नई एफ आई आर लिखा दी है ...? मेरे तो वो प्राणों का प्यासा है ....? मोदी मुझे तो मिटा कर ही रहेगा ....?" रोने–रोने को था – संजीव भट्ट . "अगर यहाँ से कुछ न हुआ तो .....मैं तो बर्बाद हो जाऊंगा ....?" उस ने स्पष्ट कहा था . "मैंने कांग्रेस के लिए ...जां लड़ा दी ....और ...अब .....?"

बात गंभीर थी. प्रश्न भी गंभीर थे! बात बहती जा रही थी . और वक्त भी सरकता जा रहा था ...? मोदी और अमित शाह के आंकड़े ...सामने आ–आ कर कान्ग्रेसिओं को डराने लगे थे!

"'मोदी'.....'मोदी' ......!!" शक्ति सिंह गुहिल ने कहना आरंभ किया था . "पी एम् '.....'पी एम' ....!! का शोर सारे गुजरात में भरता जा रहा है ....भाई जी ?" उस ने एक और भी सूचना दी थी .

गंभीर सूचना थी! आज तक का इतिहास था कि ...इस तरह तो किसी भी राज्य के मुख्य मंत्री ने ... जुर्रत न की थी कि वो ......दिल्ली को ललकारे ...? यह पहला ही मौका था जब ....मोदी की ललकार सुन ...दिल्ली दहला रही थी ...?

"हेल्प ...हिम ...!" मैडम ने चिदंबरम को आदेश दिए थे . "डू ...व्हाटेवर ...इज पॉसिबल ....!" उन का इशारा था . "गेट हिम ...आल ...टू फाईट ... दिस ..मीनेस – मोदी ....?" वह कहती ही जा रही थीं . "और हाँ! मैंने भी मन बना लिया है ....कि ...मैं भी गुजरात के चुनाव लडूंगी .....!" उन्होंने तनिक हंस कर कहा था . "और ...आप मनमोहन जी ....?" उन का प्रश्न था .

लगा था कि ...मैडम के पास कोई योजना थी ...! तभी तो गुजरात के चुनावों की चुनौती भी उन्होंने ओट ली थी ...और मोदी की हार होना भी तय हो गया था ...?

"चुनावों से पहले ....मैं ....मोदी को जेल भिजवाना चाहता हूँ, मैडम ....?" अब की बार प्रदीप शर्मा बोले थे . "मैं भी चाहता हूँ ...कि मोदी जितना जल्दी हो ....जेल जाए ....?" वह मांग कर रहा था .

"केस क्या है ....?" मैडम पूछ बैठीं थीं .

"वही ....स्नूप –गेट है ....?" शक्ति सिंह गुहिल ने संक्षेप में उत्तर दिया था .

"लेकिन ....वो तो ....?"

"वही तो, मैडम!" प्रदीप शर्मा ने बीच में कहा था . "वही तो एक केस है ....जिस में ...मोदी बच ही नहीं सकता ....? मैंने नए सबूत पेश किए हैं! अब गुजरात सरकार कहती है – मैंने इन तथ्यों की चोरी की है ? मैंने हैक किया है ....उन के साईट को ....?"

"पब्लिक में जाएगा ....इस का ये 'प्रेम –प्रसंग ' तो ......'मोदी' की छवि खराब होगी ....!" शक्ति सिंह गुहिल भी शर्मा का साथ दे रहा था . "मैडम! ये कहानी सच्ची है! वो लड़की ...मतलब कि मिस सोनी ....४८ घंटों तक . ..मुख्य मंत्री ...निवास में ...कर क्या रही थी ....?" उस का प्रश्न था .

"इंट्रेस्टिंग ....!!" मैडम हंसीं थीं . "वैरी ....इंट्रेस्टिंग .....?" उन का कहना था . "गो ए –हैड ....!!" उन्होंने कहा था . "बाकी सभी लोगों को भी साथ ले लो!" आदेश था, मैडम का .

दिनों के बाद आज एक खुशी की लहर कांग्रेसियों के मन प्राण को गुदगुदा रही थी! नरेन्द्र मोदी का ४८ घंटों तक ...एक अनिन्द्य सुंदरी ...के साथ ...मुख्य मंत्री भवन में ...लोल–किलोल करना ...किसी परी –कथा जैसा ही तो था ...? एक साथ सब को जच गया था कि ...अगर प्रदीप शर्मा कुछ नए तथ्य सामने ले आया ....तो ...मोदी का चरित्र –हनन संभव है ?

"किसी मैनका के हाथों ही मरेगा, ये ...?" शक्ति सिंह गुहिल भी हंस रहे थे . "एक बार ...अखबारों में ...इस लड़की के साथ इस के फोटो आ जाएं ...तो फिर मैंने ...जानीं ....???" उस ने छाती ठोकी थी . "इस की नैया ...मैं डुबो दूंगा, सर!" वह गृह मंत्री को बता रहा था .

"मैं तहलका को बता देता हूँ ...कि ...जो भी बने ....सो करे ....? तुम्हारी मदद होगी ....हर कीमत पर होगी ....!" उन का वचन था .

देखते–देखते प्रदीप शर्मा की मदद के लिए ....२००२ से चलता आया . ..पूरा गिरोह उठ खड़ा हुआ था! अब उन सब को जच गया था कि ...इस लड़की के नाम पर ही ...ये मोदी महात्मा – मरेगा!!

"ये ...आसक्त तो है ....इस पर ...!" गुजरात राज्य के तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष – अर्जुन मोढवादिया बताने लगे थे . "कहते हैं – फोन पर घंटों–घंटों बातें होती हैं ...दोनों की ...!" वह हंस रहे थे .

"सच तो यह है, भाई जी!"गुहिल ने भी दिलचस्पी लेते हुए कहा था . "ये ...वस्तु .....ये सो काल्ड ..."मिस सोनी' ....या अब कहेंगे ...'माधुरी' ...है ही इतनी खूबसूरत ....कि किसी भी ऋषि –मुनी का ...ईमान डिगा दे ... .?" वह जोरों से हँसे थे . "गलती नहीं है– मोदी जी की ....?"

"पर ...ये माल तो आप का ही था, शर्मा जी ....?" अर्जुन ने चुटकी ली थी . "खूब दाना चुनते हैं, आप भी ....?" उन्होंने प्रदीप शर्मा की कमर पर एक धौल जमाई थी . "उस्ताद खूब हैं, आप ....?" अर्जुन ने उन की प्रशंसा की थी . "ले कर बैठ जाओगे, इसे ...मुझे अब यकीन है!" वह खूब हँसे थे .

प्रदीप शर्मा प्रसन्न थे . वह समझ गए थे कि ...नरेन्द्र मोदी को ...घेरने के लिए कांग्रेस अँधेरे में भटक रही थी! वह अभी भी 'डिमांड' में थे ? और मैडम ने भी तो उन की बात को मान लिया था ...? यहाँ तक कि होम मिनिस्टर के हाव–भाव से तो लगा था कि ... नरेन्द्र मोदी को घेरने में –अमेरिका ...सऊदी अरब ...और पाकिस्तान जैसे कई देश ...इस में शामिल थे ....और कोशिश में जुटे हुए थे ....?

मोदी के दुश्मनों का काफिला बढ़ता ही जा रहा था .....????

और अब अमित शाह को पता चला था कि ...प्रदीप शर्मा ने फिर से सुप्रीम कोर्ट में ...याचिका लगाई है कि ...नरेन्द्र मोदी की गुजरात सरकार ने उस पर भ्रष्टाचार का आरोप इस लिए लगाया था ....क्यों कि वह ...एक लड़की से ...मुख्य मंत्री नरेन्द्र मोदी की नजदीकियों को जानते थे ....? इस बात की पुष्टि फिर से एक बार 'गुलेल' और 'कोब्रा–पोस्ट' ने की थी! इसे ही आधार मान कर प्रदीप शर्मा के वकील ने अरविन्द केजरीवाल का सहारा लेते हुए ...उस की पार्टी के नेता – प्रशांत भूषन द्वारा ...सुप्रीम कोर्ट में फिर से याचिका लगा दी! और इस में उस जासूसी कांड 'स्नूप–गेट' की जाँच कराने की ...गुजारिश की ...जिस में वह लड़की .....?

"लड़की ....?" अमित शाह तनिक झुंझलाए थे . "फिर वही ....लड़की .....????" उन्होंने असमंजस में हवा में हाथ फेंके थे . "ये ....बेईमान ......प्रदीप शर्मा .....????" वो चुप थे .

हवा पर अब ...लड़की का नाम ...नखरा ....तेहा ....और तमीज ...तैर आए थे!!!

और साथ में आ खड़ा हुआ था – प्रदीप शर्मा का चालाक चेहरा ...? कितना बड़ा बेईमान था ये .... आई ए एस – अधिकारी ....? कैसे मिट सकता था – भ्रष्टाचार ....? जब बाढ़ ..ही खेत खाए ....तो कौन बचाए ....???? हर आदमी ही बेईमान है ....? किस–किस से लड़ोगे, नरेन्द्र ....? यह एक नंगा प्रश्न था – जो आज गुजरात राज्य के मुख्य मंत्री के सामने आ खड़ा हुआ था ....? और ...ऊपर से ...ये कानून....कोर्ट ...वकील ....और व्यवस्था ....? झूट और सच –सब बराबर तुलता है – वह अब जान गए थे!

"आप निश्चिन्त रहें .....!!" अमित शाह संगठित हो कर बोले थे . "मैं संभाल लूँगा, इस बेईमान को ....?" उन का चेहरा खिल गया था . "चोर के पैर नहीं होते –तो झूठ का सर नहीं होता ....?" वह बता रहे थे .

लेकिन देखना तो था ही ....कि अब की बार स्वांग क्या रचा था ....????

68

मित्रो! मुझे एक और आश्रय मिला?

मन तनिक हलका हुआ था –मेरा! फिर भी मैं ना जाने क्यों ...'लड़की' के प्रसंग को ले कर ...असहज हो गया था ....!!!

उस वक्त की बात है जब मैं गुजरात राज्य में हुई क्षति की पूर्ती के लिए ...दिन–रात भाग रहा था ...! ये २००४ का समय था . गुजरात को नष्ट–भ्रष्ट कर भू–कम्प तो चला गया था ...पर उस के दिए घाव अभी तक न भरे थे ...? और फिर गोधरा भी तो धधक ही रहा था ...? लेकिन मैं एक दृढ –निश्चय के साथ ...चलता ही चला जा रहा था! बढ़ता ही जा रहा था – अपनी मंजिल की ओर!!

"ये तो कमाल ही हो गया ....?" मैं अचानक कह उठा था . भुज में हुए विध्वंस को मैंने एक चश्मदीद गवाह की तरह देखा था . और आज ....जब मैं लौटा था ...तो बदले द्रश्य को देख कर ...दंग रह गया था ? लगता ही नहीं था कि यहाँ कभी कोई भू–चाल आया भी था ....? तब मैंने प्रशंसा में कहा था, "कितना प्यारा ...लेंडस्केप ..तैयार किया है ....?" मैंने मुड कर पास खड़े उस आई पी एस अधिकारी को देखा था . "किस ने किया है, ये चमत्कार .... ?" मेरा प्रश्न था .

"इन से मिलिए, सर!" प्रदीप शर्मा ने बड़ी ही विनम्रता के साथ कहा था . "मिस ....सोनी ....!" उस ने नाम बताया था . "आर्किटेक्ट हैं! पूना की एक फर्म में काम करती हैं! लेकिन रहने वाली तो भुज की ही हैं!" प्रदीप शर्मा मुस्करा रहा था . "आप की तो ......फैन हैं .....?" उस ने अपनी उस चुलबुली हंसी के मध्य से मुझे अवगत कराया था .

उस पल में .....उस छिन में ...मैंने भुज में आए ..एक और तूफ़ान को देख लिया था ....!!

मिस सोनी संगमरमर की प्रस्तर प्रतिमा–सी ...मेरे सामने खड़ी थी .... विंहस रही थी .....और शायद मुझ से मिलाने को बे–ताब थी ...? उस अनिंद्य सुंदरी को आँखें भर–भर कर देखता मैं ....हैरान था ...कि ..आखिर परमात्मा ने उसे इतना रूप–लावण्य दे कर निहाल किया था ....तो क्यों ..?

"कुल २७ साल की हैं, सर!" अचानक प्रदीप शर्मा ने मुझे मिस सोनी की उम्र बताई थी .

"वनडरफुल ....!!" मैंने मन में कहा था और ....प्रदीप शर्मा को निगाहें भर कर देखा था . उस का कहा मैं सब समझ रहा था . प्रदीप शर्मा का पूरे–का–पूरा सन्देश मुझ तक पहुँच गया था!

"चित्रा को देख कर मैं ...दंग रह गया था, नरेन्द्र!" न जाने कैसे अब मैं ...अपने गुरु जी की आवाजें सुन रहा था . "मैं ...न रोक पाया था ...अपने आप को ....?" वह बता रहे थे . "और ...चित्रा – जिसे मेरा बाप अपने लिए ब्याह कर लाया था, मुझ पर आसक्त हो गई थी!" उन का बेबाक स्वर चलता ही चला आ रहा था . "और ....और ...हम दोनों ....लिपट गए थे ....मिल गए थे ....प्रेमाकुल हुए ...पागल हो गए थे ...जब तक कि मेरा बाप ...कुल्हाड़ी लिए ...हम दोनों को ......?"

सच में, मित्रो! मेरे भी पसीने छूट गए थे ....!!

"मैं नहीं जानता, नरेन्द्र कि ....चित्रा का क्या हुआ ...? पर, हाँ! मैं बच कर भाग आया था ....और फिर कभी न लौटा ....." उन की वाणी सहज थी . "बेटे! जब ये औरत ...का भूत ...चढ़ता है ...तो आदमी पागल हो जाता है ....?"

और अब मैं भी पागल होने–होने को था ....? प्रदीप शर्मा भी ये जान गया था .....!!

"आप का तो ....यश ...फैल रहा है ....?" मिस सोनी कह रहीं थीं . "सब जानते हैं ....कि ...आप .....?" मधुर आवाज थी सोनी की ....! बहुत ....आकर्षक ...सौम्य ....और सटीक लगी थी, मुझे वह! शब्दों का चुनाव एक दम सही था .

"जानते हो मेरी माँ का गला मेरे डैडी ने क्यों काटा था ....?" ना जाने कैसे मैं फिर क्रिस्टी के सामने खड़ा था . "इस लिए, नरेन्द्र कि ...वह ...

कुल्टा थी ....दुश्चरित्र औरत थी ....और मेरे डैडी पागल हो गए थे ...? मैं भारत भाग आई थी ....''

''अब मैं भाग कर कहाँ जाऊं .....?'' मैंने क्रिस्टी से ही पूछा था .

''तुम भाग नहीं सकते हो, नरेन्द्र!'' लो! अब निवेदिता जी मुझे पकड़ कर खड़ी हो गईं थीं . ''जानते हो ...न कि ...स्वामी जी की म्रत्यु के बाद . ..मैंने संघर्ष छेड़ दिया था ...और लार्ड कर्जन से सीधे जा कर भिड़ गई थी ...?'' वह मुझे बता रहीं थीं . ''सीधे टक्कर लो ....दुराचारियों से ....भ्रष्ठाचारियों से .....और पलट दो इस बेईमान ...तंत्र को ....?'' वह कहती ही जा रहीं थीं .

लेकिन मैं भ्रमित था! मैं डरा हुआ था!! मैं ...तो ....? मैं तो अब मुड कर प्रदीप शर्मा को भी न देख पा रहा था ....?

''हमने अपना हक पा लिया था, उन से ...?'' अब की बार माँ शारदा उदय हुईं थीं . ''वो तो ....परमहंस थे .....पर हम भी ...तो ....?''

''पर मैं क्या मांगूं, माँ ....?'' मैं उन से पूछना चाहता था . ''म ...म....मैं ...अगर इस जाल में फंस गया ....तो ....?''

''लोग कहते हैं – आप ....पी ...एम् ...बनेंगे ......?'' मिस सोनी ने मेरा मौन तोडा था .

''लेकिन ....अ–के–ले .....?'' प्रदीप शर्मा ने आग पर घी डाला था . ''वैभव को ....अकेले–अकेले ....भोगना ......बुरा लगता है .....?'' वह बता रहा था . ''सर! आप की ....शौहरत ....?''

मैं अब प्रदीप शर्मा की चापलूस बातों को सुन रहा था ....?

कैसा विचित्र समारोह था ...? लग रहा था जैसे वहां .....उस हिल–व्यू गार्डन में ... कोई स्वयंवर हो रहा था ...और कामदेव ने कामातुर नदियों का जाल ...चहुदिक फैला दिया था ....? वहां उपस्थित सभी अपने–अपने होश खो बैठे थे ....! अब देखना यह था कि ....कौन ...ले जाएगा मिस सोनी को ....वर कर ....और ...कौन–कौन रह जाएंगे – हाथ मलते ....?

''इन के हाथों में जादू है, सर!'' प्रदीप शर्मा फिर से कहने लगा था . ''ये देखिए .....आप स्वयं ....देखिए ......?'' अब वह चाहता था कि मैं मिस सोनी का स्पर्श करू.

सुंदर उंगलियाँ थीं! लम्बी –लम्बी ...सुघड़ उंगलियाँ ...और वो रचे नाखून ....न जाने क्यों मुझे बुला बैठे थे ....? सोनी का गोरा रंग भी ....क्या ही रंग था ....? और ढंग भी तो निराला ही था ...? मेरी नीयत ...न जाने क्यों बहकने लगी थी! मन भागने लगा था . तन ....तन को छूने के लिए राजी हो गया था! मात्र एक संकोच ही बचा था ...हमारे बीच ....जिसे प्रदीप शर्मा ने ....अब की बार समाप्त ही कर देना था ....!!

"छू मत लेना, दरवेश .....?" अचानक मेरे कंधे के उस पार से एक आवाज आई थी . आवाज – जिसे मैं जानता था ...और पहचानता भी था . "डूब जाओगे ....!!" फिर आई थी एक चेतावनी .

जसोदा थी! जसोदा बैन – मेरी धर्म पत्नी जो सहसा ही मेरे साथ आ खड़ी हुई थी!!

कमाल ही था ....? जसोदा की आँखों में मेरे लिए ...शुभ कामनाओं के चिराग जल रहे थे! वह मेरी अब तक की कामयाबी से प्रसन्न थी–शायद . ...? लगा –उसे अपने पति पर गर्व था ...अभिमान था ....और आज ...अचानक ही वह ...अपने सिन्दूर की सहायता करने चली आई थी ....?

"तुम्हारी शादी तो शास्त्रों के अनुकूल हुई है, नरेन्द्र!" गुरु जी थे . "जसोदा तुम्हारे साथ ही रहेगी – इस जन्म में! तुम्हारे भले–बुरे की वह भी भागीदार बनेगी ....!" उन के सत्य वचन थे .

मैंने ...अपना हाथ पीछे खींच लिया था .....!!!

"क्यों भागना चाहते हो ...?" गुरु जी पूछ रहे थे . "क्या कष्ट है ...?" उन का प्रश्न था .

"मेरा मन ही नहीं लगता, अब ...!" मैं उदास था . "ना जाने क्यों ये ...ये पर्वत मुझे बुलाते रहते हैं ...? न मुझे चैन लेने देते हैं ...और न ही सोने देते हैं!!"

अब हम अपने पड़ाव पर पहुँच गए थे . ब्रम्ह्चारिओं ने अपने–अपने तप आरम्भ कर दिए थे . मैं अब निपट अकेला था . क्रिस्टी भी अब मुझ से बातें न करती थी . मैं था ....और मेरा परमात्मा! हाँ! मेरा अनगढ़ भविष्य था – जो अब मुझे एक अपूर्व उजास की तरह भीतर से भरने लगा था!

"सूरज तुम्हें आ कर जगाता है ....चाँद तुम्हें सुला कर जाता है ....और रात स्वयं ही एक नरम बिछौना बन ...तुम्हें अपनी अंजुरी में भर लेती है .. .?" मेरा मन मुझ से बोल रहा था . "ये अनमोल सुख कितनों को मिलता है, नरेन्द्र ...?" वह पूछ रहा था . "जिस दुनियांदारी में तुम दौड़ कर पहुँच जाना चाहते हो .....वहां सुख नहीं है ....."

"सुख चाहिए ...किसे ...?" मैं भभक उठा था . "बताओ.बताओ! उन बर्फ से ढकीं ...पर्वतों की चोटियाँ पर ...कौन बैठा है ...? कौन है ...वहां ...और क्या कर रहा है –वह ? मैं न मानूंगा – तुम्हारी बात! मैं स्वयं वहां जाऊंगा ...हाथ लगा कर इन्हें देखूँगा ....महसूस करूंगा ....और फिर प्रश्न पूछूंगा . ..कि ...तुम यहाँ खामोश क्यों बैठे हो ....जब कि ...वहां ...उधर –संसार में . ..प्रलय होने को है ...?"

"जाओ! देख आओ ....!!" गुरु जी प्रसन्न थे . "माना तो मैं भी न था, नरेन्द्र! मैं भी वहां पहुँच कर ही लौटा था!"वह हँसे थे . "लेकिन, बेटे! वहां ...जिस से भी भेंट हो – वही भगवान् है!" बड़े जोरों से हँसे थे, गुरु जी .

मैं पहाड़ों की चढ़ाई चढने लगा था! मेरी निगाहें उन ...धवल–सजल . ...और सजीले ...पहाड़ों की चोटियाँ पर ...चिपकीं थीं – जो अजूबे थे ...? लेकिन मैं उन के साथ सम्पर्क–सूत्र जोड़ लेना –अहम मान बैठा था! मैं न जाने क्यों मान बैठा था कि ...वहां ...मुझे शिव के दर्शन ..अवश्य ही होंगे ...? मिलेंगे मुझे, शिव! और तब मैं बालक ध्रुव की तरह ...उन की गोद में बैठ कर ...उन से ही पूछूंगा – संसार के सारे रहस्य ...! पूछूँगा–अपने प्रश्नों के उत्तर ....! और जब इस धरा पर फिर से पदार्पण करूंगा ...तो मुझे सब आता होगा ....सब ज्ञात होगा ....और मैं ....

अंतहीन यात्रा थी – वह! दम तोड़ चढ़ाई थी . तीखी चट्टानें थीं . शीतल जल था ...ठंडी हवा थी ...लेकिन ...वो जो शीत था – वो तो दुश्मन था ...? और ....और अब मुझे लगा था कि ....मुझे एक आश्रय फिर चाहिए था ....?

और, मित्रो! मुझे ये आश्रय भी मिला था .....????

69

दिल्ली–गुजरात की बिल्ली को नहीं पकड़ पाएगी?

कानून शब्द सुनते ही हमें पुलिस की लाठी सर पर आती दिखाई दे जाती है!

फिर हम भागते हैं . किसी कानून–विद के पास जा कर ...दम लेते हैं . 'बचाओ, वकील सहाब ?' हम गुहार लगाते हैं . ये उसी तरह है जिस तरह कि ...एक रोगी डाक्टर के पास भागता है ? उसी तरह हर गुनहगार भी एक वकील के पास पहुंचता है . और उस के बाद ....

"मरेगा, डाक्टर साहब ....?" 'कह नहीं सकता ' डाक्टर का आम उत्तर होता है!

"बचेगा, वकील सहाब...?" 'बता नहीं सकता ' वकील हाथ झाड कर कह देता है!

राजनीति के रोग से ग्रस्त और निर्णय–अनिर्णय के श्राप से बना अभियुक्त –आदमी तो समझ ही नहीं पाता कि ...वह कहाँ जाए ....क्या करे ....? उस का तो केवल राम ही रखवाला होता है! न कोई दोस्त ...न कोई ...दुश्मन ..न कोई यार और न कोई सौहार्द ...उस का सहारा बनता है ? मात्र एक सौदेबाजी सामने आती है . 'गिव एंड टेक' का सीधा समीकरण सामने आता है . और अगर आप चूके ...तो गए .....!

वह दिन मुझे याद है जब मैं गुजरात राज्य का मुख्य मंत्री बना था! उस दिन से ले कर आज तक कांग्रेस पार्टी का रुख मेरी ओर वही है – जो एक दुश्मन के लिए होता है! मुझे कांग्रेस ने 'एनिमी ऑफ स्टेट' जैसा कुछ बना कर ...देश के सामने अपमानित होने के लिए फेंक दिया है! मेरे खिलाफ जो

भी भला–बुरा है ...कहा जाता है! जो भी इल्जाम इन के पास हैं ...सब मुझी पर लगा दिए जाते हैं और केंद्र के पास जितनी भी ...आय–बालाएं हैं – सब मेरे पीछे लगा दी गईं हैं!

"पकड़ो – इसे .....!" फरमान जारी है . "जेल भेजो – इसे ....!!" आदेश हैं .

ये देखिए ...! राज्य ...मेरा मतलब ..कि गुजरात राज्य की गवर्नर श्रीमती कमला बैनीवाल के दिए आदेश ...? इन्होने अवकाश प्राप्त – जस्टिस रमेश अम्रतलाल मेहता ...यानी कि आर एस मेहता को ...गुजरात राज्य का लोकायुक्त नियुक्त कर दिया है! मैं गुजरात राज्य का मुख्य मंत्री हूँ ...लेकिन मुझे पूछा तक नहीं गया ...? मेरा एक ही अनुमान है कि केंद्र द्वारा ये मेरे गले में एक ...ऐसा नाग–फांस डाला है ...जो मुझे अब जीने न देगा ....और अंत में मार कर ही दम लेगा ....?

आप इन अवकाश प्राप्त जस्टिस रमेश अम्रतलाल मेहता को नहीं जानते ...न ? लेकिन मेरे लिए तो ये नाम – उस व्यक्ति का नाम है जो – २००२ के गोधरा काण्ड से ले कर आज तक ...मेरी दुम दबाता चला आ रहा है ? वर्ष २००२ में दंगों के बाद ...इन्हीं श्री मेहता ने गुजरात सरकार के खिलाफ राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष से मिल कर ...शिकायत की थी ... .और ...विभिन्न एन जी ओज के मंच से ...अन्य बुद्धिजीवियों की तरह ... इन्होने भी मुझे ही ....गोधरा नर–संहार के लिए जिम्मेदार ठहराया था! और यहाँ तक बतादूँ कि ...एन जी ओ 'जन संघर्ष' मंच ने ही जस्टिस मेहता का नाम ...गुजरात दंगों की जांच के लिए ...बने आयोग के अध्यक्ष पद के लिए ...जस्टिस शाह के निकल जाने के बाद ....सुझाया था! लेकिन वो आयोग जस्टिस नानावती को मिला था ...और इसे नाम भी 'जस्टिस नानावती आयोग' ही मिला था .

और तो और ....सन २००७ में ...एन जी ओ 'आतंक विस्थापित हक रक्षक समिति' ने जनता दरबार लगाया था! इस जनता दरवार में ..इन्हीं जस्टिस मेहता ने ...गुजरात सरकार को जी भर कर कोसा था ...खूब ही लताड़ा था ....बदनाम भी किया था ....और बताया था कि दंगों में विस्थापितों के पुनर्वास का मोदी का दावा झूठा है! ये आदमी ही झूठा है ....!!

अभी–अभी ..२०११ में ...एन जी ओ 'अनहद' द्वारा आयोजित 'जन सुनवाई' में इन जस्टिस मेहता सहाब ने ...फिर से कहा है कि ...गुजराती मुसलमानों

में ...असुरक्षा की भावना ...के न होने का राज्य सरकार का दावा ...बे–बुनुयाद है ....झूठा है! मुसलमानों में आज भी २००२ के ही समय की असुरक्षा मौजूद है! वो डरे हुए हैं ....!!

गुजरात में २००६ में आई बाढ़ का ठीकरा भी इन्होने गुजरात की सरकार के सर पर ही फोड़ा था ...? कहा गया था – बाँध में पानी अधिकाधिक बढ़ा दिया गया था – अतः बाढ़ आई ....?

हम क्या करें ....? सुप्रीम कोर्ट में हमने भी अपना पक्ष रख दिया है!

अहमदाबाद के एन जी ओ 'नेशनल कौंसिल फॉर सिविल लिबर्टी ' के वरिष्ठ वकील – सोली जे सोराबजी के जरिए सुप्रीम कोर्ट के समक्ष आरोप आता है कि ये जस्टिस मेहता ...लोकायुक्त के रूप में निष्पक्षता के साथ अपना काम नहीं कर पाएंगे! ये एक एन जी ओ – 'सेंटर फॉर सोसल जस्टिस' के ट्रस्टी भी हैं ? इस लिए गुजरात राज्य की याचिका वाजिब है!

लेकिन कोई माने तब ना .....?

गुजरात राज्य ने सुप्रीम कोर्ट में जज जस्टिस बी एस चौहान और जस्टिस इब्राहीम ..कलिफुल्ला की पीठ में गवर्नर कमला बैनीवाल के आदेश के विरुद्ध न्याय माँगा था . गुजरात सरकार की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता के के वेणुगोपाल ने दलीलें पेश कीं थीं . कहा था – गवर्नर ने ये फैसला अपनी मर्जी से लिया है! राज्य के मुख्य मंत्री को तो पूछा तक नहीं गया ....? ये संविधान के अनुच्छेद १६... में निहित गुजरात लोकायुक्त अधिनियम १६८६ की धारा –... का उल्लंघन है! इस में मुख्य मंत्री और उन के मंत्री–मंडल से परामर्श नहीं किया गया ...?

खूब रोने–धोने के बाद भी हुआ वही जो दिल्ली दरबार को दरकार था ....?

सुप्रीम कोर्ट ने कहा – गुजरात की राज्यपाल कमला बैनीवाल ने लोकायुक्त के रूप में ...जस्टिस मेहता की नियुक्ति गुजरात राज्य के मुख्य न्यायाधीश से परामर्श करने के बाद की थी . इस का प्रावधान संविधान में है!!

राजनीति के पंडित इस प्रसंग को ...राज्यपाल कमला बैनीवाल के जरिए ...कांग्रेस आलाकमान द्वारा ...खेली गई चाल बता रहे थे ....और बता रहे थे कि ...इस के बाद मुख्य मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ....मुंह धो कर घर जाएंगे ...?

दिल्ली ने गुजरात राज्य की बिल्ली को पकड़ने के लिए ये नया जाल बुना था ....?

कानून का ये खेल बहुत बुरा होता है, श्रीमान!

बहुत निराश हुआ था, मैं ....! मुझे लगा था कि ...कितना ही समर्थ क्यों न हो आदमी – पर इस अंधे कानून के काबू आ ही जाता है ? कुर्सियों पर बैठे जजों का एक अलग ही दींन –ईमान है! उन्हें किसी की मौत या जिन्दगी दिखाई नहीं देती . उन्हें केवल कानून की धाराएं ...और उन के अनुच्छेद ही याद रहते हैं ? जनता के मरने–जीने से उन का कोई सरोकार नहीं रह जाता ...?

अमित आया था! मैंने बरबस आँखों में आनेवाले आंसूओं को रोक लिया था . उस के हाथ में अखबार लगा था . मैं जानता था कि उस में क्या लिखा था ? लेकिन जो अमित के चहरे पर लिखा था – वह तो कुछ और ही था ...?

"हार गए .....?" मैंने सीधा ही तीर छोड़ा था . आज मैं बहुत व्यथित था.

"कौन कहता है ....?" अमित ने गरज कर प्रति प्रश्न किया था .

"सुप्रीम कोर्ट ....?" मैंने भी उत्तर दिया था .

"लेकिन जस्टिस रमेश अम्रतलाल मेहता क्या कहते हैं – ये आप नहीं जानते ....?" अमित ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा था . "ये पढ़िए ....? आप के लिए ही लाया हूँ! मैं जानता था कि ...आप ..शर–शैया पर लेटे होंगे ....और ...."

मैं अब अखबार पढ़ रहा था! पढ़ता ही जा रहा था! मोटे–मोटे अक्षरों में लिखा था – जस्टिस रमेश अमृतलाल मेहता का इनकार! और आगे लिखा था – कि उन्होंने स्वयं ही गुजरात राज्य का लोकायुक्त नियुक्त होने से इनकार कर दिया है!!

मैं हैरान था ....! मैं परेशान भी था!! और अब मैं अमित शाह को ... सराह रहा था – जो श्रेष्ठ था ....परमप्रिय था ....और पाजी भी था ....!!

"ये, क्या किया रे ....?" मैंने गदगद हो आई आवाज में पूछा था . मेरा हिया उमड आया था . मेरा मन था कि मैं अमित का माथा चूम लूं ....?

"मैंने क्या किया ....?" वह बिफर–सा गया था . एक्टिंग कर रहा था – मैं जानता था . "म ...म ...मैंने तो ....?" उस ने मुझे शरारती निगाहों से घूरा था . "केवल ...एक ...बेहद मासूम–सा ....अपराध ....." बताने लगा था, वह .

"क्या .....?" पर मैं तो अधीर था .

"मेहता के कान में चुपके से कहा था – 'जानते हो अगला पी एम् कौन बनेगा ....?' और फिर कहा था –'मोदी! नरेन्द्र मोदी देश का अगला पी एम् बनेगा, मेहता सहाब!!' बस! मैं उठ कर चला आया था ." अब हंसने लग रहा था –पाजी ?

"के...व...ल सूचना ....पाने से ही .....?" मैंने बात का विरोध किया था .

"आप यही तो नहीं समझते हैं, भाई जी ....?" अमित उमड़ आया था . "ये नाम 'गांधी' ....ही तो देश को खा गया ....? मेहता मेरी बात सुनते ही घबरा गया ....डर गया ....! 'डर' ...नाम का डर ...भी एक कारगर हथियार है, भाई जी ....? मेहता आप को जानता है ....मुझे भी जानता है ....? और अब ये भी जानता है कि ...."

"कि ....?"

"कि ...अब ये अखबार बोलेगा ....?' अमित बताने लग रहा था . "ये अखबार अब पूरे देश में ढोल पीट–पीट कर मुनादी करेगा ....कि ....'दिल्ली – गुजरात की बिल्ली को नहीं पकड़ पाएगी ...?'

क्यों कि ...गुजरात में ..बब्बर शेर ...आ बैठा है ....??????

हंस रहे थे – हम .....!!!

70

पर मैं मौन ही बना रहा था!

"आभारी हूँ, अमित!" मैंने गदगद हो कर फिर कहा था .

"क्यों ....?" उस ने अब की बार कड़क कर पूछा था . "मेरा धर्म है, भाई जी ...! मैं आप को .....उन चिनगारियों को ....छूने तक न दूंगा .....!" वह वायदा कर रहा था . "सब को लाईन में लगाऊंगा ...इन नौकरशाहों को . ..जो दिल्ली का दिया खाते हैं ....?"

"कैसे ....?"

"पद...प्रतिष्ठा....सम्मान ...ओहदे ...ये सभी इन को ही तो जाते हैं ....? नौकरी के दौरान भी कमाते हैं ....और फिर नौकरी के बाद – पार्टियों से खैरातें लेते हैं ...? ये देखो ....इन को देखो ...! जस्टिस मार्कंडेय काटजू सेवानिब्रत ...होते ही प्रेस कौंसल ऑफ इंडिया के चेयरमैन ...? अब ये ही नरेन्द्र मोदी पर हमलावर का काम करेंगे ....? ये तो मानते ही नहीं कि गोधरा काण्ड ...में नरेन्द्र मोदी का हाथ नहीं था ...? और कहते भी हैं कि ...अगली लोक सभा के चुनाव में ...लोग सोच–समझ कर वोट डालें .... ताकि ...देश का प्रधान मंत्री ......

"कहीं नरेन्द्र मोदी न बन जाए .....?" मैं बोल पड़ा था .

"हा हा हा!! " अमित हंस रहा था . "जग–जाहिर हो गया है, भाई जी कि ....देश का ..भावी प्रधान मंत्री – ...नरेन्द्र मोदी ही होगा ....!" अमित शाह मुझे महत्व पूर्ण सूचनाएं दे रहा था . "जानते हैं ..न ..? जस्टिस खरे को . ...! वही 'भारत रत्न' ...और कहते हैं कि ......'पदम् भूषन से सम्मानित चोर ....? तीन बार चक्कर लगा चुका है ...? इसी ने तो कहा था न ....'गुजरात

सरकार अपना राज–धर्म निभाने में असफल रही' और इसी के कहने पर अदालती कारवाही की निगरानी हुई थी ...?" अमित ने मुझे ठहर कर घूरा था . "अब ...छटपटा ....रहा है ....बच्चू .....?"

"और हाँ! अमित इस ...अरिजीत पसायत का क्या हुआ ....?" मैं अब प्रसन्न था . "इस ने भी तो मोदी सरकार को 'आधुनिक नीरो' की संज्ञा दी थी ...और केस को महाराष्ट्र में चलाने के आदेश दिए थे ....?"

"चल रहा है!" अमित बता रहा था . "अभी तक दम है!! फिर से 'कस्टम्स एंड सर्विसेज ' का अध्यक्ष लगने वाला है!" अमित बताता ही जा रहा था ."लेकिन ....." वो चुप हो गया था .

"ये लोग ......" मैं डर–सा गया था .

"नौकर हैं! लालची हैं ....!! डरने की जरुरत नहीं, भाई जी ...?" अमित का एलान था .

लेकिन मुझे डरने की जरुरत थी – मैं ये जानता था ....!!

इस 'डर' से मेरा पुराना परिचय था ? मेरा मन जब निर्मोही अखाड़े से आजाद हुआ था ...तो मेरे पैर रुके कहाँ थे ....चल पड़े थे ....!!

"डरना..... मत, नरेन्द्र!" गुरु जी के वचन थे . "जिन्दगी तुम्हें बुला रही है!" उन्होंने कहा था . "जहाँ तक ले जाए ....चलते ही जाना, पुत्र!" कह कर उन्होंने मुझे विदा किया था .

लेकिन अब मेरी मंजिल कहाँ थी ....मेरा गंतव्य कौनसा था ...मैं क्यों चलता चला जाना चाहता था ....? मैं नहीं जानता था! हाँ! मुझे लगता जरूर था कि ...उन ..धुली –मंजी ...धवल ...बर्फानी चोटियों से ...जा कर मुझे हाथ मिलाना था! वहां कहीं बैठे ...तपस्या करते ...शिव का पता पूछना था ...! और फिर उन की गोद में बैठ कर .....

और फिर लगा था कि ...शिव ...हाथ में त्रिशूल लिए ...मेरे पथ–प्रदर्शन में आ जुटे थे ...! मुझे ऊपर ....और ऊपर लिए जा रहे थे!!

सच में मेरा पहाड़ों से ये प्रथम–परिचय था! हिमालय ...भव्य और विशाल हिमालय ....मुझे अपना परम मित्र लगा था! लगा था – मैं हिमालय का ही हो कर रह जाऊंगा ...? मैं कभी भी वड़नगर न लौटूंगा! यहाँ के जर्रे–जर्रे में समाया सौन्दर्य ..मुझे सम्मोहित कर गया था! मुझे हर पहाड़ पर बैठे शिव

....और हर नदी –निकलती गंगा ही दिखाई देते थे! और न जाने कब ...में ..इन पहाड़ों की चोटियाँ ...गिनते–गिनते बे–होश होने लगा था .....

अकेला ...एक पत्थर पर बैठा मैं ...निगाहें पसार कर ...अपने देश को आज ..हिमालय की ऊंचाई से देख रहा था ...! वड़नगर से कलकत्ता ....और फिर ...काशी ...केदारनाथ ...निर्मोही अखाड़ा ...और अब ....? अब भी बहुत शेष बचा था ....? कितना विशाल था – भारत .....??? कितना भव्य था – भारत ....और कितना अगम्य था – मेरा भारत ....? तभी ...हाँ, हाँ तभी ...वो विदेशी आक्रमण कारी आते थे ...और हमें लूट–लूट कर मालामाल हो जाते थे ...? यहाँ आ–आ कर तो वो बादशाह और बेगम बन जाते थे ....! यहाँ आ कर वो बने लॉर्ड और वायसराय ...और हम बने – गुलाम ....?

आश्चर्य ही तो था ....कि इतनी विपुल संम्पत्ति के हम मालिक ....इतने धर्मज्ञ ....साहसी ...और ...और वैज्ञानिक ...हम गुलाम बन गए थे ....????

"चलें, बाबा .....!!" कह कर मैं उठा था और चल पड़ा था .

पहली बार मुझे एहसास हुआ था कि ...मेरे पैर काँप–काँप उठे थे! शारीर अकड़ने लगा था ...और पहाड़ी ठण्ड ने मुझे आ कर घेर लिया था! लेकिन मैं अभी तक तो किसी मुकाम पर पहुंचा न था ...? मुझे तो अब ये भी पता नहीं था कि मैं था कहाँ ...? और तो और त्रिशूल धारी शिव भी मुझे . ..अब कहीं नजर न आ रहे थे . लेकिन मैं चलने लगा था ....चलता ही रहा था ....अविराम ...आहिस्ता ...आहिस्ता ....एक बे–ध्यानी में ...अर्धनिमीलित आँखों से ...अंधकार को चीरता मैं ...चल रहा था ...और न जाने किस पड़ाव पर जा रहा था ....?

फिर कब क्या हुआ, मुझे नहीं पता .....

हाँ! मुझे लगता ही रहा था कि मैं ...शिव की गोद में आ बैठा हूँ ...और वो मुझे आया देख कर दादा जी की तरह निहाल हो गए हैं! कह रहे हैं – रहोगे न मेरे पास, नरेन्द्र ....? बहुत अकेला हूँ, रे! कोई नहीं आता मुझ से मिलने ...? तभी तो मैं तपस्या में लींन रहता हूँ ...? पर अब तुम आ गए हो तो ......

"मैं ..न जाऊंगा, कहीं ...." रूठते हुए मैं कह रहा था . "मैं वहां अब न जाऊंगा, बाबा जी!" मैं मचला था . "घटिया है ....सकल संसार ...?" मैंने

जैसे उन्हें सूचित किया था . "बुरे लोग हैं! एक दूसरे की जांन के दुश्मन हैं!" मैंने आश्चर्य जताया था .

"संसार है, रे ....!" हँसे थे, शिव . "रचा ही इसलिए है ...?" उन्होंने मुझे शांत किया था . "बुरे के बिना ...अच्छे का क्या महत्व रह जाता है, नरेन्द्र . ..?" शिव हँसे थे . "जीत के बाद ....हार ....और ... हार के बाद जीत ....का आनंद ही तो जिन्दगी है, पगले!" उन्होंने मुझे दुलार के साथ संभाला था . "बच्चे हो ....? सब समझ लोगे ....."

"म म ....मैं ....तो बाबा जी ...मैं ...न ...." मैं मचल गया था . मैं ...आज ही ...अभी ...अपने मन की मुराद मांग लेना चाहता था!

तभी कोई अनाम दरवाजा खुला था! सूरज की तेज रोशनी भाग कर . ..भीतर घुस आई थी . मैंने आँखें खोलीं थीं तो ....पलांश के लिए मैं अँधा हो गया था! फिर एक आवाज मैंने सुनीं थी . बाबा जी न थे . किसी ..मेरे जैसे ..पुरुष की ही आवाज थी .

"कैसे हो .....?" वह पूछ रहा था . "लो! चाय पी लो ....!!" उस ने एक लम्बा पीतल का गिलास मेरी ओर बढ़ा दिया था .

मैं हतप्रभ था! अचंभित था!! मैं फिर से बेहोश हो जाना चाहता था ...?

"बे–होश ...पड़े मिले थे ....!" वह बता रहा था . मेरा हम–उम्र लड़का ही तो था ...? पर था बहुत तेजस्वी! उस का गुलाबी चेहरा दमक रहा था . "अब्बा उठा लाए थे!" उस ने मुझे सूचना दी थी . "कहते थे – भले घर का ...कोई होनहार लड़का है! लडके भागा होगा, घर से ....?" वह हंसा था .

झेंप गया था –मैं! न जाने कैसे हर कोई अनुमान लगा लेता था कि . ..मैं अपने घर से रूठ कर आया था . .....और अभी तक अपने ठिकाने पर न पहुंचा था ...?

"क्या नाम है, तुम्हारा .....?" मैंने अब जुबान खोली थी .

"रकीब!" उस ने विंहस कर उत्तर दिया था . "चाय पी लो ? सेहत सुधर जाएगी ....! शरीर एक दम पीला पड गया था! अगर अब्बा उठा कर न लाते तो .....?"

"शिव का था!" मैंने मन में कहा था . "मैं लौटता ही नहीं .....?" मैं कह देना चाहता था .

लो, जी! अब तो मेरी रकीब के साथ दोस्ती भी हो गई थी!!

उस के घर में अब्बा थे, अम्मीं थीं ..और थी एक छोटी बहिन – निक्की! छोटा–सा ये एक चार घरों का टोला था . सब –के–सब भेड –बकरियां पालते थे . उन के रेवड थे . और उस पहाड़ की ऊंचाई पर ...उन का एक अलग ही संसार था ...? ठण्ड बहुत थी . मुझे रकीब के कपडे पहन कर ही सुकून मिला था ...और अब मैं भी दूसरा ही रकीब बन गया था ....?

कैसा सुघड़ ....और खुला–खिला–सा आसमान था .....स्वच्छ हवा थी . ...कच्च –हरी घास का पसरा गलीचा था ...और उस में जगह–जगह जड़े मोतियों–से लाल–गुलाबी फूल थे! बहुत दूर ....हाँ, अभी भी बहुत दूर थीं . ..वो बर्फानी चोटियाँ ....पर बहुत नजदीक था – आसमान!!

"मैं भी चलूँगा, यार ....?" मैंने रकीब का पल्ला न छोड़ा था . "चराऊंगा भेड –बकरियां .... मैं भी ....?" मैंने संगठित मन से कहा था .

"अब्बा तो कहते हैं – दो–चार दिन में लौट जाएगा ....?" उल्हाना था, रकीब का .

"न ...! मैं न लौटूंगा ...अब ....उम्रभर ...!" मैंने रकीब से कहा था . "इस स्वर्ग को छोड़ कर ....उस नरक में मैं क्यों जाऊं ....?" जैसे मेरा ये पैगाम था . "यार, रकीब! तुम जैसे लोग ...वहां नहीं हैं ...?" मैंने उसे बताया था .

"झूठ! झूठ ....!!" निक्की बीच में बोली थी . "झूठ बोलते हो .....?" उस ने मुझे डपट दिया था . "वहां तो सलीमा है ....? वहां तो ....."

"सच ...! सलीमा तो देखते होगे, भाई ....?" रकीब ने पूछा था .

कमाल ही था ...? संसार की सारी करतूतों की खबर दुनियां–जहाँन को थी .....!!

बड़े–बड़े रेवड़ थे, उन लोगों के! ऊंचे–ऊंचे कुत्ते थे –रीछ नुमा – जो भेड –बकरियों की रखवाली करते थे . साथ में खच्चर भी थे – जो माल ले कर चलते थे और बीमार भेड़ या छोटे बच्चों को ढोने के काम आते थे . बरफ के पिघलने के बाद ...नरम–नरम घास जो उगती थी ...उसे इन की भेड़ –बकरियां बड़े ही शौक से खातीं थीं! ज्यो –ज्यों बर्फ ऊपर जाती थी ...ये भी ऊपर जाते रहते थे! और जब बरफ जमती थी ...तो ये नीचे आते

जाते थे! एक बड़ी ही सलीकेदार जिन्दगी थी! लेकिन बच्चों की पढाई–लिखाई का कोई ठौर–ठिकाना न था ...?

"क्या जरुरत है, नरेन्द्र भाई ...?"रकीब ने बताया था . "जो हमें चाहिए ....वो हमें आता है ....?" वह हंसा था . "कौनसे कागज पलटने हैं ....?" उस का प्रश्न था . "और फिर हम पर कमीं क्या है ...?" उस ने प्रसन्न हो कर बताया था .

सच में ही ये लोग मालामाल थे . भेड़ –बकरियों में अच्छी कमाई थी . चारागाह तो थे ही इन के अपने ....? इस के बाद तो सरकार का भी यहाँ कोई दखल न था ...?

"वहां .....?" मैंने इशारे से ही रकीब को उन बर्फानी चोटियों को दिखाया था . "शिव रहते हैं!" मैंने कहा था .

"कोई नहीं रहता, वहां ...., नरेन्द्र!" रकीब हंस कर बोला था . "मुसीबत है, ये बरफ ....?" उस ने बताया था . "प्यार से बुलाती है ....! लेकिन एक बार इस के चंगुल में आए नहीं ....कि ...."

"पर, रकीब ...? मैं तो देखना चाहूंगा ...." मेरा मन फिर से अशांत होने लगा था .

"ले चलूँगा ...!" उस ने वायदा किया था . "लेकिन मौसम को खुलने दो ....?" वह बता रहा था . "अभी तो फंस जाएंगे, नरेन्द्र!" रकीब की सलाह थी .

एक सूचना और भी दे दूं, आप को ...?

न जाने क्या हुआ था कि मेरा शरीर ....एकबारगी खुलने लगा था! भेड़ –बकरियों का खुला दूध ....और ...वो जई के आटे की रोटियां ...मेरे अंग लगने लगीं थीं! पहाड़ का स्वच्छ वातावरण था ...और था वो चश्मे का पानी –जो मुझे मिला वरदान जैसा लगता था! मेरे शरीर में अकूत सामर्थ लौटने लगी थी . मैं दिन –रोज ...समर्थ ....और बलवान होता ही चला गया था ....

"अब्बा खुश हैं ....तुम्हारी सेहत देख कर ...." रकीब ने ही बताया था .

"और भैया ...? मैं तो तुम्हारे ही साथ चलूंगी ....! मुझे सलीमा दिखा देना ....???" निक्की कहती रही थी .

पर मैं मौन ही बना रहा था .....!!!

71

हम सब आज भी कांग्रेस के गुलाम हैं!

"पी एम् बनेंगे ....?" संजीव भट्ट बुदबुदाया था . "मई ब्लाडी ....फुट ...!!" वह दहाड़ रहा था . "मेढकी ....भी नाल ..ठुकाएंगी ....?" उस ने व्यंगात्मक लहजे में स्वयं से कहा था . "देखता हूँ ...जेल का रास्ता – तेरे लिए ...! तलाशता हूँ ...तेरे ...लिए ...."

और संजीव भट्ट को रास्ता दिखाई दे गया था! उसे उम्मीद थी कि अब की बार ...वो अवश्य ही कामयाब हो जाएगा ...? उस के दिमाग में ...नियुक्त हुए – न्याय मित्र, राजू रामचंद्रन का चेहरा उभरा था! उसे पता था कि कोशिश करने के बाद तो ......

"कोशिश करने के बाद तो आप की बात मानी जाएगी, चिप्पा साहब ...?" संजीव भट्ट अब नासिर चिप्पा से चिपका बैठा था . नासिर चिप्पा भी जानता था कि संजीव भट्ट सोनिया का मूं लगाया भेडीया था .

"राजू रामाचंद्रन ..न्याय मित्र नियुक्त हुए हैं!" संजीव भट्ट ने बताया था . "आप का तो बहुत रिगार्ड करते हैं ...? तनिक इशारा करें ...कि ...इसे लटकाएं ....?" संजीव भट्ट ने साफ–साफ कहा था . "हम सब के होते–सोते ...ये खुला घूम रहा है ....? और तो और ...यह तो ...पी एम् बनने की ...घोषणा करने लगा है ....? सोचिए ....चिप्पा साहब ...."

नासिर चिप्पा का भारत से ले कर ...अमेरिका तक रसूक था! लोग उस की बात मानते थे . उस की बात में वजन था ...!!

"क्या कहूं ....?" चिप्पा साहब पूछ रहे थे .

"मैंने हलफनामा लगाया है! मैंने कहा है कि ...मोदी ने मेरे सामने ... और सब के सामने ये कहा है कि ...'हिन्दूओं को खुला छोड़ा जाए' ताकि वो ....मुसलमानों से ...."

"चलो! आप की बात रख लेते हैं, भट्ट साहब!" हंसते हुए चिप्पा बोले थे . "ये ....पी एम् बनने के लायक तो है नहीं .....पर "

संजीव भट्ट ने श्री नागेश से भी कहलवा दिया था . इस के बाद वह जानता था कि ...राजू सहाब ..तीस्ता शीतलबाद की बात को दरकिनार न करेंगे ? सो वह सीधा शीतलबाद के दफ्तर गया था और ... सारे–का–सारा मसौदा तैयार कर दिया था!

"मैं तो कब से तड़प रही हूँ कि ...ये जेल जाए ...?" तीस्ता शीतलबाद कहने लगीं थीं . "मैं तो आपके साथ हूँ, संजीव सहाब! जो बनेगा – करूंगी ...." उन का वायदा था .

और...और हाँ! शबनम हाशमी को न भूले थे, भट्ट साहब ...? दमदार महिला थी और ....मोदी का तो नाम लेते ही कूदने लगती थी! उन के साथ 'संयत' एन जी ओ के एक जौहर को भी साथ लगा दिया था . अब ये तीनों राजू रामाचंद्रन की जांन को आजाएंगे ...भट्ट साहब जानते थे! पत्रकार हिमांशु ठाकुर को ...बता कर एक केस लिखने को कहा था ...जिस में मोदी पर बदनाम करने वाले आरोप –प्रत्यारोप मढने का प्रयोजन था ...? लिओ सरधाना तो संजीव भट्ट के गाढे मित्र थे ...? उन्होंने तो जाते ही मोदी को गालियाँ पटकाना आरंभ कर दिया था ...!

राजू रामाचंद्रन पर अब दबाब बढ़ने लगा था ....!!

"अरे, इत्ते लोग झूठ बोलेंगे, क्या ....?" नासिर चिप्पा ने सीधा प्रश्न पूछा था, राजू रामा चंद्रन से . "कल को ये आदमी पी एम् बन गया तो ....?" उन्होंने कड़क स्वर में पूछा था . "लटका दो ...इस भूत को, भाई सहाब ...?" उन का आग्रह था .

"लेख पढ़ लो ....?" सरदाना का फोन था . "देखो ..! हिमांशु ठाकुर क्या कहते हैं ...और क्या नहीं कहते ...? अरे, सहाब! ये आदमी बाहर घूम रहा है ...आप के रहते हुए ....?"

न्याय–मित्र कुछ फैसला न कर पा रहे थे ...?

"आप अपनी निष्पक्ष रिपोर्ट भेज दें कि ये आदमी ...दोषी है! इस ने मुसलमानों को बड़ी ही चतुराई से मरवाया ....और अब दूध का धुला बैठा है ...?" शबनम हाशमी ने जोरदार शब्दों में कहा था ."देश उजड़ जाएगा, भाई जी ..?" उन्होंने चेतावनी भी दी थी .

"देखिए, सर! मैंने तो अपनी ओर से सब लिखवा दिया है ....!" अब अंत में संजीव भट्ट ने ...अपना मारक अस्त्र छोड़ा था ."मैंने शपथ–पत्र भी दिया है ?" बता रहे थे, वह. "और ....और ...सर ...सच तो ये है .....कि सोनिया जी यह सब जानती हैं ...? और मानती भी हैं ...कि मोदी है –कसूरवार! 'गोधरा' इसी का धरा 'गोधन' है ...? और ये जो नर–संहार हुआ है ...ये भी इसी की आँख के इशारे पर हुआ है ....? वरना तो ...एक राज्य का मुख्य –मंत्री ... ..?'

"कोई और सबूत ....?" राजू रामाचंद्रन ने एक नई मांग सामने रख दी थी .

"मैं हूँ ...ना ..ठोस सबूत ....?" सीना ठोक कर कहा था –संजीव भट्ट ने . "और फिर ....सोनियां जी .....पूरी–की–पूरी कांग्रेस पार्टी ....पूरा देश ...यही तो कह रहे हैं कि ....ये दोषी है ....और झूठा ऐसा कि ....."

राजू रामाचंद्रन के जहाँ में पूरी कांग्रेस पार्टी का चित्र उभर आया था! श्री संजीव भट्ट का बार–बार सोनियां गांधी का नाम लेना ... भी एक इशारा था ...उन के लिए ...? उन का दिमाग इसी पक्ष पर आ कर ..अटक गया था ...? उन्होंने एक मात्र संजीव भट्ट की गवाही को ही आधार मान कर ...अपनी रिपोर्ट तैयार कर दी थी .

"अलग–अलग समूहों के बीच ...शत्रुता फैलाने के मामले में ...नरेन्द्र मोदी पर मुकद्दमा बनाया जा सकता है ...? धारा १५...–ओ और धरा १५... बी ...तथा धारा १६६ आई पी सी ...के तहत इस केस में ...नरेन्द्र मोदी के खिलाफ ...गवाह–सबूत मिलता है!" राजू रामाचंद्रन ने अपनी इस रिपोर्ट में अपना मत लिख कर एस आई टी को भेज दिया!

उस दिन संजीव भट्ट अपनी इस सामूहिक तिकड़म की कामयाबी पर खूब हंसा था . उस ने अकेले में अपनी इस कामयाबी का जश्न भी मनाया था ...? उस ने माना था की इस भारत देश में ...सब कुछ कर पाना संभव है ...किसी को भी खरीद लेना संभव था ...और यहाँ तक कि ...सुप्रीम कोर्ट को भी .....

मुझे भनक लगी थी . मुझे चेतावनी भी मिली थी! मुझे – जो शिफारिशें न्याय मित्र ने सुझाईं थीं – उन का ब्यौरा भी बताया गया था! और ये संभव भी था कि ...एस आई टी – राजू रामाचंद्रन की ही बात मानेंगे ...? लेकिन वह तो सब न्यायविदों के बीच था ...?

"क्या तैयारी करें ....?" मैंने अमित शाह से प्रश्न पूछा था . "अगर ....."

"मौत आने से पहले ही ...चिता चिन लें ....?" अमित शाह ने चुटकी ली थी . "आने तो दो, रिपोर्ट को, भाई जी ....?" वह मुझे सुझा रहा था .

कांग्रेस पार्टी में जगह–जगह जश्न मनाए जा रहे थे! संजीव भट्ट ने सब को सूचनाएं भेजीं थीं . बताया था कि ...अब बचेगा नहीं ....? सो कॉल्ड ...'पी एम' जेल में जाएगा ....!!

"अच्छी रिपोर्ट भेजी है, राजू ने!" गृह मंत्री ने सोनियां जी को भी सूचना भेज दी थी . "ये ...आदमी ...संजीव भट्ट ...बहुत काम का है, मैडम!" उन का इशारा था .

"इस का खयाल रखना, भाई ....?"

"जी, मैडम ....!!"

हवा गरम थी . अखबारों में फिर से लेख आने लगे थे . फिर से पूरा माहौल गरम होने लगा था ....!!

तीस्ता शीतल बाद का वकील मिहिर देसाई था ...और टाईम्स ऑफ इंडिया का ...वरिष्ट सम्पादक – मनोज मिटता लगातार अब ...संजीव भट्ट के संपर्क में थे . मनोज मिटता ही था जिस ने ...संजीव भट्ट का झूठा शपथ –पत्र तैयार किया था ...और सुप्रीम कोर्ट में दाखिल किया था . इस पत्रकार ने मोदी को शिकस्त देने के लिए पत्रकारिता की सारी गरिमा को ताक पर रख दिया था ....? इस शपथ–पत्र में यही लिखवाया था कि ...संजीव भट्ट मुख्य मंत्री नरेन्द्र मोदी के आवास पर हुई बैठक में शामिल था ...!!

मेरे विपक्षियों के खेमों में अब घी के दीपक जल रहे थे ....!!

"आप की पी एम् बनाने की घोषणा ने तो ..पूरे विश्व को ...हिला कर रख दिया है, भाई जी ....?" अमित हंस रहा था . "मुझे भी यही उम्मीद थी कि ....."

"सारा जग बैरी हो जाएगा ....?" मैंने चिढ कर कहा था . मैं अप्रसन्न था . ना जाने क्यों आज मुझे अफसोस हो रहा था कि ...जिन लोगों के लिए मैं अपनी जांन लड़ा रहा था ...अब वही लोग मेरी आगवानी काटने में ...जुटे थे ...? जैसे मैं पी एम् बनते ही सब के हिस्से का ...ले भागूंगा ...? मैंने अमित को उल्हाना दिया था! "उम्र गुजारदी ...मैंने ...." मेरा गला रुंध गया था .

"आप को जितना मिला है, भाई जी ....और किसी को नहीं मिला ....?" अमित की आवाज बुलंद थी . "इतिहास है ....ये इतिहास है कि ...जो प्यार जनता मोदी को दे रही है ....वो प्यार और किसी को भी नहीं मिला ....?" वह बता रहा था . "सियासत के दाव–पेंच तो चलेंगे ही ....?" उस ने स्पस्ट कहा था .

"कांग्रेस ....?" मैंने कहना चाहा था .

"कहीं नहीं पहुंचेगी, कांग्रेस .....?" अमित ने तो कांग्रेस का सफा ही फाड़ दिया था . "अब उल्लू नहीं बनेगे ....लोग ...?" उस का एलान था .

एस आई टी की रिपोर्ट आ गई थी! मैं सिहर उठा था ....!!

"ये, लो!" अमित ही था . "दूध –का–दूध ....और पानी–का–पानी ....?" वह उछल रहा था . "सब साफ–साफ लिखा है ...!" वह कह रहा था .

"क्या लिखा है ....?" मैंने पूछा था .

"यही कि ...संजीव भट्ट के ई –मेल ..., मोबाईल ...और कंप्यूटर की जांच ...से पता चला कि ...संजीव भट्ट ...तीस्ता शीतल बाद ...टाईम्स ऑफ इण्डिया का एक वरिष्ठ पत्रकार ...कांग्रेस के बड़े स्थानीय नेता ....पूरी कांग्रेस कमेटी ...और कई और भी पत्रकार ...और एन जी ओ कर्मी ...लगातार एक–दूसरे से संपर्क में थे ...."

"ये कैसे हुआ ....?" में अब आश्चर्य चकित था . एक बार फिर मेरा प्यार अमित के लिए उमड़ आया था! "तूने ....? ये सब ....तू–ने ....?" मैं बोल ही नहीं पा रहा था .

"अपना पक्ष रखेंगे नहीं ...तो बचेंगे ...कैसे ....?" अमित सहज था . "मुझे इन की कारगुजारी का एक–एक पल ...याद है ...दर्ज है ....रिकॉर्डिंग पर है ..."वह मुझे सूचित कर रहा था . "और आगे भी तो देखिए कि एस आई टी ...कहता क्या है ....?"

"क्या कहता है ....?"

"कहता है – संजीव भट्ट ...और इन के कथित साथी ...राजनैतिक दल के नेता ...सुप्रीम कोर्ट और एस आई टी को ...अपने लक्ष–साधन के लिए ... एक फोरम के रूप में ...इस का प्रयोग करना चाहते हैं! संज्रीव भट्ट अपने निजी स्वार्थ के लिए ...किसी भी हाल में ...गुजरात राज्य के मुख्य मंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ ...चार्ज शीट दाखिल कराना चाहते हैं!" अब अमित ने मुझे मुड कर देखा था .

"संजीव भट्ट ही क्यों ....कहो कि ...पूरी कांग्रेस पार्टी ...कठमुल्लावादी ...सेक्युलर जमात ...वामपंथी बुद्धिजीवी ...एन जी ओ गिरोह ...और समूची मीडिया ...भी नरेन्द्र मोदी के खिलाफ ...बस एक चार्ज –शीट चाहती है .....!" मैंने अमित के चहरे को पढ़ा था . "कितना अफसोस है, अमित ...कि ...हमारा सारा देश ...हमारा समाज ....ना जाने क्यों ...इस गुलामी के धरातल से ऊपर उठाना ही नहीं चाहता ....?" मेरी आवाज दरक आई थी . "हम सब आज भी ...कांग्रेस के गुलाम हैं!!" मैंने एक फैसला जैसा सुना दिया था .

72

लौटना तो मुझे अकेले ही था?

झूठे और बईमान लोगों से लड़ता–जूझता ...मेरा मन हार–थक कर ...भागा था ...और पीर –कोटि पहुँच गया था!!

पीर–कोटि पहुँचने में हमें दो दिन का समय लगा था . पहाड़ों की दुर्गम चढ़ाई चढ़ कर ..हम अपने समूचे साज–सामान के साथ ..यहाँ पहुंचे थे! लगा था – आसमान और भी पास आ गया था ...? हवा और भी निर्मल हो गई थी . चश्मे का पानी तो शीशे–सा दमकता था! लगा था –भेड़–बकरियां तो अपने इच्छित स्वर्ग में पहुँच गईं थीं . तीन कमरे थे . एक में शाहिद करीम और फातिमा बी का डेरा था ...दूसरे को निक्की ने ले लिया था ...और तीसरा मेरे और रकीब के हिस्से आ गया था! खाना चौड़े में पकाना था – यह सब पहले से ही तय था!

पूरा परिवार मेरे दिए योग–दान का कायल था ...!

ना जाने क्यों ...मैंने सारा –का–सारा काम अपने नाम लिख लिया था ...? मैं अब अपनी सारी संचित शक्ति ...काम में जोतने पर उतर आया था! अब मैं भेड़ –बकरियों से ले कर ...कुत्तों का और टट्टू –ओन का भी दोस्त था! मुझे सारे कुत्तों के नाम याद थे ...मुझे टट्टू मात्र आवाज से ही पहचानते थे ...और अब्बा करीम शाहिद ...और अम्मा फातिमा बी ...मुझे खूब–खूब लाढ लड़ाते थे! हाँ! निक्की के साथ तो मेरी जंग चलती ही रहती थी ?

"रकीब से भी अच्छी ...टिटकारी देते हैं, भैया ....?" निक्की अम्मा को बता रही थी . "सच! कभी सुन कर देखना ...? जमते हैं – गडरिए ...! क्या रूप धरा है, भाई ....?"

"नजर लगाएगी ....?" अम्मा ने निक्की को डाटा था . "तनिक ...तंदुरुस्त तो हो गया है, , , ?" उन का कहना था . "अदद ...पट्ठा ..लगता है, अब तो ....?" उन की आवाज में स्नेह था ....मेरे लिए!

सच था! मैं भी महसूसता था ...कि जब मैं मूं भरकर टिटकारी देता था ...तो भेड़–बकरियां एक लहर की तरह ...सिमिटी चली आतीं थीं! सब जांन गईं थीं, मुझे ? और कुत्ते तो मेरे साथ खेल–खेल कर पागल हो जाते थे! ना जाने क्यों मुझे अपना ये गडरिए का किरदार ..आज भी खूब भाता है ...? मुझे याद है कि ...मैं ...विमुग्ध भाव से खड़ा–खड़ा ...भेड –बकरियों को .. उन के चालाक और चपल होठों से ..कोमल हरी घास की पत्तियों को ..चौंट –चौंट कर ..खाते देखता रहता था ...! मैं अपनी तो भूख तक भी भूल जाता था ...?

पीर कोटि मेरे लिए एक नया स्वर्ग थी!!

बर्फाच्छादित पर्वत श्रेणियां अब हमारे बिलकुल पास ही खड़ी लगतीं थीं! और इस अधिक ऊंचाई से नीचे के पहाड़ ...हमें, हमारे मातहत जैसे लगते थे ...? पेड़–पौधे तो पीछे छूट गए थे ...और अब यहाँ घास के विशाल चारागाह ही थे – जो हमें अपनी भेड़ –बकरियों के लिए दरकार थे ...? मेरा तन – मन उछला–उछला ..इस हरे कच्च घास के बिछौने पर ...भागता फिरता ...और मैं न तो थकता .....और न ही हारता ...और न ही रुकता–झुकता ...और ....

"मुझे भी तो कुछ काम करने दिया करो, भाई जांन ....?" खड़ा–खड़ा रकीब मुझे उल्हाना दे रहा था .

"सब तुम्हारा ही तो है, रकीब ....?" मैं हंस कर कह रहा था . "मैं तो . ..यूं ही .....कोई ...हूँ ....?" मेरा उत्तर था . "तुम्हारे साथ ....दो पल ...का .. ये ...आनंद ....?" मैं भावुक था . "ना जाने ...किन संस्कारों से मिल रहा है, रकीब ....?" मैंने उसे अपनी बांहों में भर लिया था . "और तो और ....ये पाजी कुत्ते भी ....कितने हिल–मिल गए हैं ...?"

"सब प्यार करते हैं, तुम्हें ....!" रकीब बताने लगा था . "अब्बा तो अपना दूसरा बेटा ही मान बैठे हैं ....?"

"वो ...तो ...मैं ..हूँ ...!!" मैंने सगर्व कहा था .

"हवा हो ....? मैं .. जानता हूँ, भाई जान ...! न जाने ...कब ...तक ...?" वह भी अब मेरी ही तरह भावुक हो आया था . "लेकिन ...जब जाओगे ....तो पूछूंगा .....आए क्यों थे ....?"

"वायदा याद है, तुझे ...?" मैंने अचानक विषयान्तर किया था .

"याद है!" रकीब ने हामी भरी थी . "बस! मौसम साफ होने वाला है ...! मैंने अब्बा को बता दिया है कि ...हम दोनों ...सैर पर निकलेंगे ..." हंस रहा था, रकीब .

और फिर एक दिन अचानक मेरी टक्कर अब्बा से भी हो ही गई!!

अब्बा – एक अच्छे–खासे ...लम्बे–चौड़े ...पुरुष थे और बहुत ही आकर्षक लगते थे! अपनी जवानी में ये आदमी जरूर ही घोड़े–पछाड़ रहा होगा ... मैंने सोचा था . बड़ा ही उदार और मानवीय स्वभाव था –उन का! सब के प्यारे थे – अब्बा ...!!

"नरिंदर ...!!" उन्होंने मुझे बड़े ही प्रेम से पुकारा था . "भर, , , गया . ..मन ...?" उन्होंने पूछा था .

मैं चुप था . मैं न जानता था कि ...वो क्या कहना चाहते थे ....? लेकिन अभी तक मैं वाद नगर लौटने के लिए तैयार न था ?

"मेरा भी मोह बढ़ रहा है, नरिंदर!" उन की आवाज में एक लगाव था . "मैं तो तुम्हें पा कर निहाल हो गया ....? उस दिन ....जब मैंने तुम्हें बेहोश पड़े पाया था ...तो मन बिदका था ? 'होगी कोई ...आय–बलाय ?' मेरा भीतर बोला था . 'बच कर निकलो' मुझे मेरे ही आदेश मिले थे . न जाने फिर क्या हुआ था कि ...मैंने झपट कर तुम्हें ...उठा लिया था ....और कन्धों पर लाद कर ...चढ़ाई चढ़ आया था!" वह तनिक ठहरे थे ."मुझे यों ..आया देख ..फातिमा कूद कर खड़ी हो गई थी!"

"कौन मुसीबत उठा लाए ...?" उस ने मुझे डपट दिया था . "काले–कलां ...कुछ हो गया ...इसे तो...हम जेल जाएंगे ....?"

"कोई कहीं नहीं जाएगा ....!" मैंने इसे समझाया था . "इसे बचा लो, फातिमा .....? किसी का लाल है ....कलेजे का टुकड़ा है ...? तुम्हारा भी तो रकीब है ......"

"और ...अम्मीं ने मुझे बचा लिया था .....दूसरा जीवन दे दिया था ....मुझे ....?" मैंने उन की बात पूरी की थी

"हाँ, बेटे ...!" अब्बा ने स्वीकार था . "अब तुम ...स्वस्थ हो! सेहत भी . ....माशा अल्ला ...." रुके थे, वो. "लौट जाओ .....अपने ..वतन ....बेटे ....?" उन का बड़ा ही विनम्र आग्रह था . "कोई आस लगाए बैठा होगा ....कि ... तुम ....."

अचानक ही मेरी आँखों के सामने जसोदा का आग्रही चेहरा आ कर ठहर गया था .....!!

आरजू थी! लौट आने का निमंत्रण भी था! और अनेकानेक ...उल्हाने–ताने भी थे ....? मेरे ऊपर लगे प्रश्नचिन्ह भी थे ....जिन का मुझे आज नहीं तो कल ...उत्तर तो देना ही था ....?

"यों न लौटूंगा, अब्बा ....?" मैंने उन्हें अपनी जिद बताई थी . "वहां ... जाऊंगा ....!" मैंने सामने सीना ताने खड़ी ...पर्वत श्रेणियों की ओर ..इशारा किया था . "उन्हें ...छू–छू कर ...देखूँगा ...! उन से दो–दो बातें करूंगा ....! उन से पता पूछूंगा ....कि ...वो मेरे परमपिता ...तपस्वी ....शिव ..कौन सी कन्दरा में ....छुपे हैं ....? और फिर मैं ...उन के चरण स्पर्श ...करूंगा ...उन का आशीर्वाद ..लूँगा ...और तब ....."

"परमात्मा के पास हम क्यों जाएं ....?" अब अम्मा बता रहीं थीं . "उन्हें स्वयं ...हमारे पास आने दें ....?" उन्होंने मुझे दुलार से देखा था . "मेरे तो हमेशा पास रहते हैं, पुत्र!" उन का कहना था . "फिर भी ....तू चला जाना .. ..? रकीब ले जाएगा . घूम–फिर कर ...लौट जाना, बेटे – अपने देश ....!!" उन का भी यही इशारा था .

और ....और एक थी – निक्की ....? ये मेरी जांन की प्यासी थी .....????

"मैं ...तो साथ चलूंगी, भाई जान ....?" उस की भी जिद थी . "भैया! सलीमा देखना है ...? तुम मुझे ....."

"तेरी शादी कराऊंगा – शहर में ......?" मैंने उसे चिढाया था .

"न...न...! मैं किसी ...शहर–बहर में न रहूंगी ...., भाई जान ...?" उस ने दो टूक उत्तर दिया था . "पहाड़ की पुत्री ....पहाड़ की ...धरोहर होती है ...?" उस ने मुझे ...वेदान्त–सा कुछ कह सुनाया था .

लौटना तो मुझे अकेले ही था ....?????????

73

मैं अपने आसमान अलग से ले कर चलता हूँ!

"आई ए एस अधिकारी प्रदीप शर्मा का दुखड़ा ...?" मैंने अखबार 'राष्ट्र ध्वज' का मुख पृष्ट पढ़ा था – तो चौंक पड़ा था! मैं ताड़ गया था कि जरूर ये प्रदीप शर्मा की कोई नई चाल थी ...कोई अनूठी साजिश होगी ...और इस के पीछे कौन–कौन होगा ...ये भी मैं जानता था . अब तो सब के सब अखाड़े में उतर आए थे ...? 'मोदी जी के प्रेम–रोग के शिकार ...!!' अगला हैडिंग था . मेरा माथा घूम गया था!

ये तीर तो सीधा ही कलेजे पर आ कर लगा था .....????

"माधुरी के साथ हुई पहली ही मुलाकात में ...मोदी जी इश्क के भंवर में ...कुछ इस तरह घूमे कि ...सारी सुध–बुध ही भूल गए ...? ये मुलाकात २००४ में 'हिल–व्यू' गार्डन में हुई थी! जैसे ही मैंने मोदी जी को माधुरी से मिलाया था ...वो चकित द्रष्टि से उसे देखते ही रहे थे! और फिर बोले थे, 'सुंदर! बहुत सुंदर!!' मैंने तब सोचा था कि ..शायद मोदी जी माधुरी के किए कलात्मक कार्य की प्रशंसा कर रहे थे ...? लेकिन वो तो .....माधुरी के हुस्न पर रीझ गए थे ....? माधुरी को साथ लिए–लिए बगीचे में निकल गए थे ....और मैं वहीँ खड़ा रह गया था ......

कितना अच्छा 'प्रेम–प्रसंग' गढ़ा था – मैं सोचता ही रहा था ....?????

"फिर तो मोदी जी ने माधुरी पर पहरे बिठा दिए ...? ६२ दिनों तक तो . ..अमित शाह और गुजरात पुलिस ...द्वारा इन की जासूसी कराई ? और फिर ...? हाँ.हाँ! और फिर ....मैं जानता हूँ कि माधुरी को ...मुख्य–मंत्री आवास पर छोड़ कर मैं ...४८ घंटों तक ये भी न जांन पाया था कि ..वो थी कहाँ ....?"

"चूंकि ...तुम उस की इज्जत लूट लेना चाहते थे .....इस लिए ....उसे . ...." अचानक ही संवाद मेरे होठों पर आ धरा था . "चूंकि ...तुमने उस शरीफ लड़की को ....ब्लैक –मेल करने का स्वांग रच लिया था ...? और तुम चाहते थे – प्रदीप कि ...मैं ...तुम्हारे जाल में फंस कर ...तुम्हारे सारे गुनाह मांफ कर दूं ....और हमेशा–हमेशा के लिए तुम्हारे हाथों का खिलौना बन जाऊं ...?" मैं कहता ही जा रहा था . "और ...और अब भी तो तुम ...वही पासे फैक रहे हो ...?"

अखबार का अगला प्रसंग उसी विषय पर आ टिका था!!

"एक ईमानदार ...होनहार ...और चरित्रवान ...आई ए एस ऑफिसर का ... दुर्भाग्य तो देखिए ....? कि ...मोदी जी ने उसे कितने झूठे मामलों में फंसा दिया है ....? मोदी जी को डर था कि कहीं ...ये प्रदीप शर्मा ...उन के 'प्रेम–प्रसंग 'का .. पर्दाफाश न कर दे ...? कहीं ये –प्रदीप शर्मा ...उन्हें अपनी सर्व–प्रिय माधुरी से जुदा न कर दे ...? कहीं ये पदीप शर्मा ...उन्हें ......"

ये आनेवाली आफत का सूत्रपात था – मैंने जान लिया था ....????

हाँ! एक बात से मुझे गहरा संतोष था! 'माधुरी' ...या फिर कहें – मिस सोनी .....वो लड़की जिसे अब फिर से ...मेरे विरोधी उजागर कर मेरे गले में फांसी डाल देना चाहते थे – सुरक्षित थी! उस की शादी हो गई थी . वह अपने पति के साथ अहमदाबाद में ...रह रही थी . प्रदीप शर्मा की पहुँच से परे थी ....और इन प्रपंच रचनेवाले खेमों से भी खबरदार थी! उस के पिता –सोनी सहाब, मेरे ही परिचित थे और मैंने ही उन के आग्रह पर 'माधुरी' को ...इस शातिर प्रदीप शर्मा के चंगुल से निकाल दिया था!!

अगर मैं इतना कठोर कदम न उठाता तो ....शायद ये 'माधुरी' काण्ड ....अब तक ...अकेले ही ...मेरी जांन ले लेता ....???????

"किस अफसोस में बैठे हैं ....?" आते ही अमित ने स्थिति भांप कर मुझे पूछा था .

"पढ़ लो ...!" मैंने उसे हाथ में लगा अखबार थमा दिया था .

"पढलिया है!" वह मुस्कराया था . "मुझे बहुत पहले ही पता चल गया था ....?"

"तो .....?" मैंने प्रश्नवाचक निगाहों से अमित को घूरा था .

"तो .. ये देखिए! सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि ...ये 'माधुरी ' वाला प्रसंग ...याचिका से हटाएं! इस का तो कोई औचित्य ही नहीं बनता ....?

अमित ने सूचित किया था!

"हे, भगवान्!" मैंने अपने दोनों हाथ जोड़ हवा में ...तान दिए थे . "न्याय करना, मेरे परमात्मा ....?" मैंने प्रार्थना की थी . "अमित ...!" मैंने उस के दोनों हाथ अपने हाथों में भर लिए थे . "तुम ...न ..हो ... तो मैं नंगा खड़ा मिलूँ ....?" मैं कहे जा रहा था .

"अगला ...काम ....अगला ...सोच ...अगली बात ....?" अमित किसी इरादे से आया था .

"क्या होगा ....?" मैंने उसी से पूछा था .

"पूरा तंत्र ....कांग्रेस ...और बुद्धिजीवी ....एक मत हैं कि ...मोदी को परास्त करने के लिए ...यही एक रास्ता है ...?"

"कौन–सा रास्ता ....?"

"चरित्र हनन का रास्ता ...!" हंस कर कहा था, अमित ने . "किसी तरह . ...कैसे ही जनता को यह बताया जाए ...भरोसा दिलाया जाए कि उन का लाडला मोदी ...एक सड़क छाप था ....और एक ऐसा घटिया इंसान था ...जो एक लड़की के चक्कर में था ....और उस को पाने के लिए ...प्रदीप शर्मा जैसे वफादार आई ए एस ऑफिसर का ...कैरिएर ...चौपट कर दिया था ...?"

गंभीर समस्या थी! मैं घबराने लगा था . इस उम्र के मजधार में ...मैं अगर लड़की के प्रसंग से जुड़ा तो ....बे–भाव बिक जाऊंगा ...? मैं जानता था कि ......

"आगे और क्या है ....?"

"यही कि ...अब फिर से इसी याचिका को ...जोर–शोर से ...दायर किया जाएगा ...."

"कैसे ....?"

"हमारा मीडिया भी तो है ....? 'कोब्रा –पोस्ट' और 'गुलेल' ने ताल ठोक कर कहा है कि ...वो इस तरह की मीडिया 'ट्रिक्स' ...या कहें 'डर्टी कृ ट्रिक्स' पेश करेंगे ...जो सिद्ध करेंगी ...बिना किसी नाम के ...कि ...'मोदी

इश्क में पागल हुआ घूम रहा है!' ....! गली–गली और शहर–शहर ...'माधुरी' के गीत गाता फिर रहा है '! और ...."

"और .....?"

"फांसी चढाओ, मोदी को ....? सुप्रीम कोर्ट में गुहार लगेगी!!" अमित ने मुझे रुक कर देखा था . "और हम कहेंगे कि ...ये प्रदीप शर्मा कोई 'होली–काऊ' नहीं है ? एक रंगा गीदड़ है, ये! ये प्रमाण हैं इस की बेईमानी के ...? ये जेल की हवा भी खा चुके हैं ...? इन पर ये छह अपराधिक मामले भी दर्ज हैं ? सरकारी जमीन आवंटित करने से ले कर ...इन्होने आपराधिक मामलों में भी शिरकत की है ...? और ये जो इन का बयान है कि ...'मोदी जी ने मुझ से आग्रह किया था ...फोन पर ...कि मैं ...अपने बड़े भाई कुलदीप शर्मा से कह कर ...मुसलामानों की मदद करने को न कहूं ...' ये बात बे–बुनियाद है ...? इसे हम सिद्ध कर चुके हैं!! हमने कुलदीप शर्मा आई पी एस का कच्चा चिट्ठा भी खोल दिया है! इन की झूठी गवाहियों की लिस्ट भी लगा दी है ....!!"

"ये सब ...ये लोग क्यों कर रहे हैं, अमित ....?"

"क्यों कि ये ...हर मोर्चे पर मार खा गए हैं ....? कांग्रेस निराश है! उस के नेता अब कोई भी घटिया चाल चलने पर उतारू हैं ....और अब कुछ भी अनुचित ....या गैर मुनासिब कर सकते हैं ...?"

"तो .....?"

"लीड ...!!" अमित के स्वर बुलंद थे . "लेट'स टेक ...द लीड ...?" वह मुस्कराया था . "इन्हें वहां ले जा कर मारते हैं ...जहाँ ...पानी तक न मिले ....?"

"कहाँ ....?"

"चुनाव ...! चुनावों की तैयारी करते हैं! १२ के चुनावों में ...?"

"कांग्रेस मुक्त –गुजरात ....?" मैंने पूछा था .

"हाँ...!!" अमित शाह हंस गया था .

कांग्रेस नेताओं के बयान जारी होने लगे थे . सब 'माधुरी ' काण्ड खुलने की एक–दूसरे को बधाई दे रहे थे . सारे सुपारी–पत्रकार अब पूरे जोशो–खरोश के साथ ...मोदी के चरित्र हनन को ले कर ...सक्रिय हो गए थे! उन्हें ये

परवाह तक नहीं थी कि वो ...एक विवाहित स्त्री ...की निजता पर प्रहार कर रहे थे ...और ..उसे बदनाम कर रहे थे ...? उन्हें तो एक ही चिंता खाए जा रही थी कि ...कहीं मोदी देश का प्रधान मंत्री न मनोनीत हो जाए ...? जनता कहीं ये न मान ले कि मोदी ....."

"अरे, भाई ...? कहो न ...इन भारतीय जनता पार्टी के ...वरिष्ट लोगों से कि ...ऐसा अपराध ना करें ....?" एक अनाम मांग खड़ी हुई थी . "एक आदमी ....जो किसी लड़की के इश्क में पागल हो .....कैसे बनेगा देश का पी एम् ...? बाहर तो वैसे भी खूब बदनामी हो रही है ....?" विमल जी ने बयान दिया था .

हवा के पंख उग आए लगे थे! मैं महसूस रहा था कि ...मुझे ले कर अब एक नया सवेरा हो रहा था ...? 'व्हाई नांट ए ...ब्राह्मण ...फैस ....?' भारतीय जनता पार्टी को कहा जा रहा था . 'ओ बी सी है – ये मोदी तो ....?' लोग इशारा करने लगे थे . 'अरे, किसी ...विद्वान् ब्राह्मण को ...बनाओ, पी एम् ...?' लोगों की राय आने लगी थी .

मोदी का डर था – जो कांग्रेस को खाए जा रहा था .....????

कांग्रेस पार्टी की तमाम उम्मीदों पर पानी फेरते हुए ...भा जा पा के वरिष्ठ नेता – व् राज्य सभा में विपक्ष के नेता – अरुण जैटली ने कहा – कि कांग्रेस अपने उस पुराने ही खेल पर ...फिर लौट आई है ...जिस में किसी असंतुष्ट पुलिस अधिकारी या ...किसी प्रशाशनिक अधिकारी के जरिए नरेन्द्र मोदी पर ...अल्लम–खाल्लं आरोप लगाए जाते हैं ...? जेटली ने आगे कहा कि ...विवादित आई पी एस अधिकारी – संजीव भट्ट का उपयोग ...कर के भी जब कांग्रेस कामयाब नहीं हो पाई ...तो अब विवादित आई पी एस अधिकारी – प्रदीप शर्मा का उपयोग ...कर के भी वह कामयाब नहीं होगी .. ..?"

वास्तव में लोगों को हैरानी थी कि ...आजाद भारत की राजनीति में . ..नरेन्द्र मोदी ही एक अकेला ..महामानव है ...जिसे इतना अधिक बदनाम किया गया है ...? और मैं भी महसूसता हूँ कि मेरे खिलाफ ...संदेह ...और ..नफरत पैदा करने में ...पूरी राजनीतिक जमात ...मीडिया हाउस ....तथाकथित –बुद्धिजीवी ...मानवाधिकार वादी ...व् एन जी ओ गिरोह ...एवम कई विदेशी संगठन ...व् देश शामिल हैं ...!!

पूरे ११ वर्षों से लगातार ...मेरे खिलाफ कांग्रेस के साथ उन की नौकरशाही

...पत्रकार ...वांमपंथी विचारक ...और असंतुष्ट अधिकारी ...तन–मन से जुटे हैं ...और यहाँ तक कि उन्होंने ...'गोधरा' में राम–भक्तों को जलाने से ले कर ...लश्कर की आतंकी ...इशरत जहांन को ...'संत' बनाने तक के सफर में ...एक साजिशों का बारीक जाल बुन डाला है ...?

"लेकिन, मित्रो! मैं अपने आसमान अलग से ले कर चलता हूँ! मुझे मेघों से छाया की उम्मीद होती है ...मानवों से नहीं! न जाने क्यों मेरी जिन्दगी में ...एक अजब–गजब दोहरापन है ? मुझे मेरा 'स्व' हमेशा ही सचेत करता रहता है! जैसे कि ...मैं कहूं कि ...मैंने जब 'माधुरी' को देखा था ...तो मेरे साथ गुरु जी आ खड़े हुए थे! उन की 'चित्रा' का प्रसंग ....भी मुझे याद आ गया था .....?

मानवीय मन की सब से बड़ी कमजोरी – एक सुंदर स्त्री है!!

74

समूचा मेरा भारत –आहत था!!

मरणासन्न व्यक्ति भी एक सुंदर स्त्री पाने की लालसा से मुक्त नहीं होता ...? हाँ..! म्रत्यु के बाद क्या है – मैं नहीं जानता ...? पर जब तक हम सांस लेते हैं ...ये ..'सुंदर स्त्री' का स्वप्न ...हमारे साथ–साथ चलता है ......

"इश्वर की बिना कृपा के ...कोई संयोग भी नहीं बनता, नरेन्द्र ?" क्रिस्टी मुझे बता रही थी .

"तुम मेरे दूसरे बेटे हो!" अम्मां कह रही हैं . "रकीब में और तुम में मैं कोई भेद नहीं कर पाती ...?" उन का कहना है .

और मेरे ये संस्कार ...मुझ से भी दो कदम आगे चलते हैं .....!!

"देख रहे हो, आसमान को ...?" रकीब मुझे इशारे से पास बुला, पूछ रहा था . "गुलाबी–गुलाबी हो गया है ?" वह बता रहा था . ""इस का मतलब जानते हो ....?" उस ने मुझे पूछा था .

"नहीं, तो .....?" मैंने बुद्धू की तरह तौला–सा सर हिला दिया था .

"अब खुलेगा, मौसम!" रकीब ने बताया था . "हवा को नहीं महसूसा ...? वो तीखा पन जाता रहा है . सुहाने लगी है ....?"

"तो ....?"

"तो–क्या ...? चलते हैं ....!" उस ने घोषणा की थी . "यही मौका है, दोस्त!" वह प्रसन्न था . "फिर तो ....काम ...."

"मैं समझा नहीं, रकीब ....?"

"यही कि ...ये महीना ठल्वार का समझो! और अब मौसम भी मस्त है ...? चलते हैं ....?" उस ने सुझाव रखा था . "तुम्हें सब दिखलाता हूँ ." उस ने वायदा किया था .

मैं प्रसन्न हो गया था . कब से चाह रहा था कि चलूँ ...शिव के पास ... दर्शन करू...आशीर्वाद लूं ....और आज रकीब ने स्वयं ही प्रस्ताव रख दिया था ...? और मैं यह जांन कर कि घर पर भी हमारे जाने की तैयारियां मुकम्मल थीं –हैरान था ...? रास्ते के लिए अम्मी ने लड्डू तक बना दिए थे ....?

"सोमवार को निकलेंगे ....?" रकीब ने कहा था .

"लो ....!!" अब अब्बा ने मुझे नोटों की गड्डी पकडाई थी .

"क्यों ...? इत्ते पैसे मैं क्यों लूँगा ....?" मैंने प्रतिकार किया था .

"इसलिए कि ...ये तुम्हारे ...बनते हैं, नरिंदर ....?" अब्बा ने प्रसन्न हो कर कहा था . "तुम्हारे आने के बाद ....इतनी कमाई हुई है ...कि ...?" वो रुके थे . उन्होंने मुझे अपांग देखा था . "कोई किस्मत वाले हो ....? तुम्हारे सितारे बुलंद हैं ...!! तुम ......"

"बहू के लिए कुछ लेते जाना, बेटे ....?" अम्मा ने आदेश दिए थे .

अचानक ही मेरी आँखों के सामने जसोदा का चहरा आ कर ठहर गया था .....!!

मेरा इंतजार करती –जसोदा एक पतिव्रता नारी थी ....मुझे आज महसूस हुआ था! और फिर मैंने अम्मीं की आँखों में भी पढ़ा था – कि हिन्दू नारियां अपने सतीत्व की साधना के लिए ...जगत–प्रसिद्ध थीं ...? ये सती नारियां ... धर्मपरायण स्त्रियाँ ...और पतिव्रताएं ...हमारी भारतीय संस्कृति की धरोहर थीं –ये तो जमाना जानता था ...?

"मुझे क्या देते हो ....?" निक्की कूद कर बीच में आ खड़ी हुई थी .

"ये लो ....! सब तुम्हारा ...!!" मैंने सारे नोट निक्की की हथेली पर धर दिए थे .

"नहीं, ये नहीं ....?" नांट गई थी, निक्की . "वायदा करो कि ...मुझे ... सलीमा ....?"

"वा–य–दा रहा ....!" मैंने निक्की की हथेली पर हथेली दे मारी थी . "अगर मैं कुछ बना ....निक्का ...तो ...."

"बड़े तो ....तुम ...बनोगे, भैया ....!" सहज में कहा था, निक्की ने और फिर रो पड़ी थी . "तुम ....जा रहे ...हो ...? सहा ...न जाएगा .....????'" वह कहती रही थी .

अम्मीं और अब्बा की आँखें भी गीली हो आईं थीं . मैं तो रो ही पड़ा था ...? आज मैंने महसूस था कि ...हमीं नहीं ...मेरे जाने के शोक में शायद ..भेड़–बकरियां जरूर रोएंगी ...और वो पाजी ...कुत्ते ....मुझे कभी न भूल पाएंगे ....? सच में मेरी आत्मा ...यहाँ आ कर ...इन में ...रम गई थी! शायद मुझे ऐसा पवित्र प्रेम पहली बार मिला था ....?

और अब मैं चल पड़ा था .....

"जम्मू के लिए ...तुम्हें बस में बिठा कर ...लौटेगा, रकीब ...!" अम्मीं ने कहा था .

हम ने चढ़ाई के बजाए ..उतराई आरंभ की थी तो मैं रूठ गया था!

"अरे यार! इस फूल घाटी से ..हमें ..उधर मूल घाटी में जाना होगा ...? रास्ता पहले उतरेगा ....और फिर चढ़ेगा ...?" रकीब मुझे समझा रहा था . "वहां से मुगल लकीर ले कर ...हम हिबारे की ओर निकल जाएंगे! यहाँ तुम अपने शिव के पास पहुँच जाओगे ...?"

"लेकिन .....?"

"और कोई रास्ता नहीं है!" रकीब ने हाथ झाडे थे . "पहाड़ पर सीधे–सीधे तो पागल ही चढते हैं ?" वह हंसा था . "जैसे की तुम चढ़े थे ....?" उस ने मुझे मेरी की मूर्खता समझाई थी ."दिन–देर तो लगेगी ....! नरेन्द्र! आहिस्ता –आहिस्ता ... चढ़ेंगे ....चलेंगे ....तो ही ...हिबारे पहुँच पाएंगे ...?" उस का कहना था .

और जब पहाड़ का परता बदला था ...तो हम अचानक ही एक सुरम्य

घाटी में उतर आए थे!

"इसे नूरी– छम्ब कहते हैं!"रकीब ने बताया था . "वो देखो! चश्मा –शाही! इधर से ही स्वरण गंगा निकलती है! इस चशमे पर नूर जहाँ नहाने आती थी ...?" रकीब ने मुझे बताया था .

"पागल बना रहा है, ब्बे ....?"

"नहीं, यार! ये सच है ...? तू चल कर देखना ...पूछना लोगों से ...और परखना खुद कि ....नूर जहाँ .....?" उस ने मेरी आँखों में घूरा था . "लगता नहीं ...? कितनी खूबसूरत वादी है ....? और देख तो ....उधर ....."

वास्तव में बड़ी ही मनोरम घाटी थी ...! तरह–तरह के सुगन्धित फूल ...पौधे उगे थे ...! हवा में एक भीनी खुशबू भरी थी . चारों ओर घिरे पहाड़ों की गोद में बैठा वो झरना ...और उस से बहती स्वरण गंगा ...बड़े ही अलौकिक लग रहे थे ....!

"नूर जहाँ को लोग ...छुप–छुप कर देखा करते थे ....? कहते हैं, नरेन्द्र कि ....वो इतनी ...खूबसूरत थी ...."

"चित्रा ...?" मेरी आँखों के सामने द्रश्य लौटा था . "क्रिस्टी ....?" मैंने फिर से नूर जहाँ की तुलना करनी चाही थी .

फिर रकीब ने मुझे संक्षेप में ..मुगल इतिहास के मुख्य मुद्दे समझाए थे!

"तुम मानते हो, इस्लाम को ....?" मैंने यूँ ही प्रश्न पूछा था –रकीब से .

"काहेका, इस्लाम ....? हमें क्या गरज है किसी इस्लाम की ....?" हँसते हुए कहा था, रकीब ने . "हम तो .....हम हैं, नरेन्द्र! हमें क्या चाहिए, भाई ...?" उस का प्रश्न था . "ये सब चौंचले हैं –फुरसत के .....! और हमें फुरसत कहाँ है ....?" उस ने बात ही समाप्त कर दी थी .

तीन दिन की लगातार चढ़ाई के बाद हम हिबारे पहुंचे थे!

"यहाँ ...आ कर गले थे – ...अर्जुन ...भीम ...नकुल ...सहदेव ...युधिष्ठिर ...और द्रौपदी ....!" रकीब ने बताया था . "कहते हैं – युधिष्ठिर का तो .. अंगूठा ही गला था ....? वह तो सीधा स्वर्ग गया था ...! धर्मराज था, , , न...?" विहंस कर बोला था, रकीब .

"और मेरे शिव .....?" मैंने पूछा था .

"यहीं रहते हैं! पता कर लो ....?" रकीब हंस रहा था .

मैं सच में ही उस स्वर्ग में था जहाँ कण–कण में भगवान् बसते हैं ....!!

इस हिमागार की अलग ही भव्यता थी ...? झील का एक अलग काम था ...? लेकिन मैंने महसूसा था कि ... मुगलों ने आ कर भारत के कौने–कौने में पहुँच ...अपने सिक्के जमा दिए थे ....? जम्मू जाती बस में बैठा–बैठा मैं

...गिनता रहा था कि ...भारत–भूमि पर घावों की तरह उगे ...ईसाईयों और मुसलमानों के ...किए जुल्म ...आज भी ताजा थे ...? न मरे थे ...न भरे थे . ...और समूचा मेरा भारत ...आहत था ...किसी कर्ज में दबा था ...और कहीं से भी आजाद न था ....?

पर लोगों ने आजादी ले ली थी ...लड़ कर ली थी ....और अब लोग ही ...इन घावों को भी भरेंगे ...मुझे अब भरोसा होने लगा था ......!!!!

75

मोदी पी एम् बन कर दिल्ली जा रहा था?

"ऐसा क्या है, जो हम से नहीं हुआ ....? क्या है – जो हमने नहीं किया ...? और वो क्या है ....जो हमें अब करना चाहिए ....?" आला कमान की आवाज में दर्प था . प्रश्न थे –सही, सटीक ...और ये सच्चे प्रश्न थे ....? "आप लोग अनाडी नहीं हैं ....? आप लोग पार्टी की मांग जानते हैं ...? आप लोग अगर चाहें तो ....?" आला कमान की निगाहें उठीं थीं ....और उन्होंने अपने समर्थकों के चहरे पढ़े थे . "वह कहता है, 'कांग्रेस मुक्त –गुजरात ' .....और कल को कहेगा, 'कांग्रेस मुक्त –भारत ?" एक चुप्पी कई पलों तक छाई रही थी . "आप क्या चाहते हैं ....?" उन्होंने उत्तर माँगा था .

"मोदी मुक्त –गुजरात!!" संजीव भट्ट की आवाज गूंजी थी . "स्वेता भट्ट को ...आप टिकिट दें! मोदी जहाँ से भी चुनाव लडेगा ....स्वेता वहीँ से लड़ेगी ? और मैं वायदा करता हूँ कि ...मोदी चुनाव हारेगा ....!!" उस ने एलान किया था .

"टिकिट मिल जाएगी ...!" उधर से भी एलान हुआ था . "और किस को क्या चाहिए ....?" उन का दूसरा प्रश्न था .

"आप ....मेरा मतलब कि ....आप ..चुनाव में स्वयं ...मैदान में आएं ...?" शक्ति सिंह गुहिल की मांग थी . "अगर मनमोहन जी ....और राहुल जी भी ...चुनाव –प्रचार में भाग लें ...तो हम शर्तिया ...मोदी को गुजरात से भगाने में सफल होंगे ....?" उस ने भी एलान किया था .

"हो जाएगा ....!!" तुरंत ही उत्तर आया था . "और क्या होगा ....?" अब की बार हाई कमान की निगाहें तरुण तेजपाल ...और उन की टीम के अनिरुद्ध बहल पर जा टिकीं थीं . एक उल्हाना था –उन निगाहों में ...?

२००१में ...वाजपाई सरकार को बदनाम करने के बाद ...और २००४ में कांग्रेस की सरकार को बहाल करने के बाद ...'तहलका' ज्यादा कुछ न कर पाया था ...? करता भी तो क्या ....? २००२ में ही तो इस मोदी को ...मिटाने के लिए ...'गोधरा' का गोधन धरा था ...? लेकिन ...उस धधकते ..ज्वालामुखी के मुंह से बाहर कूद ...और रचे लाक्षाग्रह को ..तोड़ कर ...भागा ये बागी सरदार ...मोदी ...आज तक भी जिन्दा था ...?

"शिव को जहर पी कर पचाते सुना था ....पर इस तरह ...छोड़े राम–बाण को सीने पर ओट ...अब दिल्ली को डराता ..ये अदना–सा मोदी ....पहली बार ही दिखाई दिया है ...?" अनिरुद्ध कहता रहा था . "गुरु ...! कुछ तो करें .... ?" वह बुदबुदा रहा था .

"कुछ करते हैं ....!" तरुण तेजपाल ने माथे का पसीना पौंछा था . "जासूसी 'काण्ड' ...!!" शब्द उन के होठों से बाहर आए थे .

"करो ....! रोका किस ने है ...? एक स्त्री की ....लाज का प्रश्न है ...? सारे समुदाय आप के साथ हैं ...? और जो ...चाहें ....सो .....?" उन का इशारा था . "हमारे हित में ...अभी तक कोई फैसला नहीं आया ...?" आला कमान ने निगाहें घुमाईं थीं . उपस्थित आला कानूनविद ...जिन्हें पार्टी ने उपकृत किया था, इनाम–इकरार दिए थे ...और पद–प्रतिष्ठा दे कर निहाल किया था – तनिक तिलमिलाए थे ...? उन्हें भी एहसास हुआ था कि ...अभी तक 'मोदी' नाम की चिड़िया ...किसी भी फंदे में न फंसी थी ...और चहक रही थी – स्वतंत्र ....? "क्या ऐसा कोई कानून नहीं जो .....इस तरह के हत्यारों को सजा दे ...? एक अदना–सा आदमी ...आप सब को अंगूठा दिखा रहा है ...? हम तो मानते थे ...कि ...कानून .....?"

"कानून क्या करे ....कोई सबूत ही नहीं मिलता ....?" आफ्ताव आलम बोले थे . "हर बार ...कोई न कोई चूक हो जाती है ...?" उन्होंने सर धुना था . "मैंने तो तीस्ता को फ्री कर दिया है ...और ...."

"सब मिल कर घेरें ....इसे ...तो ही काम चलेगा ....?" आला कमान ने आदेश दिए थे . "इस चुनाव में ...दूध –का–दूध ...और पानी –का–पानी . ....." घोषणा थी – उन की .

अब बुद्धिजीवियों का और पत्रकारों का जमघट हाई कमान को घेरे खड़ा था!

"कहते हैं कि ...बी जे पी की १...० सीटें आएंगी ....! और आप की .....?"

"अफवाहें फैलाने को किस ने कहा है, आप से ....?" आला कमान ने नाराज हो कर पूछा था . "आप लोग ही उल्टे प्रश्न पूछेंगे ...तो पार्टी कैसे जीतेगी ...?" उन का प्रश्न था ."हमने आप को क्या नहीं दिया ....कब नहीं दिया .....और आगे देने से भी तो हमने ना नहीं की है ...? कुछ ढंग का लिखें ....? पार्टी के बारे ...." उन का आग्रह था . "और आपके लोग ....?" उन्होंने साथ बैठे जावेद अख्तर को घूरा था . "कुछ तो करो ...?" हाई कमान का आग्रह था . "रोना–पीटना भी बंद कर दिया ....आप लोगों ने ....?" हाई कमान का उल्हाना था .

समूह में बैठे लोग जानते थे – कि किस–किस को उपाधियाँ मिलीं थीं ...पुरूस्कार मिले थे ....और पदवियां हासिल हुईं थीं ...? कांग्रेस पार्टी ने तो सब को निहाल किया हुआ था! अब इन की बारी थी –पार्टी का कर्जा चुकाने की ...?

"हम तो जी–जांन से लड़ेंगे ....पार्टी के लिए ....!" एक समवेत स्वर गूंजा था ....और फिर हाई कमान की जय–जयकार कर चलता बना था .

लेकिन न जाने कैसे आती उस अकेली आशा –किरण को ...मात्र मोदी की परछाईं ने ढांप दिया था ...? कहीं से आ एक मोदी खौफ ..दिमाग में बैठ गया था ...और इस का उपाय अभी तक न मिला था ...?

मोदी के नाम की चर्चा जोरों से चल पड़ी थी! न चाहते हुए भी हवा का रुख मुड़ता ही चला जा रहा था ...? 'मोदी' ....'दिल्ली' जैसी आवाजें थीं . ..जो हवा के भी कान फाड़े दे रहीं थीं ....? और कमाल ही था कि रचे चक्रव्यूह को ..फाड़ कर ...'मोदी' ...एक अदना –सा आदमी ..आकार ग्रहण करता ही चला जा रहा था ....?

"कहते हैं – मोदी इज ए ...क्रूड बोंब ...?" अमित हंसा था . "कुछ का कहना है – गंवार है ...देहाती है ...? तो कुछ कहते हैं – गुजराती ....गज्जू भाई है ? गप्पें मारते हैं ...गुजराती में ....और लोग खुश हो कर घर चले जाते हैं ...? आता–जाता कुछ नहीं, भाई को ....?"

"बात क्या है ...?" मैंने बड़े ही प्रेम से पूछा था .

"बात ये है ...कि .... "अमित ने मुझे ऊपर से नीचे तक देखा था . "एक पी एम् को क्या होना चाहिए ....?"

"भला आदमी ....!" मैंने सहज स्वभाव में उत्तर दिया था .

"हा हा हा .....!!" अमित जोरों से हंसा था . "हो हो हो ....!!" वह हँसता ही जा रहा था .

ना जाने मैंने ऐसा क्या कह दिया था – मैं सोच में पड गया था!

"एक भला आदमी ....?" वह फिर से बोला था . "और अगर बुरा आदमी पी एम् बन गया तो ....?"

"बात क्या है, भाई ....?" मैंने तनिक नाराज होते हुए पूछा था .

"बात ये ...कि ...आज ही से ...पी एम् बनने की तैयारी ...का सूत्र–पात ...!" उस ने बात को सिरे से पकड़ा था . "कल की सभा में ...भाषण हिंदी में होगा ....?" उस ने बात स्पष्ट की थी . "फिर बंबई जा रहे हो – भाषण अंग्रेजी में होगा ...?" उस ने अगली हिदायत भी दी थी . "क्यों की ...भारत के पी एम् को ये दोनों ही भाषाएँ आनी चाहिए ....?" वह गंभीर था . "और जो भी ...आज के बाद ...आप के हाव–भाव ..बोल–चाल ....एक्शन–रिएक्शन होंगे ....एक भारत के पी एम् की तरह ... होंगे ...?" अमित की आवाज में आदेश थे .

"आज्ञा ...शिरोधार्य है, अनुज ....!!" मैंने विनम्र होते हुए कहा था .

"कल की ...सभा में ...परोक्ष रूप से कह देना है ...कि ...'दिल्ली आ रहे हैं, हम '!!"

"कह दूंगा ...!" मैंने वायदा किया था .

"और हाँ! दिल्ली में भी पार्टी में चर्चा चल पड़ी है ...? कुछ लोगों को बुखार चढ़ गया है ...तो कुछ लोगों की बांछें खिल गईं हैं ...! " अमित बता रहा था . "कोब्रा और गुलेल भी ...हो लिए ...? फैक दी ...संजीव भट्ट की फाइल ...?" एक महत्व पूर्ण सूचना दी थी, अमित ने .

एक राहत की सांस लौटी थी! मैंने अमित का आभार माना था . चरित्र हनन की छेडी कांग्रेस की मुहीम ... घातक थी . मैं किसी भी तरह से महिलाओं के मुकाबले न आना चाहता था ...?

"तीस लाख युवक प्रान्त में ...बे–रोजगार घूम रहे हैं ...? किसान भूखा मर रहा है ...? मजदूर के लिए रोटी नहीं ...? फिर गुजरात में विकास कहाँ हुआ ...?" राहुल गाँधी जन–सभा में खड़े हो कर पूछ रहे थे .

युवा कांग्रेस ने पूरी सामर्थ झोंक दी थी ..! राहुल गाँधी का भाषण सुनने के लिए ...युवकों को इकट्ठा किया गया था ...! कांग्रेस का आरोप था कि मोदी ने इन युवकों को बहका लिया है ...? तभी मोदी हर बार का चुनाव जीत जाता है ...?

"अल्पेश जी ...! आप जैसे ही तो ये युवक हैं ....जो ..बे–रोजगार हैं ...? हार्दिक जी! आप ही सोचिए कि ...अगर गुजरात का युवक ...बे–कार घूम रहा है ...तो ...मोदी जी ने विकास क्या किया ...?" बात घूम–फिर कर वहीं आ गई थी . "राहुल गांधी ....? जिन्दा बाद ....!! राहुल तुम संघर्ष करो ....! हम तुम्हारे साथ हैं ....!!!" नारे गूंजते रहे थे .

"सीधी टक्कर ...अब ..'गांधियों' से है, भाई जी ...?" अमित शाह बता रहे थे . "मोती लाल नेहरू से ले कर राजीव गाँधी तक ...सब को लाईन में खड़ा कर दिया है – कांग्रेस ने ...?" वो हंस रहे थे . "और है भी क्या, इन के पास ...?" नरेन्द्र मोदी जी ने भी स्वीकारा था .

"गुजरात में जो भी विकास हुआ ....कांग्रेस पार्टी ने ही किया ....?" सोनिया जी बोलीं थीं . "बी जे पी ..तो कल की पार्टी है ...? कांग्रेस ने देश को आजादी दी ...! देश का विकास किया ...!! नेहरू जी ने देश को औद्योगिक क्रांति दी ...और ये सरदार सरोवर ...कांग्रेस की ही देन है ...? इंदिरा जी ने ...देश को ......" तालियाँ बजने लगीं थीं . "सोनियां –गांधी – अमर रहें के स्वर गूंज उठे थे . "बी जे पी ने क्या दिया देश को ....?" सोनियां गांधी पूछ रही थीं . "किसान भूखा है ....उस को कीमत नहीं मिलती ....मजदूर रोटी के लिए मुहताज है .....और .... "

और मनमोहन सिंह जी ने तो बी जे पी को सिरे से खारिज कर कहा था – विकास नहीं ...ये इन का प्रपंच है ...? कल को जब गुजरात में कांग्रेस की सरकार आएगी तो ...पता चलेगा ....कि ये बी जे पी – बला क्या है ....?

लेकिन जब नरेन्द्र मोदी सभा को संबोधित करने खड़े हुए थे ...तो ... जनता का उठा –शोर ....जनता की मांगें ....जनता का जोश ...इतना था कि ...संभाले –न–संभल रहा था ...?

"क्या कहूं, भाईयो और बहिनों .....?" मोदी जी बोल रहे थे . "जिस विकास के रास्ते पर हम चल पड़े हैं ....अब हम मुड कर नहीं देखना चाहते ...?" उन्होंने कहा था . लोग चहके थे ...बोले थे ...नारे लगे थे ...'फॉर्वर्ड

' ....'फॉर वार्ड ' ....!! मोदी जी भी कह रहे थे – अब नहीं मुड़ेंगे ...हम पीछे ...? उन्होंने घोषणा जैसी की थी . लोग फिर से चहके थे – 'दिल्ली' .... 'दिल्ली' .....? की आवाजें तूफान की तरह उठीं थीं . और मोदी जी कह रहे थे, 'मैं चाहता हूँ ...आशीर्वाद ...! अपने छह करोड़ गुजराती भाईयों का – आशीर्वाद ...!!' अब हाथ उठा कर लोगों का आव्हान किया था –मोदी जी ने! फिर से शोर उठा था – 'पी एम ....'पी एम ....'दिल्ली' ....'दिल्ली' ....? 'चला जाऊंगा –दिल्ली, इसी सत्ताईस तारीख को ....!!' मोदी जी ने विनोद के बतौर कहा था . "मैं अपने छह करोड गुजराती भाईयों से ...नम्र –निवेदन करता हूँ कि ...अगर मुझ से कोई गलती हुई हो तो ....जाने–अनजाने भी कोई गलती हुई हो ....तो मुझे क्षमा कर दें ....?" मोदी जी का इशारा था कि अब वो दिल्ली चले ही जांयगे ...? और फिर से लोग उल्लास में उछल–उछल कर –'पी एम ... 'पी एम का ..जयघोष कर रहे थे ...!! "मैं आप की भावनाओं की कद्र करता हूँ, भाईयो ...और बहिनों ...! मैं कोशिश करूंगा कि ....आप के सपने पूरे कर सकूं ....?" अब हाथ हिला–हिला कर मोदी जी ...उन का आव्हान करती जनता का ...आभार चुका रहे थे ....

लगा था – ये उन का ...प्रचार–भाषण न हो कर ...एक विदाई समारोह था ...जहां ...जनता का चहेता – मोदी 'पी एम बन कर ...दिल्ली जा रहा था ....?

76

मुझे तो विदेश भी देश निकाला दे बैठा था?

चुनाव के परिणाम आए थे तो बी जे पी ने ११५ सीटें जीतीं थीं! कांग्रेस को कुल ६१ सीटें मिलीं थीं . लेकिन कांग्रेस का कहना था कि बी जे पी की हार हुई है ...? मोदी को दो सीटें कम मिली हैं ....जब कि कांग्रेस ने बढ़त हासिल की है! चिदंबरम बोले थे – हार गई, बी जे पी ...? कांग्रेस मुक्त –गुजरात का नारा दे कर अब अपनी जांन बचा रही है ....! अब क्या मूं दिखाओगे, मोदी जी .....?

"सरकार तो बी जे पी ही बनाएगी –गुजरात में ...?" अमित शाह का उत्तर था . "अगर ६... सीटें भी आतीं ... तब भी बी जे पी की ही सरकार बनती ...?" वो कांग्रेस पर हंस रहे थे .

कांग्रेस की टीम ...एक बार फिर गुजरात में शिकश्त खा कर ...लौट गई थी ....!!

और न जाने क्यों और कैसे ......कांग्रेस पार्टी का रंग बदली होने लगा था ...?

लाल से पीले होते इस रंग को हर बुद्धिजीवी, पत्रकार, समाजसेवी ... और मीडिया ने भी देख लिया था . एक और स्कैम हवा में सन्नाने लगा था! 'टू –जी' के बाद अब 'कोल–गेट' ...का शोर सुन लोग हैरान थे . 'एक दशमलव छिअत्तर लाख करोड़ ....!' के बाद फिर 'एक दशमलव छिआसी लाख करोड' का घोटाला ...?" लोग अब पूछ रहे थे ...कि 'देश में ये कैसी लूट चल रही है?' आम भ्रांतियां जनता में फैलने लगीं थीं!

दिल्ली अफवाहों की आग में दहकने लगी थी ....?

"हो क्या रहा है ....?"हाई कमान ने चौंक कर पूछा था . "हमने तो गुनहगारों को जेल भेजा है ....?" उन का एक एलान था . "लिखें आप ...! बताएं लोगों को कि ...कानून अपना काम कर रहा है ...?" उन के आदेश थे .

"अमित है!" शिकायत सामने थी ...और साथ में गुनहगार का नाम भी था . "पानी में आग ...ये लगा रहा है ....?" स्पष्ट कहा था –अनुचरों ने . "हमने तो पहले ही कहा था कि ...इसे जेल से रिहा ही न किया जाए ...? लेकिन ....."

"हमने मनमोहन जी को बता दिया है ...! विकल्प जल्दी ही सामने आएगा ....?" उन का कहना था .

लेकिन दिल्ली जैसे हर रोज सुबह उठ कर ....एक नए घोटाले को ईजाद कर देती थी –ऐसा लगने लगा था ....? लगाने लगा था कि देश – खाली हो जाएगा ....लुट कर रहेगा ....और चोर यहाँ से ...दिल्ली छोड़ कर जाते रहेंगे ....?

और मैं भी तो दिल्ली ही जाने की सोच रहा था ...? मैं भी तो निश्चय कर बैठा था कि अब ...दिल्ली ही जाना है ? मैंने तो लोगों को सूचना भी दे दी थी ...उन से आशीर्वाद भी ले लिया था ...और अब मैं और अमित .. .दिल्ली पहुँचने के लिए ...उतावले थे ...कटिबद्ध थे ...!!

"बंगाल को लूट कर ....दिल्ली भाग गए थे – अंग्रेज!? मैं अचानक ही दादा जी की आवाजें सुनने लगा था . "दिल्ली को अपने ढंग से बसाया .. .अपने लिए बसाया ...और देश के राजे–महाराजों को भी ...दिल्ली बुला कर अपने पास ही बसाया ...?

"ये बस ..जम्मू तक ले जाएगी, नरेन्द्र!" रकीब मुझे बता रहा था . "वहां से दिल्ली के लिए दूसरी बस ले लेना ....फिर तो घर पहुँच ही जाओगे ... ?" वह हंसा था . "भूल मत जाना, भाई ...?" उस का भोला आग्रह था . "तुम ....से...." काँप गया था, रकीब का स्वर . रो पड़ा था –वह! "तुम से ...पता नहीं क्यों ....?"

"मैं भी कहाँ भूल पाऊंगा, तुम्हें ...रकीब ...?" भावुक था, मैं! "अब्बा ... और मम्मी को मेरा ...चरण –स्पर्श कहना ....और उस निक्का को मेरा प्यार कहना ....?" कह कर मैंने रकीब को विदा किया था .

और फिर यही दिल्ली मेरे दिल में आ बसी थी ...! पहली बार मैंने दिल्ली को देखना था ...? मेरी कल्पना में अब कलकत्ता था ...लेकिन दिल्ली न थी ? मैं अंग्रेजों की बसाई ...और मुगलों की लूटी ....दिल्ली को देखने के लिए बे–ताब था! पूरे रास्ते मेरे जहन में दिल्ली ही आती रही थी ....बनती रही थी ....बिगडती रही थी ...उजडती रही थी ...और बसती रही थी ....!!

"कमरा चाहिए ....?" मुझे स्टेशन से बाहर आते ही प्रश्न खड़े मिले थे .

"नहीं ...!" मैंने दो टूक उत्तर दिया था .

"कहाँ जाना है ....?" फिर प्रश्न आया था .

"कहीं नहीं ...!" मैंने भी विरस उत्तर दिया था .

दिल्ली वालों ने ताड़ लिया था कि मैं उन के वश की बात न था ....?

पर सच में तो मेरा मन था कि मैं दिल्ली को देखूं ...? मैं वड़नगर लौटने से पहले दिल्ली को निरख–परख लेना चाहता था . मैं चाहत था कि मैं दिल्ली में छुट्टा ...घूमूं–फिरूं .....मैं दिल्ली के चप्पे–चप्पे के पास पहुंचूं ...मैं दिल्ली को स–शरीर ...छू–छू कर देखूं ...उस की कहानी सुनूं ...और उस की राय भी लेता चलूँ .....कि मैं कभी दिल्ली लौटूं ....या कि रहने दूं ....?

और मैंने वही किया था ....!!

पैसों से तो मेरी जेबें भरीं थीं! अब्बा ने मुझे खूब सारे पैसे दे कर भेजा था! लेकिन इस घन को अब मैं ...एक सूझ की तरह खर्चना चाहता था . मुझे एहसास हो गया था कि ...यहाँ से आगे अब मुझे ...न तो दादा जी मिलेंगे ...न गुरु जी ....और न ही अब अब्बा से मेरी मुलाकात होगी ...? अब मेरी टक्कर फिर से ...बे–रोजगारी से होगी ...लड़ाई फिर से गरीबी के साथ छिड़ेगी ....और समाज को तो मैं जानता ही था ...?

"नई दिल्ली को पहले देखता हूँ!" मैंने इरादा बनाया था . "देखूं तो . ...कि अंग्रेजों ने क्या कुछ बना कर तैयार किया था ...? और फिर क्या हुआ था कि उन्हें सब छोड़ कर जाना पड़ा था ...?" मैं कहीं अंग्रेजों की हुई हार पर प्रसन्न था . "मैंने नई दिल्ली जाने के लिए रिक्शा पकड़ लिया था .

"यही है, नई दिल्ली!" रिक्शे वाला बोला था . "आप को जाना कहाँ है ...?" वह पूछ रहा था .

"अरे, यार! ले पैसे ...?" मैंने उसे मुक्त किया था . "मैं चला जाऊंगा . ..." कहते हुए मैंने अपना रास्ता गहा था .

और सच में मेरी रूह खिल गई थी . वास्तव में ही बे–जोड़ निर्माण किया था – अंग्रेजों ने ...? कलकत्ता से एक दम अलग ही संरचना थी . सब हट कर चुना था ...बसाया था ...? सब एक दूर–द्रष्टि के साथ स्थापित किया था! सब उन के लिए था ...उन के अपने ही लिए था ...? हम – माने कि हिन्दुस्तानी तो गुलाम ही रहने थे ...उन के गुलाम ....उन के सेवक ... .और अपने राजे–महाराजे भी उन की ड्योढ़ी पर खड़े नजर आए थे, मुझे!!

ठीक ही बताया था – दादा जी ने ....!!

राष्ट्रपति भवन से ले कर कनाट –प्लेस तक ....चांदनी चौक और लाल किले को शामिल करते हुए ....अंग्रेजों का अपना सपना था ...जो साकार हो कर जमीन पर उतर आया था ...और अब नई दिल्ली का नाम ले संचरित हो उठा था ...! वायसराय पर बम मारने की घटना ...के बारे – मेरा मन हुआ था कि लोगों से पूछूं ...? पर में दिल्ली वालों से डर गया था!

फिर मैंने उन खंडहरों को भी देखा था ...जहाँ – तुर्क, मुगल, मंगोल और लोधियों से ले कर ....सूरी और तुगलक तक ...विराजमान थे ...? सब –के–सब यहीं थे ....कहीं न गए थे ...और न मरे थे ...न खपे थे ....? एक इंतजार में बैठे थे ....फिर से अपने विगत को जिन्दा करने के सपने के साथ ...रूहें बन कर जी रहे थे ...यहीं – हमारी भारत भूमि पर ...?

और तभी मेरे स्मृति–पटल पर ...दिल्ली में हुए नर–संहार ...लूट–पाट ...विध्वंस ...तोड –फोड़ ..और धर्म–परिवर्तन ...के लिए ढाए – जुल्म ....उग आए थे ...? अब मैं अपने देश–वासियों की ...चिल्लाहटें ...बिलबिलाहटे... सुन रहा था! मैं उन की पुकारें सुन रहा था और देख रहा था कि ...उन्हें बचाने वाला हाथ ...कोई न था ...कहीं भी न था ....?

सदियों तक ....लुटते ही रहे ....पिटते ही रहे ...हम हिन्दू ...हम भारतीय ...और उजड़ता ही रहा –हमारा देश ....!!

वड़नगर लौटने से पहले मेरा तीसरा –शिव का नेत्र खुल गया था!!!

"बहू के लिए कुछ लेते जाना ....?" अचानक अम्मी की आवाज आई थी

न जाने क्यों मेरे होठों पर थिरक कर एक छोटी हंसी का कतरा ...कहीं

जा गिरा था ...? लगा – जसोदा बैन इतनी छोटी नहीं थी ? उस की इच्छाएं मैं जानता था! और मैं जानता था कि ...हमारा सरल मन ....और शरीरिक सौंदर्य ...दैवीय और दिव्य था और किसी उपहार ...या लाभ–अलाभ का मुखापेक्षी न था ...? कुछ नहीं खरीदा था – मैंने! अब्बा की दी पूँजी को मैं तोडना न चाहता था ...?

आज फिर से मैं दिल्ली जा रहा था ...? हम ने फिर से देश के खजानों की चाबियां ...विदेशियों के हाथ में सौंप दीं थीं ....? फिर से देश का धन विदेश जा रहा था ...? बैक लुट रहे थे ...व्यवस्था लुट रही थी ...हम लुट रहे थे ...और असहाय आँखों से हम तमाशा देख रहे थे ...मात्र दर्शक बने खड़े थे ....?????

"अंग्रेजों का कल्चर अब आ कर ....मेरी समझ में समां गया था ...? मैं सोचने लगा था कि ..जाते–जाते ...अंग्रेज जो ठीकरा देश में फिट कर गए थे – वही उन का अभी भी ...हित देख रहे थे ...? उन्ही के दिए काम कर रहे थे ...जो उन्ही के हित में थे ...और ...उन्ही की गुलामी किए जा रहे थे ...खुशी–खुशी ...!!

और तभी ....हाँ, हाँ .....तभी ...अमेरिका ने तो मेरा ...वीजा भी रद्द कर दिया था ...? देश तो दूर ...मुझे तो ...विदेश भी देश–निकाला दे बैठा था ...?

और एक मैं था कि ...दिल्ली जाने की जिद कर बैठा था ....?

और ....हाँ, हाँ ....वो ...अमित भी .....????

77

अब मैं फिर अकेला छूट गया था ?

मात्र मेरे आने से गुजरात भवन में ...गहमा–गहमी बढ़ने लगी थी!

मैंने तो अपने दिल्ली आने की सूचना किसी को भी नहीं दी थी ? मैं तो अपना ये छोटा वक्त अपने ही लिए खर्च करना चाहता था! सांस लेना चाहता था ...और अपने ही भीतर झाँक कर ...अपने आप से दो–दो बातें करना चाहता था ...? लेकिन ....

"चोर की तरह घुस आए, दिल्ली में ....?" मेरे आगंतुक मित्र मुझे पूछ रहे थे . "पहले तो कभी ऐसा नहीं हुआ ...?"उन का उल्हाना था .

"अरे, भाई! अब तो बात ही बदल गई ...?" दूसरा कह रहा था . "देश के ...प्रधान मंत्री .....?" सब अब मुझे एक साथ देख रहे थे . मुझे भी लगा था जैसे मैं कोई अजूबा ही था ? या मैं कोई नया आदमी था –जो यों ही दिल्ली चला आया था –चुपचाप ...? "अब तो ....." मुझ पर एक प्रश्न चिन्ह लग गया लगा था .

दिल्ली में सर्दी हो गई थी . मैंने कन्धों पर पड़े शाल को पूरे बदन पर खींच लिया था . अब मुझे एक गर्माहट महसूस हो रही थी . एक अनाम–सा सुख पी रहा था – मेरा शरीर! तभी मैंने महसूसा था कि आगंतुकों की संख्या लगातार बढती ही जा रही थी ?

"आप के नाम के साथ–साथ 'गोधरा' का नाम भी उछला है ?" कोई कह रहा था . "ये देखिए! लिखा है –नरेन्द्र मोदी के इशारों पर ही सब हुआ ....और नरेन्द्र मोदी ही ...."

"कांग्रेस को कम मत कूतलेना, बाबू जी ...?" कोई अपरिचित था जो बता रहा था . "इन को नाव डूबोनी आती है! आप तो भले आदमी हैं .... लेकिन ये कांग्रेसी .....?"

"दिल्ली में भले लोग नहीं रहते, भाई जी ....?" किसी ने कहा था और सब हंस गए थे . "आप की तरह ही तो अन्ना आए थे ...? जन–लोकपाल ला कर भ्रष्टाचार मिटाना चाहते थे ? देश में होती लूट को रोक कर ....एक ईमानदार शाशन प्रणाली कायम करना चाहते थे ...?" अब उन्होंने मुझे ऊपर से नीचे तक निहारा था . "संत हैं – अन्ना ...? सीधे हैं ...??" कह कर उन्होंने फिर से मुझे घूरा था . "पर आपसे मेल नहीं खाते ...?" कह कर वो व्यक्ति हंस गया था .

फिर एक चुप्पी लौटी थी . मैं तनिक गंभीर था . अन्ना हजारे की हार मुझे अच्छी न लगी थी . लेकिन मैं करता भी तो क्या ...? अन्ना हजारे ने डाक्टर मनमोहन सिंह की सरकार के साथ ... जोर–शोर के साथ अखाड़ा रोपा था . ..? देश का मीडिया अन्ना हजारे को हथेलियों पर रख–रख कर ...उछाल रहा था! देश में एक लहर दौड़ गई थी . लोगों को लगा था कि ...अंत में उन्होंने अपने इच्छित मसीहा को पा लिया था ...देख लिया था ....!!

"जनता को भरोसा हो गया था कि ...अन्ना ..हमारे देश के एक ईमानदार ...क्रांति के संवाहक बनेंगे ...और भ्रष्ट कांग्रेस को समाप्त कर देंगे ...?" मनोज जी बताने लगे थे . "देश की जनता प्यासी है, भाई जी!" उन्होंने मुझे स्नेह से संबोधित किया था . "जनता को एक ईमानदार जन–नायक की जरुरत है ...?" उन की मांग थी .

मैंने अचानक ही अपने आप को टटोला था! अचानक ही मैं अन्ना हजारे की बगल में आ खड़ा हुआ था ...और अपना कद नाँपने लगा था ...?

"आप के मुकाबले के लिए ...तो कांग्रेस ...ने .'राजा हरिश्चंद्र की संतान' उर्फ – अरविन्द केजरीवाल को ईजाद कर लिया है!" मैं फिर से लोगों के विचार सुन रहा था . "अब कांग्रेस आप को घोर साम्राज्यवादी ...हिन्दू आतंकवाद का संवाहक ...और ..." वो तनिक ठहर गए थे . फिर तनिक हँसे भी थे . "और ...एक 'रसिया' ....एक 'रसिक' की भूमिका में ...अपनी डर्टी –ट्रिक्स के जरिए ...सरनाम करेंगे ...बुरी तरह से बदनाम करेंगे ...."

"रसिया ....?" किसी ने प्रश्न पूछा था .

"अरे, क्यों ...? वो जासूसी काण्ड ....फिर से खोल रहे हैं ...?" साफ उत्तर आया था .

"क्या नाम है ...उस ... लड़की का ....अरे ...उस महिला ...का ... .? हाँ, हाँ ....वो ..."

मेरा तो माथा ही घूम गया था . मुझे स्त्रियों के प्रकरणों से ..बहुर ज्यादा डर ..लगता है ...? एकबारगी ...जासूसी काण्ड का जिक्र आते ही ...मेरी आँखों के सामने ..'माधुरी' का मासूम चेहरा उभर आया था ...और मुझ से विनय करने लगा था कि ...मैं उस की इज्जत बचा लूं ...? फिर 'चित्रा' का चेहरा ...और फिर ...क्रिस्टी ....शारदा ...निवेदिता ....और फिर ...हाँ, हाँ ... फिर था जसोदा का चेहरा ...?

लेकिन आज मैंने पाया था कि ...ये सभी श्रेष्ठ नारियां ..मेरा रक्षा –कवच बन ...मेरे साथ खड़ी हो गईं थीं! मेरी गवाही दे रहीं थीं ...कि ..मैं नरेन्द्र मोदी ...बदचलन नहीं था ....!!

"केजरीवाल आप को दिल्ली में नहीं घुसने देगा ...? इस बात के कॉल–करार हो चुके हैं ....??" मनोज बता रहा था . "ये कोई नया नहीं है! बहुत गहरा है ...? इस का इतिहास ..नौकरी छोड़ ...राजनीति में कमाने आना है ...? और कांग्रेस को तो इसी प्रकार के मुहरे चाहिए ...?"

"कर क्या लेगा ...?" एक सज्जन ऊंचे स्वर में बोले थे . "लोग इसे पहचान गए हैं ...? जब से इस ने अन्ना के साथ दगा खेली है .....लोग अब इसे लाईक नहीं करते ...? और जो जमावडा इस के आस–पास है ...सभी भ्रष्ट है ...! मनीष सिसोदिया भी तो ...इस के साथ ...एन जी ओ ही चलाता था ...? और ये वकील ..प्रशांत भूषन तो ...महा चोर है ...और वो ..."

"ये तो सब सतही है, श्रीमान!" अब की बार एक और सज्जन आगे आ कर बोले थे . "केजरीवाल की जड़ें बहुत ही गहरी हैं ....! आप जानते है न कि इन्हें 'रिमां –मैग्सेसे –अवार्ड ' मिला है ...? इस पुरूस्कार को एशिया का 'नावेल पुरूस्कार' माना जाता है ?" वो बता रहे थे . "ये सारी संस्थाएं एक हैं! और इन का उद्देश्य भी एक है! अमेरिका के लिए काम करती हैं! उन की नीतियों को लागू करती हैं . उन्ही का हित देखती हैं . कहती हैं – हम आप का भला करेंगे ....पर करती हैं – हमारा बुरा ....?

"ये देश को फिर से गुलाम बनाने की साजिश है, मोदी जी ...?" एक युवक जोरों से बोला था . "ये सारे कांग्रेसी ....और 'आप' वाले ...सत्ता की दलाली कर रहे हैं ...? इन में कोई नेता नहीं ...सब रंगे सियारों की भोंक हैं ...! मरे का मीट ...खाते हैं, ये ...? आपने पहले इन पर फतह पानी है ...?" उस ने आग्रह किया था .

एक नया ही द्रश्य खड़ा हो गया था! पूरा विदेश मेरे विपक्ष में खड़ा था .. .? देश में उन के दलाल पग–पग पर बैठे थे ...और जनता को गुमराह करने का काम कर रहे थे ...? पानी की तरह बहा रहे थे ...पैसे को ...और लोग ....?

"लोग प्यासे हैं, मोदी जी ...?" फिर एक युवक बोला था . "एक महान पुरुष चाहिए ...ये ही पवित्र प्यास है ...प्यासे जन–मानस की ....? अन्ना एक आस के बादल की तरह उदय तो हुए थे ...पर बेचारे ...साजिश का शिकार हो कर लौट गए ...?" उस ने हम सब को निराश निगाहों से तोला था . "आईये आप ...स्वागत है ...आप का ....लेकिन ...." वह चुप हो गया था .

"मैं करता हूँ, खुलासा ....!" मनोज फिर से बोले थे . "दो सौ करोड़ का चंदा इकठ्ठा हुआ था ...अन्ना जी के लिए ...! लेकिन अरविन्द ने इन्हें दो करोड़ दे कर ...भेज दिया ...."

"और वो जो उन की ...'सर्वस्व त्याग' वाली छवि थी ...उसे दिल्ली की सडकों पर फाड़ कर फेंक दिया ...? और कहा – 'अन्ना सोच लेना ..? बोले तो ...देख लेना कि मैं कितना कमीना हूँ ....?"

"अच्छा ...आदमी नहीं चलता ...यहाँ, मोदी जी ....?" समवेत स्वर में एक नारा जैसा ही गूंजा था .

मेरे भीतर लपक कर एक तूफान प्रवेश कर गया था ....!!

रात के बारह बज गए थे . अतः मैंने स्टाफ को बुला कर भोजन के प्रबंध के लिए कहा! मैंने स्थिति समझ कर जो भी दाल–रोटी संभव हो सकती थी –बना कर टेबिल लगाने को कह दिया था .

"मैं एक मुसलमान हूँ, मोदी जी ...!" एक चौड़ा–चकला युवक मेरे सामने आ खड़ा हुआ था . "मेरा नाम याकूब है . मेरी बहिन गुजरात में रहती है . ...और मैं कांग्रेस सरकार की धर्मनिरपेक्ष की नीतियों को ...बुर्के में बाँध कर कैसे चलाया जाता है – जानता हूँ! २० फीसदी मुसलमान वोट बैंक को

लेने के लिए ...इन्हें धार्मिक और भावनात्मक मुद्दों पर ब्लैक मेल किया जाता है! लड़ाया जाता है –इन्हें हिन्दूओं से ...और फिर पुचकार कर पास बिठा लिया जाता है! देते कुछ नहीं हैं . गरीब और अनपढ़ बना कर रखते हैं . और ...."

"मैं तो कहता हूँ, श्रीमान कि ...सोनियां गाँधी के नेतृत्व में ...चल रही मनमोहन सिंह सरकार ...औरंगजेब के बाद इस देश की ...सर्वाधिक सांम्प्रदायिक सरकार है ...? ये देश को बांटने वाला खेल खेल रहे हैं ...! अब मुसलमानों के आरक्षण की बात भी सामने है ? सच्चर ..जैसे एजेंटों ने तो ...." बुजुर्ग व्यक्ति थे कोई जो बता रहे थे .

"और भाई जी ...! कहने को तो मनमोहन देश के प्रधान मंत्री हैं ... लेकिन ये तो एक 'पेटीकोट' सरकार चल रही है ...? इस में समाज में घ्रणा और..द्वेष फैलाने वाली तीस्ता शीतल बाड, शबनम हाशमी ....हर्ष मंदर ... कमाल फारुखी ...और मंजूर आलम जैसों की ...जमात शामिल है ? इन का कहना है कि हिंसा –बहुसंख्यक – याने कि हिन्दू करता है ...और अल्पसंख्यक –माने कि मुसलमान – पीड़ित है! जब कि आंकड़े बताते हैं कि ...६० प्रतिशत दंगे मुसलमानों की ओर से आरंभ हुए हैं ?" कोई समाज सेवक थे जो अपनी पीड़ा का इजहार कर रहे थे .

सटीक बातें मेरे सामने आ रहीं थीं . मैं हैरान था कि ...देश तो जाग्रत था ...और लोग सब कुछ जानते थे ...? लेकिन इन्हें मूर्ख समझने की मूर्खता करते ...हमारे राज–नेता ...एक गहरे गर्त की ओर ..अग्रसर होते लगे थे – मुझे ...?

खाना टेबिल पर था . हम सब प्रेम से भोजन कर रहे थे . जिसे जो मिल पा रहा था –वो उसे प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण कर रहा था! मैं सब के साथ था ....उन के पास था ...उन का था ...और इन में से ही एक था ....! ये मेरी आदत ही है ....कोई दिखावा नहीं है ....?

"खाना तो कांग्रेस वालों को ही आता है, मोदी जी ....?" एक युवक कहने लगा था . "पाँच सितारा होटलों में ...चिकिन चलता है ...? उम्दा व्हिस्की पेश होती है! और ....और फिर .....?" वह हंस गया था . "मैं कोई झूठ नहीं कह रहा ...? देश को खाए जा रहे हैं – ये बईमान ...?" उस ने कोसा था –कांग्रेस को .

किसी ने भी उस युवक का विरोध नहीं किया था ...? लगा था – अब देश कांग्रेस से तंग आ गया था ....???

"बी जे पी ...अब तक आम आदमी पार्टी को नजरन्दाज करती रही है . ..?"अचानक ही कोई कहने लगा था . मैं सतर्क हो गया था . "केजरीवाल यही तो गेम खेल रहा है ...? है तो कांग्रेस का पर ...दिखाता है – बी जे पी, का ...? देखा ...? कितनी चालाकी से केजरीवाल ने कांग्रेस के साथ ...साथ बी जे पी को भी बेईमान बता दिया ...और चुनाव जीत लिया ...? हा हा हा ....! बहुत तेज वस्तु है – ये कजरी .....?" उस ने ठहाका लगाया था .

"और अब तो ...राष्ट्रीय –राजनीति में ...आने जा रहे हैं ...? कहते हैं – खराब अर्थव्यवस्था, बढ़ती कीमतें ...और विदेश–नीति ...उन्हें शीघ्र निपटाना होगा ...? वरना ...देश ....."

"पर बात कुछ और ही है, प्यारे ....?" कोई देशवाल बोले थे . "मनमोहन की नाकामी ने इन'नरेन्द्र मोदी जी' को लोगों की आवाज बना दिया है! इस डर से कांग्रेस ने ...केजरीवाल का 'पत्ता' खेला है ...? केजरीवाल का काम है – देश की राजनीति को अस्थिर करना ...और मोदी को सत्ता में आने से रोकना ...?"

"कैसे ....? लेकिन क्यों ....?" प्रश्न पैदा हो गए थे .

"इसलिए कि ...अगर मोदी एक बार सत्ता में आ गए तो ....केजरीवाल की दुकान हमेशा के लिए बंद हो जाएगी ....?" कहते हुए उन्होंने हाथ झाडे थे . "ये मुहरा तो मात्र दलाली ही कर रहा है ...? ये कोई मसीहा नहीं है ....? लोग गच्चा ..खा गए ...अन्ना के आने से ....?" उस ने बात को स्पष्ट कर दिया था .

सुबह के चार बज गए थे! अचानक ही भीड़ छटने लगी थी . जो आए थे ...वो जा रहे थे ...पर खाली हाथ न लौट रहे थे ...?

"आज खुले में ...आप के दरस–परस हो गए ....., मोदी जी!" एक बुजुर्ग बता रहे थे . "वक्त का क्या भरोसा ....?" कह कर वो हंस गए थे . "परमात्मा आप को अवश्य समर्थ बनाएंगे ....! आप युग–पुरुष हैं ....!! देश आप को पुकार रहा है ...., सुन तो रहे हैं न ...आप ....?" कह कर वो आदमी भी चलता बना था .

अब मैं फिर अकेला छूट गया था ....??????

78

मेरा वशीकरण मंत्र है–ये अमित!

मुझे भी नींद ने आ कर घेर लिया था! मन था कि डट कर सोऊँ ? कहा–सुना सब भूल कर मैं ...निद्रा की गोद में बैठ विश्राम कर लूं, मेरा मन था! अतः अपने सारे–के–सारे सजीले सपनों को सिरहाने रख, में सो गया था ...!!

आँख खुली थी तो ...दिन का अवसान था ....?

क्या करू....? कहाँ जाऊं ...? कुछ भी तय न था! न मेरा मन ही था कि मैं कहीं जाता ...? दिमाग में एक रिक्तता थी . राजनीति के प्रति घोर वित्रष्णा थी....और अफसोस था कि ...लोग कितनी–कितनी डर्टी –ट्रिक्स खेलते हैं ...प्रपंच रचते हैं ...और अपने ही देश–वासियों को ठगते हैं ...? मन था कि उठू....और ...गुजरात की ओर भाग लूं ....

"आफिस से फोन था, सर ...!" मुझे सूचना मिली थी . "हमने कहा – बता देंगे ....सो रहे हैं ...!"

"ठीक है!" मैंने स्वीकार में सर हिलाया था और ...आफिस जाने के लिए निकल लिया था .

न जाने क्या हुआ कि ...दिल्ली को देखने ...समझने की ...एक नई जिज्ञासा का जन्म ....हुआ था! पहले जैसी बे–खबरी न थी . निगाहें पढ़ रहीं थीं – पंढारा रोड .... शाहजहाँ मार्ग ....औरंगजेब रोड ....अकबर रोड ....लोधी रोड ....और फिर खिलजी ...तैमूर ...और तुर्कमान गेट ...से ले कर ...पूरा–का –पूरा गुलामी का इतिहास मैं बांचता ही चला गया था ...? लगा था – ये दिल्ली नहीं कोई और ही शहर था ? किसी मुगल सम्राट के साम्राज्य में घुस आया था – मैं ....गलती से .....?

अचानक जब मैंने अशोक रोड पढ़ा तो ...जांन में जांन आई ...!

मैं भाग कर आफिस में घुस गया था . मैंने अपने उसी कमरे में जा कर दम लिया ...जहां मैं वर्षों बैठा था ...और मैंने पार्टी का काम किया था! जो सज्जन कुर्सी पर बैठे थे ...वो मुझे आया देख उछल पड़े ...!

"सर, अ अ अ ...आप ...?" उन के स्वर काँप गए थे . "म मम्म मैं बैठता हूँ ....अब आप के कमरे में ...सर .....?"

"अच्छी बात है ...?" मैंने हँसते हुए कहा था . "मैं तो मात्र देखने चला आया था ...?" मैंने सहज स्वभाव में कहा था .

पलट कर देखा तो लोगों का एक हुज्जूम जमा हो चुका था!

"आप का इंतजार था, सर ...?" मुझे उल्हाना मिला था . "सब लोग आप से मिलना चाहते हैं ...? बाहर से भी लोग आए हैं!" कार्य कर्ता बता रहे हैं . "क्यों न प्रेस –कांफ्रेंस हो जाए ....?" उन का प्रश्न था .

"हो–जाए ....!!" मैंने बे–फिकरी के साथ कहा था . अब मैं डर न रहा था ...? अब मैं अपने – माने की अशोक के ...राज्य में आ कर खड़ा हो गया था ...!! "चलिए ....!!" मैं उन के साथ चल पड़ा था .

बस, यों ही मंच पर खड़े–खड़े प्रेस –कांफ्रेंस आरंभ हो गई थी!

"गुजरात में आपने फिर से मोर्चा मार लिया, बधाई .....?" कार्य–कर्ता कह रहे थे .

"धन्यवाद ....!!"मैं ने नम्रता पूर्वक हाथ जोड़ कर उत्तर दिया था . "बिना आप के सहयोग के ये सब संभव न था ...?" मैं फिर बोला था . "पार्टी का वरद–हस्त सर पर होना ....नितांत आवश्यक होता है ...?" मैं कहता रहा था .

"दो सीटें ...कम रह गईं, सर ....?" तीर की तरह तुरंत प्रश्न आया था ...और मेरा सीना भेद कर निकल गया था . लोग आप को क्षमा नहीं करते ...मैं सोचने लगा था . "हम लोग तो १...० की गिनती ले कर बैठे थे ....?" एक हंसी फूटी थी और फिजा पर फैल गई थी .

मैं कुछ न बोला था ....!!

"सुना है, आप दिल्ली आ रहे हैं ....?" प्रश्न था – कांग्रेस वालों का प्रश्न था, मैं ये जानता था .

कांग्रेस पार्टी अब मेरे साए तक कापीछा कर रही थी – यह सर्व–विदित था _!!

"आ ...तो ...गया ....?" मैंने भी एक ठसके के साथ उत्तर दिया था .

सब लोग हंस पड़े थे . खूब हँसे थे ...हम लोग ....??

"सर, पार्टी में जोरों की चर्चा है कि ...आप का विरोध ...." भगत चाय पीते–पीते बताने लगा था . "कह रहे हैं – मोदी तो एक अफवाह है ...? नाम तो कोई ....और ही .....?"

"हाँ, हाँ! नाम तो कोई भी हो सकता है ....?" मैंने हामीं भरी थी ...और अपनी कोई राय व्यक्त न की थी .

"कुछ लोग तो यहाँ तक कह रहे हैं कि ...अगर मोदी का नाम आया भी तो .....पार्टी की नाक जाती रहेगी ....?" फुस–फुस बातें हो रहीं थीं . "ये .... आदमी ....भला ....पी एम् ....? शर्मा जी तो ....दल छोड़ कर भाग जाएंगे ....."

मैं सब कुछ सुन रहा था ...और ...कुछ भी नहीं सुन रहा था ...! मैं भी तो जानता था कि मेरा नाम ...निर्विरोध तो आएगा ही नहीं ....? मैं जानता था कि ...जो मेरे अपने थे – वही मेरे नहीं थे ...? जिन के लिए मैंने तन–मन और धन से काम किया था – जांन तक लड़ाई थी ....वो मेरा विरोध अवश्य ही करेंगे ....?

मैं आफिस छोड़ कर भागा था . मैं अब दिल्ली में खो जाना चाहता था . मैं खोज लेना चाहता था – अपनी राहें ....अपनी चाहें ...और मैं देख लेना चाहता था ...अपनी उस मंजिल को ....जहाँ के लिए मेरा मन ...आने के लिए बन चुका था ....?

"जामा मस्जिद है – ये ...!" मैं सुन रहा था . "इसे बनवाया था ....अररे ..रे ..! नहीं ....रे ....? ये तो हनुमान मंदिर था ...? इसे तुडवा कर मस्जिद बनाई थी! और ये लाल किला भी तो ...प्रथ्विराज चौहान के नाना ने बनवाया था ...? लेकिन मुसलमानों ने सब अपने नाम लिख लिया ....?

मैं अब भाग खड़ा हुआ था! पुराने किले के चारों ओर बने ...तालाब पर आ बैठा था . मेरे विचार उड़ रहे थे! मन बिदक गया था ...? सत्ता के गलियारों में ...अकेला...डोलता मैं ...डर रहा था ....!!

"कैसे ....कैसे ...आ सकते हो ....तुम ...दिल्ली ....?" मैं ...कुछ अपुष्ट आवाजें सुन रहा था . "अरे, भई ...? हम ही तो रहते हैं, यहाँ ...? ये देखो!

ये रहा –मेरा मजार ...? वो रही ....कब्र ...और वो किला मेरा है ...? हम गए कहाँ हैं ...? देश ....दिल्ली ...सब हमारा ही तो है ...? हमने जीता था –इसे जंग में ...? तलवार के जोर से हमने ....

हाँ, हाँ! इस्लाम तलवार के जोर पर ही फला–फूला था ...मैं समझ गया था ....!!

धर्म से ज्यादा इस्लाम एक खौफ था ...जिसे लोगों ने डर की वजह से अपनाया था ...? लेकिन हिन्दू–धर्म एक औषधि जैसा था – मनोमालिन्य हरता ...सुख देता ...सम्रद्ध बनाता ...एक प्रिय साधन जैसा था ....? तभी ये जिन्दा रहा ....और इन शैतानों के सायों के बीच ...बैठा ही रहा ...और अब .....?

"थेंक यूं ...मोदी जी ....!!" अचानक मैंने एक आवाज सुनी थी . "आप का फोटो ले लिया ....?" वह सुंदर लड़की बता रही थी . "मैं –सुनीता ...? एक्सप्रेस से ....!" उस ने अपना परिचय भी दिया था . "एक प्रश्न ....?" वह फिर मेरे पास चली आई थी .

लेकिन न जाने क्यों मैं उठा था ...और भाग लिया था .....!!

मैंने मुड कर उस लड़की को नहीं देखा था! मैंने मुड कर दिल्ली को भी नहीं निरखा था!! कुछ नहीं ...पढ़ा था ...कुछ नहीं ...सुना था ....! मैं भागने की जल्दी में था . दिल्ली से कहीं दूर जाने की सोच रहा था ....?

तभी मुझे याद आया था कि मैं माँ से मिलने तो गया ही न था ....?

"इतनी ...बड़ी ...भूल .....?" मैंने अपने आप को ललकार कर पूछा था . "भूला ...क्यों ...मैं ...माँ को ....?" मैं अधीर हो उठा था .

"कहाँ हो ....?" अमित का फोन था . "लोग पागल हो रहे हैं .....?" वह कह रहा था .

"माँ से मिल कर लौटूंगा ...!!" मैंने संक्षेप में ...अपना दो टूक उत्तर दिया था .

"मैं भी ....आ जाऊं ...?" अमित ने चहक कर पूछा था .

कितना प्यारा है– ये अमित ....? लो ...! मैं अपने सारे गम भूल गया हूँ!

"आ–जा–ना ....!!" मैं गहक कर बोला हूँ . आवाज आद्र है . "पा–जी ....!!" मैंने उसे हमेशा की तरह नाम दिया है!!

मेरा वशीकरण मंत्र है – ये अमित!!!!

79

तू तो फकीर है! कोई क्या उतार लेगा, तेरा??

मन विक्षिप्त था . बिदक रहा था . और मैं था – असहज ...!!

एक अपराध बोध था –जो मुझे भीतर –ही–भीतर खाए जा रहा था! हुई विजय–श्री से हाथ मिला मैं ..सीधा दिल्ली चला आया था ? जब कि मुझे याद था कि ...पहले मुझे माँ के चरणों में प्रणाम करने जाना था ...? लेकिन न जाने कैसी खुशी थी ...कैसी हुलस थी ...जो मैं सीधा दिल्ली की ओर चला आया था ...?

जब कि मैं माँ को अपना श्रेष्ठ तीर्थ मानता हूँ ...और हर हर्ष–विषाद के बाद ...उन के चरणों में माथा टेकना अपना सौभाग्य मानता हूँ!

और जो मैंने दिल्ली आ कर देखा–सुना है – उस ने तो मेरे मुंह का जायका ही बिगाड़ दिया है! यों तो यह सब अब मेरे लिए कोई नया नहीं है ...पर अब ...इतने संघर्ष ...और सफलता के बाद ...मुझे दिल्ली से भिन्न प्रकार की उम्मीदे थीं ...? लेकिन यहाँ तो वही ढाक के तीन पत्ते थे ...? 'कौन है ....रे ...ये ...मोदी ....?' हर कोई यहाँ तो प्रश्न पूछने खड़ा मिला था ...?

नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे ....

त्वया हिन्दू भूमे ..

अचानक ही मुझे अपनी भारत माँ की याद हो आई थी ? मुझे अपनी ली वो शपथ भी याद हो आई थी – तेरा वैभव अमर रहे, माँ! हम दिन चार रहें ...न ...रहें ...? और अब मेरी द्रष्टि उठी थी ...और लहू–लुहान हुई दिल्ली को देख रही थी! देख रही थी कि ...यहाँ दुष्ट आत्माएं अभी भी डेरा डाले बैठीं थीं . देश को लूटने के बाद ....नर–संहार करने के बाद .....और धर्म

–परिवर्तन के कोल्हू में जन–मानस को पीसने के बाद ...भी ये म्लेच्छ यहाँ से गए नहीं थे ...? फिर से घात में बैठे थे ...फिर से देश को बांटने–खाने ...और लूटने के जुगाड़ में थे ....?

घाव...मोटे–मोटे घाव – जो इन विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत माँ को दिए थे ..आज भी हरे थे ...रिस रहे थे ...और हमें चेतावनी दे रहे थे कि ..हम फिर से इन की चाल में न आ जाएं ...? वरना ....

विचित्र संयोग था कि मैं ...आज फिर से उसी दिल्ली को देख रहा था . ..जिसे मैंने अपने दो साल के गुप्त वास के बाद ..आ कर देखा था ...? ठीक वही द्रश्य थे – जो मेरी आँखों के सामने आ कर ठहर गए थे ...? तब भी मुझे लगा था कि ...हम तो अभी तक गुलाम थे ....और दादा जी की कथित कहानियां जहाँ की तहां बैठीं थीं ...और राज अंग्रेजों का ही चल रहा था ....?

और आज भी लगा था कि ...हम स्वतंत्र हुए कहाँ थे ....?

खून का घूँट पी कर आज मैं फिर वड़नगर लौट रहा था ...माँ के पास!

वड़नगर कुछ जरूर बदला है ...ये मैं जानता हूँ! कारन – मैंने ही गुजरात में ...इन चंद सालों में बहुत सारे परिवर्तन ला दिए हैं! लेकिन तब तो मुझे वड़नगर भी सोता ही मिला था ...? मैं लौटा था ...तो वड़नगर को पता ही न चला था ...कि मैं लौट भी आया था ? चंद लोगों ने मुझे चीन्हां ..अवश्य था ...पर कहा कुछ न था ...!

एक डूबता–सा मन ले कर मैं घर में घुसा था!

संयोग ही था कि ...उस वक्त घर पर केवल माँ ही थीं! मुझे आया देख माँ के होंठ फडफडाए थे ...ऑखें भर आईं थीं ....बांहें मुझे आगोश में लेने के लिए ...स्वत ही खुल गईं थीं ...और उन्होंने मुझे ...लपक कर अपने भीतर समो लिया था ...! चुचाप रोने लगीं थीं ....चुपचाप भगवान को धन्यता देने लगीं थीं ....और चुपचाप ही उन्होंने ...मुझे पास बिठा लिया था!

ऑखें भर–भर कर अब वो ...अपने नौ–निहाल को ...निहार रहीं थीं .. .निरख रहीं थीं ...और मैंने देखा था कि ..एक बे–जोड़ भाव उन के चहरे पर आ कर ठहर गया था! एक प्रसन्नता थी ...जो उन के चहरे को आलोकित कर रही थी ...और था एक मुग्ध–भाव जो ...उन के पास आ बैठा था!

कारण –मैं जानता था!

मैं वह नरेन्द्र न था जो वड़नगर छोड़ कर गया था ...? मैं अब वो नरेन्द्र था ...जो ..उन के सामने एक पुरुष बन कर खड़ा था! मेरा चेहरा–मुहरा एक दम गुलाबी था! आँखों में एक सपुंज भविष्य था . कद–काठ भी ऊँचा हो गया था ...और चाल–चल्गत भी बदल गई थी . और आज मैं आशाओं के अथाह सागर का मालिक था! माँ ने सब एक लम्हे में देख लिया था ...समझ लिया था ...और मुझे सीने से लगा लिया था ....!!

मुझे याद है कि में ...माँ के आगोश में मुंह छुपाए ...बेहद लम्बे पलों तक ...उन की ममता का ...उन के अजश्र–प्रेम का ....और उन की दया–माया का ...आनंद लेता रहा था! मुझे लगता रहा था कि मैं ...अपने तीर्थ पर निछावर था ...और उन का आशीर्वाद प्राप्त कर रहा था ...?

"कब लौटे ....?" बाबू जी ने आ कर मेरा ध्यान बांटा था .

"बस! आया ही हूँ ....!!" मैंने सहज–स्वभाव में उत्तर दिया था .

अब बाबू जी भी मुझे ऊपर से नीचे तक नांप रहे थे! उन्हें भी मेरा बदला अंग –शोष्ठ्व बे–जोड़ लगा था! उन्हें भी लगा था कि मैं ...कुछ कमा कर लाया हूँ ...? कोई नौकरी या कोई उद्योग मेरे पास था – और में एक सफल आदमी बन चुका था ...?

फिर पूरा परिवार इकट्ठा हुआ था ..लेकिन जसोदा न थी ....?

"उस का भाई आ कर ले गया है ...!" माँ ने मुझे सूचना दी थी और मैंने उसे सुना–अनसुना कर दिया था . न जाने क्यों मैं जसोदा से मिलना भी न चाहता था ...?

"कहाँ ...रहे ....?" भाई ने यों ही प्रश्न पूछ लिया था .

"घूमता–फिरता ...रहा ....!" मैंने भी सहज उत्तर दिया था .

"कुछ किया भी ....?" अब की बार बाबू जी ने धीरज खो दिया था– तो पूछा था .

मैं जानता था कि बाबू जी क्या–कुछ सुनना चाहते थे ...? लेकिन जो वो सुनना चाहते थे ...वो मेरे पास था कहाँ ...? और जो मेरे पास था –...और जो मैं कमा कर लाया था ... वो लाख मेरे बताने पर भी ...उन्हें दिखाई न देना था ...? अतह मैं चाहता था ..कि बाबू जी के प्रश्न का उत्तर ही न दूं ?

"दो साल के बाद लौटे हो ....?" बाबू जी ने मुझे याद दिलाया था . फिर उन्होंने कुछ सोचा था . "सेहत तो ठीक बना ली है!" वो तनिक हँसे थे . "लेकिन ....."

अचानक ही मुझे अब्बा याद हो आए थे ....?

और वो परिवार भी मेरी आँखों के सामने था – जो मुझे विदा तो कर रहा था ...पर मेरे जाने पर खुश न था ...? और यहाँ ...मेरा एक परिवार था ...जो मेरे लौटने पर खुश न था ...? और अब जानना चाहता था कि ....मैं कुछ कमाई भी कर के लाया हूँ ....या ...कि ...

"बस ...यों ही वक्त निकल गया ....?" मैंने एक रूखा–सूखा उत्तर फेंका था ...और घर से बाहर निकल गया था .

तब...हाँ, हाँ तब मैं वड़नगर से मिला था ....!!

वही सब था! वही बेकारी थी ...वही पिछड़ापन था ...और वही अलसाई–सी सुबह–शामें थीं ...और इन का कोई वजूद ही न था ...? समय और वड़ नगर तब अलग–अलग रास्तों पर चल रहे थे ....? किसी को किसी से कोई सरोकार ही न था ? यहाँ तक कि मेरे आने से ...वड़ नगर में कोई हल–चल ...न चली थी ...?

"अरे! ये तो नरेन्द्र ...लगता है ....?" मुझे जाता देख कोई कह रहा था . "उन का ....अरे ...उन ...कोल्हू वालों का ...वो वाला बेटा ....?'

"पर ...ये तो ....भाग गया था ....?"

"अब लौट ....आया ....!!"

और एक हंसी का फब्वारा फूटा था ...जो मेरे सारे उत्साह को बहा ले गया था!

"सुना है ...इस की तो ...बीबी भी ...भाग गई ...?" फिर एक प्रश्न ...और फिर ...हंसी–ठहाके ? "लफंगा है ....!!" लोगों ने एक मत हो कर कहा था .

"अरे! तुम तो नरेन्द्र हो .....अगर मैं गलत नहीं तो .....?" एक व्यक्ति ने मुझे रोक कर पूछा था . "मैं ...प्रभुपाद हूँ! "उस व्यक्ति ने अपना परिचय दिया था . "तुम तो ...हमारे बाल–स्वयं सेवक हो, भई ....?" प्रभुपाद जी ने मुझे याद दिलाया था . "कहाँ थे – इतने दिनों से ....?" उन का भी यही प्रश्न था .

"बाहर गया था ...!" मैंने एक अदद उत्तर उन्हें पकड़ा दिया था .

"अहमदाबाद चले जाओ ....?" उन्होंने सीधा ही प्रश्न दागा था . "अगले माह जलसा है! आप को ...."

"लेकिन मुझे तो ....."

"एडमिशन मिल जाएगा ...! मैं लिख दूंगा, नागेश जी को! अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के चुनाव भी आ रहे हैं ...? ठीक वक्त पर पहुँच जाओगे ...!" उन का सुझाव था .

लगा था – मेरा भाग्य मुझे ...उंगली पकड़ कर ..अहमदाबाद ...ले जा रहा था ....?

"लेकिन ...प्रभुपाद जी ....मैं ...."

"अरे! चिंता क्यों करते हो ....? मैं सब बंदोबस्त कर दूंगा ....!" उन्होंने विहंस कर कहा था . "भई! होनहार हो ....नरेन्द्र!! मौका मत चूको ....? नागेश जी के संपर्क में आजाओगे ...तो ...बहुत कुछ सीखने को मिलेगा ...?" उन्होंने बात समाप्त कर दी थी .

और अब मैं अहमदाबाद जा रहा था .....!!

"आशीर्वाद ...दो ...!" मैंने माँ के चरण स्पर्श कर कहा था . "अहमदाबाद जा रहा हूँ ...!!" मैंने उन्हें सूचना दी थी . बाबू जी से तो तीन दिन से कोई बात ही न हुई थी .

"आता–जाता ...तो रहेगा ....?" माँ पूछ रही थीं .

"हाँ, हाँ ...! है ही कित्ती दूर ...?" मैंने प्रसन्न हो कर उत्तर दिया था .

"और ....और ...पैसे–धेले ...दूं ....?" उन का मासूम प्रश्न था . "बहार बास ... पैसा तो चाहिए ....?" उन का कहना था .

अनमोल प्रश्न था – मेरी माँ का ....मेरी जननी का ...जिसे अपने नौ–निहाल के बारे सब कुछ पता था ...? मैं गदगद हो गया था! मैंने माँ को आगोश में ले कर ...बहुत देर तक प्यार किया था!

"हैं ...पैसे मेरे पास ....!" मैंने उन्हें आस्वस्थ किय था . "चिंता मत करना ....?" मैंने यों ही कह दिया था .

और बिना किसी सूचना के ....शोर के .....और बिना किसी ...आल्हाद–उल्लास के ...मैं चुपचाप ....अहमदाबाद रवाना हो गया था ....!!

लेकिन आज पूरे वड़ नगर में कुहराम मचा है ....!!

"सी एम् का दौरा है ...?" सूचना सन्ना रही थी! "रे ....! रोक दो सारा ट्रैफिक ....!" आदेश थे ."कहो मौलाना को ....! सलाम करेगा ...आ कर ....?" लगातार आदेश आते ही चले आ रहे थे .

वड़ नगर की जनता उमड पड़ी थी . लोग ठठ –के –ठट...लगा कर हमारे घर–द्वार के आस–पास जमा होते ही जा रहे थे! हमारा तो कुछ ज्यादा अच्छा हाल न था ...पर हाँ! वड़ नगर तो अब अच्छे उठान पर था! लोगों के पास संपत्तियां थीं ...जमा–जोड़ भी था ...और ...पैसा था ...और ...

"माँ मैं आ गया ....!" मैंने अपने आप को अपने तीर्थ पर अर्पित करते हुए कहा था . "मुझ से गलती बन गई कि ....सीधा दिल्ली चला गया था . ...?" मैंने माफी मांगी थी .

"उदास क्यों है ....?" माँ का प्रश्न था . मैं हैरान था कि लाख कोशिश करने के बाद भी ..मैं अपनी निराशा को उन से छुपा न पाया था ...?

"बस! यूं ही .....?" मैंने बे–मन बताया था . "राजनीति के ....दाव– पेंच .....?" मैं गडबडाने लगा था .

"तेरा कोई क्या बिगड़ लेगा ...?" माँ ने सीधा प्रश्न दागा था . "तू तो साधू है ...फकीर है ...संत है ....? सेवा ही तो करता है ...? क्या उतार लेगा कोई तेरा ....?" उन के स्वर में सच्चाई थी!

और तभी अमित ने आ कर माँ के चरण छुए थे ....!!

कंस नगरी है –दिल्ली, कौन नहीं जानता ?

खूब –खूब आशीर्वाद लिया था – पाजी ने ....? मैं भी प्रसन्न था . अब आ कर मेरा मन खुला था ...? अब कहीं मेरा साहस लौटा था . अमित मेरी ओर मुडा था . उस ने भी मुझे ताड लिया था – कि ...मैं निराश था ...डरा हुआ था ....?

"क्या हुआ ....?" उस का सीधा प्रश्न था .

"कहते हैं – दिल्ली में सीधे लोग नहीं रहते ....?" मैंने सीधे ही तीर दागा था .

"तो हम कौन से कम बदमाश हैं ....?" अमित ने उत्तर दिया था .

अब हम दोनों हो हो हो ...कर हंस पड़े थे! मैंने अमित को बांहों में भर कर प्यार किया था!!

अचानक ....और न जाने कैसे ..हम दोनों की निगाहों के सामने ११ अप्रेल सन २००२ में गोवा में हुई उस ..निर्णायक बैठक का द्रश्य आ खड़ा हुआ था – एक उदाहरण की तरह ....एक मील के पत्थर की तरह ..जिस का निर्माण भी हमीं ने किया था ...?

बड़ा ही खुला–खिला–सा दिन था ...? गोवा का मौसम तो वैसे भी बड़ा ही सुंदर और सुहावन होता है! द्रष्टि बार–बार बहक कर सागर तट पर घूम आती थी ...और ...एक अमर आशा के साथ लौटती थी . हवा का रुख–मुख भी सही लग रहा था ...?

बैठक में आज पार्टी के सभी दिग्गज विराजमान थे!

अटल जी के आस–पास उन के ..समर्थक ...शुभचिंतक ...और परामर्शदाता ...कुंडली मारे बैठे थे! वे देश के प्रधान मंत्री थे! उन की निगाह के साथ–साथ ही हवा हिलती थी! उन का वर्चस्वा था ...प्रभाव था ...रुतबा था ...और ..थी ख्याति – जो विश्व में फैलती ही जा रही थी ....? पास बैठे लोगों ने उन्हें बता दिया था कि ...वो महान थे ...महान लेखक थे ...महान विद्वान् ...और ..विचारक भी थे ...! वो भारत रत्न थे ...और आज के लिए – अजेय ही थे .....!!

उन के चहरे पर बैठे भावों से परलक्षित था कि....आज वो एक और इतिहास रचेंगे ....???.

अडवानी जी का चेहरा तनाव पूर्ण था . सौरी और जसवंत सिंह साथ–साथ बैठे थे . वैन्कइया नाईडू सामने ही थे . ब्रिजेश मिश्र किसी उलझन में अटके लेगे थे . प्रेस एक अनमोल घोषणा की प्रतीक्षा में था ...!!

सब को ...और सब आगंतुकों को पता था ...कि आज ..गुजरात के सी एम् – मोदी को ...अपदस्थ किया जाएगा ...उन से स्तीफा लिया जाएगा . ..और नाईडू ...को पार्टी का अध्यक्ष बनाया जाएगा ...!!

दिल्ली से उड़ान भरने से पहले अटल जी ने तय कर लिया था कि ...अब मोदी को उन्हें हटाना ही होगा ...? यह बात ७ अप्रेल २००२ सिंगापूर में अटल जी के साथ हुई ...बैठक में – देश–विदेश के पत्रकारों ...और बुद्धिजीविओं ने मिल कर तय की थी! उन का कहना था कि ...मोदी के रहते उन की लुटिया डूब जाएगी ...छवि बिगड़ जाएगी ....और वो अपना चुनाव भी न जीत पाएंगे ...?पूरे

विश्व के मुसलमान भारत में हुए इस गोधरा की शर्मनाक घटना से ...महा अप्रसन्न हैं! इस से अटल जी की सेक्युलर छवि को आघात पहुंचा है ? वक्त रहते ही अगर इस मोदी का इलाज न हुआ तो .....

"शाह आलम केम्प ...गुजरात ...अहमदाबाद में ...रहते ६००० मुसलमान ..शरणार्थी ...अपनी जब कहानी सुनाते हैं ...तो ...मानवता की भी आँखों में आंसू भर आते हैं ...?" यह अटल जी को बताया गया था . "आप एक कवि –हृदय ... महा–मानव ...देशः के प्रधान मंत्री ...के लिए ..यह शोभा नहीं देता कि ..."

"राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने ...अपने गुजरात दौरे के दौरान ...जानते हो क्या कहा था ....?" पत्रकार अटल जी से पूछ रहे थे . "आप के रहते ... अटल जी के राज में ...उन्हें ये उम्मीद न थी कि ...."

"लेकिन, भई ? वो जो ....बे–गुनाह कार–सेवक ...अयोध्या से लौटते राम–भक्त ...हिन्दूओ को ...यों रेल के डिब्बों में ...भून–भून कर मार डालना ...? मुसलामानों का गुनाह तो है ...?" अटल जी का ये छोटा–सा विरोध सामने तो आया था .

"अरे! ये सब तो इसी मोदी की करामात है ...?"तुरंत ही तुरप लगाई गई थी! "आप भोले हैं.अटल जी ....? आप इस आदमी को समझ ही नहीं पाए ...? वरना तो आप इसे सी एम् बनाने की गलती ही न करते ....?"

"हटाओ, इसे ....?" समवेत स्वर गूंजे थे . "डुबो देगा ...आप को ...भी ....?" साथ में एक चेतावनी भी दी थी – अटल जी को .

और फिर ११ अप्रेल को ही ...अटल जी ने यह शुभ –लग्न निकाला था ......!!

"अरे...! आप ने टिकिट करा लिया ...?" ब्रिजेश मिश्र ने अरुण शौरी से पूछा था .

"हाँ, हाँ! क्यों ...क्या बात है ....?"

"केंसिल कराओ! आप अटल जी के साथ ...उन के जहाज में जाएंगे ...! और हाँ! वो जो ...काम होना है ....उस के लिए अटल जी की ...और अडवानी जी की बात ...आप कराएंगे! वरना तो ये दोनों ...किसी हाल में एक दूसरे से न बोलेंगें ....?" वो हँसे थे .

सच ही था . हवाई जहाज में कुल चार लोग थे! अटल जी अगली सीट पर आँखों के सामने अखबार ताने बैठे थे ...तो ...अडवानी जी भी ...अखबार

पढ़ने में ही मस्त थे! वहां उपस्थित जसवंत सिंह और अरुण शौरी ने स्थिति भांप ली थी!

"अखबार तो बाद में पढ़ते रहेंगे ....पर वो दो मुद्दे तो तय हो जाएं ...?" शौरी ने अटल जी का ध्यान तोडा था .

"अडवानी जी! थोडा समय दीजिए ...और ...और निर्णय लीजिए कि ..." जसवंत सिंह अब अडवानी जी के पास आ बैठे थे . "नईडू को पार्टी का अध्यक्ष ...बनाना है ...और ...."

"मोदी को आउट करना है ?' अटल जी ने ही प्रश्न सामने रख दिया था .

अडवानी जी बड़े ही लम्बे पलों तक ...अटल जी को घूरते रहे थे! समझ ते रहे थे कि ...आखिर अटल जी कह क्या रहे थे ...? एक चुप्पी छंट गई थी! एक तनाव बैठा रहा था! फिर कुछ सोच कर अडवानी जी बोले थे!

"मोदी के जाने पर कुहराम मच जाएगा ....?" अडवानी जी का स्वर काँप उठा था . "ये ....आप ....?" आगे वह कुछ न बोल पाए थे .

"यह तय है, अडवानी जी!" जावंत सिंह ने बात को अंतिम रूप दे दिया था .

और ...और अब ...सब के सामने ....भरी सभा में ...इसी बात को प्रस्ताव की शक्ल दे, घोषणा होनी थी!!

"बैंकैया नाईडू ...जी को पार्टी का ...अध्यक्ष ...मनोनीत किया जाता है!" ब्रिजेश मिश्र का स्वर गूंजा था .

तालियाँ बजीं थीं! हर्षोल्लास हुआ था! सब ने आँखें उठा कर अब वेंकैया नाईडू को देखा था! वो प्रसन्न थे ....प्रफुल्लित थे ...!!

तभी ...हाँ, हाँ ...तभी ...उसी वक्त के बाद मैं ...उठा था ...और डाईस पर आ पहुंचा था! हर आँख ने मुझे एक शक की तरह देखा था ? लेकिन मैंने ज्यादा वक्त जाया न करते हुए ...कहा था – 'त्याग–पत्र ' ....!!

"मेरा त्याग–पत्र स्वीकार करें ....?" मैंने पूर्ण रोष के साथ कहा था . "चूंकि ...भारतीय जनता पार्टी ....की छवि मेरी वजह से खराब हो रही है . ...चूंकि ...मैं हत्यारा हूँ ....चूंकि मैं साम्प्रदायिक हूँ ...और चूंकि ...मैं पार्टी को डुबो दूंगा ...अतह ...मेरा त्याग–पत्र!!" मैंने अपने हाथ में पकडे त्याग–पत्र को हवा में लहरा दिया था!

चुप्पी थी. शान्ति थी . कोई बोल नहीं रहा था .....!!

"नो...! नो ...!!" आवाजें उठीं थीं . "त्याग–पत्र वापस करें, मोदी जी ....!!" फिर से शोर उठा था . "मोदी....मोदी ....मोदी ...मोदी ....!!" स्वर गूंजे थे . एक लहर उठी थी जिस ने जमा सारे दिग्गजों के दिल दहला दिए थे! मैंने उन पलों में अटल जी के परास्त हुए चहरे को देखा था!

"चलो! इस निर्णय को बाद के लिए रख लेते हैं ...?" ब्रिजेश मिश्र की चालाक आवाज थी . उन का चहरा भी बिगड़ा हुआ था . "दिल्ली चल कर ....?" उन का सुझाव आया था .

"नहीं ....!! नो–नो–नो ....!!" फिर से वही आवाजें ...लौटीं थीं . फिर से वही शोर उठा था . फिर से मांग खड़ी हुई थी . "यहीं ....!! अभी निर्णय होगा .....? इसी वक्त बता दिया जाएगा ....कि ..'मोदी इस नांट ...आउट ...?" मांग सामने आ कर खड़ी हो गई थी!!

आस–पास मंडराते प्रेस के लोग ...कुछ भी न समझ पा रहे थे!

"वापस आईये ....मोदी जी ....!!" मुझे आदेश मिला था . "आप गुजरात के सी एम् हैं ....और रहेंगे ....!!"

और मैं डाईस छोड़ कर लौटा था . मैं अमित की बगल में आ कर बैठ गया था! पूरी जमात ने हम दोनों को आँखें भर–भर कर देखा था ...घूरा था ....एक साथ ...? लेकिन उन सब की निगाहें ....उन आती आवाजों का पीछा न कर पाईं थीं ....?

"द ...कू –दि –तां ...ऑफ, , , मोदी ...?" प्रेस ने कहा था . कहानियां थीं कि ...मोदी ने ...चल चल कर गोवा में हुई बैठक को निरस्त्र कर दिया ....और ..पूरी जमात को डरा दिया ...जैसे की उन्होंने गुजरात में किया .... जैसे कि उन्हीने ......"

और फिर अनगिनत कहानियां भी लिखी गईं थीं ....!!

"नई बात क्या है ....?" अमित ने सहज स्वभाव में पूछा था . "कंस नगरी है–दिल्ली, ये कौन नहीं जानता ...?" उस ने हंस कर कहा था . "चलते हैं ....?" उस का सुझाव –एक आदेश जैसा था . "गुजरात में रह कर कुछ भी न हो पाएगा ...?" अमित ने स्पष्ट कहा था . "देश को आप की आवश्यकता है ....वरना मैं कभी न कहता, भाई जी ....?" वह हंस रहा था .

और उस दिन ...उसी दिन ...वहां ...वाद नगर में ..कृष्ण ...और बलराम का ...कंस नगरी – दिल्ली में ..आना – प्रवेश करना .... निश्चित हो गया था ...!!

आर एस एस ? उजाला साथ ले कर चलनेवाले मणिधर सांप हैं!!

"आ गया ऊँट ...पहाड़ के नीचे ....?" चिदाम्बरम बोल रहे थे . "हार गया ....न ...?" उन्होंने बैठी जमात को पूछ लिया था . "कहता था –१...० ....!! हा हा हा ....!!" वो हँसे थे . "हम जीता है ....! हमारा दो सीट जास्ती आया है ...!! ट्रेंड बदली हुआ है ...और अब लोक सभा चुनावों में कांग्रेस ...."

उन्होंने जमा लोगों की प्रतिक्रिया पढ़ी थी . सब के चहरे बुझे –बुझे लगे थे . किसी ने भी तालियाँ न बजाईं थीं ...? सब के सामने जैसे मोदी का भूत आ खडा हुआ था ....और सब –के–सब बे–दम थे ....!!

"केजरीवाल ने भी लीद करदी ?" शीला जी कह रहीं थीं . "कितने जतन से उभारा था, इसे ...?" उन का उल्हाना था . "मैग्सेसे अवार्ड दिलवाया ...फंड दिलवाए ....और एक 'ईमानदार ' आदमी की इमेज तैयार की ....! लेकिन ...मात्र २०० करोड़ के चंदे पर ही मर गया ...? सारा गुड –गोबर कर दिया, मूर्ख ने ...?" उन्होंने अब आस–पास बैठे दिग्गजों को घूरा था .

कोई कुछ न बोला था . लगा था – केजरीवाल कल की गई–बीती कोई बात भर था ...? विदेश द्वारा विरचित ये 'देव–पुरुष' न जाने कैसे एक मौम के पुतले की तरह पिघल गया था ...? न जाने कैसे इसे जनता जांन गई थी ...? वरना एक बार तो ...इस के नाम की आंधी उठी थी ...? एक बार तो ये – तूफान आ गया लगा था – लोगों को ...? लगा था – ये देश को ले कर सही दिशा में चल पड़ेगा ....और ...दोनों राष्ट्रीय पार्टियों के बीचों–बीच से पार कर जाएगा ......

और जनता भी इस के पीछे भाग ही ली थी ....पर ....

"ये अमेरिका की पहली हार तो नहीं है ...?" बुद्धिजीवी हिसाब लगा रहे थे . "लेकिन इसे आरंभ भी नहीं कहा जा सकता ...?" उन का अनुमान था कि अमेरिका हरगिज न हारेगा ?

मनमोहन तो अपना हाथ ठीक खेल रहे थे ....!!

जैसे देश की नीलामी हो रही हो ...ऐसा ही कुछ माहौल पैदा कर दिया था ...? छूट थी – सब को खाने–कमाने की पूरी–पूरी छूट थी! 'जो ...जो चाहे – सो करे ...' प्रजा तंत्र का मूल रूप प्रयोग में था! और फिर कानून तो था ही ...? सब को सजा मिलेगी – यह घोषणा भी हो चुकी थी!

मनमोहन जी को लोग अब भी निहायत ही शरीफ और ईमानदार आदमी मानते थे .....? और यही सब से बड़ी उपलब्धि थी – मनमोहन जी और उन की सरकार की ....?

"महान हैं, हमारे मनमोहन जी!" वोहरा कह रहे थे . "देश–विदेश में नाम है – इन का ....? साफ छवि है – इन की! इतना बड़ा ईमानदार आदमी .... और कद्दावर नेता ...पूरे विश्व भर में नहीं है ...?" वो बताते ही जा रहे थे .

"लेकिन इस बार मनमोहन जी का ...कोई चांस नहीं ....?" विरोध में बोला था, कोई . "अब तो राहुल जी का वक्त आन पहुंचा है ...? अब इन का 'राहुल–ब्रिगेड ' ...'युवा–कांग्रेस'....और 'युवा–शक्ति' ...अपना चमत्कार दिखाएंगे ...?" वह बताता जा रहा था ...और तालियाँ भी बज रहीं थीं .

मात्र राहुल गाँधी के नाम पर ही लोग अब ...चहकने ...लगे थे ....!!

हाई कमान की आँखें भी खुलीं थीं तो ...खुली ही रह गईं थीं ...! विश्व भर में ...राहुल के दीवाने थे – लोग ...यह एक हैरानी की ही बात थी ....?

"हम ...बूढों को ...अब तीर्थ पर निकल जाना चाहिए ....?" दिग्विजय सिंह ने सुझाव रखा था . "वक्त अब इन का है ...? हमने खा–कमा लिया ...? हा हा हा ...." वो बड़े जोरों से हंस पड़े थे .

लेकिन उम्मीद के बरखिलाफ ..उन के सुझाव पर तालियाँ न बजीं थीं ....?

"मोदी ....आता है ...तो इधर में ...तो राहुल जी के सिवा और कोई नहीं ...आ सकेगा ...?" धूमल जी कह रहे थे . "न ...और किसी के वश का ही नहीं है– मोदी ....?" उन्होंने अपनी ही बात की पुष्टि की थी . "मई ने गुजरात चुनाव में राहुल के तेवर देख कर ...ही हिसाब लगाया था कि ...यही टक्कर लेगा – मोदी से ...? भई ...क्या गजब की ...बोलती है ...इस आदमी कू ...?" धूमल जी ने अपने आस–पास को निहारा था .

फिर भी तालियाँ तो न बजीं थीं ....!!

"भई, सब से बड़ी तो एक ही बात है ...?" अब दिगम्बर जी बोल रहे थे . "कि ...जब राहुल जी का नाम आता है ....तो नाम आता है – मोतीलाल नेहरू का ...फिर पंडित नेहरू ...फिर दादी इंदिरा गाँधी ...पिता राजीव गांधी ...और ...." अब आ कर उन्होंने लोगों को निगाहों में भर कर तोला था .

तालियाँ बजीं थीं . नेहरू खान–दान के लिए ...उन की उपलब्धियों के लिए ...और उन के राजनीतिक वैभव के लिए ...पुरजोर तालियाँ बजीं थीं!!

"और कांग्रेस पार्टी ....?" समर्थन में सुलेमान जी बोल पड़े थे . "जिस ने देश को आजादी दी ....देश को उद्योग दिए ....और देश को ....और देश को ...."

तालियाँ बजीं थीं ....और बजती ही रहीं थीं ....!

"और इन के मुकाबले में ...आएगा ...मोदी ...?" गुल्लू जी उठ खड़े हुए थे . उन की खरखरी आवाज ने एक अलग ही माहौल बना दिया था . "क्या

है – ये मोदी ....?" उन्होंने प्रश्न पूछा था . "है – क्या मोदी .....?" वो गरजे थे . लोग इन की बातें बड़े ही ध्यान से सुन रहे थे . "मैं बताता हूँ कि ...मोदी क्या है ...!" उन्होंने अपने कुरते की बाँहें समैटी थीं . "मोदी ...महा–मक्कार है!" उन का पहला ही तीर था . वो रुके थे . तालियाँ बजीं थीं . "मोदी – मतलब कि ....चालबाज!" लोग हँसे थे . "मोदी – मतलब कि ...एक यतीम!" उन का स्वर उभरा था . "और ...हमारे ...राहुल जी ....?" उन्होंने राहुल का नाम बड़े ही दुलार के साथ लिया था . "प्रिंस ....!!" उन का कहना था ."जैसे कि ....पंडित नेहरू जी थे ....जिन के कपडे भी विलायत से धुल कर आते थे ...? वो लंदन में रह कर पढ़े थे ....और ...."

बहुत देर तक तालियाँ बजतीं रहीं थीं! सब ने सराहा था – गुल्लू जी को!

"मोदी मैदान में कूदेगा ...तो जीत भी सकता है ....?" वरिष्ट पत्रकार पीयूश जी बोल रहे थे .

हर आँख ने इस आदमी को एक दुश्मन की तरह देखा था! हर आदमी जैसे पूछ रहा था – आप से मतलब ....? रंग में भंग डालने का ...इन का मतलब क्या था ...किसी की समझ में न आ रहा था ...?

"खुला आकाश है – राजनीति का अखाड़ा! अपने–अपने दाव–पेंच ... सभी ने लगाने हैं!" पीयूष जी फिर से बोले थे . "लेकिन हम कहें कि ...वो ही दाव खेलें ...जिस में – जीत ....जीत ...और जीत ही हो ....?' उन का

सुझाव आया था . "हम हारे नहीं हैं ...? हम मोदी की दुम दबा कर चल रहे हैं!" उन का कहना था . लेकिन लोग इस पहेली बने आदमी को समझ न पा रहे थे ? "चौदह की चाल ....!!" पीयूस जी फिर बोले थे . "ऐसी चाल . ..जहाँ ...चित भी मेरी ...और पट भी ...मेरी ...अंटा मेरे बाबा का ...?" कह कर वो जोरों से हँसे थे .

"कह क्या रहे हो, भाई ...?" पत्रकारों के खेमें से ही प्रश्न आया था .

"ये भाई कि ....अगर मोदी अखाड़े में ही न उतरें ....तो ....?" पीयूष जी ने एक घोषणा जैसी की थी . "नहीं आएगा ...इन का नाम पी एम् के लिए ...." उन्होंने ताल ठोक कर कहा था . "हमने ...वो पत्ता ...फेंका है ...जो आर–पार करेगा ....? लो! पढ़ लेना हमारा ये लेख ...और पढ़ लेना ...अडवानी जी का दिया –साक्षात्कार ....?" वह बता रहे थे . "अरे...! ये ...लौह–पुरुष हैं! भारतीय जनता पार्टी के जनक हैं ...रीढ़ की हड्डी हैं ..!! इन्हीं के दम पर पार्टी यहाँ तक पहुंची है ...? इन की नीतियों पर चल कर पार्टी ने नाम कमाया है ...? इन की यात्रा ...बाबरी मस्जिद से ले कर ...दो से ...चौरासी सीट तक ...पार्टी को खीच कर लाई है ..."

"पागल हो गए हो ....क्या ....?" किसी ने रोष में पूछा था .

"नहीं! पागल मैं नहीं ...अडवानी जी हो गए हैं ....मोदी का नाम सुन कर ....? अब वो मोदी का नाम ही न आने देंगे ....कभी भी न आने देंगे .... किसी कीमत पर भी ....."

"क्या वो स्वयं चुनाव में उतरेंगे ...? क्या उन के लोग ....?"

"क्यों नहीं ...?"

"जनता ने उन्हें पिछले चुनाव में ...वोट कहाँ दिया था ...?"

"इसलिए कि ...मोदी ने 'गोधरा' काण्ड कर दिया था ...? और अटल जी भी तो इसी 'गोधरा' की वजह से हारे ...? फिर भी मोदी का नाम आगे आया तो ....बी जे पी ...समाप्त ...!! हा हा हा ...." हँसते ही रहे थे – पीयूष जी .

एक सन्नाटा छा गया था! पीयूष जी कह रहे थे – पर किसी को कुछ समझ न आ रहा था ...? अडवानी जी का नाम फिर से पार्टी पी एम् के लिए भेजेगी – कुछ जम न रहा था ...?

"वो पार्टी के भीष्म हैं!" पीयूष जी फिर से बोले थे . "उन का कहा टलेगा नहीं ....?" उन की घोषणा थी .

कहीं निराशा की अंधियारी में एक आकाश किरण का आगमन हुआ लगा था ...? अगर अडवानी जी अड़ गए ...तब मोदी को सीट मिलना ... मुनासिब न था ...? अटल जी भी मोदी से ज्यादा खुश न थे ...? वह भी मानते थे कि ...उन की हार का कारन भी 'गोधरा' ही था ...? उन का दिया नारा 'इण्डिया शाईनिंग' तो ...तो देश पर छा ही गया था ...? उन का नाम और काम तो सराहनीय ही था ...? उन की छवि तो एक महान पुरुष ...और एक युग–पुरुष की थी ...? और उन के हारने का कारण ....

"लोग तो आज भी मानते हैं कि ...अगर अटल जी २००४ का चुनाव जीत जाते ...तो पाकिस्तान के साथ ...हिन्दुस्तान की सुलह ...हो जाती ...? एक नए युग का आरंभ हो जाता ....? बट ....फॉर ...'मोदी' .....बट ....फॉर . ..'गोधरा' ....?????

"और अगर अडवानी जी आए ....तो अटल जी भी विरोध न करेंगे ...?" पीयूष जी बता रहे थे . "दोनों ने मिल कर पार्टी को बनाया है ...बसाया है ...और दोनों ने मिल कर ....."

"फिर भी अगर मोदी का नाम आया तो .....?"

"पार्टी टूट जाएगी ....? सारे –के –सारे ...अडवानी जी के समर्थक ... पार्टी छोड़ देंगे ...! और तो और ...मोदी का नाम आते ही ...सारी बी जे पी की समर्थक पार्टियाँ ...छोड़ कर भाग जाएंगी ...! नितीश जी ने तो पहले ही ऐलान कर दिया है ....शरद यादव बोल पड़े हैं ....और अब साक्षी भी भाग खड़े होंगे .....?" हंस रहे थे, पीयूष जी .

"और ...अडवानी जी आए ....तो ...?" एक बहस आरंभ हो गई थी .

"बी जे पी हार जाएगी ....!! आर एस एस काम न करेगी ....? लोग अडवानी जी को चाहते नहीं ....! टांय –टांय ....फिस्स .....? पीयूष जी ने ठहाका लगाया था!

अब हर आँख के सामने हारती ....भागती .....और परास्त ...बी जे पी . ..की छवि आ कर ...ठहर गई थी! एक उल्लास उमड़ पड़ा था . पल भर पहले पागल लगने वाले पीयूष जी अब ....सब की आँख के तारे थे ...? जो

पूरा जहांन मिल कर न कर पाया था ...वो पीयूष जी ने कर दिखाया था – अकेले हाथों ....????

"मित्रो! पीयूष जी फिर से बोले थे . "मैं कच्ची गोलियां नहीं खेलता ....!" वह बता रहे थे . "मैं जानता हूँ ...कि ...भावनात्मक प्रतिक्रिया ....का मोल . ...और तोल ....कितना होता है ...? मैं यह भी जानता हूँ ...कि ...अगर मौके पर तीर न छूटा ....या तीर ठिकाने पर न लगा ....तो सारा मजा मिटटी हो जाता है ...?" वो तनिक मुस्कराए भर थे . "ये देखिए ....!" उन्होंने एक पत्र अपने पर्स से बाहर खींचा था . "ये है – अडवानी जी का पहला पत्र .....या कहें – पहला तीर ...? या इसे नाम दें – पहला वार ...हमला ...जो हो चुका है ....? उन्होंने ये पत्र बी जे पी के पार्टी अध्यक्ष – राजनाथ सिंह को लिखा है!" पीयूष जी ने पत्र को हवा में लहराया था .

"लिखा ...है – अध्यक्ष जी! मैं ...देख रहा हूँ कि ....आज–कल ...पार्टी के रंग–ढंग ....तौर –तरीके ....ठीक नहीं हैं! चुनाव सर पर आ रहे हैं ....और आप न जाने कौनसी निद्रा में सोये पड़े हैं ...? हम चुनाव हार जाएंगे, मित्र! चुनावों के लिए ...पदाधिकारियों के नाम ...नियुक्त करें ...जिम्मेदारियां बाँटें ...और पार्टी की गति–विधियाँ तेज करें ...? वक्त है कहाँ – हमारे पास ....?"

"इस पत्र में ...छुपा एक ही आदेश है – कि ...बिना विलम्ब के ...उन का नाम ...पी एम् की पोस्ट के लिए ....भेजा जाए ...?" पीयूष जी हंस रहे थे .

वास्तव में ही ये एक करिश्मा था – जो होने जा रहा था ....?????

"मौत है – ये बी जे पी की .....?" जमा लोगों ने भी मान लिया था . "राजनाथ जी की क्या हिम्मत जो अडवानी जी के पत्र की अवहेलना करें . ...?" सीधा एक अनुमान था ....जो सामने आ गया था . "मोदी का कद था –कितना ....? गुजरात का सी एम् ही तो था ....?"

"शिवराज सिंह चौहान भी ...मोदी को नहीं चाहते ....?" किसी ने सूचना दी थी . "वह तो किसी भी कीमत पर ....मोदी को ....."

उल्लास का विषय था!! आतंक की तरह कांग्रेसियों के दिमागों पर छाया –मोदी, न जाने कैसे ...इन आशावान पलों में ....ओस की बूँदें बन–बन कर पिघल रहा था ....नीचे गिर रहा था – ट–प .....ट–प .....ट–प ....!!

लगा था – कांग्रेस पार्टी पर आया ...भारी संकट टल गया था .....!!!!

"अब तो आपस में ही लड़ मरेंगे .....???" गुल्लू भाई जी ने ठहाका लगाते हुए कहा था . "में तो चाहता हूँ, भाई जी कि ....किसी तरह ...ये मोदी ...."

"मुश्किलों से ...मरेगा ....?" एक चेतावनी आई थी . "मैं इसे जानता हूँ! और मैं आर एस एस को भी जानता हूँ!!" उस ने फिर से कहा था . "ये सारे –के–सारे ....मणिधर –साँपों जैसे हैं ...., पीयूष जी! उजाला इन के साथ–साथ चलता है! और न जाने किस मिटटी के बने हैं, मेरे यार ...? ये हारते ही नहीं ....?"

उस आदमी की आँखें अचानक ही चमकने लगीं थीं .....!!

80

तुम्हारे लिए चुनौती पूर्ण भविष्य आँख लगाए बैठा है!

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अचानक ही कांग्रेस और उस के सहयोगियों को ..एक बार फिर से सताने लगा था ...? न जाने कितनी बार इसे तोड़ने के प्रयत्न हुए थे ...? इसे बैन किया गया था ...इस की बदनामी भी की थी ...लेकिन ये दूब की घास की तरह ...जमीन पकडती ही गई ...जड़ें जमाती ही गई ......जमती ही गई ...और आज ......?

"ले लेगा ...देश को ....?" एक गुप्त रहस्य की तरह ...बात उछली थी और ...सारी जमात के चेहरों पर जा छपी थी!

"चोर की दाढ़ी में तिनका ....?" नारे की तरह एक एहसास उठा था . क्या है – कांग्रेस के पास जो – भारतीय स्वयं सेवक संघ का मुकाबला करे ...? 'एक प्रश्न था जिस का उत्तर था –युवा कांग्रेस ' या कि 'राहुल –ब्रिगेड' ....? ये एक कल्पना थी –जिस ने जन्म तो ले लिया था ...पर शरीर अब तक न धार पाई थी ?

था तो ये एक जौमदार सपना जिसे गांधी परिवार ने खुली आँखों देखा था ....लेकिन ...ये आज तक एक बच्चे से बड़ा न हो पाया था ....? राहुल – एक युवा –शक्ति के प्रतीक ...गाँधी परिवार के वंशज ...अपने साथ ....अपने जैसे ही युवक – जो राजनीति से कहीं न कहीं जुड़े और सर्व–संपन्न थे, को ले कर देश के सामने आए थे! उम्मीदें थीं – कि राहुल इस संगठन को ले कर ...देश की राजनीति पर हर तरह से काबिज हो जाएंगे ...? और फिर ये राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जैसी ..टटपूंजिया विचार–धाराएं ...स्वत ही विलुप्त हो जाएंगी ....?

लेकिन हो गया था – बिलकुल विपरीत ....एक दम उलटा .....और .... जो सामने आया था वह तो न घोडा था ...न घोड़े की पूंछ थी ....? राहुल गाँधी तो कांग्रेस को संभालने के लिए आगे आ गए थे ....लेकिन उन का ब्रिगेड ....कहीं पीछे छूट गया था ....बहुत पीछे ....????

"मैं आप की विचार–धारा से प्रभावित हूँ, भाई जी!" मेरे सामने खड़ा एक आकर्षक युवक कह रहा था . मुझे भी पहली ही नजर में ये प्रतिभाशाली युवक भा गया था ....भला लगा था! जो सहज मुसकान उस के मुखारविंद पर खेल रही थी, मोहक थी! "मेरा नाम – अमित शाह है!" उस ने बताया था . "बी एस सी कर रहा हूँ . ...'शाह' कालेज से!" कह कर वह चुप हो गया था .

आज पहली बार मुझे लगा था कि जिस 'खोज' के लिए मैं पागल हुआ घूम रहा था ....वह आज मेरे सामने आ कर खड़ी हो गई थी ....? जैसे मुझे मेरा माँगा मिला हो .....मेरी मुराद मिली हो ....और प्रभु ने मुझ पर कृपा की हो ....मुझे ऐसा ही एहसास हुआ था ....!!

"मुझ से क्या चाहते हो ....?" मैंने प्रेम पूर्वक पूछा था .

"साथ .....! सहयोग ....!! शिक्षा ...!!" एक ही सांस में सब कह गया था – अमित .

तनिक हैरान–सा मैं ...एक बार फिर अमित को देख रहा था ....परख रहा था ....!!

अब तक मैं अपने दायित्व को तो समझ चुका था! मैं मान गया था कि ...देश की युवा–शक्ति ...को ही संगठित कर ...देश को शक्तिशाली और महान बनाया जा सकता था ...!! देश को एक नई दिशा चाहिए थी ....देश को नव–निर्माण की ...आवश्यकता थी ....और ...देश को .....

"देंगे .....?" अमित ने चुपके से ...मेरा मौन तोडा था .

"क्यों नहीं .....?" मैंने भी हंस कर उसे एक मांगी मुराद की तरह अपनी बांहों में समेट लिया था . "आज से ...जो मेरा है – वह तुम्हारा भी है!!" मैंने बड़े ही स्नेह पूर्ण अंदाज में कहा था .

"आभारी हूँ, आप का ....!" अमित कह रहा था . "मैंने सुना था – आप के बारे! पर आज तो पा भी लिया ...?" वह बहुत प्रसन्न था . "मेरा मन ....."

"मैं जान गया हूँ, तुम्हारा मन ....?" मैं भी तो प्रसन्न था . "सब तुम्हारे मन के मुताबिक होगा ....!" मैंने उसे विश्वास दिलाया था . "हाँ! मैदान छोड़ कर भागना – इज ...नांट ...माई ...कप ...आँफ टी ....?" मैंने उसे पहली हिदायत दी थी .

"मर जाऊंगा ...पर भागूंगा नहीं .....!!" अमित ने भी वायदा किया था .

"अब हम एक जांन हुए, अमित!!" मैंने उसे सम्पूर्ण रूप से स्वीकार लिया था .

और आज अचानक ही मेरी निगाह के नीचे ...मेरे बीते बारह साल आ खड़े हुए थे .....

मैं १९६९...में ही तो अहमदाबाद आया था ...? तब से ले कर आज तक मैंने ...बिना निगाह उठाए ...अपने हर दायित्व का निर्वाह किया था! संघ मेरी आत्मा में बस गया था ....मेरे मन को भा गया था ....और मेरी दृष्टि में समां गया था! मुझे नागेश जी से जो मिला था ....वह बे–जोड़ था! 'संघाऊ ...शक्ति ...कलौ–युगे ' के आधार पर 'संगठन' का नाम दिया है – उन्होंने ही मुझे बताया था! 'शाखा एक स्वयं–सेवक के लिए उस का तीर्थ है!' उन का खुलासा था . 'दिन–प्रति–दिन राष्ट्र की मुक्ति और परमार्थ के लिए चिंतन .... तथा गुरु ...और इश्वर की प्रार्थना करते हैं ' उन के ही सत्य वचन थे ...! 'शाखा के ही माध्यम से संघ अस्तित्व में आता है, नरेन्द्र!' इन चंद शब्दों में ही उन्होंने मुझे सब समझा दिया था!!

उस दिन लगा था कि ...मेरी आँखों पर पड़ा अन्धकार का पर्दा ...उठ गया था! मैं एकबारगी उजाले में आ गया था ...? अब मैं रोशनी के साथ जुड़ गया था . ये मुझे एक नया ही संसार लगा था ? वड़नगर से भिन्न ...मेरे परिवार से एक दम अलग ...और मुझ से भी आगे आ बैठा –ये मुकाम ...मुझे बहुत बहुत अपना लगा था ...और लगा था – मुझे तो इसी की तलाश थी ...?

दो साल के भ्रमण के बाद मैं लौटा था तो ...लोगों ने मुझे वड़नगर में 'लफंगा' ही कहा था ...? मेरे बाबू जी भी निराश हुए थे ...कि मैं कुछ कमा कर न लाया था ...? लेकिन जो कमाई मैंने की थी – वो तो बे–जोड़ थी .... गुप्त थी ...मेरी थी ...और उसे न कोई मुझ से छीन सकता था ...और न

कोई बाँट सकता था ...? और जो मैंने अहमदाबाद आ कर कमाया था – उस का तो न कोई जोड़ था ...न कोई तोड़ ....!!

मैंने संघ की शक्ति को समझ लिया था! मैंने संगठन चलाना सीख लिया था . मैंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् को चलाना ...गठित करना ...और उसे एक प्रभावी रूप देना ...भी सीख लिया था! और मैं अब जांन गया था कि ...मैं अब राष्ट्र की मुख्य वैचारिक धारा का प्रवाह बन चुका था! अब मैं गति–मान था ...और अब हर कोई भी मेरे साथ आ कर गति प्राप्त कर लेता था ...?

तभी तो अमित शाह मुझ से आ कर जुड़ गया था .....?

और मैं जुड़ गया था एक विराट से ....! मेरा न कोई आदि था ...न कोई अंत ...! मैं तो अब अनंत था! मैं तो अब सब का था ....सेवक था .... समाज का, देश का और धर्म का! मुझे अब खाने, नहाने, सोने, बैठने ....या कमाने ..न कमाने का गम नहीं सताता था ...? मैं अचेतन से ही दादा जी से जा जुड़ा था ....अब मैं अरविंदो के अखाड़े का सेवक था ....और मैं अब हर–हर माईने में विवेकानंद–मय था!!

मैंने उन्हें माना था लेकिन – उन के वेदांत को छोड कर मैं भाग आया था! मैं उन के वेदान्त को मान कर ...उन की उस राह पर चलना न चाहता था! मैं चलना चाहता था ...इस राह पर ....संघ की राह पर ....और उन के अधूरे स्वप्न को ...मैं पूरा करना चाहता था ...? मुझे जब निवेदिता जी ने बताया था कि ...स्वामी जी अपने जैसे ...१०० विवेकानंद बना कर ...अपना मिशन आरंभ करना चाहते थे – तो मैं उन का आशय समझ गया था ...और समझ गया था कि 'संघाऊ शक्ति कल्युगे ' का विचार ही था – ये ...?

और गुरु जी ने तो मुझे स्पष्ट रूप से 'अवधूत' बनने से वर्ज दिया था! उन का अनुमान मेरे लिए यही 'विराट' था जिस से मैं आज आ जुड़ा था . ..? और यही मेरी डगर थी ....और मेरे जैसे अनेकानेक देश–भक्तों की यही डगर थी ....जो राष्ट्र भक्त थे ...समाज सेवी थे ....?

"गृहस्थ ....और ब्रह्मचर्य ...में से तुम किसे चुनोगे ....?" मैंने अमित से पूछा था . मैं जानता था कि अमित अभी बहुत छोटा था ...पर उसे ये निर्णय तो लेना ही था ...?

"ब्रह्मचर्य ....!!" हुमक कर कहा था, अमित ने .

"नहीं ...!" मैंने भी तुरंत ही कहा था . "तुम गृहस्थ ...रहोगे ....?" मैंने आदेश दिया था .

"क्यों, भाई जी ....?" तडक कर पूछा था – अमित ने .

"इसलिए कि ...मैं ब्रह्मचर्य में हूँ! पूर्णकालिक सेवक हूँ! तुम्हारा काम गृहस्थ रह कर पूरा हो जाएगा!" मैंने उसे आश्वस्त किया था .

"आप .....आप ....आप हमेशा ही मुझे बचा जाते हैं ....?" उल्हाना था –अमित का .

"छोटे हो, न ....?" मैंने बड़े ही दुलार के साथ कहा था .

"लेकिन मैं .....?"

"बहुत ....बहुत काम दूंगा ...तुम्हें ...!" मैंने प्रसन्न हो कर कहा था . "बहुत मुकाम आएँगे, अमित जब ....तुम्हीं मोर्चा संभालोगे ....? मैं देख रहा हूँ कि ...तुम्हारे लिए ....चुनौती पूर्ण भविष्य ...आँख लगाए बैठा है ..., मित्र ...?"

"जब ...आप कहेंगे ....मैं लडूंगा ....!!" अमित ने तभी एलान कर दिया था .

और हम दोनों ...हर रोज ...हर पल ...हर क्षण ...अपने इस अनगढ़ भविष्य की मांटी को रौदते ...और घरौंदे बनाने के सपने देखते ....!!

81

पित्र –पुरुष अडवानी जी नहीं चाहते आप का नाम पी एम् के लिए जाए! क्यों??

आज की सुबह बहुत ही सुंदर ....सुखद और ....ग्राह्य लग रही है!

मेरा सपना साकार होने को है –और मैं उस के बहुत करीब आ कर खड़ा हो गया हूँ! मुग्ध भाव से –संसार के आँगन में बिखर गई सुबह को ...आँखें भर–भर कर देख रहा हूँ . 'नमो' का पराग है ...जिस को तितलियों ने अपने कोमल पंखों पर उठा लिया है ...और अब अनाम–सी दिशाओं में ले चली हैं! एक सुगंध है ....मेरे कर्म–फल की सुगंध ...जिसे ये सुबह की हवा ओढ़ कर आ खड़ी हुई है! फूल हैं ...कि हँसते ही जा रहे हैं ....सूरज है कि ...तपता ही चला जा रहा है ...और शोर है कि बढ़ता ही चला जा रहा है – 'मोदी' ....'मोदी' .....'नमो' ....'नमो' .....भारत माता की– जय!जय!!

देश के आर–पार आती–जाती हर आवाज ....हर हरकत और विचार मुझे सुनाई दे जाता है ....दिखाई दे जाता है ....और कुछ कह जाता है ...!! ये मेरी अपनी उपलब्धियां हैं! जब मुझे देश–विदेश के मीडिया ने घेर लिया था –. ..और मुझे विवश कर दिया था कि ...मैं ...उन की ही बात सुनूं ...उन्हीं का विश्वास करू ....और तब मैंने अपना ही एक 'सोशल मीडिया' वैचारिक मीडिया के रूप में ...खड़ा कर लिया था . मेरे इस नेटवर्क के आगे अब मुख्य धारा की मीडिया ...बौनी पड गई है! मुझ से जुडी हर जानकारी आज ...फेस–बुक ...ट्वीटर....और मेरी वेब साईट पर उपलब्ध है! मैं अपने सहयोगियों से सीधा जुड़ा हूँ!

"सर!" मेरे शुभचिंतक का फोन है . आप भी सुनिए कि उस के पास क्या सूचना है ? "आज के हर आतंकी का एक ही टारगेट है – नरेन्द्र मोदी!" लो! सुन लो ...? "इण्डिया मुजाहिदीन से ले कर ..आतंक फैलानेवाले सभी संगठनों की हिट लिस्ट में आप का ही नाम है!"

"ये तो बड़ी खुश–खबरी है, भाई...?" मैं जोरों से हंसा हूँ . "कह दो – मैं सुबह उठते ही ...मौत से हाथ मिला लेता हूँ!"

न जाने क्यों एक–बारगी मैं और मेरा नाम इतना प्रासंगिक क्यों हो उठा है ? लगता है –कारण तो एक ही है कि ...मेरा नाम ...हवा के परदे पर स्वतः ही आ कर .... पी एम् के लिए लिख दिया है – किसी ने ....?

"ये देखिए, सर! अमेरिका के राजदूत ने 'व्हाईट हाउस' को पत्र लिखा है –गुजरात के मुख्य –मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी –बेहद ईमानदार व्यक्ति हैं!"

ये बात गलत नहीं है, मित्रो! ईमानदार होना मुझे अच्छा लगता है! और मुझे बुरा लगता है – सब स्वयं के लिए ले लेना! मैंने अपने परिवार को नहीं पोषा है ...न उन के लिए जागीरों का ही जुगाड़ किया है ...? जब कि मैं अपने चारों ओर खड़े ...उन बड़े लोगों को देखता हूँ ...जिन्होंने व्यक्तिवाद . ..और परिवारवाद ...के चक्रव्यूह में फंस कर ....देश की राजनीति को गंदा कर दिया है! मुझे दादा जी याद आ जाते हैं – जब वो कहते हैं कि – हमारे राजे–रजवाड़ों ने भी ...अंग्रेजों का ही साथ दिया, नरेन्द्र! मैं देख रहा हूँ कि ...ये लोग भी उसी तरह देश के साथ गद्दारी कर रहे हैं ...धन–माल देश के बाहर ले जा रहे हैं ....इन के बच्चे भी विदेश में ही पढ़ रहे हैं ....और ये यहाँ ....भारत की जनता का शोषण कर रहे हैं ....?

और सच मानिए ...कि ...यही लोग हैं ...इसी प्रकार के लोग हैं ...जो मेरा घोर विरोध करते हैं ....मुझे फूटी आँख देखना नहीं चाहते ...मेरा तो नाम तक लेना नहीं चाहते ...! इन्होने ही मुझे अब तक जी–जांन से ... बदनाम किया है ....!!

"हिटलर –है, मोदी ....!!" ये नारा दिया जा चुका है!

ये प्रतिक्रिया मेरी कार्य–शैली को ले कर हुई है! मैं जब अठारह घंटे काम करता हूँ ...तो ...अपने सहयोगियों से आठ घंटे काम करने की उम्मीद रखता हूँ ...? लेकिन नहीं ...! वो काम तो नहीं करेंगे .....विदेश जाएंगे .... धन कमाएंगे ....और ....

और मुझे तानाशाह ...राक्षस ...हत्यारा ...और न जाने कितने–कितने अमानवीय नामों से संबोधित कर चुके हैं ...? जितना भी कीचड इन लोगों के हाथ लगा – मुझ पर लगा दिया ....मेरे उजले मुंह को काला किया ... और मुझे लांछित किया ....उन लोगों ने जो पढ़े–लिखे हैं ....जो प्रबुद्ध हैं . ..जो उच्च–स्तर पर हैं ...और जिम्मेदार हैं ...! पर क्यों .....?

"नरेन्द्र जी! नमस्कार!!" ये लो! किसी सहाब का मन मुझ से बातें करने का है . तो देखते हैं – कौन हैं ...? "मैं ...अय्यर! कृष्ण अय्यर ....?" वह बता रहे हैं . "याद ..आया ...?" उन्होंने पूछा है . "अरे, वही .... सेवानिब्रत न्यायमूर्ति ...वी आर कृष्णा अय्यर ....?" उन्होंने अपना पूर्ण परिचय दे डाला है .

भक्क–से उजालों का एक सम्म्पुट मेरे सामने से गुजर जाता है! भूली याद की तरह मुझे जस्टिस कृष्ण अय्यर याद हो आते हैं! मुझे याद हो आता है कि ...किस तरह सेवानिब्रत जजों के स्वनिर्मित जांच दल ने अपने 'कन्संर्नेड सिटिजन ट्रिब्यूनल ' ने मुझे दोषी ठहराते हुए ...मुझ पर हत्या का मुकद्दमा चलाने की शिफारिश की थी ....और मुझे तुरंत गिरफतार करने ...की मांग भी की थी! मेरे सामने ये एक विकट संकट की घडी थी .....????

विरोधियों की बांछें खिल गईं थीं ....!!! मेरा बचना अब नामुमकिन था .....????

मैं सच की चौखट पर खड़ा रहा था ....और सच भी मेरा हाथ थामे .. मेरे साथ ही डटा रहा था ....!!!!

"नरेन्द्र जी! मैंने जब उन सारी सच्चाईयों को नजदीक से देखा ...उन्हें समझा ...जाना ...तो मैं स्वतः ही आप का मुरीद बन गया!" वो बता रहे हैं . "मैंने आप को पत्र लिखा है! जन्म दिन की मुबारक बाद देते हुए ...मुझ से रहा न गया तो ...मैं लिख बैठा!" वो तनिक हँसे हैं . "प्लीज! पत्र को पढ़ना अवश्य ?" उन का अनुरोध है .

और ये रहा उन का लिखा पत्र! चलिए! साथ–साथ पढ़ते हैं ...कि ये सेवानिब्रत जस्टिस कृष्ण अय्यर क्या लिखते हैं ...?

"मैं समाजवादी विचारधारा वाला व्यक्ति हूँ . मैं इसलिए आप का समर्थन करता हूँ ...कि आप एक सच्चे समाजवादी हैं! आप सच्चे माईनों में मानवीय मूल्यों, मानवाधिकारों की रक्षा, भारत में बंधुत्व, न्याय और सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में सच्चे अर्थों में गाँधी जी के समीप हैं!

मैं ह्रदय से और मन से आप का समर्थन और सहयोग करूंगा ...! मैं भगवान् से प्रार्थना भी करूंगा कि ...अब आप गुजरात की ही तरह ...पूरे भारत में शराब बंदी पर अमल करें, भ्रष्टाचार को मिटाएं ....और उन्हीं .. सत्यार्थों का परिपालन करें ...जिन से आप ने गुजरात को ...एक सम्रद्ध राज्य बना दिया है ?

आप के प्रशाशनिक कौशल को राष्ट्रीय समर्थन मिल रहा है! आप से अनुरोध है कि आप भारत के प्रधान मंत्री बनने के उपरान्त ...स्वराज के महान सिद्धांतों को पारित करें ...और इस देश की गरीबी को दूर करें .....

आप को जन–आन्दोलन से जो सम्मान, मान, प्रेम, आशीर्वाद ....और सहयोग मिल रहा है ...वह बे–जोड़ है! आप शिखर पर हैं ....सर्वोच्च हैं .. .और हम सब की आशाओं ...और आकांक्षाओं ..के संवाहक हैं!!"

पढ़ा न आप ने ....? मैं तो द्रवित हो गया हूँ . मैं भी इन का मुरीद हो गया हूँ . गलती इन लोगों की नहीं – व्यवस्था ने इन्हें खरीद रखा था ... उपकृत कर रखा था ...और ये स्वाभाविक ही था कि ...ये उन्हीं का साथ देते ....?

"भाई जी!" अमित का फोन है . मैं थोडा चौंका हूँ . मुझे पता है – कहीं –कुछ होगा, तभी मुझे फोन किया है ? "वो वर्ल्ड प्रेस वाले हैं!" अमित बता रहा है . "आप को तंग करेंगे ...खूब उकसाएँगे ....! लेकिन ...कीप कूल ...!!" उसने मुझे चेतावनी दी है . "उन्हें भी आश्चर्य है कि ...आप का नाम उठता ही क्यों जा रहा है ...? जब कि 'गोधरा' ...?" वह तनिक हंसा है . "प्रिवेल ...आन गुजरात .....नांट ...आन 'गोधरा' ....?" फोन कट गया है .

मैं सतर्क हूँ . आप भी संभल जाईये! ये प्रेस वाले चार आँख और बारह सींगों वाले लोग होते हैं! कौन सी खबर के साथ आप को बाँध कर .... उडाएं, आप तो जांन ही न पाएंगे ...?

"भाई! भारत के विवेकानंद हैं, आप ....?" हमारा वार्तालाप आरंभ हो जाता है . "सुना था भारत का गाँधी ....टैगौर .....लेकिन ...आप ...और ये 'नमो' .....'मोदी' ....तो कुछ बड़ा ही नया ...और नायाब लग रहा है ...?"

"विवेकानंद को तो पूरा विश्व जानता है ....?" मैंने विहंस कर कहा है .

"हाँ ...! और आप को भी लोग ....शायद उसी गिनती में ले रहे हैं ...?" प्रश्न आया है .

"मेरे पथ–प्रदर्शक हैं!" मैंने हंस दिया है . "मैं इन के १०० युवाओं के सपने को ले कर चला हूँ! भारत को मैं ...करोड़ों ऐसे युवा दूंगा ....जो ....."

"गरीबी का ....कुछ करेंगे .....? इस के लिए तो भारत बुरी तरह से बदनाम है ....?" एक युवक ने पूछा है . "कुछ ऐसा ....जो लोगों तक जाए . ...और ?"

"गुजरात राज्य इस का समग्र उत्तर है!" मैंने विनम्रता पूर्वक कहा है . "प्रान्त का हर गुजराती ...खुशहाल है ....सम्रद्ध है ....और सुरक्षित भी ....."

"सुरक्षित ......?" एक पत्रकार उछल पड़ा है . "गुजरात में ....मुसलमान ....?"

"क्यों ...? कोई दंगा नहीं ....! दशकों में .....नाट ...ए ..सिंगल केस .....?" मैंने सहजता से कहा है .

"लेकिन गुजरात तो २००२ के साम्प्रदायिक दंगो के लिए ...विश्व –विख्यात है ...?" फिर प्रश्न आया है . "कहते हैं – हजारों लोग मरे थे ....और ६००० लोग ...तो अभी भी केम्पों में पड़े हैं ....? मुसलमानों का तो जीना तक हराम है ...?" अब पूरे समूह के लोगों ने मुझे एक साथ घूरा है – जैसे मैं कोई दानव होऊँ ? "क्या आप को ...इस अमानुषिक घटना का कोई मलाल नहीं ....? क्या आप इस के लिए मांफी नहीं मागेंगे ....?"

"मैं माफी क्यों मांगूं ......?" मेरा पारा चढ़ गया है . मैं पागल होने को हूँ . "२००२ के उन सांप्रदायिक दंगों के लिए ...मैं क्यों माफी मांगूंगा ....?" मैंने अपनी बात को दुहराया है . "अगर मैंने अपराध किया है ....तो मुझे फांसी चढा दो ....!!" मैं बौखला गया हूँ . "अगर मुझे किन्हीं राजनीतिक मजबूरियों के चलते ...अपराधी कहा जाता है ....तो मेरे पास इस का कोई इलाज नहीं है ...?" मैंने भी दो टूक उत्तर थमा दिया है .

एक चुप्पी ने हम सब को आ घेरा है!

चाय आ गई है . मैंने भी पानी पी लिया है . तनिक से अपने आप को संभाला है ...संगठित किया है! अमित नाराज होगा – सोचा है ? फिर से अपने नेता के चोले में लौट आया हूँ . और अब ठीक हूँ!!

"हर सरकार का एक मुद्दा होता है ....?" एक अलग से प्रश्न लौटा है . ये लोग भी अब खबरदार हैं . अब शायद 'गोधरा' पर न लौटेंगे ...? "आप का क्या मुद्दा होगा, मोदी जी ....?" सब ने मुझे मुस्कराहटों के साथ घूरा है .

"मेरा मुद्दा होगा –'इण्डिया फस्ट ' ...." मैंने तुरंत उत्तर दिया है . "हमारा एक ही धर्म–ग्रन्थ है –भारत का संविधान ....और एक ही भक्ति होगी हमारी – भारत–भक्ति ...! एक शक्ति – जन–शक्ति ....और हमारी एक ही पूजा होगी – देश वासियों की भलाई! और हमारी कार्य –शैली होगी ....सब का साथ – सब का विकास!! " मैंने बड़े ही सुलझे हुए स्वरों में एक मधुर गान जैसा गा दिया है .

"और आतंकवाद ....?" अब की बार कांटे–सा चुभता प्रश्न पूछा है . "आप ....माने कि ...भारत को ...आतंकवाद .....?"

"आतंकवाद ...युद्ध से भी बदतर है!" मैंने फिर से उद्विगन हो कर कहा है . न जाने क्यों मैं 'आतंकवाद' के नाम से ही नाराज हो जाता हूँ ? "हमने आतंकवाद के हाथों बहुत कुछ खोया है ....?" मैं बता रहा हूँ . "आतंकवाद का कोई नियम नहीं है ....कोई धर्म नहीं है ....और ....न ...."

"कैसे निपटेंगे ....आप ..इन आतंकवादियों से .....?"

"आँखों में ....आँखें डाल कर ....!!" मैंने अब सीधा उत्तर दिया है .

फिर से चुप्पी लौटी है! मुझे उदार न पा ये लोग ...तनिक चौंक गए हैं ...!!

"बी बी सी हिंदी के संवाद दाता –जुबैर ने १५ अगस्त २०१... को लाल किले से दिए मनमोहन सिंह के भाषण की तुलना आप के भुज के लालन कालेज में दिए ...भाषण से तुलना की तो पाया कि ...अगर अमेरिका होता तो ...मोदी मनमोहन सिंह से बाजी मार जाते ? आप का क्या कहना है ...???" वो सब हंस रहे थे .

मैं भी तनिक–सा शर्मा गया था! मैं प्रसन्न तो था ...पर ...इस प्रश् का उत्तर मैं 'हां ' ...या कि 'ना' में देना न चाहता था ...? मैं इसे अनुत्तरित छोड़ देना चाहता था! और सच में ही मैंने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया था ....!!

"ओ, हाँ ....?" फिर से आते प्रश्न ने मुझे जगा दिया था . "आप के ...पित्र–पुरुष – लालकृष्ण अडवानी ...नहीं चाहते कि ....आप का नाम पी एम् के लिए ...आगे आए ....? आप क्या कहते हैं ...? क्यों नहीं चाहते ...वो ....कि ....आप ....?"

एक साथ उन सब की निगाहें मुझ पर आ कर केन्द्रित हो गईं थीं!!

82

ये देश –प्रेम ही तो मेरा प्राण है ?

देख रहे हैं, आप ...? कैसा जुल्म है ...कैसा अत्याचार है ...और कैसा अमंगल है ...जो इस प्रश्न के साथ जुड़ा है ...? दो–धारी तलवार है – ये प्रश्न ....! क्या उत्तर दूं, आप ही बताईए ....?

चलो! इस प्रश्न को भी हम अनुत्तरित छोड़ देते हैं ....!!

"तुम्हारा ये निःस्वार्थ सेवा–भाव ही श्रेष्ठ गुण है, नरेन्द्र! " मैं अचानक गुरु जी की आवाजें सुनने लगा हूँ . "अगर तुमने इसे आत्मसात कर लिया, पुत्र ....तो ....तुम ...." उन्होंने मुझे देखा था . कुछ सोचा था . "महान पुरुषों के लक्षण हैं, ये –जो तुम्हारे अंदर विद्यमान हैं! परमात्मा जानता है ....उत्तर तो ...." हंस पड़े थे, गुरु जी .

और आप सच मानें ...कि मैंने अपने इस 'सेवा–भाव' को आज तक डूबने नहीं दिया है!!

जब भी ....जिस ने भी ...मुझे पुकारा ...बुलाया ...सहायता मांगी ....मैंने निःस्वार्थ भाव से ...उस का ही साथ दिया ...सहारा दिया ...और ...वो किया जो मैं कर सकता था ...! क्या उम्र थी मेरी जब मैं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में आया था ...? हाँ, हाँ! उम्र से बड़े अपने इरादों के साथ मैंने ..सेवा की . ..काम किया ....और अपना दायित्व निभाया ....!!

तीस साल से लगातार मैं ..संघ में जी–जांन से काम करता आ रहा हूँ ....और ...आज अडवानी जी ....अटल जी ...और संघ – जिस ऊंचाई पर खड़ा है, उस के नीचे आज भी मेरा कन्धा अडा है ...? कहीं मैं इन्हें अपने कन्धों पर उठाए खड़ा हूँ! थका नहीं हूँ ...हारा भी नहीं हूँ ....और अभी भी

आगे बढ़ने की उमंग को धारण कर प्रगति–पथ पर अग्रसर होने को तैयार हूँ ....!!

क्या था – गुजरात में –संघ के आने से पहले ...? कांग्रेस का राज था . राज्य बुरे हाल में था . हिन्दू–मुसलमानों के दंगों के लिए प्रसिद्ध था! लोगों की लूट हो रही थी . प्रदेश के राजनेता अपने–अपने घराने बना कर ...बैठ गए थे! तब मैंने अमित को साथ ले कर ...अपने इस गुजरात प्रदेश को खुश हाल बनाने का काम आरंभ किया था!

अडवानी जी के चुनावों में ..गाँधी नगर में डेरा डाल कर ...हम दोनों ने इन्हें चुनाव जिताया था! फिर हमने गुजरात के गाँव–गाँव जा–जा कर ... अलख जगाया था और केशू भाई पटेल को भारी बहुमत से जिताया था! ये गुजरात के लिए ही नहीं ...पूरे देश के लिए एक आश्चर्य था ? अडवानी जी और अटल जी ने भी हमें इस के लिए आशीर्वाद दिया था! मुझे जब गुजरात मिला था तो ...पूरा–का–पूरा प्रदेश भू–कंप की मार से काँप रहा था ... अस्त–व्यस्त था ...!! लेकिन मैंने रात–दिन मेहनत कर ....लोगों के आंसू पौंछ दिए थे ....?

आईये चलते हैं – गुजरात ...! आप स्वयं देखिए कि ...आज का गुजरात ....पूरे विश्व में चर्चित गुजरात ....है क्या ....है क्यों ....?

ये देखिए – एशिया का पहला सौर्य –ऊर्जा पार्क! नौ हजार करोड़ के निवेश से ...बना है ये – १६०५ मेगा वाट बिजली का उत्पादन करने वाला संयत्र! उधर देखिए – कच्छ का रेगिस्तान – आज विश्व के लोगों को बुला रहा है ...? आर्थिक विकास के लिए गुजरात ने 'सिंगल–विंडो' पालिसी को अपना कर ...देश–विदेश के उद्योग पतियों को ...रिन्झाया है ...बुलाया है! गुजरात की प्रत्येक ग्राम– पंचायत इंटर –नेट से जुडी है! हम ने १...६६.. . ग्राम–केन्द्रों का निर्माण किया है . गुजरात भ्रष्टाचार मुक्त है! कानून व्यवस्था भी चुस्त–दुरुस्त है!!

सत्यापन के लिए मेरे पास ठोस प्रमाण हैं – देखिए .....

"गुजरात के मुख्य मंत्री मोदी द्वारा प्रचारित 'विकास' के मांडल पर पूरे देश को गर्व होना चाहिए! मोदी की आर्थिक नीतियों से गुजरात को बहुत फायदा हुआ है!" ये कह रहे हैं आई सी आई सी आई के चेयरमैन के वी कामथ!

"गुजरात से सीख ली जा सकती है!" ये कह रहे हैं नावेल पुरस्कार विजेता – अमर्त्य सैन!

"देश का युवा भ्रष्टाचार ...और मंहगाई से परेशान है! मोदी ने अपनी कार्य–शैली से ही इसे नियंत्रित कर दिया है!" लिखते हैं – राजनैतिक विश्लेषक – एस–एस बैक्टेश!

"आज के समय में अगर आप गुजरात में निवेश नहीं करते ...तो आप मूर्ख हैं!" उद्योग पति रतन टाटा का बयान!

"नरेन्द्र मोदी 'किंग आफ ...गवर्नेंस ' हैं!" ये लिखते हैं – अमेरिकन थिंक टेंक!

और भी पढ़िए –

"देश के युवाओं के लिए – नरेन्द्र मोदी प्रेरणा –श्रोत बन चुके हैं!!" टाईम्स

अब एक और भी प्रश्न शेष है जिस का उत्तर पाने के लिए आप भी बैचौन हैं ?

"'गोधरा' ...?" आप पूछेंगे तो अवश्य . "समवेत स्वर में मीडिया, बुद्धिजीवी ....राजनेता और एन जी ओज ...यही कहते हैं कि ...मोदी मुसलमान विरोधी है!"

अब आप मेरी भी सुनिए! सुनिए अवश्य क्यों कि मुझे आज तक किसी ने कान नहीं दिए ...और मेरी बात नहीं सुनी ....? यहाँ तक कि कोर्ट के दिए फैसलों को भी झूठा साबित करने की साजिश तो आज भी चल रही है! आज भी यही कोशिश है कि किसी तरह से मोदी को फांसी पर लटका दिया जाए ...? लेकिन मैं तो अपनी बात बताऊंगा और जरूर कहूँगा कि ....

नरेन्द्र मोदी निर्दोष है! निर्मल पानी की वो स्वच्छ धारा है – नरेन्द्र मोदी जो दुनियां भर की गंदगी को धोता जा रहा है ...और बर्दाश्त करता जा रहा है ...उन आरोपों को जिन का दोषी वो है ही नहीं ...? 'गोधरा' एक मुख्य प्रश्न है लेकिन कार सेवकों को मुसलमानों ने बे–रहमी से जला कर मारा ...बाबरी मस्जिद का बदला लिया ...और इस घटना में पूरे विश्व के मुसलमान ...एक मत हैं ...एक जान हैं ...एक प्राण हैं! बंटा है – तो हिन्दू . ...? हमने आज तक ये प्रश्न नहीं उठाया कि ...इन कार सेवकों का क्या

दोष था ...? ये अमानुषिक नर–संहार क्यों हुआ ? मुसलमानों की इतनी हिम्मत कैसे हुई ...? आप भी तो सोचिए कि क्या बिना किसी सहारे के ... सोच के ....योजना के – इस तरह की 'गोधरा' घटना जन्म ले सकती है . ..? ये ...ये ...बड़ी साजिश ...कांग्रेस जिस में शामिल थी ....और विदेश तक के लोग ...इस से जुड़े थे – उन्हीं के इशारों पर हुई, ये भी सिद्ध हो चुका है!

ये मोदी को जला कर मारने के लिए बनाया गया लाक्षा गृह था .....!!
ये देश को टुकडे–टुकडे कर बांट देने की ..अंतर–राष्ट्रीय चाल थी!!!

लेकिन अटल जी ने २००२ में गोवा में पार्टी का सम्मेलन बुला कर नरेन्द्र मोदी को सी एम् के पद से हटाने का निर्णय किया ...! क्यों .....? और आज ....अब ...अडवानी जी ने अपने अंगद के पैर को जमा दिया है ....? कल तक मैं – नरेन्द्र मोदी – उन की आँखों का तारा था ...? मैं एक श्रेष्ठ कार्य–करता था ? मैं सफलता की एक कहानी था ....और मैं उन का प्रिय सेवक था! लेकिन ....आज ....?

नहीं, नहीं! मैं अडवानी जी की शान के खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोलूँगा ? मैं आप को केवल अपने मन की बात बताऊंगा – कि – बाबरी मस्जिद गिरने के बाद ...मेरा मन था ...और मेरी राय भी थी कि ...अडवानी जी ओटलें ...कि बाबरी उन्हीं के आदेशों पर गिराई गई ...? चले जांय जेल ....! और मेरा मानना था कि ..अडवानी जी तभी लौह–पुरुष से ऊपर उठ कर ...युग–पुरुष बन जाते ....? लोग इन की पूजा करते – गाँधी की तरह!लेकिन ....?

एक और बात जिसे मेरी अंतरात्मा ने कभी नहीं स्वीकारा था – वो सन २००५ में पाकिस्तान जा कर जिन्ना की प्रशंशा करना ...उसे सेक्योलर बताना ... और कहना कि ....? ये आप को बुरा लग सकता है ....लेकिन हमारे राजनेताओं के लिए इतिहास भी गवाह नहीं बनता ? अटल जी ने भी बस–यात्रा की ...? नतीजा आप जानते हैं ? आगरा में भी पाकिस्तानी नेताओं को बुलाया और 'भाई–चारा' स्थापित करना चाहा ...? लेकिन ....? कारगिल ....!!

मुसलमानों को प्रसन्न करने की रीति–नीति का मैं ....समर्थन भी करता रहूँगा ...लेकिन ....

आप हसिए मत! में गुजरात में आप को ले जा कर अपने स्थापित किए कीर्तिमान ही दिखाऊंगा! और बताऊंगा कि 'गोधरा' के बाद वहां कोई दंगा नहीं हुआ था ...और गुजरात का मुसलमान ही मेरा गवाह है ....मेरा हितैषी है ...मेरा समर्थक है ...? अटल जी को मैंने सहारा दिया ...अडवानी जी को मैंने गुजरात में चुनाव जिताया ...और गुजरात के मुसलमानों ने मेरे समर्थन में कोर्ट में गवाहियाँ दीं हैं – ये प्रमाण मेरे पास हैं!

मैं भी मुसलमान विरोधी नहीं हूँ ....!!

मैं एक मात्र सेवक हूँ! माँ भारती का एक निःस्वार्थ सेवक मैं – नरेन्द्र मोदी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का मात्र एक कार्य–करता हूँ ....और कुछ भी नहीं हूँ ? और न ही मेरी कोई मांग–जाच है, श्रीमान ....?

हाँ, हाँ! मेरा एक मात्र निवेदन अवश्य है कि ...अगर देश की जनता ने मुझे एक मौका दिया ...अपना पी एम् चुना ...तो मैं गुजरात राज्य वाली लगन से ही ...माँ भारती की फिर सेवा करूंगा ...और उन के उस स्वपन 'स्वर्गादिप गरीयसी' को पूरा करने की कोशिश करूंगा –!!

ये देश–प्रेम ही तो मेरा प्राण है ....?????

83

कुर्बानियाँ तो देश–भक्तों का गहना हैं! दो न कुर्बानियाँ?

मैंने पूजा–अर्चना कर ली थी! मैंने अपने इष्ट को भी मना लिया था!!

फिर मैंने दादा जी को याद किया था ....और गुरु जी को, प्रणाम किया था! और हाँ, अपनी माँ और माँ–भारती से आशीर्वाद प्राप्त किया था! अब मेरे मनोरथ मेरी बाँहें पकड़ मुझे दिल्ली ले जा रहे थे ....!!

सूरज निकल आया था . उजास ने पूरे आकाश को आंदोलित कर दिया था! हल–चल थी ...क्रिया–कलाप थे ...और लोगों की दिन–चर्या चल पड़ी थी! लेकिन मैं था ...कि अभी तक ठिठका खड़ा था ...? मुझे एक इंतजार था! सन्देश अभी आना था ? आया नहीं था! उम्मीद थी – जो मेरे पास ही बैठी थी ....और मुझे इंतजार करने की ही सलाह दे रही थी!!

केवल ....केवल ....एक कदम दूर था मैं ...आज १... सितम्बर २०१... दिन शुक्रवार को अपने अभीष्ट से ...अपनी आकांक्षाओं से ....और अपने उद्देश्य से! आज दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी के पार्लियामेंट्री बोर्ड की मीटिंग ११ अशोक रोड, पार्टी के ऑफिस में होने वाली थी! आज एक बहुत ही महत्व पूर्ण निर्णय लिया जाने वाला था! १२ सदस्यों के इस बोर्ड ने आज आगामी २०१४ के चुनावों से पहले एक नाम को स्वीकृति देनी थी ? उस नाम को ...जिस ने ...२०१४ का लोक सभा चुनाव जीतना था ...और भारत देश का प्रधान मंत्री बनना था ....?

संभावना थी ...नहीं, नहीं! पूरी उम्मीद थी ...कि नरेन्द्र मोदी के नाम की घोषणा होगी ...और ......

और मैं – नरेन्द्र मोदी मात्र इस खबर से ...इस विचार से ...और इस सामने खड़े ...मूर्त हुए भविष्य से ...हाथ मिलाने से भी डर रहा था ....?

मुझे अपनी हालत बिगडती लगी थी!

ऐसा नहीं था कि मैं ...सफलता–विफलता का स्वाद पहली बार चखने जा रहा था ? और न ही ऐसा था कि ...आशा–निराशा से मेरी ये पहली मुलाकात थी ...? लेकिन कुछ ऐसा अवश्य था – जो मर्मभेदी था ...मोहक भी था ...असहय था ...पर था अत्यंत आवश्यक ? सच मानिए! मुझे अपने इस भारत देश का प्रधान मंत्री बनना ...अति आवश्यक लगा था ...और अब मैं आप को अपना मंतव्य भी बता देता हूँ!

अबोध शिशु ही तो था, मैं जब मैंने पूज्य दादा जी के चरणों में बैठ कर .. .उस जुगांतर के मटमैले आफिस में स्वतंत्रता संग्राम का वृतांत सुना था ...और राजनीति की जीत–हार के हथकंडे –सुने–समझे थे ? स्वतंत्रता पाने में माँ–भारती को कितना कष्ट हुआ ....मुझ से ज्यादा कौन जानता है ? जो दादा जी के बूढ़े चहरे पर लिखा था ....उसे मैंने ही तो पढ़ा था ? आपसी फूट ...बंटवारे ....वैमनस्य ...कलह...अशिक्षा ...और ....और ...हाँ! गद्दारी –हमारे अपने दुश्मन थे! और आज ...आजादी के सत्तर सालों के बाद भी ...वही दुश्मन जिन्दा थे ...और हमें सता रहे थे ....???

वास्तव में तो ...अंग्रेजी –राज भारत से गया ही न था ....?

गुजरात में हुए 'गोधरा' को ही मैं प्रमाण के रूप में पेश कर सकता हूँ! और ....और ...हाँ! देश में होती लूट ....देश से विदेश जाते भारतीय ....बाहर जाता हमारा –धन–जन ...और अंग्रेजों की दी व्यवस्था की जंजीरों में जकड़ा ...समग्र भारत ...? क्या था – जो आजाद हुआ था ....? क्या है –जो अंग्रेजी राज में नहीं था ...? कौन है – जो देश का शुभचिंतक है ....? जो अंग्रेजों के भक्त थे ...वही आज के शाशक हैं ...सत्ता पर काबिज हैं ...और वही सब कर रहे हैं –जो अंग्रेज कर रहे थे ....? 'डिवाईड एंड रूल ' बदला कहाँ है ?

काश! आज अगर दादा जी जिन्दा होते ....तो ....

"बिना धर्म, भाषा और संस्कृति के क्या देश बनेगा, बेटे ...?" गुरु जी आज भी मुझे बताते लग रहे हैं . "समाज की संरचना के लिए ये तीन तो आवश्यक अंग हैं! जुड़ने के लिए कुछ तो अपनापन चाहिए ....? धुरीहीन

आदमी ....विचारशून्य युवक ...और संस्कार रहित समाज ...किस काम का ...?" उन के प्रश्न थे –जो आज भी प्रासंगिक हैं!

हमारे पास अपना तो कुछ भी नहीं है ....?

अंग्रेजी भाषा से हम काम चला रहे हैं! उन्ही की रीति–नीति पर चल रहे हैं . उन्ही के संस्कार और शिक्षा हमारी संतानें ग्रहण कर रही हैं . पश्चिम की हवा ही हम पर हावी है ? उन का रहन–सहन हमें आकर्षक लगता है! धनपतियों ...नेताओं ...समाज सुधारकों के ..बच्चे विदेश में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं . हमने अपना कुछ बनाया कहाँ है ...? उधार खरीद रहे हैं ....और कर्जे पर जी रहे हैं!! अपनी रक्षा –सुरक्षा के लिए भी ...हम उन्हीं के मुहताज हैं ....?

और ...अब्बा ...? उन का वो साम्राज्य –जो हर–हर मईनों में स्वतंत्र है ..उन का अपना है ...? भेड़ –बकरियों का पालन–पोषण ....और अपनी जीविका के लिए स्वयं उत्तरदाई उन की वो संस्था ...स्वतंत्र है!! वो स्वतंत्र हैं ...तभी सुखी हैं ...अपने उस स्वर्ग में ....जहाँ से मैं ...लौटना ही न चाहता था ....?

और हाँ! अब्बा के दिए उस धन को मैंने जब गुरु–दक्षिणा के दिन शाखा के कोष में जमा कराया था – ...और गुरू दक्षिणा का ऋण चुकाया था ...तो अब्बा को ही मैंने अपना इष्ट माना था! मैंने –उसी देने की .... कमाने–खाने की ...और एक पारदर्शी जीवन जीने की शपथ ली थी! मैंने उसी दिन निर्णय लिया था कि ...मैं ...भारतीय स्वयं सेवक संघ में ..रह कर ...समाज की सेवा करते हुए ...उन सोपानों को चढूँगा ...जिन की मेरे दादा जी को मुझ से उम्मीद थी ...और जिन के लिए मेरे गुरु जी ने मुझे आशीर्वाद दिए थे ....?

सच में ही भारतीय स्वयं सेवक संघ ने मुझे मेरा वांछित भविष्य पकड़ा दिया है! जो जीवन–मूल्य मैंने संघ में रह कर ग्रहण किए हैं ...वही मेरी संम्पत्ति हैं ...वही मेरा आधार हैं ....और उन्ही के भरोसे आज मैं ...यहाँ आ कर ...हाथ फैला कर ...प्रधान मंत्री के पद का आग्रही हूँ ....!!

मैं भूला कहाँ हूँ –उस इमरजेंसी की घटना को –जब श्रीमती इंदिरा गाँधी ने देश के सारे गणमान्य नेताओं को ...जेल भिजवाया था ...? सारे विचारक और विरोधी पत्रकार भी अंदर थे! और तो और मेरा भी नंबर आ ही जाना था ...पर मैंने तो भेस ही बदल लिया था! सरदार बन गया था –

मैं ...? हा हा हा ...! सच बड़ा ही आनंद रहा ...? मैं टूटी–फूटी पंजाबी बोलने लगा था! और जब चुपके से ...नेताओं से जेलों में मिलाता ...उन के सन्देश देता ....उन की बात लेता ...तो एक अलग ही शुगल–सा हो जाता ....?

सौभाग्य था मेरा ...जो मैं इतनी विभूतियों के ...संपर्क में आया ...और मैंने उन के विचार जाने ...मनोदशा पढ़ी ...उन के देश के प्रति लगाव .... और देश–हित के लिए छेड़े संघर्ष की ...जानकारी मुझे मिली ....!!

एक प्रकार का अंग्रेजी राज ही लौट कर आ गया था ....?

मुझे दादा जी की सुनाई सारी कहानियां याद थीं ...जब तिलक जेल में थे ...अरविंदो पर मुकद्दमा चला था ...फांसी की सजाएं भी सुनाई जातीं थीं ...और देश–भक्तों को देश–द्रोही कहा जाता था ..? और आज भी जेल में बंद ये नेता –देश–द्रोही ही तो थे ....???

एक ....सिर्फ ...एक परिवार ही देश–भक्त था – गाँधी परिवार!!

बड़ी उस्तादी से ....बड़ी ही चालाकी से ...नेहरू जी की बेटी –इंदिरा गाँधी ने ....नेहरू–गाँधी की टोपी पहन कर ...सत्ता अपने हाथ में ले ली थी! अब उन्हीं के दो बेटे सत्ता के दाबेदार थे ...? संजय गाँधी का आतंक तो पूरे देश पर छा गया था! लोग उन के नाम से ही भय खाने लगे थे ....???

गाँधी परिवार सत्ता का केंद्र था –यह बात विदेशियों को समझते देर न लगी थी!

मेरी समझ में भी राजनीति का ये खेल तभी आया था . मैं भी तब एक स्वयं सेवक था ....और देश के गली–कूचों में प्रचारक बन ...युवकों को बता रहा था कि ...ये देश हमारा है ....हमें जांन से भी ज्यादा प्यारा है ....और जो सत्ता–महत्ता का तंत्र चल रहा है .....वो देश के लिए बे–हद ही हानिकारक है ...? गाँधी परिवार में विदेशियों ने सेंध लगा ली है – और छल से...बल से ...घात–प्रति–घात से ...वो अब भारत को इन से छीन लेंगे ....और हमें फिर गुलाम बना लेंगे ...! और अब वो घटेगा जिसे हम सोच भी नहीं सकते .....????

और हुआ भी वही था ....! खालिस्तान का एक शगूफा विदेश से एक छोटी चिंगारी की तरह ...लहका था ...और पूरा पंजाब आतंक से दहक उठा

था ? ये श्रीमती इंदिरा गाँधी के लोग ...उन्हीं के सेवक ....उन्हीं के देश–भक्त ....अब उन्हीं के सामने खड़े–खड़े खालिस्तान मांग रहे थे ....???

"काश! आज संजय जी होते ....?" उन्हें सब ने याद किया था . "हरगिज न होती ...ये मांग .....और न होते ...ये खालिस्तानी ....? राजीव तो देवता हैं ...?"

मेरी भी आँखें खुलीं थीं . होती साजिश को मैंने बड़ी ही बारीकी से सूंघा था! लेकिन तब मेरा वजूद ही क्या था ...? हाँ! मेरा अनुमान सही था कि ....अब सत्ता इंदिरा जी के हाथ से जाएगी ....? लेकिन कैसे – ये मैं नहीं जानता था! कारण – इंदिरा जी एक बड़ी ही कुशल राजनीतिज्ञ थीं! उन की समझ के सामने तो घोड़े दौड़ते थे ....

"आप ने ...ये सरदार ...पहरे पर बिठा रखे हैं ....?" इंदिरा जी को चेतावनी दी गई थी . ..! "ये भी तो ....खालिस्तानी ही हैं ....?"

"नहीं! मुझे इन पर भरोसा है!!" उन का हंसमुख चेहरा और भी आकर्षक लगा था . "रहने दें ....इन्हें ...?" आदेश उन्हीं के थे .

और वो आश्चर्यजनक घटना घटी थी ....! उन्हें गोलियों से मार गिराया था! सोनियां जी हाजिर थीं . अमरीका के लोग फिल्म बनाने आए थे . उन की बुलेट –प्रूफ जैकिट उतरवा दी थी . और .....

और फिर राजीव युग का आरंभ हुआ था! अब मैं भी तनिक और बड़ा हो गया था! मैं भी अब भारतीय जनता पार्टी में आ मिला था ...? मैं भी अब चुनाव लड़ाने लगा था! मैं भी अब रथ–यात्राएं संपन्न कराने लगा था ? मैं भी अब राजनीति के जटिल समीकरणों को जोड़ने–तोड़ने लगा था! मेरी भी एक शाख बनने लगी थी ....!!

राजीव गाँधी बिना किसी विलम्ब के आकाश की ऊंचाईयों तक पहुँच गए थे .....!!

सच! मैं भी किन्हीं मईनों में ...राजीव गाँधी का मुरीद बन गया था! मैं भी उन्हें चाहने लगा था! मैं भी डरने लगा था कि कहीं ....वो न हो जाए . ..जो संजय जी के साथ हुआ ....इंदिरा जी के साथ हुआ ....? बहुत ही भोले आदमी थे – राजीव भाई ...! राजनीति की कुटिल चालें समझना उन के वश की बात न थी ? वो थे ...एक पाक–साफ ...आदमी ...एक देव–पुरुष –से ...अभिशप्त राज कुमार!

और हुआ भी वही ....जो ऐसे अच्छे–सच्चे ...लोगों के साथ हो जाया करता है ....???

अन्धकार घिर आया था –देश में ....? दिशाहीन हो गई थी – राजनीति ....? एक ऐसी अभिलाषा उगी थी मेरे मन में ...जिस ने मुझे परेशान कर दिया था ...? क्यों खट रहा है तू ...इस राजनीति में ....? क्या मिला –राजीव को .... क्या ले गया संजय गाँधी ....क्या रह गया इंदिरा जी का ...? क्या देता है – देश ...और समाज – जिस के लिए जानें दी जाएं ....?

"देश डूब जाएगा, बेटे!" दादा जी बोले थे . मेरी नीद खुली थी, "कुर्बानियाँ. ..तो ...देश–भक्तों का गहना हैं! दो कुर्बानी ...? डरो मत, नरेन्द्र!" उन का आदेश था!!

"व्यक्ति का भाग्य निश्चित होता है, नरेन्द्र!" गुरु जी कहते लगे थे . "मुझे देख लो ? मैं क्या जानता था कि 'चित्रा' का प्रसंग मुझे 'अवधूत' बना देगा ....?"

और मैंने फिर से अपना मार्ग चुन लिया था!!!

84

और अब वक्त का चेहरा –केसरिया था!!

"भाई जी! शिवराज सिंह चौहान – सी एम् मध्यप्रदेश ....विरोध में खड़े हो गए हैं ?" मुझे सूचना मिल रही है . "कहते हैं –चाहे जो हो ....पर मोदी नहीं ...!!"

मैंने घड़ी में समय देखा था . वक्त ११ बज कर ...५ मिनिट का था! और वक्त का चेहरा लाल था .....!!

"नया क्या है, नरेन्द्र ....?" आवाज दादा जी की थी . "अपने ही तो हराते हैं ....वक्त पर दगा देते हैं ...?"

आहत हुआ था –मैं! मुट्ठियाँ कस आईं थीं, मेरी! शिवराज सिंह चौहान का चालाक चेहरा मेरी आँखों के सामने था . लेकिन मैं धीरज खोना न चाहता था ...?

"शरद यादव ने ...पार्टी से १७ साल पुराना सम्बन्ध तोड़ने की धमकी दी है! नितीश का सन्देश भी निगेटिव है!! कहा जा रहा है कि ...एन डी ए . ..टूट जाएगी ...?" एक और भी बम–विस्फोट हुआ था!

मैंने रीते–रीते आसमान को याचक निगाहों से निहारा था ....!!

टूटता देश ....बंटता हिन्दू ....और भागता स्वराज ...मुझे द्रष्टि गोचर हो रहे थे! नई बात न थी ....और न ही नया कोई कारण था ...? ये हमारी – हम भारतीयों की ...हिन्दूओं की ...आम आदत थी! हमें अपनो से ही परहेज था ....? बहर का कोई भी आए ...हम गुलाम बनने को ...तैयार खड़े थे ...?

"आप को नरेन्द्र मोदी से परहेज क्यों है ...?" राजनाथ सिंह ने अडवानी जी के सीने पर सीधा प्रश्न अडा दिया था . "होनहार है ....देश–धरम का है ...और जनता की आँखों का तारा है ...?"

"टूट ...जाएगी ....पार्टी, राज!!" अडवानी जी ने भी अपना दुःख व्यक्त किया है . वक्त जा रहा है! एक बजके बावन मिनिट हो चुके हैं ...! अभी तक कोई राय नहीं बन पाई है ? "मुझे कहना तो नहीं चाहिए ...पर जसवंत जी ... शौरी ...सुषमा ...और यहाँ तक कि ....शायद ...अटल जी भी ....नहीं चाहते कि . ..." रुके थे, अडवानी जी . "मेरी बात मानो ? वक्त का इंतजार करते हैं ...? एक सहमती ...बनेगी ....तो ....?"

"सहमती तो बन चुकी है, अडवानी जी ....!" राजनाथ सिंह ने उन्हें सूचना दी थी . "जन–जन मोदी को ही चाहता है ...! देश ....समाज ...और वक्त की मांग है – मोदी ....!! हम चार आदमी न भी चाहें तो क्या होता है ....?"

"जो ठीक समझो ...करो!" अडवानी जी का स्वर असम्प्रक्त था . "मैं नहीं आऊँगा ...!!"

"आईए ...आप ...? आशीर्वाद दीजिए ...! मेरी गुजारिश है कि ...." कहते हुए चले गए थे – राजनाथ सिंह .

मैंने फिर से समय देखा था! दो बज कर छह मिनिट हो चुके थे ....?

"मुबारक हो, भाई जी!!" अकाली दल के नेता – प्रकाश सिंह बादल की आवाज थी! "बहुत..बहुत ....बधाई ....? मिलते हैं ....!! दिल्ली में ...." कहते–कहते फोन कट गया था .

क्या था – ये ....? आशा किरण थी ....? या कि कोई चलता–भागता बरसात का झोंका था ...? या था –झकझोर देने वाला ...झंझावात ...? मेरा साहस अब चुकने लगा था! निराशा फिर से पास आ बैठी थी . में उद्विग्न होने लगा था ...!!

"भाई जी ....? मुबारक ...!!" ...."भाई जी ...? बधाईयाँ ...!!" भाई जी . ...भाई जी ....भाई जी ....और हाँ ...बधाईयाँ ..." अनेकानेक सन्देश आने लगे थे . "आप देश के ...भविष्य हैं ...देश के प्राण हैं ....शान हैं ....और ...." सब कुछ होने लगा था ...पर दिल्ली से कोई सन्देश नहीं था ...?

"हाँ, हाँ! विलम्ब है ...!!" लो, दिल्ली से भी सन्देश आ गया था . "सुषमा जी ...कह रही हैं कि ...शायद आज मीटिंग ...न हो ...? अडवानी जी ...."

दो बज कर पंद्रह मिनिट का समय था! मेरा हिया काँप उठा था! मैं सुषमा के सन्देश में किसी साजिश को तलाशने लगा था!

रह–रह कर मुझे पश्चाताप हो रहा था कि ...जिस अडवानी जी की मैंने ...राम–भक्त हनुमान जी की तरह ...सेवा की ...जिन का हर काम किया ...हर मुहीम को सिरे चढ़ाया ...और हर–हर माईनों में साथ दिया ...वही अडवानी जी आज ...मेरा रास्ता रोक कर क्यों खड़े हो गए थे ...? ये देखिए – उन्हीं का लिखा – 'मेरा जीवन –मेरा देश' उन की आत्म–कथा में –पढ़िए ....

"लोगों के समर्थन से दुष्प्रचार के किसी भी अभियान को पराभूत किया जा सकता है – और इसे नरेन्द्र मोदी ने कर दिखाया है! " और वही आगे लिखते हैं, " मैंने पिछले ६० वर्शों के दौरान ...भारतीय राजनीति में ...ऐसा कोई नेता नहीं देखा है ...जिसे राष्ट्रीय ... व अन्तर –राष्ट्रीय ...स्तर पर .. .निरंतर इतने घ्रणित ...व् अनैतिक तरीके से बदनाम किया गया हो ...जितना कि मोदी को ...वर्ष २००२ से किया गया है ...? सोनियां गाँधी ने तो सारी मर्यादाएं ...पार करते हुए ...उन्हें 'मौत का सौदागर' तक कह दिया ...?" फिर क्या कारण था कि ...अडवानी जी ..अपना लिखा ...अपना कहा ....और अपना सोचा ...सब भूल गए थे ...?

और अटल जी तो बीमार थे ....? लेकिन मैं तो जानता हूँ कि ...अगर लौह–पुरुष हिल गए हैं ...तो ..युग–पुरुष भी दहला गए होंगे ....? पर क्यों ....???

"भाई जी ...!" दिल्ली से फोन था . मैं उछल पड़ा था . "चल पड़ो ...!" आदेश था . "मीटिंग का समय पाँच बजे से ...साढ़े पाँच बजे हो गया है! पर मीटिंग होगी ...अवश्य!!" फोन कट गया था .

मैंने फिर से समय देखा था! तीन बज के बाईस मिनिट हुए थे! और हाँ...! वक्त का मुंह मुझे ...अब हरा–हरा लगा था! आई आवाज में भी दम दिखा था ? कुछ हुआ लगा था! मेरा मन तनिक प्रसन्न हुआ था . चेहरा भी खिला था ....? और मैं अहमदाबाद छोड़ कर ...दिल्ली की ओर चल पड़ा था! और मैं देख रहा था कि मेरे प्रशस्त हुए यात्रा –पथ पर ...जसोदा बैन पुष्पानजलियाँ ...बिछाए मुझे विजय श्री को पाने का वरदान दे रही थी ?

उस ने मुझे अजेय बना दिया था ...और अपने तप के तेज से ...अजर–अमर होने को कहा था!!

अचानक ही मेरा डर जाता रहा था! मैं स्वस्थ और समर्थ हुआ – नरेन्द्र मोदी, दिल्ली की ओर चल पड़ा था! मैं ठीक पाँच बज के उनतीस मिनिट पर –गुजरात भवन –दिल्ली पहुंचा था ....और मुझे पता चला था कि ... अडवानी जी घर से ..पाँच बज कर तीन मिनिट पर ..यहाँ आने के लिए निकले थे! पर लौट गए थे!! उन्होंने राजनाथ सिंह को पत्र लिख कर भेजा था . और कहा था कि ...'जो होना था ...नहीं हो रहा था ...?'! और पार्टी के लिए वो अब काम नहीं करेंगे ...!!

"आप को पता नहीं, भाई जी ...?" कोई मुझे बता रहा था . "अमेरिका ने खास आप के लिए ...बम तैयार किया है! इस का नाम है – राहुल गाँधी!! बन तो जाएंगे पी एम् ...आप ...! पर ....."

"बनने तो दो, भाई ....?" मैंने सहज भाव से कहा था ....और अपनी तैयारी में जुट गया था .

बोर्ड की मीटिंग हो रही थी . विचार –विमर्श चल रहा था . सब की राय ली जा रही थी! मोदी के नाम पर सहमती होती ही जा रही थी . एक के बाद एक बोर्ड मेम्बर ...मोदी के पक्ष में अपनी राय देते जा रहे थे!

"मेरे विचार से ...हमें नरेन्द्र मोदी से अच्छा ...और कोई पी एम् के लिए पार्टी में नहीं मिलेगा ...?" मुरली मनोहर जोशी ने बोर्ड के मेंबरों को सम्बोधित कर कहा था . "क्यों न हम ..सर्वसम्मति से ..उन के नाम की घोषणा कर दें ...?"

बात मान्य थी! वक्त पाँच बज कर इक्कावन मिनिट था!! और वक्त का चेहरा ...सफेद था ...!!

"व्हाई आर यू ...बाईटिंग ...ए ..बुलेट, सर ....?" राजनाथ सिंह से फोन पर कोई कह रहा था . "अडवानी जी नहीं आ रहे हैं!!" उस ने नई सूचना दी थी . "आप का अपना भी तो कैरिएर ...है ...?" दो मुहां प्रश्न था . "आप भी ....तो ....?"

"शट –अप ....!!" क्रोध पूर्ण उत्तर दे कर राजनाथ सिंह ने फोन काट दिया था .

बाल–बाल बचे थे – मोदी जी ....? पीछे बैठे विरोधियों का युद्ध जारी था ...! अडवानी का तीर खाली जाते देख ...खलबली मच गई थी! अब और कौन–सा बम था – जिसे वो फोड़ते ....?

ठीक छह बज कर बीस मिनिट पर मैं ...११ अशोक रोड पहुंचा था! मीटिंग चल रही थी . मुझे आया देख खुशी की एक लहर–सी दौड़ गई थी! जमा लोगों ने मुझे नई निगाहों से देखा था! मुझे बोर्ड के सदस्यों ने अन्दर बुलाया था . एक हल–चल थी . आमोद–प्रमोद था ...! शुभ–शुभ–सा सब कुछ था ...?

"आप को जिम्मेदारी ...दी जा रही है, नरेन्द्र जी ...कि आप २०१४ के चुनाव लड़ेंगे ...जीतेंगे ....और इस महान भारत देश के ...प्रधान मंत्री का पद –भार संभालेंगे ...!!" तालियाँ बजने लगीं थीं . "औपचारिक घोषणा की जा रही है! आप मनोनीत हैं ...!!" मुझे बताया गया था .

वक्त छह बज कर उनतीस मिनिट था! और अब वक्त का चेहरा केसरिया था!!

"हम दिवाली वाले दिन दिवाली मनाते हैं ....पहले नहीं ...?" कपिल सिब्बल ने विरोधियों की ओर से कहा था . लेकिन मेरे लिए कोई संकेत . ..या कोई सन्देश न था ...?

"जाओ! बुड्ढे ...के पैर पकड़ो ...! आशीर्वाद लो ...!!" राजनाथ सिंह कह रहे थे . "भागो ...! और हाँ ....! ठीक साढ़े सात बजे ... अटल जी के पास ...?" उन का इशारा था .

कौन पार्टी में रहा ...कौन भागा ...कौन रोया ...कौन हंसा ...और किस ने कोसा ...किस ने परोसा ...मुझे कुछ याद नहीं ....?

में तो अडवानी जी के चरण पकडे ...उन से आशीर्वाद ले रहा था!!

"अटल जी इंतजार में हैं! जाओ ....!!" अडवानी जी ने कहा था .

और मैं भाग लिया था ....

85

कोई चायवाला नहीं–ये चोर है!

'नमो' का मंत्र पूरे देश में गूँज उठा था!

मीडिया, टी वी, अखबार और पत्रिकाएँ –नरेन्द्र मोदी के नाम, काम ... और सौहरत सम्मान का गुण गान कर रहे थे! पूरे भारत को मैंने अब तक की ...की ४... रैलियों में संबोधित किया था . मैंने उन की सुनी थी और उन्हें अपना मत, पथ ...और उद्देश्य कह–कह कर सुनाए–गाए थे! मेरे उड़ान भरने का कुल समय ४१० घंटों का था ....और ये अबतक की एक मिसाल थी – जो मैंने कायम की थी!

लेकिन नहीं ....! नहीं था –मुझे अभी भी संतोष!

मेरी आँखें खुलीं थीं! सूरज था कि ...ठहर गया था ...डूबना ही न चाहता था ...? लेकिन उधर चाँद था ...जो उदय होने के इंतजार में खड़ा –खड़ा सूख रहा था ...? करें तो करें क्या –रात को तो दिन ने अंगूठा दिखा दिया था ...? और शाम, हाँ, हाँ जीवन की शाम का तो अभी से ढल जाना असंभव ही था ?

कारण, मित्रो ...एक ही था ...कि आज माने कि १६ मई २०१४ को चुनाव परिणामों की घोषणा होनी थी!

तो आईये! आप भी आईये!! साथ–साथ चुनाव –परिणामों का जायजा लेते हैं और देखते हैं – कौन जीता, कौन हारा ...और किसे क्या मिला और क्या नहीं मिला ...? हमारा ही नहीं मित्रो! देश का ...पूरे देश का दिल धडक रहा है ...नब्ज दौड़ रही है ...और आशा–निराशा का निराला खेल खेला जा

रहा है ...? मैं भी उत्साहित हूँ ...कि अपनी की मेहनत ..का रंग–पानी देख लूं ...सुन लूं ...और समझ लूं ...!!

कितना कुछ घट गया है ...बीते दिनों में ....

"गुप्तचर एजेंसी की रिपोर्ट में तो यहाँ तक कहा गया है कि ...नरेन्द्र मोदी को मारने के लिए समान विचारधारा वाले ...राजनीतिज्ञों, नौकर –शाहों ...व् ...भारतीय सुरक्षा अधिकारियों की मदद भी ली जा सकती है ?" अमित मुझे बता रहा था . "लश्करे–तैयबा तो आप पर नजर टिकाए ...."

"देश छोड़ कर तो नहीं भागेंगे, अमित ....?" मैंने हंस कर कहा था, लेकिन अमित गंभीर था . "हम अपना प्रोग्राम नहीं बदलेंगे ....?" मैंने जोर दे कर कहा था . "होने दो ...घमासान ....!!" मेरा स्वर तीखा था .

किसी भी कीमत पर अब कांग्रेस को चुनाव जीतना था . बी जे पी का चुनाव –प्रचार और ...जन–मानस का रुझान जो कह रहा था – उन की समझ में आ रहा था और उन्हें हर मोर्चे पर निराशा ही मिल रही थी!

अमित अखबार देख रहा था और लम्बे समय तक देखता ही रहा था! मुझे कुछ दाल में काला दिखाई दिया था तो पूछा था ?

"कुछ गंभीर ...मामला ....?"

"सोनिया गाँधी की 'किचिन–कैबिनेट' का हमला है!" एक लंबी उच्छवास छोड़ते हुए अमित बोला था . "वही पुराना किस्सा ...?" अमित ने निराश आँखों से मुझे घूरा था .

"है, क्या ....?" मैंने संयत स्वर में पूछा था .

"किसी भी तरह ...'मोदी' मरे ....? बदनाम हो ...उस का नाम ...? ताकि ...हुई नाम की घोषणा को वापस लिया जा सके ...?"

"लेकिन अब क्या नया गुल खिलाया है ...?"

"वही ....! प्रशांत भूषन जी सुप्रीम कोर्ट से अर्ज कर रहे हैं कि एक बार ...फिर से 'कोब्रा–पोस्ट' और 'गिलोल' की नई कहानी सुन लें ...? इन का संज्ञान लेते हुए सी बी आई से ...फिर से जांच कराई जाए ...? उन के लिहाज से कुछ ऐसा नया है जिस के सामने आते ही ....मोदी .....?"

"चरित्रहीन सिद्ध हो जाएगा ....?" मैं कह कर हंस पड़ा था . "मैं चरित्रहीन हूँ ही नहीं ...तो सिद्ध कैसे हो जाऊंगा, मैडम ....?" मैंने उपहास के तौर पर ही सोनिया जी को संबोधित किया था .

"लो, भाई जी! हो गया ....काम ...!!" अमित चहका था . शायद चुनाव –परिणाम आने लगे थे ...? "गए.लालू जी ....! हार गए ...नितीश जी .....!!" उस ने जय–घोष किया था .

"हे, भगवान! तू न्याय तो करता है ...?" मैंने बड़े ही विनम्र स्वर में परमात्मा को धन्यवाद दिया था .

सच मानिए कि ...७ अक्टूवर की वो घटना मैं जीवन भर नहीं भूल पाऊंगा ...? पटना के गाँधी मैदान में बी जे पी की रैली होनी थी और बिहार सरकार को हर प्रकार की हर सूचना दी जा चुकी थी! मैं जब पटना हवाई अड्डे पर उतरा था तो मुझे उम्मीद थी कि सी एम् नितीश जी जरूर ....जरूर ....

"सर, मोदी जी के लिए ...बुलेट–प्रूफ ...भेजनी है ...?" प्रश्न था क्यों कि उन के आदेश नहीं थे .

"भेज दो ...वो ...पुरानी ...! खप जाएगी ....? हा हा हा ...." आदेश थे . और लगा था कि ...कुछ होना–जाना जरूर था .

उस पुरानी खटारा कार में बैठ कर मैं गाँधी मैदान की ओर निकला ही था कि ...किसी बम–बिस्फोट की खबर थी ... जो रेलवे स्टेशन पर हुआ था! मेरा शक साबित हो गया था ...? मैं जांन गया था कि आज मेरी जांन की खैर न थी! लेकिन मैदान छोड़ कर भागना तो मेरी किताब में ही नहीं लिखा ...? मैं ...चलता ही रहा था और देख रहा था कि ...जनता का जमावड़ा बे–जोड़ था! पूरा गाँधी मैदान नाक तक भरा था ...और भीड़ किसी भी तरह ...मैदान में समा न पा रही थी!

लोग इतनी संख्या में मुझे सुनने आए थे – मैं गद –गद हो गया था!

लेकिन तभी ...बम धमाका हुआ था ...और दशों दिशाएं बोल पड़ीं थीं! जनता के कान खड़े हो गए थे . मैं अभी मंच पर पहुंचा ही था कि ...दूसरा धमाका हुआ ...और पूरा मंच चरमरा कर ...अस्त–व्यस्त हो गया ? मुझे लगा कि अगले ही पल मेरी मौत आ जाएगी और ....

"बचाओ, मोदी जी को ....?" भीड़ बजाए भागने के मुझे बचाने की गुहार लगा रही थी .

मुझे लोगों के एक कवच ने अपने भीतर भर सुरक्षित कर लिया था! इस के बाद एक के बाद दूसरा बम फटा था ...और जम कर धमाके हुए थे . लोगों को छोटी–मोटी चोटें आईं थीं ...पर न तो कोई हिला था न कोई भागा था ...? मैं था कि इस द्रश्य को एक अचरज की तरह देखता ही रहा था .

फिर सब शांत हो गया था ...और लोग मुझे सुनने के लिए मैदान में आ बैठे थे . मैं बोला था ....मैं भावुक था ...जनता का आभारी था ...और ... जनता ...जैसे मेरी बहुत अपनी थी ...मुझे सुनती ही रही थी ...तालियाँ बजती ही रहीं थीं ....और अंत में एक इतिहास रच गया था – उस दिन!!

लालू जी और नितीस जी की निराशा का ठिकाना न था ...?

अनुमान था कि ..जैसे ही बम–ब्लास्ट होंगे ...जनता में भगदड़ मच जाएगी ...और चूंकि ...पाँच लाख से भी ज्यादा लोग ...मुझे सुनने पहुंचे थे ...अतः ... भीड़ बिगड़ने के बाद तो ...कुछ भी हो सकता था ...? और तब ...हाँ.हाँ ...तब मुझ पर ह्यूमन–बम का हमल होना था ...जिस की सुपारी 'जींद' को दी जा चुकी थी!

लेकिन जब भीड़ ने मुझे अपने भीतर भर लिया था ...और एक भी आदमी नहीं भागा था, , , तो ...'जींद' ने हमला नहीं किया था ...?

पटना –बिहार में हुई इस हुंकार रैली की गूँज ...पूरे भारत के आर–पार पहुँच गई थी ...और एक निर्णय हवा पर झूल गया था ...!!

"आतंकवाद का भी मुंह काला हो गया ...आज ...?" अमित शाह का प्रश्न था .

"जाको ...राखे ..साईँया ....?" मैंने हंस कर अपना ही उत्तर दिया था .

लालू प्रसाद और नितीश जी के लिए आती ये खबर उस हुंकार रैली का जनता का दिया उत्तर थी! इन्होने मुझे छोटा माना था ...मेरा मजाक उड़ाया था ...लेकिन जनता ने मुझे अपने सर पर उठा लिया था ...अपने दिल में बसा लिया था ...और आज मुझे ...?

चलिए ...आने देते हैं ....और परिणाम ....

मेरा नाम पी एम् के लिए आते ही गूगल पर ..१...२८७७ लोगों ने सर्च किया था ...जो अब तक का विश्व का एक बड़ा कीर्तिमान है! तो क्या आप भी मानते हैं कि ...मोदी ...आज जनता का चहेता ...मोदी ...मोर्चा मरेगा ... और 'कांग्रेस–मुक्त' भारत का सपना पूरा करेगा ...?

"आप का दुश्मन 'कांग्रेस' है ....और कोई नहीं ....!" अमित ने मुझे बताया था .

"तुम थे कहाँ ...?" मैंने उसे उल्हाना दिया है . " तुम ....."

"क्यों...? काम नहीं हुआ ....? क्या है – जो नहीं हुआ ....?" वह अब मुझे उल्टा झिंझोड़ रहा है . "वो हुआ है, भाई जी ...जिसे पूरा विश्व आँखें पसारे देख रहा है ....? मूं की खाई है, कांग्रेस ने! पूरा दम लगा कर भी ....?"

"लेकिन ...लेकिन ....वो एटम–बम्ब तो अभी चलेगा ...? अमेरिका में बना ये ...बम्ब ..हमें नेस्त–नाबूद करने के लिए ही तो है ?"

"कौन–सा अटम–बम्ब ....?" अमित तनिक चौंक पड़ा है . उसे इस नई खोज की अभी तक कोई खबर नहीं है .

"राहुल गाँधी ....!!" मैंने जोर दे कर कहा है .

"प–ग–ला ...है ...!" अमित ने हंस कर कहा है . "वो ...तो ...पागल है, भाई जी!!" वह फिर से हंसा है . "आप तो व्यर्थ में डरे बैठे हैं ...?" उस ने मुझे चेताया है . "और अगर एटम–बम्ब फटता है ...तो फटे ? डरता कौन है ...?" अमित ने मुझे हौसला दिया है .

"हा हा हा ...!!" मैं भी अब हंस पड़ा हूँ . "अरे, भाई! न जाने क्यों .... मुझे आज–कल चींटी भी ...हाथी दिखाई देने लगी है ....?"

"आप भारत को देखो, भाई जी ....?" अमित गंभीर है . "अब दृष्टि को भारत पर केन्द्रित करो ...!" उस की राय है

"बी जे पी के ...अरुण जैटी'ली भी हार गए ....?" किसी ने चिल्ला कर कहा है .

मेरे तोते उड गए हैं! अमित कहीं टथस्त है! मुझे अपने ही लोगों का किया व्यवहार चौंट लेता है ? चालाक आदमी को जन–मानस पहचानता है

–ये मेरी धारणा है! मैं जो भी कर रहा हूँ ...पार्टी के लिए है ...देश के लिए है ...लेकिन कुछ लोग केवल अपने लिए ही सब कुछ करना चाहते हैं ...? और नतीजा ...

"ये, लो सर ...? गए आप के ...कपिल सिब्बल ....?" आवाजें आ रही हैं ...

अब मना लेगा ...मौके पर दिवाली ...? ये आदमी भी जो है ...वो है ही नहीं ...? अब चाटेगा सोनिया की जूती ...? न जाने क्यों मुझे गुलामों से नफरत है ....? अरे, परमात्मा का दिया सब कुछ्होने के बाद भी ...तुम ....

"हार गए ...खुर्शीद ...?" एक और बड़ी खबर है . ये भी सोनिया जी के खास हैं ...और इटली में इन की भी ससुराल है ...? इन्हें भी घमंड था ... और हारना तो इन के लिए ....

"बाटला हाउस में ...मुसलमान युवकों की मौत की खबर सुन कर सोनिया जी ...तो रो ही पड़ीं थीं ...?" ये इन्ही की उडाई अफवाह थी . मुसलमान के नाम पर ही ये खाते–कमाते हैं ...और इन्होने भी अपनी सल्तनत कायम कर ली है ? अब आ कर हारे हैं ...? बैठ कर अब देंगे मोदी को गलियां ......

"सुशील सिंदे भी हार गए ...और ..सचिन पायलेट भी उड़ गए ...?" गंभीर खबरें आने लगीं हैं . कांग्रेस के खेमें में खलबली मच गई है! "लगता है – साफ हो जाएगी ...कांग्रेस ...?' अमित चहका है .

खुश तो मैं भी खूब हूँ . कांग्रेस वालों ने खूब ही मार दी है –मुझ में ...?

"सोनिया जी जीत गईं हैं ....!!" एक धमाका जैसा हुआ है ...जैसे कोई बम फटा हो – ऐसा लगा है!

मैंने इस खबर का आदर किया है ...उसी तरह ...जिस तरह कि देश के लोगों ने ...मत–दाताओं ने ...और दिग्गज राजनेताओं ने हमेशा ही सोनिया जी को आदर दिया है ..सम्मान दिया है ...? ये हमारे देश की सभ्यता है . ..ये हमारा बड़्पपन है ...कि हम नारी का सम्मान करते हैं ...! लेकिन आप अगर सोनिया जी का चुनाव–प्रचार देखें ...तो ..

"बी जे पी वो पार्टी है ...जो गंजे को ...कंघा बेच देती है ...ताकि ...वो अपने गंजे सर को खुजा ले ...?" सोनिया जी विराम देती हैं . लेकिन लोग उन की इस मजाक पर हँसे नहीं थे ...? "ये पार्टी – बी जे पी ...गंजों को हैअर –कट दिलाती है ...?" उन्होंने फिर से संवाद बोला था . लेकिन इस

बार भी कोई नहीं हंसा था ? वास्तव में तो लोग असम्प्रक्त थे ...उन की बात सुन ही न रहे थे . लेकिन वो वहां उपस्थित थे ...!!

ये था ...उदहारण जहाँ जनता के साथ उन का कोई संपर्क था ही नहीं ..? उन को जो लिख कर दिया जाता था – वो उसे ही पढ़ देतीं थीं ...!

"मैं कहती हूँ कि ...अगर बी जे पी चुनाव जीती ...तो ...नर–संहार होगा ...? हजारों–हजार लोग ...मरेंगे ...और ...." वो कह रहीं थीं पर खुद भी इस बात का अर्थ न जानतीं थीं . और जिस ने ये भाषण लिखा था – वह भी तो हंस रहा था ...?

फिर भी सोनिया जी की जीत हुई है ...? ये भारत की संस्कृति की जीत हुई है . मित्रो ...!!

"सर! जसवंत सिंह जी भी ....हुए ...पूरे ...?" अमित जोरों से हंसा है .

मुझे अच्छा तो नहीं लगा ...पर श्री जसवंत सिंह जी का हाल यही होना था – मैं जानता था ...? कुछ लोगों के खून में गद्दारी ...चली आ रही होती है ? मुझे दादा जी याद आ गए – हमारे तो राजे–रजवाड़े भी ..अंग्रेजों की डयोड़ीयो ..पर जा खड़े हुए हैं ...? आजाद भारत में अब गुलामों के लिए जगह नहीं मिलेगी – मेरा ये मानना है!

"राहुल जी जीत गए ., सर ...?" एक मुनादी जैसी हुई है . लोग खूब हँसे हैं . सब जानते हैं कि राहुल जी क्यों और कैसे जीते हैं ...?

और जानता तो मैं भी हूँ, मित्रो! मैं तो इस की तलाश में ..कि अमेठी में ऐसा है क्या जो गाँधी परिवार को बार–बार वोट देता है ...जिता कर भेजता है ...और ....?

"हमने गोद में खिलाया है, राहुल को ....? हमार बचवा ...पी एम् बनेगा ...? दादा पर दादा ...का ..आशीर्वाद है! ये लोग तो ...?" अब तो आप भी समझ गए होंगे कि किस चतुराई से गाँधी परिवार ने वंश–बेल को बोया है ...? इस की जड़ें बहुत गहरी हैं! वक्त ही उखाड़ पाएगा – शायद ...? लेकिन ये वंश–वाद अगर फैला तो ...जहर का काम करेगा ...? प्रजातंत्र के लिए विष है –ये ....वंश –वाद ...?

चलो! राहुल जीते हैं बधाईयाँ ....!!

लेकिन इस के साथ ही मैं चाहूँगा कि आप कांग्रेस का प्रचार –प्रसार भी देखें –

"मेरे लिए तो मोदी का आना ..एक खतरे का आना जैसा है ...!" ये कांग्रेस के ग्रामीण विकास के मिनिस्टर श्री जयराम रमेश मीडिया से कह रहे हैं . " क्योंकि ...न तो ये आदमी हमारे श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर के भारत का है ...न महात्मा गाँधी के भारत का है ...न पंडित जवाहर लाल नेहरू के भारत का है ...और न ही ये सरदार पटेल के भारत का है ...? क्योंकि इस आदमी की विचार–धारा ने ...उत्तर–प्रदेश और बिहार में जिस तरह से .. आग लगाई है – वह किसी हादसे से कम नहीं है ...?" उन को मुझ पर रोष है . वो फिर कहते हैं, " ये कोई चायवाला नहीं है ....? ये तो कोरा ठग है ...चोर है ...! चाय पर चर्चा कर–कर इस ने चाय का जायका ही बिगाड़ दिया ...? मैं अब चाय नहीं पीता ....?"

और हमारा मीडिया भी उन्हीं बातों को बताता है – जो असंगत हैं ... असंभव है, , , ?

"जीत गई बी जे पी भाई जी ....!!"शोर उठ खड़ा हुआ है . जश्न मन रहे हैं . जय–जयकार होने लगी है ...!!

"क्या मैं विजयी हो गया हूँ ....?" मैंने अपने आप से पूछा है .

"तुम नहीं, नरेन्द्र! भारत विजई हुआ है ..!" दादा जी बोले हैं . "ये देश का भाग्योदय है, बेटे ...!!" आवाज गुरु जी की है!"

और में ....नत–मस्तक हूँ ....!!

86

मैं आसमान पर उगे भोर के तारे को देख रहा हूँ!

कुल मिला कर कांग्रेस का खूब बैण्ड बजा है, मित्रो!

कुल ४४ सीटें मिलीं हैं . इन की कभी इतनी शर्मनाक हार नहीं हुई ...? पटनायक बच गए . ममता की भी इज्जत बच गई . लेकिन जय ललिता की जीत और अरविन्द केजरीवाल की हार महत्व रखती हैं ....?

लो जी! मुझे अब बधाई –सन्देश आने लगे हैं . देश में बी जे पी की जीत के डंके बज रहे हैं! लोग जश्न मना रहे हैं . बधाई –सन्देश भी आने लगे हैं . एक उत्सव उठ खड़ा हुआ है . एक प्रसन्नता की लहर है – जो गाँव–गाँव ...गली–गली ...शहर–शहर ...और डगर–डगर चलती ही चली जा रही है ....और देश–वासियों को खुशी से ओत–प्रोत कर शुभ–सन्देश सुना रही है!!

अरे, रे! मेरे तो कान बज उठे हैं ...? मैं ये क्या सुनने लगा हूँ ...? देश से ही नहीं – विदेश से भी ...बधाई–सन्देश ...? अमेरिका से ओबामा जी का सन्देश है ...तो ब्रिटैन से कोम्रान बोल रहे हैं! 'गोधरा' काण्ड की वजह से मेरा आना–जाना रोकना शायद उन्हें अब बुरा लगा होगा ...? पाकिस्तान से नवाज शरीफ का सन्देश है ..बंगला देश से सन्देश है ...और सन्देश आते ही जा रहे हैं ....

"ओह, अमित .....! क्या करिश्मा कर डाला ...तूने ....मेरे ...." मैंने लपक कर अमित को बांहों में भर लिया है . "ओह, मोदी के मन–मीत ....मेरे राजदूत ....तू महान है, मेरे ....!!" मैं कहता ही जा रहा हूँ . "असंभव को तूने ...

संभव कर दिखाया, मेरे मित्र ...!" मेरी आँखें सजल हो आईं हैं .

"मैंने तो कुछ भी नहीं किया ...." अमित की आँखें भी छलछला आई है! "मम....माँ ...से मिलने का ...प्रश्न है ...? कब ....?" वह कह नहीं पा रहा है . पर चेतावनी है –उस की जिस से पहले कि मैं ...फिर भूल जाऊं ...?

"चलते हैं ....???" मैंने तुरंत ही स्वीकार में सर हिला दिया है .

अचानक ही मेरी आँखों के सामने मेरा विगत उग आता है!!

६... साल का मैं –नरेन्द्र मोदी ...अपनी ६० साल की बूढी –माँ –हीरा बैन से मिलने जा रहा हूँ ...? उस हीरा बाई से मिलने जा रहा हूँ – जिसे मैंने पडौस में बर्तन रगड़ते देखा है ...हम छह भाई–बहिनों को पालते–संभालते देखा है ...? मैं पलकें ढालता हूँ ...तो पाता हूँ ...कि हम कृष्ण–बलराम ... कंस –बध के बाद ...यशोदा –माँ के पास लौट रहे हैं ...!!

हंस पड़ा हूँ, मैं ....और अमित चौक पड़ा है ....!!

शनिवार १७ मई है ...और हम बडोदरा ...में लोगों के साथ ...जीत का जश्न मना रहे हैं! ठीक आठ बजे हमें दिल्ली के लिए रवाना होना है . दस बजे दिल्ली हवाई अड्डे पर हमारा स्वागत हुआ है! और अब आठ अलग–अलग स्थानों पर लोगों से मिलते हुए ...पार्टी आफिस हो कर ...साढ़े दस बजे हम यहाँ पहुंचे हैं! लोगों से मिलने के बाद हम ने पार्लियामेंट्री बोर्ड की मीटिंग अटेंड की है! और अब हम वाराणसी के लिए निकले हैं! यह हमारी

संस्कृति का उत्कृष्ट बिंदु है – बनारस! लोगों का किया स्वागत ...और दिया सौहार्द अविस्मर्णीय हैं! गंगा आरती का उत्सव बे–जोड़ है! और अब हमारा लौटना भी एक ऐतिहासिक घटना जैसा ही है ...!!

पार्टी को २८२ सीटें मिलीं हैं! एक इतिहास ही रचा गया है ...१६६८ . ..के बाद ...!!

"हम मानते हैं ...कि ...हम हारे हैं ....!!" सोनिया और राहुल जी के बयान हैं . "हम जिम्मेदार हैं – इस हार के ....!!" कह कर वो लोग अंदर चले गए हैं .

कोई क्या कर लेगा ....? पार्टी उन की है ....उन्हीं की रहेगी ...? है कोई माई का लाल जो .....

मुझे ही क्यों आप को भी तो याद होगा ...श्री मणिशंकर का वो बयान .... जो उन्होंने ...मेरा नाम पी एम् के लिए आते ही दिया था .....

"मैं दावे के साथ कह सकता हूँ, मित्रो! कि ये श्रीमान मोदी जी ...२१–वीं ...सदी में तो ...प्रईमिनिस्टर बन ही नहीं सकते ...?" तालियाँ बजीं थीं ...और बजती ही रहीं थीं! "हाँ, भाई!" तालियाँ रुकीं थीं तो वो फिर बोले थे ." एक निमंत्रण मैं ..उन्हें अपनी ओर से दिए देता हूँ!" जमा लोगों के कान खड़े हो गए थे . "लकी चांस है – हम लोगों के बीच चाय बेचने का, , , ?" लोग फिर हँसे थे . "चूंकि ये ...चायवाले हैं ....इन्होने स्टेशनों पर चाय बेचीं है ...? हाँ, हाँ ...!"

"पार्टी की केन्टीन का ठेका दे देते हैं, इन्हें ....?" भीड़ में से कोई बोला था . "चाय ...वाले भी ...चले हैं – पी एम् बनने ?"

इस के बाद तो मेरा खुल कर ही उपहास हुआ था ....!! प्रिंस राहुल के साथ मुझे बिठा कर लोगों ने खूब ही मेरी गरीबी में जूते मारे थे ....!! कहाँ ...राजा भोज ....और कहाँ ...कंगला तेली .....???? विचित्र वक्त था ....

बहुत आहात को गया था मैं, मित्रो! मेरा स्वाभिमान तो लहूलुहान हो सड़क पर लेट गया था ...उठने से नाट गया था ...और जंग करने पर उतारू था ...!! और तब ..हाँ, हाँ तब मैंने कांग्रेस के विरुद्ध जंग छेडने की सोची थी ...और तभी १५ सितम्बर २०१... को मैंने पहली बार रेवाडी में ...जनरल वी के सिंह को साथ ले कर ...सेवानिब्रत –सैनिकों से अपनी बात कहने का साहस किया था .

"मैं जानता हूँ दोस्तों! कि हमारा देश चारों ओर से दुशमनों से घिरा है ? और मैं यह भी जानता हूँ, दोस्तों कि ...हम हैं किस हाल में ...? लेकिन मुझे गर्व भी है कि ...हमारे सैनिकों ने हमेशा ही देश की लाज बचाई है ....और वो कारनामे किए हैं – जिन्हें असंभव कहा जा रहा है ...? मैं वचन देता हूँ कि . .. सैनिकों का वेल्फैअर ...देखना मेरी प्राथमिकता होगी ....और ...."

खूब तालियाँ बजीं थीं! उसी दिन ...जी हाँ, उसी दिन मुझे याद है कि मेरा और सैनिकों का एक खून का रिश्ता कायम हो गया था! मुझे लागा था कि मैं इन्हीं में से एक हूँ ...एक लड़ाका हूँ ...जिसे न अपनी जांन की परवाह है ...और न मान की!!

और इन सैनिकों द्वारा उत्साहित हुआ में ...लौटा था और २६ सितम्बर को ही दिल्ली में 'विकास–रेली' को सम्बोधित कर रहा था! मैं दिल खोल कर बोला था . मैंने सब से पहले अपनी गरीबी को दिल्ली की सडकों पर लोगों के मुआईने के लिए बखेर दिया था! मैने खुले शब्दों में कहा था कि मैं ...'कांग्रेस–प्रिंस' की तरह मुंह में सिल्वर –स्पून ले कर पैदा नहीं हुआ हूँ! कि मैं तो मजदूर हूँ ...आप में से ही एक हूँ ...पर हूँ मैं ..लड़ाका ...काल –उन का जो चोर हैं ...देश को लूट रहे हैं ...ढो–ढो कर बाहर ले जा रहे हैं ...और जिन्होंने ...देश खाली कर दिया है .....और ....और ...? मुझे कहते हैं – –'कर ले केन्टीन में नौकरी ...चाय वाले की ...?' हँसे थे –लोग ....खूब हँसे थे! कांग्रेस के अहंकार पर हँसे थे ...लोग ....!!

चेहरे उड़ गए थे उस दिन ...कांग्रेसियों के ....!! सुपर हिट थी –विकास –रैली ...!!!!

अब प्रेस हरकत में आया था! मेरे कहे को मिटाने के लिए ...और मोदी का नाम मिटाने केलिए एक जुट हो ....अखबार, टी वी ...और मीडिया ये बताने लग पड़े थे कि ...मोदी का कद बहुत छोटा था ...और राहुल – 'वाज ए नेचुरल चोईस'! लोग चाहते ही राहुल को हैं ...फिर मोदी ...? बी जे पी अभी भी अपनी की गलती सुधार ले तो ...ये देश हित में होगा ? विदेश तो पहले ही मोदी के नाम से कूदता है ....????

"अरे, हाँ! अमित ...वो 'कोब्रा –पोस्ट' और 'गिलोल' कहाँ पहुंचे ...? " मैं अचानक ही पूछ बैठा था. बहुत दिनों से मेरे 'चरित्रहनन ' की कोई कोशिश नजर न आई थी ? "क्या हुआ उस नए ...'शगूफे' का ....?" मैने पूछा था .

कई लम्बे पलों तक अमित मुझे घूरता ही रहा था! न जाने क्या था उस की उस दृष्टि में ...जो मुझे डरा गया था ...? कुछ सोच कर अमित बोला था .

"कहने को तो ...बहुत बुरा हुआ ? पर जो हुआ ....सो भी ठीक हुआ . ...!!" अमित एक दार्शनिक की तरह बोल रहा था . "पकड़ा गया ....!" वह रुका था . "अपनी बेटी की सहेली के साथ ....इस बदकार ने ...बदफैली की ...?" रोष था, अमित की आवाज में . "मोदी को चरित्रहीन साबित करते–करते खुद चरित्रहीन बन गया ...? अब तो इसे ...राम भी नहीं बचा सकता ...?" चुप हो गया था, अमित .

"घटिया तो है ...?" मैंने स्वीकारा था . "लेकिन ये व्यवसाई है —पत्रकार नहीं ? कांग्रेस से खूब कमाया है ...लेकिन ....अब तो आसमान से गिरे ... और खजूर में भी नहीं अटके ....? गए ...रसातल को ....??" मैं तनिक टीस आया था! गिरता आदमी मुझे कभी से भला ...नहीं लगता .

"नीच लोगों का मजमा है! बदलेगा तो कभी नहीं!!" अमित कह रहा था. "अभी भी ...वो अनिरुद्ध बहल ...और आशीष खेतान ...लगे हुए हैं ... लेकिन ..."

"बंबई की महा—गर्जना —रैली में ....अगर ...गर्जना ही न हो ...तो कैसा रहेगा ..?" सोनिया जी की किचिन कैबिनेट का प्रश्न था .

सारे नए— पुराने खिलाडी ...इस प्रश्न का उत्तर लाने के लिए दौड़े थे ....!!

"अब की बार हमें सफलता अवश्य मिलेगी ...?" 'गुलेल' के मालिक आशीष खेतान कह रहे थे . "मैंने पूरा एविडेंस फीड कर दिया है! उठने दो इस बार पर्दा ...! नरेन्द्र मोदी जेल में बैठे नजर आएँगे ....?" वो हंस रहे थे .

"इस के बाद हम भी तो हैं ...? हैड लाईन्स में नाम छपेगा ...और वो वाले 'फोटो' भी ...? बच्चू को कहीं बैठने तक के लिए जगा नहीं मिलेगी . ..?" हिन्दू के सम्पादक बोल रहे थे .

"वास्तव में दम तो है ...?" अरुणा राय ने स्वीकृति दी थी . "चरित्रहीनता में एक बार इस का नाम आ जाए ....? फिर तो हम इस का राक्षसीकरण . ..कर डालेंगे ....???"

"ये बैठे हैं — हमारे कर्णधार —श्री भूषन जी ...?" टाईम्स आफ इण्डिया के प्रधान सम्पादक मनोज मिटता ने सब का ध्यान आकर्षित किया था . "इन का मानना है कि ...इस बार ...सुप्रीम कोर्ट इन के पक्ष में ...जरूर कोई निर्णय लेगा ....?"

"रोना तो इसी बात का है ....?" प्रशांत भूषन कराह उठे थे! "सुप्रीम कोर्ट ...अब हम सब को ...संदिग्ध निगाहों से ...देखता है ...? अब उन के लिए ...हम सब चोर ....मोदी और अमित शाह ....शाह हैं!" उन की आवाज में करुना थी . "करें ...तो क्या करें ...? हमें सोसल मीडिया से भी लगातार ...चुनौती मिल रही है ....?"

लेकिन इस निराशा का उत्तर भी उन्होंने खोज लिया था ....!!

"दाउद को सुपारी दे दी है! उस ने अपने शार्प–शूटर को टारगेट दिखा दिया है! बंबई–रैली में भरपूर वार होगा! शाहिद बिस्तरा भी अपनी शाहीन फोर्स को लेकर ..रोकेट –लौंचरों से हमला करेगा ...तो बंबई में ...वाहनों से वाहन टकराएंगे ...और ....?" अनुमान लगाए जा रहे थे . "बंबई से अच्छा . ..बैटिल – ग्राउंड ...और है कहाँ ...?'

"फिर देख लेंगे, , , बंबई की रैली को ...?' अफवाहों को कान देते हुए ...हमारे कार्यकर्ताओं ने ...बात को बहा देना चाहा था .

"मैं मरने से नहीं डरता, मित्रो!" मैंने कहा था और ठाठ से रैली की थी!!

"२६ मई शाम छह बजे ..के .बाद शपथ–ग्रहण समारोह होना है ...?" अमित ने मेरा सोच तोडा था . मैं यथार्थ में लौटा था . मुझे याद आ गया था कि अब वक्त आ गया था –जब मुझे शपथ लेनी थी ...दायित्व ओटना था ...और ...देश का प्रधान मंत्री बनना था ...? "कैबिनेट का स्वरुप क्या रखेंगे ...?" अमित का औपचारिक प्रश्न था .

"छोटा रखते हैं! उस के बाद ...." मेरा सुझाव था .

"बेहतर ...!" अमित बोला था और एक आश्चर्य की तरह उस ने सारे नाम गिना दिए थे ...लिस्ट बता दी थी और ...और कहा था, "४००० हजार ...गणमान्य लोगों की लिस्ट बनती है – आप के बताए ....?"

"आने दो! देखने दो संसार को भारत का वैभव ...?" मैं चहका था .

"अपना कोई नहीं है, लिस्ट में ...?" अमित ने सूचित किया था, मुझे .

"ठीक है! मैं नहीं चाहता कि वो लोग आएं ? ये देश का समारोह है . ..और ...."

आमित चुप रह गया था .

समारोह ठीक ६ बजे आरम्भ हुआ है ...और सात बज कर दस मिनिट पर सब तय भी हो गया है! मैंने शपथ ग्रहण की है और अब हमारे मनोनीत मिनिस्टरों ने शपथ ली है! एक छोटी और साफ–सुथरी कैबिनेट का हमने गठन किया है! हमने कांग्रेस की किसी भी रीति–नीति को नहीं लिया है . ..न माना है ...? हमारा मन है – एक अलग व्यवस्था देने का ...???

पूरे समारोह में मीडिया मेरे अपनों को खोजता रहा है ? लेकिन सफलता न मिलने पर मेरे पास ही आ गया है ...!

"आप का ...अपना ...कोई ...?" प्रश्न मेरे सामने है .

"ये सब मेरे ही तो हैं ...?" मैंने हंस कर उत्तर दिया है .

अब एक चुप्पी लौट आई है . सब शांत है . और में इस खामोशी के पेट में प्रजातंत्र का बीज रोपता हूँ. में पत्रकारों से कहना चाहता हूँ कि ...'वंश–वाद' बुरा है ...! नेता –देता है ...लेता नहीं! और जो लेता है – वह घोर स्वार्थी है ...अँधा है – जो अपनों को ही रेवड़ियां ...बांटता है ....और देश का अहित करता है! यही तो हो रहा है – आप की नजर के नीचे, हुजूर ...?

आज मैं प्रधान मंत्री बन गया हूँ . ये प्रधान मंत्री बनने का सपना ही तो था –जो ...जो मेरी आँखों में हर रोज लहक जाता था ...? झुनझुने की तरह बज–बज कर मुझे उत्साहित करता था ...? फिर बहुत थकाता भी तो था ...?

"अरे, तू ...? तेरी ये औकात कि ...तू ...?" कोई मुझे ललकारता . "नरेन्द्र! इतना बड़ा सपना क्यों ..देखते हो ....?" प्रश्न आता .

लेकिन मैं क्या करता ...? मेरे परमेश्वर ने मुझे प्रेरणा दी ...और मुझे हारने भी नहीं दिया ...? न जाने कितना कुछ नहीं घट गया है ....लेकिन न तो मैं थका हूँ ....और न ही हारा हूँ ...?

"मेरी आँखों में आज भी नींद क्यों नहीं है ....?" मैं पूछ रहा हूँ . "क्या है – जो मुझे सोने नहीं दे रहा है ...?"

"साब ...?" मुझे किसी ने पुकारा है . "दो ...लोग हैं ...! आप से मिलना चाहते हैं ...? " उस ने मुझे अपने आने का सबब बताया है . पर मैं समझ ही नहीं पा रहा हूँ. रात के इस नीरव पल में ...कौन हैं, ये ...जो मुझ से मिलने चले आए हैं ? "कौन हैं ...?" मैंने उसे ही पूछा है .

"ये कोई ...र–की–बी ...और एक औरत है – निक्का ...!" उस ने बताया है . "कहते हैं – वह सुबह से ही परेशान हैं ....! किसी ने उन्हे...अंदर ही नहीं आने दिया ....?"

मैं उछल पड़ा हूँ! मैं द्रवित हो गया हूँ! मैं प्रसन्नता से कूदना चाहता हूँ . मैं ....मैं ....

"बुलाओ, इन्हें ....!" मैंने आदेश दिया है . मैं बिस्तर से कूद कर बाहर आ गया हूँ . और अब देख रहा हूँ कि रकीब और निक्का ...मेरे सामने खड़े हैं! "त ...त ..तुम....! रकीब ....? निक्का ....? " मैंने उन दोनों को अपनी बांहों में समेट लिया है! "मेरे ...अपने ....?" मैंने कहा है . "तुम ...दोनों ....?" मैं कहता रहा हूँ . "अब्बा ...?" मैंने प्रश्न किया है .

"नहीं ....रहे ....!!" निक्की बोली है . मेरा दिल–दिमाग एक हादसे को चुप से सह गया है .

आ गया न ....मेरा परिवार ....? और ...बिन बुलाए ...आया है ...????

"इन्हें खिलाओ...पिलाओ ...और सुलाओ ....!!" मेंने आदेश दिए हैं .

फिर अकेला हूँ, मैं ...? मैं अब आसमान पर उगे भोर के अकेले तारे को देख रहा हूँ! और अब आदेश दे रहा हूँ – जब तक सूरज न निकले ...तुम टिमटिमाते रहना ...? मैं भी अब सोऊँगा नहीं ...! घात लगा कर बैठे ये बैईमान ...सब सटक जाएंगे ...?पूरे देश को निगल जाएंगे ...?

"अगर तुम सो गए, नरेन्द्र ? तो सोटी –लँगोटी ...सब चली जाएगी ..?" गुरु जी के बोल हैं .

"अब सोना नहीं, बेटे ....?" दादा जी हैं – मेरे पास आ बैठे हैं .

और मैं जाग्रत हूँ ....सचेत हूँ ....अगली जंग के लिए तैयार हूँ ....!!